# MARATHI KE AMBEDKARI LOKGEETON KA HINDI ANUVAD EVAM VISHLESHAN

**(BEED JILE KE SANDARBH MEIN)**

Thesis submitted in Fulfillment of the degree

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

Centre for Dalit & Adivasi Studies And Translation

by

**KIRAN DASHRATH DAKE**

2020

*Under the guidance of*

**Prof. V. KRISHNA**

Centre for Dalit & Adivasi Studies And Translation,

School of Humanities

University of Hyderabad

Hyderabad-500046

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण

**(बीड जिले के संदर्भ में)**

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. (दलित और आदिवासी अध्ययन एवं अनुवाद केंद्र)

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

**2020**


शोध–निर्देशक

प्रो. वी.कृष्ण

हिंदी विभाग, मानविकी संकाय

हैदराबाद विश्वविद्यालय

**केंद्र अध्यक्ष**

प्रो. आर.एस.सर्राजू

सी.डी.ए.एस.टी, मानविकी संकाय

हैदराबाद विश्वविद्यालय



दलित और आदिवासी अध्ययन एवं अनुवाद केंद्र

मानविकी संकाय, हैदराबाद विश्वविद्यालय

हैदराबाद–500046

# CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"MARATHI KE AMBEDKARI LOKGEETON KA HINDI ANUVAD EVAM VISHLESHAN" (BEED JILE KE SANDARBH MEIN) " (मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण)" (बीड जिले के संदर्भ में)** submitted by **DAKE KIRAN DASHRATH** bearing Regd. No. 14HDPH04 in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in CENTRE FOR DALIT & ADIVASI STUDIES AND TRANSLATION is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance which is a plagiarism free thesis.

As far as we know the thesis has not been submitted previously in part or full to this or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Signature of Supervisor

Head of the CDAST

Dean of the school of Humanities

## DECLARATION

I, **DAKE KIRAN DASHRATH** hereby declare that the thesis entitled **"MARATHI KE AMBEDKARI LOKGEETON KA HINDI ANUVAD EVAM VISHLESHAN" (BEED JILE KE SANDARBH MEIN) (मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण) ( बीड जिले के संदर्भ में)** submitted by me under the guidance and supervision of Prof. V. KRISHNA is a bonafide research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma. I hereby agree that my thesis can be deposited in shodhganga/INFLIBNET.

Signature of the student

Dake Kiran Dashrath

Regd. No. 14HDPH04

Date : ..../.../2020

## CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"MARATHI KE AMBEDKARI LOKGEETON KA HINDI ANUVAD EVAM VISHLESHAN" (BEED JILE KE SANDARBH MEIN) (मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण) ( बीड जिले के संदर्भ में)** submitted by **DAKE KIRAN DASHRATH** bearing Regd. No. 14HDPH04 in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in CENTRE FOR DALIT & ADIVASI STUDIES AND TRANSLATION is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance.

This thesis is free from plagiarism and has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or Institution for award of any degree or diploma.

Parts of this thesis have been:

**A. Published in the following publications:**

1. Vaman Dada Kardak Ke Geeton Mei Ambedkari Chetna. ( ISSN: 2394-53003.) (Printing Area International Multilingual Refereed Research Journal, Issue-51, vol-02, March-2019.)
2. Marathi Dalit Sant Kavya Mei Samajik Chetna Ke Sawar. (ISSN: 23199318.) ( Vidyawarta International Multilingual Refereed Research Journal, Issue-29, vol- 04, January to March-2019 )

**B. Presented in the following National Seminar & Inter National Seminar:**

1. Media ka Prabhav- Bhasha ka Badalta Swaroop. 21&22 February, 2018.
2. Samakaleena Hindi Gazal mein stree chetna ki abhivyakti 8 & 9 March 2019.

Further the student has passed the following courses towards fulfillment of course work requirement for Ph.D. was exempted from doing course work (recommended by Doctoral committee) on the basis of the following courses passed during his M.Phil. Programe and the M.Phil. Degree was awarded.

| Course Code | Name | Credits | Pass/Fail |
|---|---|---|---|
| 1. HH701 | Research Methodology | 4 | pass |
| 2. HH721 | Modern Thought | 4 | pass |
| 3. HH722 | Sociology of Literature | 4 | pass |
| 4. HH724 | Aesthetics and Stylistics | 4 | pass |
| 5. HH750 | Dissertation | 4 | pass |

Supervisor Head of CDAST Dean of School

Dept. of Hindi Humanities

# अनुक्रमणिका

**भूमिका** **12–19**

## पहला अध्याय

## मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का सैद्धांतिकी पक्ष

**1.1 अम्बेडकरी लोकगीतों का सैद्धांतिक पक्ष** **20–79**

1.1.1 सामाजिक 20
1.1.2 धार्मिक 29
1.1.3 राजनीतिक 33
1.1.4 आर्थिक 39
1.1.5 सांस्कृतिक 46
1.1.6 शिक्षा 59
1.1.7 संगठन 67
1.1.8 संघर्ष 69
1.1.9 स्वतंत्रता 70
1.1.10 समता 72
1.1.11 भ्रातृत्व 76

**1.2 मराठी दलित लोकगीतों की ऐतिहासिक परंपरा** **80–105**

1.2.1 डॉ.अम्बेडकर पूर्वपरंपरा 98

1.2.2 तमाशा की परंपरा 101

1.2.3 सत्यशोधकों के जलसे 102

**1.3 मानवमुक्ति की लड़ाई : अम्बेडकरी लोकगीतों की शुरुआत** **106–129**

1.3.1 डॉ. अम्बेड़कर और दलित आंदोलन 107

1.3.2 महाड का चवदार तालाब आंदोलन 111

1.3.3 कालाराम मंदिर आंदोलन 118

1.3.4 भारतीय गोलमेज परिषद 122

1.3.5 धर्मपरिवर्तन की घोषणा 122

**1.4 दलित अग्रदूतों का संक्षिप्त परिचय** 130—151

1.4.1 संभाजी तुकाराम गायकवाड 130

1.4.2 सीताराम एन. शिवतरकर 132

1.4.3 सुश्री. जैबाई चौधरी 133

1.4.4 गोंविदराव टी.मेश्राम 135

1.4.5 डी.एस.दत्तात्रय पवार 136

1.4.6 डी.बी. देवाजी खोब्रागडे 138

1.4.7 एल.एस.भटकर 139

1.4.8 रामचंद्र चंदूरकर 141

1.4.9 एल.बी. भिंगरदेवे 142

1.4.10 रामचंद्र खंडाले 144

1.4.11 गनपतराव वाघमारे 146

1.4.12 डॉ. गंगाधर पानतावणे 147

1.4.13 किसन फागूजी बनसोडे 149

1.4.14 रायभान जाधव 150

**1.5 डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकरपूर्व दलित लोकगीतकार/शाहीर** **152— 158**

1.5.1 लहुजी बुवा साल्वे 152

1.5.2 गोपाल बुवा कृष्णावलंगकर 153

1.5.3 पतित पावन दास 155

1.5.4 भीमराव कर्दक 156

**1.6 डॉ. अम्बेडकर के समकालीन लोकगीतकार 159—169**

1.6.1 अण्णा भाऊ साठे 159

1.6.2. वामनदादा कर्डक 153

1.6.3. विलास घोगरे 166

1.6.4. विठ्ठल उमाप 167

**1.7 डॉ. अम्बेडकरोत्तर लोकगीतकार 169—182**

1.7.1 आनंद शिंदे 169

1.7.2 आदर्श शिंदे 171

1.7.3 अमनकुमार आढाव 173

1.7.4 संभाजी भगत 175

1.7.5 विलास घोगरे 176

1.7.6 शीतल साठे 180

**निष्कर्ष 182**

## दूसरा अध्याय

## मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद

**2.1 मराठी से हिंदी में दलित साहित्य के अनुवाद की परंपरा 185—189**

**2.2 मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण 190—265**

2.2.1 सामाजिक लोकगीत 191

2.2.2 आर्थिक लोकगीत 206

2.2.3 राजनीतिक लोकगीत 211

2.2.4 ऐतिहासिक लोकगीत 218

2.2.5 शैक्षणिक लोकगीत 220

2.2.6 स्तुतिपरक लोकगीत 228

2.2.7 क्रांतिकारी लोकगीत 249

2.2.8 वैचारिक लोकगीत 255

2.2.9 वंदन लोकगीत 263

**निष्कर्ष** **266**

## तीसरा अध्याय

## मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का विश्लेषण

3.1 सामाजिक रूढियों के प्रति विद्रोह **278**

3.2 शास्त्र का विरोध 286

3.3 वर्चस्ववादी राजनीति का विरोध 292

3.4 ऐतिहासिक परंपराओं का खंडन 296

3.5 वर्ण व्यवस्था का विरोध 303

3.6 राज्य समाजवाद का समर्थन 310

3.7 दलित समाज का यथार्थ 317

3.8 मानवतावादी चेतना के स्वर 320

**निष्कर्ष** 322

## चौथा अध्याय

## मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों की भाषा एवं शिल्प

**4.1 अम्बेडकरी लोकगीत : वैकल्पिक भाषा की तलाश** 325

4.1.1 गद्यात्मकता सपाटबयानी 329

4.2 **प्रतीक** 332

**4.3 बिम्ब** 336

**4.4 वैचारिक सौंदर्य** 339

**4.5 अन्य भाषाओं के शब्द** 345

**निष्कर्ष** 344

## पाँचवाँ अध्याय

## मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों के हिंदी अनुवाद की समस्याएँ

5.**1 लेखन विधि की समस्याएँ** **351**

**5.2 शब्दार्थ एवं अर्थ भिन्नता से संबंधित समस्याएँ** **352**

**5.3 व्याकरणगत समस्याएँ** 354

5.3.1 लिंगगत समस्याएँ 354

5.3.2 वचन और कारक से संबंधित समस्याएँ 359

5.3.3 शब्द शक्ति 360

5.6 **प्रादेशिक शब्दों का अनुवाद की समस्याएँ 364**

**5.7 रिश्तों के नाम संबंधी समस्या 367**

**5.8 जनजीवन से संबंधित शब्द 369**

**5.9 ग्रामीण शब्दों के अनुवाद की समस्या 371**

**निष्कर्ष 373**

**उपसंहार 372–467**

**मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों की उपलब्धियाँ एवं सभावनाएँ 372**

1. परिशिष्ट (मराठी के अम्बेडकरी लोकगीत) 382

2. परिशिष्ट (शोध प्रविधि) 451

3. परिशिष्ट (लोकगीतकारों के साक्षात्कार) 456

**आधार ग्रंथ सूची 468–476**

**संदर्भ ग्रंथ सूची 468**

**सहायक ग्रंथ सूची 474**

**पत्रिकाएँ 476**

# भूमिका

अम्बेडकरी चिंतन धारा के व्यापक प्रभाव के तले जन्म लेनेवाले दलित साहित्य की प्रथम अभिव्यक्ति लोकसाहित्य के रूप में हुई। आलोचकों की दृष्टि में कविता मनुष्य की भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का स्वाभाविक साधन है। परंतु साहित्य मनुष्य की अभिव्यक्ति का माध्यम उसी समय बनता है, जब उसमें सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा बलवती होती है। सामाजिक परिवर्तन में साहित्य की भूमिका को स्वीकार किया गया है। साहित्य की सामाजिक भूमिका से ही उसके सांस्कृतिक आंदोलनों की दिशा तय होती है। यही कारण है कि अम्बेडकरी लोकगीतों में सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का बीज हमें देखने को मिलता है। यदि हम 'अम्बेडकरी लोकगीतों का सुक्ष्म अध्ययन करें तो ज्ञात होगा कि इसका विकास क्रम गौतम बुद्ध के दार्शनिक चिंतन, लोकायन की श्रमण संस्कृति, सिद्ध, नाथपन्थियों की सृजनात्मक ऊर्जा से विकसित हुई, सांस्कृतिक चेतना के साथ–साथ मध्ययुगीन संत तुकाराम, संत चोखामेला, संत गोरा कुम्हांर, संत नरहरी सोनार आदि मराठी दलित संत कवियों तक आते–आते क्रांतिकारी चेतना में तब्दील हो जाती है। यह चेतना हमें तुलसीदास सूरदास के अवतारवाद, पुनर्जन्मवाद, कर्मवाद, वर्णवाद, नियतिवाद, आत्मा एवं ईश्वर को नकारते हुए ज्ञान, तर्क, बुद्धि और विवेक को आधार बनाकर वैज्ञानिक चिंतन के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले श्रमण संस्कृति के संत कवियों से भी प्राप्त होती है। दलित संत कवियों में इस तरह की चेतना का विकास बुद्ध के पटिच्चसमुपाद, अनात्मवाद और अनित्यवाद जैसे भौतिकवादी दर्शन के द्वन्द्ववाद पर आधारित है।

दलित साहित्य में जितनी चर्चा आत्मकथाओं को लेकर हुई है उतनी लोकगीतों की नहीं हुई जबकि दलित साहित्य में लोकगीतों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। लगभग सभी दलित रचनाओं की शुरूआत लोकगीतों से ही हुई। मराठी ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं के दलित साहित्य में भी यही स्थिति रही है।

अम्बेडकरी लोकगीतों का जन्म आंदोलन की ऊर्जा से हुआ है। डॉ. अम्बेडकर के धर्मांतरण और उनके महापरिनिवार्ण के बाद पूरा कालखण्ड दलित साहित्य से प्रभावित हुआ। विशेष रूप से मराठी दलित कविता, और लोकगीतों में डॉ. अम्बेडकर प्रणीत आंदोलन के स्वर अभिव्यक्त होने लगे थे। चवदार तालाब का सत्याग्रह, मनुस्मृति दहन, कालाराम मंदिर प्रवेश, रिपब्लिकन और दलित पैंथर आदि आंदोलनों का गहरा प्रभाव दलित लोकगीतों पर पड़ा। अम्बेडकरी लोगगीतों में लोकतंत्र, समता, बंधुता, स्वाधीनता, मुक्ति संघर्ष, आदि का जिक्र बार–बार आता है। साथ ही जीवन मूल्यों की पक्षधरता का ऐलान, दलित लोककवी बुलंद आवाज में करता है।

महाराष्ट्र में दो बड़े आंदोलन 'धर्मातरण और नामांतर हुए जिसने समूचे दलित समाज को आंदोलनमय बना दिया। आरक्षण, शिक्षा, संघर्ष, संगठन, अंतर्जातीय विवाह आदि विषयों पर अम्बेडकरी लोककवियों ने अनेक रचनाएं लिखी। दलितों और स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों, शोषण और दमन के विरूद्ध अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने अपनी आवाज बुलंद की। हिंदू देवी–देवताओं और जाति–व्यवस्था के विरोध में अपना गुस्सा जाहिर किया। इसीलिए अम्बेडकरी लोकगीतों का स्वर आक्रोश से भरा,

अधिकारों की मांग करनेवाला, करूणा उत्पन करनेवाला है। आगे चलकर यह वेदना के साथ नकार, निषेध के स्वर में बदल गया। उन्हें लगने लगा अपने अधिकार भारतीय समाज में विनम्र भाषा से मिलनेवाले नहीं हैं। इसलिए अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने समाज व्यवस्था को नकारना शुरू किया। इसलिए लोकगीतकार अम्बेडकरी लोकगीतों में विद्रोह का स्वर ज्यादा प्रभावशाली बनाने लगें।

डॉ. अम्बेडकर की वैचारिकता और दलित मुक्ति आंदोलन को आधार मानकर मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों ने दलित समाज की अभिव्यक्ति को एक नया स्वरूप दिया था एवं उसे सामाजिक यथार्थ से जोड़ा और दलित मुक्ति आंदोलन को नई आकांक्षाओं की ओर ले जाने की कोशिश की।

वामन दादा कर्डक, प्रल्हाद शिंदे, संभाजी भगत, आदर्श शिंदे, आनंद शिंदे, शितल साठे के गीतों में आज के भारत के दलितों के आक्रोश तथा आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है। इस भावना के साथ कि दलित सदियों से शोषित रहे हैं, दमित रहे हैं, वे महान भारतीय सभ्यता के निर्माता रहे हैं और अब समय आ गया है कि सदियों पुराने इस अंधकार से उन्हें बाहर निकला जाए। इन कविताओं के केंद्र में डॉ. अम्बेडकर हैं, जो दलित आंदोलन के नायक हैं और भारत के एक आधुनिक निर्माता।

मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण इस विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं दलित समाज से ही आता हूँ इस कारण मुझे घर में मां–पिता जी ने उनके जीवन के कटू और दर्द भरे अनुभव कई बार सुनाएँ है। किस तरह उन्होंने उस समय के हालातों में संघर्ष किया। वर्तमान समय में उस तरह के हालात तो नहीं है किंतु होने वाले अत्याचार पूरी तरह से बंद भी नहीं हुऐ है। आज भी मीडिया में

दलितों पर हो रहे अत्याचारों को छुपाया जाता है। सोशल मीडिया के कारण इन अमानुष अत्याचारों का पता चल रहा है। इन्हीं अत्याचारों पर प्रहार करने वाले मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों पर शोध प्रबंध लिख कर मैं हिंदी दलित साहित्य में योगदान करने का प्रयास किया है।

**मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण** इस शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में विभाजित किया जा रहा है। **पहला अध्याय मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का सैद्धांतिक पक्ष** है। इस बिंदु में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि महत्वपूर्ण विचारों का विवेचन किया गया है और अंत में शिक्षा, संगठन, संघर्ष, स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व इन मानवीय नैतिक मूल्यों को यहां स्पष्ट किया गया है। अम्बेडकर से पहले मराठी दलित संतों के काव्य में लोकगीतों की परंपरा किस रूप में विद्यमान थी इसका संक्षिप्त परिचय इस बिंदु में दिया गया है। डॉ.अम्बेडकर पूर्वपरंपरा में महाराष्ट्र में दलित समाज तमाशा से किस तरह सत्यशोधकी जलसों की तरफ आकर्षत हुआ और दलित शाहीरों का किस तरह योगदान रहा इसका अध्ययन किया गया है।

अगले बिंदु में मानवमुक्ति की लड़ाई और अम्बेडकरी लोकगीतों की शुरुआत इस में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के आंदोलनों की चर्चा की है। इन आंदोलनों में सबसे पहला आंदोलन महाड का चवदार तालाब आंदोलन, जो दलितों की मुख्य आवश्कता थी पानी इसके लिए यह ऐतिहासिक आंदोलन किया गया था। दूसरा आंदोलन कालाराम मंदिर आंदोलन था। फिर भारतीय गोलमेज परिषद में दलित पक्ष को उठाना।

अंत में धर्मपरिवर्तन की घोषणा आदि पर विचार मंथन किया है। इन आंदोलनों को दलित समाज तक ले जाने वाले दलित आंदोलनकर्ताओं का संक्षिप्त परिचय भी दिया है। क्योंकि आंदोलनों में काम करने वाले लोगों के कारण ही आंदोलन सफल हो पाया है। इसलिए उनका परिचय देना महत्वपूर्ण है। अगले बिंदु में मराठी दलित साहित्य में अम्बेडकरपूर्व लोकगीतकार, अम्बेडकर के समकालीन लोकगीतकार और अम्बेडकरोत्तर मराठी लोकगीतकारों का परिचय देते हुए उनके अम्बेडकरी लोकगीतों का विश्लेषण किया गया है।

**दूसरा अध्याय मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद** है। इस अध्याय का पहला शीर्षक है हिंदी में मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों के अनुवाद की परंपरा। इसमें मराठी से हिंदी में किये गये अनुवाद कार्य का परिचय दिया गया है। जैसे दलित आत्मकथा, उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता आदि अनुवाद परंपरा को परिचय दिया गया है। अगला बिंदु है मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण। इस में अम्बेडकरी लोकगीतों को विषयवस्तु के आधार अनेक बिंदुओं में विभाजित किया गया है। जैसे सामाजिक लोकगीत, आर्थिक लोकगीत, राजनीतिक लोकगीत, स्तुतीपरक लोकगीत, क्रांतिकारी लोकगीत, वैचारिक लोकगीत, वंदन लोकगीत, प्रतिरोध के लोकगीत, ऐतिहासिक लोकगीत आदि विषयों में विभाजित कर विवेचन किया गया है।

**तीसरा अध्याय मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का विश्लेषण** है। इस अध्याय में अम्बेडकरी लोकगीतों का विश्लेषण अनेक बिंदुओं के माध्यम से किया है। इन बिंदुओं में सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का अध्ययन किया गया है। फिर शास्त्र का विरोध किया गया है। वर्चस्ववादी राजनीति

का विरोध इस पर विचार किया गया है। ऐतिहासिक परंपराओं का खंडन इसका भी विश्लेषण किया गया है। वर्ण व्यवस्था का विरोध बाबासाहब के लोकगीतों के माध्यम से किस तरह हुआ इसका विवेचन किया गया है। राज्य समाजवाद समर्थन, अम्बेडकरी लोकगीतों में यथार्थवाद और अम्बेडकरी लोकगीतों में मानवतावाद आदि बिंदुओं का विश्लेषण किया गया है।

चौथा **अध्याय मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों की भाषा एवं शिल्प** है। इस अध्याय में अम्बेडकरी लोकगीतः वैकल्पिक भाषा की तलाश और गद्यात्मकता सपाटबयानी इन बिंदुओं के माध्यम से दलित समाज और लोकगीतकारों की भाषा पर ग्रहण अध्ययन किया गया है। अम्बेडकरी लोकगीतों में प्रतीक और बिम्बों का प्रयोग आदि का विवेचन किया है। अगले बिंदु में अम्बेडकरी लोकगीतों में वैचारिक सौंदर्य और अम्बेडकरी लोकगीतों में अन्य भाषाओं के शब्द आदि का सुक्ष्म अध्ययन किया गया है।

**पाँचवा अध्याय मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों के हिंदी अनुवाद की समस्याएँ।** अम्बेडकरी लोकगीतों का भावानुवाद यहाँ किया गया है। इस अध्याय में गीतों का अनुवाद करते समय किन–किन समस्याओं का समाना करना पड़ा और उन समस्याओं का निराकरण कैसे किया इसका विवेचन किया है। जैसे हिंदी और मराठी भाषा की लेखन विधि पर विचार मंथन किया गया है। फिर दोनों भाषाओं के शब्दार्थ एवं अर्थ भिन्नता को देखते हुए उनके उदाहरण भी स्पष्ट किऐ गये है। व्याकरणगत समस्याओं में लिंग, वचन कारक और शब्दशक्ति आदि का विवेचन किया गया है। अगले बिंदु में प्रादेशिक शब्दों के अनुवाद की समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। रिश्तों के नाम संबंधी समस्या, जन जीवन से संबंधित शब्द ग्रामीण शब्दों

के अनुवाद की समस्या, आदि बिंदुओं पर अध्ययन कर उन समस्याओं का निराकरण करने की कोशिश की गयी है।

अंत में शोध प्रबंध का उपसंहार लिखते हुए शोध प्रबंध की उपलब्धियों, एवं संभावनाओं को प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबंध के अंत में परिशिष्ट को जोड़ा गया है। परिशिष्ट में लोकगीतकारों के मूल मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों को रखा गया है। दूसरे परिशिष्ट में शोध प्रविधी के बारे में चर्चा किई है। तीसरे परिशिष्ट में मराठी अम्बेडकरी लोकगीतकारों के साक्षाकार लिए गये है। इन साक्षात्कारों के माध्यम से महाराष्ट्र के अम्बेडकरी लोकगीत कला को जानने और लोकगीतकारों की आर्थिक, सामाजिक, स्थिति को जानने और समझने की कोशिश की गयी है।

मैंने अपनी शोध प्रबंध की साधना को आदरणीय गुरुवर प्रो. वी.कृष्ण जी के सान्निध्य में रहकर की है। उन्होंने शोध से संबंधित विषय चयन में मेरी सहायता कर, निर्देशन किया। तथा शोध प्रबंध के प्रत्येक चरण में शोध संबंधी जटिल समस्याओं को दूर कर समय–समय पर मुझे प्रोत्साहित करते रहे। एम.फिल से लेकर पी.एच.डी तक सर के निर्देशन में शोध कार्य संपन्न करता आ रहा हूँ। यह मेरे लिए गर्व की बात है। इस शोध कार्य को सफल बनाने के लिए मैं आदरणीय गुरुवर प्रो. वी. कृष्ण सर का मैं हृदयपूर्वक आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को संपन्न करने में दलित आदिवासी अध्यययन केंद्र के अध्यक्ष आदरणीय प्रो.आर.एस सर्राजू जी का भी में हृदयपूर्वक आभार प्रकट करता हूँ। डी.आर.सी सदस्य प्रो. सच्चिदानंद चतुर्वेदी सर

और प्रो. गजेंद्र पाठक सर, ने समय–समय पर समस्याओं का निराकरण किया। प्रो. विष्णु सरवदे सर, प्रो. भीम सिंह सर आदि विद्वानों ने भी मेरी समस्याओं को हल किया इसलिए मैं हृदय से सभी विद्वानों का आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही विश्वविद्यालय के ग्रंथालय को भी मैं धन्यवाद देता हूँ। मैं अपने माता–पिता और परिवार का भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे उच्च शिक्षा प्राप्त करने का मौका दिया। उनकी प्रेरणा से ही मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ।

# पहला अध्याय

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का सैद्धांतिक पक्ष

## 1.1 अम्बेडकरी लोकगीतों का सैद्धांतिक पक्ष

इस अध्याय में अम्बेडकरी लोकगीतों का सैद्धांतिक पक्ष पर बात करने वाले है। अम्बेड़करी लोकगीतों में अम्बेडकर की प्रगतिशील एवं परिवर्तनशील विचारधारा को पढ़ा और सुना जाता है। इन लोकगीतों की आधारभूमि अम्बेडकरी विचारधारा है। उनके विचार को आत्मसात कर इन गीतकारों ने समाजप्रबोधन का कार्य शुरु किया। डॉ. अम्बेडकर के आंदोलन, सभा, विचार, संकल्प, आदि गतिविधियों को ये गीतकार शब्द में बांधकर फिर से यह जीवित कर देते है। यह अमूल्य विचार ही गीतों की सैद्धांतिकी है। इसी विचारों पर गीतों की रचना हुई है। डॉ.अम्बेडकर के अमूल्य विचारों को हम सिद्धांत के रूप में आत्मसात कर रहे है। उनके विचार आगे हम देख रहे है।

### 1.1.1 सामाजिक

डॉ. अम्बेडकर के व्यक्तित्व में वैज्ञानिक मस्तिष्क तथा मानवीय हृदय था। वह वैज्ञानिक एवं मानवतावादी मूल्यों के कट्टर समर्थक थे। प्राचीन हिंदू समाज व्यवस्था से वह असंतुष्ट थे क्योंकि इस व्यवस्था में स्वतंत्रता, समता एवं मानवता के लिए उचित स्थान नहीं है। सच बात यह है कि स्वतंत्रता, समता, प्रेम, और सद्भावना, ज्ञान आदि सुखी जीवन के लिए अनिवार्य हैं। वह नवीन समाज चाहते थे। नवीन समाज की स्थापना वर्ण अथवा जाति के आधार पर नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातृत्व के सिद्धांतों पर चाहते थे। ऐसा समाज शांति एवं सुजाव के द्वारा ही संभव हो

सकता है और यदि कहीं कानून का सहारा भी लेना आवश्यक हो जाये, तो वह ठीक ही मानते थे। समाज में बहुत सी बातें नैतिकता के आधार पर चलती हैं, तो कहीं कानून का सहारा लेना पड़ता है। इन्हीं तत्वों से नवीन समाज का निर्माण होता है।

कन्हैयालाल चंचरीक के अनुसार ''निःसंदेह पुणे में सामाजिक परिवर्तन, दलित–शूद्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा जातिप्रथा और अस्पृश्यता के निवारण, सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार का जो सूत्रपात फुले ने किया था, उसे बीसवीं सदी में डॉ.अम्बेडकर के दलित आंदोलन और दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के गैर ब्राम्हण आंदोलन के नेताओं ने वैचारिक आधार प्रदान किया और सामाजिक, राजनीतिक तथा संवैधानिक अधिकार प्राप्त करने में आशातीत सफलता प्राप्त की।''[1] इस प्रकार ज्योतिबा फुले, और सावित्री फुले के आंदोलन को अम्बेडकर ने आगे बढ़ाया।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के सामाजिक विचारों को जानने के दो महत्वपूर्ण स्रोत ग्रंथ रूप में उपलब्ध हैं। 13 मई 1913 को कोलम्बिया विश्वविद्यालय के मानववंश शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में प्रस्तुत उनका एक आलेख जो बाद में ग्रंथ रूप में प्रकाशित हुआ, इस आलेख का शीर्षक था–'भारतीय जातिः उत्पत्ति, विकास और कार्यपद्धति'। दूसरा स्रोत लाहोर 'जात–पात तोड़क मण्डल' द्वारा आयोजित एक परिषद् के अध्यक्ष रूप में दिया गया व्याख्यान। इसका विषय था, हिंदूओं की जाति प्रथा : उसे नष्ट करने के उपाय' इसके आलावा दो अन्य ग्रंथों का आधार भी जरूरी है। 'शूद्र कौन थे? और 'अस्पृश्य कौन थे? और वे अस्पृश्य कैसे

[1] कन्हैयालाल चंचरीक– भारत में दलित आंदोलन– एं मूल्यांकन, सृष्टि बुक डिस्टीब्यूटर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, 2006, पृ.सं, VI भूमिका से।

बने? इस प्रकार उपर्युक्त दो आलेखों और दो ग्रंथों के आधार पर उनके सामाजिक विचारों को जाना जा सकता है।

वर्णव्यवस्था का वास्तविक स्रोत ऋग्वेद का अंग पुरूष सूक्त है। हिंदू विद्वान इस व्यवस्था को श्रम विभाजन का आधार मानते हैं। इस व्यवस्था में "मनुष्य के स्वभाव एवं रूचि के अनुसार कर्तव्यों का विभाजन किया गया है। अर्थात् व्यक्ति के गुण कर्म को ध्यान में रखकर कर्तव्य दिये जाते हैं। मनुष्य में कुछ ऐसे जन्म जात गुण हैं, जिनके आधार पर उन्हें विभिन्न वर्णों में विभाजित किया गया है। "[2] डॉ. अम्बेडकर कहते है कि "वर्ण व्यवस्था का आधार मुख्यतः गीता में मिलता है। गीता में इस समाज व्यवस्था को एक दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान किया गया। यही कारण है कि हिंदू विद्वान गीता की सत्यता एवं पवित्रता के साथ ही साथ वर्णव्यवस्था को भी सत्य एवं पवित्र मानते हैं, हालांकि यह बात बहुत ही विवादग्रस्त है कि गीता कहाँ तक सत्य एवं पवित्र है।"[3]

डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचारों को जानना है तो सामाजिक न्याय की अवधारणा को समझे बिना हम डॉ. अम्बेडकर की सामाजिक विचारों को नहीं समझ सकेंगे। सामाजिक न्याय की अवधारणा एक बहुत ही व्यापक शब्द है। इसमें एक व्यक्ति के नागरिक अधिकार तो है ही साथ ही सामाजिक (भारत के परिप्रक्ष्य में जाति एवं अल्पसंख्यक) समानता के अर्थ भी निहितार्थ है। ये निर्धनता, साक्षरता, छुआछूत, मर्द–औरत हर पहलुओं को और उसके प्रतिमानों को इंगित करता है। सामाजिक न्याय

---

[2] हिन्दू सोशल ऑर्गनाइजेशन, 1954,– पी.एन.प्रभू, पृ.सं. 340,341.

[3] बुद्ध एण्ड द् फ्यूचर ऑफ हिज रिलिजन,– बी. आर. अम्बेडकर, लेख, 1950, पैरा 11.

की अवधारणा का मुख्य अभिप्राय यह है कि नागरिक–नागरिक के बीच सामजिक स्थिति में कोई भेद न हो।

सभी को विकास के समान अवसर उपलब्ध हो। विकास के मौके अगड़े–पिछड़े को उनकी आबादी के मुताबिक मुहैया हो ताकि सामाजिक विकास का संतुलन बनाया जा सके। सामाजिक न्याय का अंतिम लक्ष्य यह भी है की, समाज का कमजोर वर्ग, जो अपना पालन करने के लिए भी योग्य न हो। उनकी विकास में भागीदारी सुनिश्चित हो। जैसे विकलांग, अनाथ बच्चे। दलित, अल्पसंख्यक, गरीब लोग, महिलाएँ अपने आपको असुरक्षित न महसूस करें। संसार की सभी आधुनिक न्याय प्रणाली प्राकृतिक न्याय की कसौटी पर खरा उतरने की चेष्टा करती है, अंतिम लक्ष्य होता है कि समाज के सबसे कमजोर तबके का हित सुरक्षित हो सके अन्याय न हो। डॉ. अम्बेडकर जातिवाद एवं वर्ण व्यवस्था पर आधारित किसी भी समाज को न्यायोचित नहीं मानते थे। वह एक नवीन समाज की स्थापना करना चाहते थे। वह कौन सा नवीन समाज है? "यदि आप मुझ से पूछते हैं, डॉ. अम्बेडकर कहते थे, " तो मेरा आदर्श समाज वह होगा, जो स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातृत्व पर आधारित है। "[4]

यदि वर्तमान भारतीय न्याय प्रणाली पर गौर करे तो यह कई विभागों में बांटी गई है, जैसे फौजदारी, दीवानी, कुटूम्ब, उपभोक्ता आदि। लेकिन इन सभी का किसी न किसी रूप में सामाजिक न्याय से सरोकार होता है। सामाजिक न्याय की अवधारणा के मुख्य आधार स्तंभ ये हैं–

**1.** जातिय ऊँच–नीच को मिटाना

**2.** धार्मिक ऊँच–नीच की मान्यता को मिटाना

[4] एनिहिलेशन ऑफ कास्ट,–बी.आर.अम्बेडकर, पृ.42,43

**3.** लैंगिक भेदभाव को खत्म करना

**4.** क्षेत्रीयता के भेदभाव को खत्म करना

डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय के सिद्धांत को समझने से पहले परंपरागत सामाजिक न्याय व्यवस्था को जानना आवश्यक है। भारत की सामाजिक न्याय प्रणाली में मनुस्मृति के नियम कड़ाई से लागु होते थे। आज भी खाप पंचायतों द्वारा दिये जाने वाले निर्णयों का आधार मनुस्मृति ही है। खाप पंचायत ही क्यों समस्त जातिय पंचायत अपने सामाजिक फैसले अनजाने में मनु के नियमों का पालन करते देखी जती है। उदाहरण देखें– यदि कोई भाई–बहन संपत्ति के विवाद को लेकर परंपरागत जातिय पंचायत से फैसला चाहता है तो उस जाति पंचायत बहन को संपत्ति से बेदखली का फरमान जारी करेगी। प्रश्न ये है कि ऐसे फरमान का आइडिया इन्हें कहाँ से मिलता है, दरअसल ये आइडिया इन्हें मनुस्मृति से मिलता है जो भारतीय जनमानस में समाया हुआ है।

डॉ. अम्बेडकर के मतानुसार "अछूतों के लिए भेदभाव की समस्या, उनके लिए अपनी मानवीयता की पूर्णप्राप्ति की समस्या के बाद दूसरी गंभीर समस्या है। अछूतों के विरूद्ध भेदभाव हिंदुओं के द्वारा इतने विशाल पैमाने पर किया जाता है, कि कोई बाहरी व्यक्ति उसकी कल्पना तक नहीं कर सकता। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसमें अछूतों और हिंदुओं के बीच संघर्ष न हो और जिसमें अछूतों को भेदभाव का शिकार न होना पड़ता हो। इसका स्वरूप भी अत्यंत उग्र है।"[5] भारतीय समाज में

---

[5] डॉ.भीमराव अम्बेडकर–अस्पृश्यता, अनुवादक एन.एल.खण्डेलवाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,प्रथम संस्करण, 1992 पृ.17।

असमानता समाज का महत्वपूर्ण अंग बन गयी थी, यदि समानता की गूंज भारत में अम्बेडकर के द्वारा नहीं लायी जाती, तो उसका कुछ दूसरा रूप आज होता। जो देश की एकता में बाधक होती।

वास्तव में भारत में परंपरागत सामाजिक न्याय प्रणाली तीन बिंदुओं पर आधारित होती है।

1. अंधविश्वास
2. जाति भेद
3. लैंगिक भेद

इस प्रणाली पर विश्वास या श्रद्धा का मुख्य आधार धार्मिक ग्रंथ है। जो ऐसे विश्वासों की पुष्टि करते हैं। इन ग्रंथों पर प्रश्न न उठे इसलिए इन्हें अपौरूषेय यानी की ईश्वर द्वारा लिखित कहा गया। ऐसा करने का एकमात्र लक्ष्य यही था, किसी खास जाति विशेष, लिंग विशेष को बिना मेहनत सुख–सुविधा मुहैया कराया जा सके। गौरतलब है कि ऐसा विश्व के अन्य समुदाय में भी ऐसा होता था। ये ग्रंथ ब्राम्हण को सर्वश्रेष्ठ और अन्य को गुलाम बनाने की और प्रेरित करते हैं। गौरतलब है कि भारत में जातिय श्रेष्ठता का आधार जन्म है न कि कर्म। मनुस्मृति अध्याय 10 श्लोक क्रमांक 129 देखें।

किसी भी शूद्र को संपत्ति का संग्रह नहीं करना चाहिए चाहे वह इसके लिए कितना भी समर्थ क्यों न हो, क्योंकि जो शूद्र धन का संग्रह कर लेता है, वह ब्राम्हणों को कष्ट देता है। मनुस्मृति अध्याय 1 श्लोक 87 से 91 देखें। ब्राम्हणों के लिए उसके अध्ययन–अध्यापन, यज्ञ करने दूसरों से यज्ञ कराने दान लेने एवं देने का आदेश दिया। लोगों कि रक्षा करने, दान देने यज्ञ करने पढ़ने एवं वासनामयी वस्तुओं से उदासीन रहने का

आदेश क्षत्रियों को दिया। मवेशी पालन, दान देने यज्ञ कराने पढ़ने व्यापार करने धन उधार देने तथा खेती का काम करने की जिम्मेदारी वेश्यों को दी गई। भगवान ने शूद्र को एक कार्य दिया है उन पूर्व लिखित वर्गों की बिना दुर्भाव से सेवा करना।

"शास्त्रों प्रति पवित्रता की भावना का अंत होना आवश्यक है। यह बुद्धि एवं नैतिकता की मांग है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में यदि कोई भी परिवर्तन आता है, तो वह बुद्धि अथवा नैतिकता का ही परिणाम होता है। लेकिन जब पवित्रता का भाव बहुत शक्तिशाली बन जाता है, तो बौद्धिक एवं नैतिक प्रगति पर वह रोक लगा देता है। पवित्रता के भाव से एक और हानि होती है कि प्रगतिशील प्रवृत्तियों को निरूत्साह होना पड़ता है। हिंदू समाज व्यवस्था को आदर्श एवं पवित्र ही नहीं समजा जाता है, बल्कि उसे दैवीय भी माना जाता है। फलस्वरूप इसमें अनेक बुराइयों का समावेश हो चुका है। इसलिए यदि नवीन समाज की स्थापना करनी है, तो शास्त्रों के प्रति दैवीय एवं पवित्रता की आस्था का अंत करना ही होगा। "[6]

इस दृष्टि से, डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, "हिंदू धर्म एक 'नियम संहिता' है, जिसमें सभी प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक नियम मिलते हैं। इसमें आज्ञाओं एवं निषेधों का समावेश होता है। हिंदू धर्म सबके लिए, प्रत्येक समय, प्रत्येक स्थान में और समान रूप से सच्चा धर्म नहीं है। एक हिंदू भी अपने धर्म का ठीक तरह पालन नहीं करता। वह कहता कुछ है और करता कुछ है। डॉ. अम्बेडकर हिंदू धर्म को धर्म नहीं मानते, वह इसे 'एक वैधानिक वर्ग नैतिकता' (A Le galized Class-

[6] एनिहिलेशन ऑफ कास्ट,—बी.आर.अम्बेडकर, पृ.61,70

Ethics) मानते थे। हिंदू धर्म में नियम सदा एक से ही रहते हैं। साथ ही साथ ये नियम असमान भी हैं अर्थात् सबके लिए समान नहीं हैं। "[7]

भारत में आजादी मिलने के दौरान दो आधुनिक सामाजिक न्याय की अवधारणायें उभर कर सामने आयी।

1. गांधीवादी सामाजिक न्याय की अवधारणा
2. अम्बेडकरवादी सामाजिक न्याय की अवधारणा

1. गांधीवादी सामाजिक न्याय की अवधारणा गांधीजी अपने आपको प्रगतिशील एवं आधुनिक मानते थे। वे आधुनिक न्याय प्रणाली को तो मानते थे लेकिन जातिय और धार्मिक ऊँच–नीच को भी मान्यता देते थे। वे ये तो मानते थे कि सभी जातियों को आपस में मिलने–बैठने का अधिकार होना चाहिए, छुआछूत नहीं होना चाहिए, लेकिन जाति आधारित कार्य नही त्यागना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में वे कहते है, कि यदि तुम अपनी जाति में निर्धारित जातिगत गंदे कामों को मन लगाकर करते हो तो तुम्हारा अगला पुनर्जन्म ऊँची जाति में होगा। इस प्रकार वे पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। एक खास वर्ग के नेता गांधी के इस सिद्धांत को मानते हैं। अब इस सिद्धांत को दक्षिणपंथी विचारधारा के नाम से भी जाना जाता है।

2. अम्बेडकरवादी सामाजिक न्याय की अवधारणा डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय का सिद्धांत प्राकृतिक न्याय के अवधारणा के ज्यादा नजदीक है। डॉ. अम्बेडकर गांधी के सिद्धांत को एक छल कहते थे। वे मानते है कि जिस सामाजिक न्याय के सिद्धांत में जातिगत ऊँच–नीच, धार्मिक कट्टरता, लिंग भेद, पूर्वजन्म की कल्पना को मान्यता दी जाती है। वह सामाजिक न्याय हो ही नहीं सकता। वे इसे ब्राम्हणवादी न्याय का

[7] एनिहिलेशन ऑफ कास्ट,–बी.आर.अम्बेडकर, पृ.72

सिद्धांत कहते हैं क्योंकि इस सिद्धांत में किसी जाति विशेष, लिंग विशेष का हित सुरक्षित है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर जिस सामाजिक न्याय की अवधारणा का प्रतिपादन करते है। वे नस्ल भेद, लिंग भेद और क्षेत्रीयता के भेद मुक्त है। इस अवधारणा में समाज के कमजोर वर्ग के साथ न केवल न्याय हो, बल्कि उनके अधिकार और हित सुरक्षित हो। संविधान निर्माण में उनके अधिकार और हित सुरक्षित हो। संविधान निर्माण में उनके इस सिद्धांत की भूमिका स्पष्ट देखी जा सकती है। डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय सिद्धांत निम्न सामाजिक बाधाओं पर काम करता है।

1. सामाजिक बहिष्कार
2. पुरुष सत्ता
3. जातिय आधारित काम करने की बाध्यता
4. भूमि या संपत्तियों का असमान वितरण
5. महिलाओं को पिता एवं पति की संपत्ति में अधिकार

भारतीय संविधान इस मामले में सर्वोच्च और उत्कृष्ठ है। इसमें सामाजिक न्याय की पूर्ति के लिए इन बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। सामाजिक न्याय पाने की दिशा में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया सहित तमाम केंद्रों के प्रयास कहीं न कहीं गलत कार्यान्वयन और असंतुलन के कारण फलीभूत नहीं हो पा रहे हैं। जरुरत और समय की मांग है कि उचित और संतुलित नीतियों–व्यवहारों को लागु किया जाए जिससे कि सामाजिक न्याय को सामाजिक प्रगति का हिस्सा बनाया जा सके।

अरस्तु के अनुसार व्यक्ति समाज का सदस्य तो हो सकता है लेकिन, नागरिक वह तभी कहलायेगा, जबकि वह राज्य की राजनीति में

सक्रिय रूप से योगदान करता है और इसी संदर्भ में कहते हैं कि किसी भी राज्य या समाज में किसी व्यक्ति का जो सक्रिय योगदान होता है। उसके समानुपात में समाज की संपत्ति का उचित वितरण वितरणात्मक न्याय कहलाता है और इसका निषेध वितरणात्मक सामाजिक अन्याय कहलाता है। लेकिन यह एक आदर्श स्थिति है। व्यवहार में यह कहीं पर भी लागु नहीं है क्योंकि व्यक्ति सदस्य के योगदान का ठीक–ठीक आकलन संभव नहीं है। इसका कोई पैमाना नहीं है। सीमा रेखा नहीं है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि सामाजिक न्याय के नारे ने विभिन्न समाजों में विभिन्न तबकों को अपने लिए गरिमामय जिंदगी की मांग करने और उसके लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है। खास कर वंचित तबको में।

### 1.1.2 धार्मिक

डॉ. बाबासाहब के पिता पर समाज सुधारक संत कबीर के विचारों का प्रभाव था। इस कारण बाबासाहब बचपन में ही कबीर के विचारों से परिचित हुऐ। सन 1917 से उनका सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ। तब से लेकर सन 1935 तक वे हिंदू धर्म में सुधार लाने के लिए प्रयत्नशील रहे। वे चाहते थे कि हिंदू धर्म अधिक उदारता से अछूतों को स्वीकार करे, उन्हें उनके मानवीय अधिकार लौटा दे। हिंदू धर्म के प्रति उनकी शिकायत थी कि वह विषमता का समर्थन करता है। “जो धर्म विषमता का समर्थन करता है, उसके विरोध का निर्णय हमने लिया है। अगर हिंदू धर्म अस्पृश्यता का धर्म है, तो उसे समानता का धर्म बनना चाहिए। अगर हिंदू धर्म सामाजिक समता का धर्म बनना चाहता है तो अस्पृश्यों को मंदिरों में

मुक्त प्रवेश देकर बात बननेवाली नहीं है। इसके लिए चातुर्वर्ण्य निर्मूलन की नितांत आवश्यकता हैं। धर्म और समाज की विषमता की जड़ चातुर्वर्ण्य व्यवस्था है। चातुर्वर्ण्य ही अस्पृश्यता की जननी है। जातिभेद और अस्पृश्यता विषमता के अन्य रूप हैं। अगर इस जड़ को नष्ट नही किया गया तो अस्पृश्य वर्ग इस धर्म को निश्चित ही त्याग देगा। "[8]

इस उद्धरण से यह स्पष्ट है कि डॉ. बाबासाहब हिंदू धर्म की सीमाओं को बतलाते हुए उसमें शुद्धता का आग्रह कर रहे थे। तत्कालीन विद्वत्जनों से, धर्मप्रमुखों से वे बार–बार अपील कर रहे थे कि हिंदू धर्म में स्थित इन दोषों को प्रयत्नपूर्वक हटाया जाय। वे खुद समानता की दिशा में इस धर्म को उन्मुख करने के लिए प्रयत्नशील थे। चवदार तालाब का सत्याग्रह, नाशिक के कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह इस बात के प्रमाण हैं। वर्णव्यवस्था की अशास्त्रीयता को वे अपने ग्रंथों द्वारा सिद्ध कर रहे थे। परंतु हिंदू धर्म के तथाकथित ठेकेदार उनके इस प्रयत्न को गंभीरता से ले नहीं रहे थे, उलटे वे इन सुधारों का विरोध ही कर रहे थे। महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति भी आरंभिक वर्षों में वर्णव्यवस्था का समर्थन कर रहे थे।

वि.दा. सातवलेकरजी के लेख के दिये गये उत्तर में उन्होंने लिखा। हम हिंदू हैं, हिंदूओं के साथ ही जियेंगे, हिंदूओं के साथ ही मरेंगे, हिंदू हमारे साथ चाहे जैसा व्यवहार करें, पर हम हिंदूओं की, हिंदू धर्म की और हिंदू देवी–देवताओं की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए ही अपना सर्वस्व अर्पित करेंगे। ऐसी घोषणा अस्पृश्य करें। उनकी इस सहनशीलता से द्रवित होकर किसी दिन सवर्ण उन्हें मानवीय अधिकार देंगे, तब तक हम प्रतीक्षा करें– ऐसी आपकी सलाह है। कोई दूसरा व्यक्ति भले ही इसे

[8] महामानव डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर– प्रभाकर दिघे, पृ.सं. 140

स्वीकार करे पर मैं इसे कतई स्वीकार कर नहीं सकता। पत्र के अंत में वे आक्रोश के साथ लिखते है, ''मेरी दृष्टि में हिंदू धर्म न होकर लोगों को पागल करने की जड़ी–बूटी है। ''[9] हिंदू धर्म की आत्मा विषमता की है, उसके शास्त्र विषमता का प्रचार करते हैं। ऊँच–नीच की धारणा इस धर्म की विशेषता है। इस धर्म के सिद्धांत भले ही आकर्षक हों, परंतु मानवीय अधिकार विशेष वर्ग तक ही सीमित किये गये हैं, ऐसी इनकी स्थापना है।

डॉ. अम्बेडकर का जीवन दार्शनिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान रहा हैं उनका धर्म परिवर्तन एक अद्वितीय ऐतिहासिक घटना थी। पांच लाख लोगों के साथ उन्होंने 14 अक्टूबर, 1956 को नागपूर में हिंदू धर्म का परित्याग किया और बौद्ध धर्म में शरण ली। यह निर्णय एक स्वतंत्र व्यक्ति की इच्छा का अभिव्यक्तीकरण था। इसके पीछे अनेक सामाजिक प्रयोजन एवं आध्यामिक प्रेरणाएं थीं। इस निर्णय का दार्शनिक पक्ष बहुत ही महत्वपूर्ण है।

डॉ. अम्बेडकर ने अपनी बौद्विक विचारधारा को व्यावहारिक स्तर पर प्रयोग करके देखा, जिसके कारण उन्हें धर्म परिवर्तन की प्रेरणा मिली। यह उनका एक स्वप्रेरित विचार था। इसमें कोई आर्थिक प्रयोजन अथवा राजनीतिक चाल नहीं थी। उन्होंने स्वयं कहा कि "आज मैं अपने प्राचीन धर्म को, जो असमता एवं अत्याचार पर आधारित है, त्यागकर एक नये जन्म में पदार्पण कर रहा हूँ। अवतारवाद के दर्शन में मेरा कोई विश्वास नहीं है और यह कहना कि बुद्ध विष्णु के अवतार थे, दोषपूर्ण एवं मिथ्या कथन है। अब मैं किसी भी हिंदू देवी–देवता का भक्त नहीं हूं। मैं श्राद्ध

[9] डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर– भालचंद्र फडके, पृ.186

नहीं दूंगा। मैं निष्ठापूर्वक बुद्ध के अष्टांग मार्ग का अनुसरण करूंगा। बुद्ध का धर्म ही सच्चा धर्म है और मैं उसके तीन सिद्धांतों ज्ञान, सम्यक पथ एवं दया के अनुसार अपना जीवन यापन करूंगा। "[10]

इस धर्म परिवर्तन का उद्देश्य जीवन को उच्च एवं पवित्र बनाना था। ज्ञान, समता एवं प्रेम के मूलभूत सिद्धांतों के पालन से उस लक्ष्य की प्राप्ति को उन्होंने संभव कर दिया। धार्मिक जीवन व्यतीत करना और गरीबों की सहायता करना उनका पवित्र ध्येय था। उनका धर्म परिवर्तन केवल व्यक्तिगत कृत्य नहीं था, वरन् वह एक सामाजिक घटना थी, एक ऐतिहासिक पर्व था। डॉ. अम्बेडकर ने गिरी हुई मानवता को ऊपर उठाने के लिए सहारा दिया। उस सत्य को प्रकट किया, जो सैकड़ों वर्षों से उपेक्षित था। उनका यह कार्य बहुत सराहनीय एवं मानववादी था। देश विदेश के विद्वानों ने उनके इस पावन कृत्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की और उनको 'बोधिसत्व' की संज्ञा प्रदान की। डॉ. अम्बेडकर ने स्वीकार किया कि ''मैंने बौद्ध धर्म को इसलिए पसंद किया क्योंकि इसमें तीन बातों का सुदंर समावेश हैं, जो अन्य किसी धर्म में नहीं मिलती। बौद्ध प्रज्ञा, करूणा, एवं समता को सिखाता है। इनसे ही मनुष्य का जीवन अच्छा एवं सुखी होता है।''[11] डॉ. अम्बेडकर के धर्म परिवर्तन के पीछे निम्नलिखित दार्शनिक विचार हैं– 1. अच्छे जीवन के लिए समयानुसार मूल्यों का निर्धारण करना और व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सम्मान को बनाये रखना।

2. निम्न स्तर से सर्वोच्च जीवन की ओर अग्रसर होना और अत्याचार एवं दासता के प्रति विद्रोह करना।

---

[10] डॉ. अम्बेडकर– लाइफ एण्ड मिशन, पृ.सं.497.

[11] बी.आर. अम्बेडकर– व्हाई आई लाइक बुदिज्म? वार्ता, बी.बी.सी, लन्दन द्वारा प्रसारित, मई 1956.

3. परंपरागत रीति–रिवाजों को मनुष्य के कल्याण के लिए परिवर्तित करना, उपेक्षित मानवता को उभारना तथा सत्य को उचित स्थान प्रदान करना।

### 1.1.3 राजनीतिक

डॉ. अम्बेडकर मूलतः समाज सुधारक थे। 'समाज सुधारक कहने की अपेक्षा उन्हें संपूर्ण भारतीय समाज–व्यवस्था को नई पद्धति से बांधने के लिए प्रयन्तशील व्यक्ति के रूप में देखना अधिक औचित्यपूर्ण होगा। परंपरा द्वारा नकारे गये एक समूह को मानवीय अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने जो आंदोलन किए, जो संघर्ष किया और धर्म और परंपरा का जो गवेषणापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया, वह अपने आप में विशिष्ट है। वे इस बात को जान चुके थे कि हिंदू मानसिकता में इतनी सहजता से परिवर्तन संभव नहीं है। दलितों को उनके मानवीय अधिकार सवर्णों के हृदय परिवर्तन से प्राप्त नहीं हो सकते, इन मानवीय अधिकारों को राजनीति में सक्रिय हिस्सा लेकर खींच लेना होगा, इस निर्णय पर वे आ चुके थे।

वे जनतांत्रिक व्यवस्था के जबरदस्त समर्थक थे। परंतु जनतंत्र बहुसंख्यकों के मतों पर निर्णय लेता है और इस निर्णय प्रक्रिया में परंपरा से नकारे गये समाज को स्थान मिलना असंभव ही है। इसलिए दलितों को उनके अधिकार दिलाने के लिए, इस निर्णय प्रक्रिया में हिस्सेदारी माँग रहे थे। वे इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि जब तक दलितों को राजनीति में साझेदारी प्राप्त नहीं होगी तब तक उन्हें उनके अधिकार

प्राप्त नहीं हो सकते। इसलिए वे राजनीतिक मोर्चे पर दलितों के अधिकार की लड़ाई लड़ रहे थे।

1. प्रखर बुद्धिमत्ता और तटस्थ संशोधन वृत्ति के सहारे वे भारतीय जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, अस्पृश्यों की उत्पत्ति आदि की खोज कर इन सबकी निरर्थकता को सप्रमाण सिद्ध कर रहे थे।
2. सन 1917 से वे लगातार पहले अंग्रेजों से और बाद में भारतीय संसद से दलितों के राजनीतिक अधिकारों की माँग कर रहे थे।
3. विविध प्रतीकात्मक आंदोलनों, सत्याग्रहों, भाषणों और लेखों द्वारा वे दलित और सवर्णों में वैचारिक परिवर्तन की कोशिश कर रहे थे। दलितों को उनकी 'अस्मिता' का एहसास करा रहे थे।

उनके राजनीतिक विचारों को जानने के लिए उनके आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक विचारों को समझ लेना जरुरी है। अपने राजनीतिक विचार उन्होंने स्वतंत्र पुस्तक रूप में कहीं लिखे नहीं हैं। 'रानडे, गांधी और जीना', 'फेडरेशन व्हर्सेस फ्रीडम,' 'स्टेट्स एण्ड माइनारिटीज', थॉट्स ऑन पाकिस्तान', 'थॉटस ऑन लिंग्वेस्टीक स्टेट्स' आदि प्रकाशित ग्रंथ, भारतीय संविधान सभा और संसद में दिये गये भाषण, उनके द्वारा स्थापित स्वतंत्र मजदूर पार्टी, सेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन और उनके सपनों में स्थित रिपब्लिकन पार्टी आदि के घोषणा पत्र इन सबके आधार पर उनके राजनीतिक विचारों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

बाबासाहब ने अस्पृश्य और दलितों के लिए जो संघर्ष किया हैं, उनकी मुक्ति के लिए जो दर्शन प्रस्तुत किया है वह किसी जाति या वर्ण तक सीमित नहीं है। वे एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था चाह रहे थे जिसमें धर्म, राज्य, सत्ता, पूंजीवाद, पौराहित्यवाद आदि द्वारा स्त्री और पुरुष का शोषण

समाप्त हो जाये। "उनके समग्र राजनीतिक विचारों के केंद्र में 'मनुष्य' है। इस मनुष्य की स्वतंत्रता को नष्ट करनेवाले आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक बंधनों के विरोध में वे अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। उनका राजनीतिक दर्शन व्यक्ति और समाज के परस्पर संबंधों से, परस्पर अनुभव और एहसास के साथ जुड़ा हुआ है। "[12]

उनका राजनीतिक दर्शन व्यक्ति और समाज की मूलभूत आवश्यकताओं तक ही सीमित नहीं हैं। रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति से सत्ता की जिम्मेदारी खत्म होती है, ऐसा वे नहीं मानते। इन जरुरतों के अलावा मनुष्य के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी वे महत्व देते हैं।

'धर्म एक अफीम की गोली है' मार्क्स की यह उक्ति उन्हें मान्य नहीं थी। ठीक उसी प्रकार किसी भी धर्म में स्थित पौरोहित्यवाद भी उन्हें मान्य नहीं था। जनतंत्र की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा– "जनतंत्र सार्वजनिक जीवन जीने की पद्धति है। जनतंत्र की जड़े व्यक्ति के सामाजिक संबंधों में खोजनी पड़ती हैं। जनतंत्र एक ऐसी शासन प्रणाली है, जिसके द्वारा आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में बिना रक्त की एक बुँद बहाएं क्रांतिकारी परिवर्तन लाए जा सकते हैं। "[13] भारतीय संविधान बनाते समय उन्होंने व्यक्ति के मूलभूत अधिकारों के सबंधं में आक्रामक भूमिका निभाई थी। रंग, वर्ण, जाति और लिंग के परे जाकर मनुष्य की मनुष्य के रूप में पहचान हो ऐसा उनका आग्रह था। ऐसी पहचान अगर हो तो जनतंत्र मजबूत हो सकता है, ऐसा उनका विश्वास था।

---

[12] डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर–डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, पृ.सं.91.

[13] डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर–डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, पृ.सं.91.

जनतांत्रिक व्यवस्था की सफलता के लिए मजबूत विरोधी दल की आवश्यकता का वे प्रतिपादन करते हैं। "एक ही व्यक्ति अथवा एक ही राजनीतिक दल के हाथों अगर सत्ता सुरक्षित रह जाये तो ऐसी स्थिति में उस राष्ट्र में संसदीय प्रणाली और जनतंत्र की हत्या हो जाती है, अराजकता की स्थिति पैदा हो जाती है ऐसा वे महसूस करते थे।"[14] मजबूत विरोधी दल सत्ताधारियों पर नियत्रंण रख सकता है, उन्हें जनहित की ओर मोड़ सकता है, ऐसा उनका विश्वास था।

सन 1936 में उन्होंने स्वतंत्र मजदूर पार्टी की स्थापना की। उनकी धारणा थी कि भारतीय राजनीति में सम्पन्न और उच्च वर्ण ही अधिक सक्रिय हैं। ऐसी सत्ता किसानों और मजदूरों को न्याय नहीं दे सकती। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समता की लड़ाई के लिए मजबूत और प्रभावपूर्ण विरोधी दल की आवश्यकता है और इसलिए उन्होंने स्वतंत्र मजदूर दल की स्थापना की। इस दल के घोषणा पत्र से यह स्पष्ट है कि वे किस प्रकार की समाज व्यवस्था चाह रहे थे। मजदूरों की एक सभा में उन्होंने कहा था "दुनिया में दो ही वर्ग हैं, गरीब और अमीर, शोषित और शोषक। एक और मध्यवर्ग है, पर वह संख्या में बहुत छोटा है। किसान और मजदूर शोषित हैं। इसी कारण उन्हें संगठित होना जरूरी है।"[15]

उनके अनुसार, कुछ मानव अधिकार स्वाभाविक हैं। ये व्यक्ति में निहित हैं। "कुछ अधिकारों को व्यक्ति से पृथक नहीं किया जा सकता है।"[16] डॉ. अम्बेडकर के राजनीतिक विचार व्यक्ति एवं उसके अधिकारों के

---

[14] डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर–डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, पृ.सं.92.

[15] वही, पृ.सं. 93.

[16] बी.आर. अम्बेडकर– स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज, 1947, पृ.सं.32.

चारों और घुमते रहते हैं। "राज्य का मुख्य आधार एक सर्वांगी सामाजिक सिद्धांत है। राज्य का काम केवल अन्याय एवं अत्याचार को ही दूर करना नहीं, वरन् ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करना है, जिनसे सार्वजनिक कल्याण संभव हो।"[17] डॉ. अम्बेडकर व्यक्ति को राज्य की अपेक्षा अधिक महत्व देते थे। "मनुष्य का मूल्य कहीं अधिक है। राज्य का कार्य तो मनुष्य की भलाई करना है। राज्य का कर्तव्य आंतरिक व्यवस्था बनाये रखना एवं अन्य देशों से नागरिकों की सुरक्षा करना है, राज्य को प्रत्येक नागरिक के लिए वे सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए, जिनसे कि वह अपने आवश्यक जीवन स्तर को बनाये रखे। आधुनिक राज्यों से इन्हीं बातों की आशा की जा सकती है। "[18]

डॉ. अम्बेडकर का कथन है कि "किसी भी राज्य को मनुष्य के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए क्योंकि कुछ मानव अधिकार इतने महत्वपूर्ण और आवश्यक हैं कि उनके बिना कल्याणकारी समाज की स्थापना नहीं हो सकती। मानववादी होने के नाते वह सभी प्रकार की विषमताओं एवं भेदभाव के विरूद्ध थे। सरकारी कार्यालयों, यहाँ तक कि व्यक्तिगत कारखानों में भी जाति, धर्म और लिंग के नाम पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।"[19] वह मानते थे कि "बिना व्यवस्थित संगठन के समाज का काम सुचारू रूप से चल नहीं सकता। समाज में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए किसी न किसी प्रकार के राज्य का संगठन आवश्यक है। कानून एवं व्यवस्था को बनाये रखने के लिए सरकार का होना आवश्यक

---

[17] ऑल इण्डिया शैड्यूल्ड कास्ट ्स फेडरेशन'' के बम्बई अधिवेशन में दिया गया भाषण– 6 मई, 1945.

[18] बी.आर. अम्बेडकर–स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, पृ. 5

[19] वही, पृ.सं. 13–14

है। यह कार्य एक अच्छी सरकार का है।"[20] वास्तव में, ऐसा किये बिना एक श्रेष्ठ प्रजातांत्रिक समाज की स्थापना नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त दृष्टिकोण से यह कहना ठीक होगा कि डॉ. अम्बेडकर लॉक (locke) की भांति अपने राजनीतिक विचारों को व्यावहारिक रूप देना चाहते थे। लॉक कहते हैं कि "किसी भी सरकार का मौलिक कर्तव्य व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता तथा संपत्ति, संक्षेप में, उसके स्वाभाविक अधिकारों की रक्षा करना होना चाहिए। जब सरकार ऐसा करने में समर्थ नहीं हो पाती है, तब उसके नैतिक आधार भी समाप्त हो जाते हैं।"[21] इसी भांति डॉ.अम्बेडकर भी एक ऐसी श्रेष्ठ सरकार चाहते थे, जो सभी व्यक्तियों के उचित अधिकारों की रक्षा करे तथा उन्हें सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं प्रदान करे।

[20] बी.आर. अम्बेडकर– द् बुद्ध एण्ड हिज धम्म, 1957, पृ.317
[21] ए.आर. एम. मुर्रे– एन इन्टॉडक्शन टू पॉलिटिकल फिलॉसफी, 1959,पृ. 119

### 1.1.4 आर्थिक

डॉ. अम्बेडकर प्रत्येक नागरिक की मुलभूत आवश्यताओं की पूर्ति किसी भी आर्थिक लोकतंत्र का प्रथम कर्तव्य मानते थे। वे साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के खुले विरोधी थे। उनकी सोच में कार्ल मार्क्स और गौतम बुद्ध के विचारो का अद्भूत समन्वय है। वे पक्के यथार्थवादी थे। उनकी मान्यता थी कि मानव समाज में पूर्ण समानता नहीं लायी जा सकती। इसलिए वे धन दौलत एवं अन्य प्रकार की सामाजिक शैक्षिक असमानताओं को ही क्रमिक और तार्किक ढंग से दूर करना चाहते थे। उन्होंने भूमि तथा कृषि के राष्ट्रीयकरण की बात बहुत पहले उठाई थी। इस से भी आगे बढ़कर उन्होंने भूमि तथा कृषि के राष्ट्रीयकरण की वकालत की थी। वे समाजवाद और सार्वजानिक क्षेत्र के पक्षधर थे जिनके माध्यम से नेहरू जी भी भारतीय अर्थव्यवस्था को नियंत्रित एवं विकसित करना चाहते थे। डॉ. अम्बेडकर की आर्थिक योजना पर उनके निम्नलिखित शब्द प्रकाश डालते है “यदि विदेशी तत्वों को निष्काषित करके आर्थिक परिवर्तनों को वरीयता दी जाये तो सशक्त प्रशसान आसानी से दूरगामी समाज सुधार ला सकता है। ”[22]

डॉ. अम्बेडकर का दृढ़ मत था कि ‘‘हमें अपने लोकतंत्र को सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र बनाना चाहिए क्योंकि इसके बिना राजनीतिक लोकतंत्र अधिक दिनों तक नहीं चल सकता।’’[23] उन्होंने भारतीय समाज की सामाजिक दशा का चित्रण एक जोरदार राजनीतिक

---

[22] ए हिस्ट्री ऑफ इकोनॉमिक थॉट,–बी.आर.अम्बेडकर, पृ. 147

[23] स्टेट् एण्ड माइनॉरिटिज्–1947– बी.आर.अम्बेडकर, पृ. 30

एवं आर्थिक शब्दावली में इस प्रकार किया है– "यह अत्यंत असंतोषजनक स्थिति है कि अधिकांश लोगों को अपनी जीविका कमाने के लिए भार ढोने वाले पशुओं की तरह 14–14 घंटे पसीना बहाना पड़ता है और इस प्रकार वे मनुष्य की अमूल्य धरोहर मस्तिष्क एवं मन का प्रयोग करने के अवसरों से सर्वथा वंचित रह जाते हैं। पूर्व में कैसा भी रहा हो, परंतु वर्तमान समय में वैज्ञानिक और तकनीकि प्रगति ने इसे संभव बना दिया है। कुछ लोगों द्वारा दूसरों का शोषण इस लिए संभव हो पा रहा है। कि उत्पादन के साधनों, भूमि और उद्योगों पर समाज का नियंत्रण नहीं है। जब यह संभव कर दिया जायेगा तो मैं इसे वास्तविक क्रांति मानूंगा।"[24]

डॉ. अम्बेडकर की यह भी मान्यता थी कि सामाजिक और आर्थिक मुक्ति के बिना जीवन और राजनीतिक स्वतंत्रता का कानून एवं संविधान द्वारा संरक्षण बेमानी हो जाती है। उन्होंने कहा कि "हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि लोग दलितों सहित केवल कानून और व्यवस्था पर जीवित नहीं रहते, उन्हें तो रोटी चाहिए। "[25]

लोकतंत्र की सफलता के बारे में उन्होंने कहा कि "मेरे विचार में लोकतंत्र की सफलता की पहली शर्त है कि समाज में घोर असमानताएं न हो। वहाँ पर कोई शोषित और दलित वर्ग न हो । वहाँ पर न तो कोई सर्वाधिकार संपन्न वर्ग और न ही कोई सर्वथा वंचित वर्ग हो। अन्यथा ऐसा विभाजन ऐसी परिस्थिति तथा ऐसा सामाजिक संगठन हमेशा हिंसक क्रांति के बीज संजोये रहता है और लोकतंत्र द्वारा इनका निदान असंभव हो

---

[24] व्हॉट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव डन टू द् अण्टचेबिल्स 1946,–बी.आर. अम्बेडकर, पृ.128
[25] वही पृ. 134

जाता है।"[26] बाबा साहब ने राजनीतिक आंदोलन में मजदूर वर्ग की भूमिका के बारे में 6–7 सितम्बर 1943 को पांचवी मजदूर सभा को संबोधित करते हुए कहा था– "मैं दो टिप्पणीयां करना चाहता हूँ। पहली यह कि जो लोग औद्योगिक ढांचे की पूंजीवादी व्यवस्था और राजनीतिक ढांचे की संसदीय व्यवस्था में रह रहे हैं। वे व्यवस्था के अंतविरोधों को अवश्य पहचानें। इसमें प्रथम अंतर्विरोध काम न करने वालों के लिए असीम संपदा एवं काम करने वालों के लिए भाषण गरीबी के रूप में है। दूसरा अंतर्विरोध राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में है। राजनीति में समानता परंतु आर्थिक क्षेत्र में असमानता। एक व्यक्ति एक वोट और एक वोट एक मूल्य हमारे राजनीतिक आदर्श हैं, परंतु आर्थिक क्षेत्र राजनीतिक आदर्श का बिल्कुल उल्टा है। इन अंतर्विरोधों को दूर करने के रास्तों के बारे में मतभेद हो सकते हैं, परंतु इस में कोई मतभेद नहीं हो सकता कि ये अंतर्विरोध हैं।

मेरी दूसरी टिप्पणी यह है कि जब से जीवन का आधार स्तर और संविदा (status amd contract) हुए हैं तब से जीवन की असुरक्षा एक सामाजिक समस्या बन गयी है और मानवीय जीवन को बेहतर बनाने वालों को इस का हल ढूंढना होगा। मनुष्य के जन्म सिद्ध अधिकारों एवं स्वतंत्रताओं को परिभाषित करने में बड़ी शक्ति लगायी है। यह सब बहुत अच्छा है। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि तब तक सुरक्षा संभव नहीं होगी जब तक इन अधिकारों को मूर्त रूप नहीं दिया जाता जिन्हें जन साधारण समझ सके जैसे– शांति, मकान, पर्याप्त कपड़ा, शिक्षा, अच्छी

[26] स्टेट् एण्ड माइनॉरिटिज्–1947– बी.आर.अम्बेडकर, पृ. 47

सेहत तथा सब से ऊपर गिरने के भय के बिना सिर को ऊंचा रखकर चलने का अधिकार। "[27]

डॉ. अम्बेडकर का राजनीतिक दर्शन मूलतः सामाजिक आर्थिक दर्शन है। वे कहते हैं ''बेरोजगार लोगों से पूछिये कि उनके लिए मौलिक अधिकारों की क्या उपयोगिता है। यदि किसी बेरोजगार व्यक्ति को अनिश्चित घंटो वाली नौकरी और किसी मजदूर युनियन में शामिल होने, संगठन बनाने अथवा धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के बीच चुनने के लिए कहा जाये तो क्या उसके चुनाव के बारे में कोई शक हो सकता है।? वह दूसरी चीज कैसे चुन सकता है।? भूखमरी, घर–विहीनता, दरिद्रता बच्चों को स्कूल से दूर रखने जैसी परिस्थितियां किसी भी व्यक्ति को अपने मौलिक अधिकार छोड़ने के लिए बाध्य कर सकती हैं। इस बेरोजगारी में लोग काम तथा जीवन–निर्वाह के लिए मौलिक अधिकारों को तिलांजलि देने के लिए मजबूर होंगे। "[28]

स्वतंत्रता के संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर यह प्रश्न उठाते हैं कि ऐसी स्वतंत्रता आखिर कैसी और किस के लिए होगी ? इस का उत्तर वे निम्न प्रकार देते है– "स्पष्टतया यह स्वतंत्रता जमींदारों को लगान बढ़ाने, पूंजीपतियों को काम के घंटे बढ़ाने और कम मजदूरी देने की छूट देने वाली होगी। यह ऐसी ही होगी। "[29] इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने राजशक्ति की सृजनात्मक भूमिका पर जोर दिया। सही मायने में लोकतांत्रिक राज लोक कल्याणकारी होगा। ऐसे राज का उपयोग जमींदारों और पूंजीपतियों

[27] व्हॉट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव डन टू द् अण्टचेबिल्स 1946,–बी.आर. अम्बेडकर, पृ.169
[28] वही पृ. 186
[29] ए हिस्ट्री ऑफ इकोनॉमिक थॉट,–बी.आर.अम्बेडकर, पृ. 84

जैसे निहित स्वार्थों को अनुशासित करने और उनके सामाजिक आर्थिक आधार को खतम करने के लिए किया जा सकता है। इनके अधिकारों को सीमित किय बगैर आम जन को स्वंतत्रता नहीं दी जा सकती।

अतः डॉ. अम्बेडकर कहते है कि ''एक अर्थव्यवस्था जिसमें लाखों मजदूर उत्पादनरत हो, समय समय पर किसी न किसी को नियम बनाने पडेंगे ताकि मजदूरों को काम मिल सके और उद्योग चलते रहें, अन्यथा जीवन असंभव हो जायेगा। राजकीय नियंत्रण से स्वतंत्रता का मतलब होगा व्यक्तिगत मालिकों की तानाशाही।''[30] डॉ. अम्बेडकर के मस्तिष्क में समाजवाद की रूप रेखा बहुत स्पष्ट थी। भारत के सामाजिक रूपांतरण और आर्थिक विकास के लिए वे इसे अपरिहार्य मानते थे। उन्होंने भारत के भावी संविधान के अपने प्रारूप में इस रूप रेखा को राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत भी किया था जो कि 'States and Minorities' नामक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है। उनके अनुसार भावी संविधान में भारतीय संघ निम्नलिखित को संवैधानिक कानून का अंग घोषित करेगा।

1. सभी प्रमुख उद्योग सरकारी नियंत्रण में होंगे तथा सरकार द्वारा ही चलाये जायेंगे।
2. वे उद्योग भी जो प्रमुख नहीं हैं कितु आधारभूत हैं सरकार अथवा सरकारी उद्योग द्वारा चलाये जायेंगे।
3. बीमा केवल सरकार के हाथ में होगा तथा प्रत्येक व्यस्क व्यक्ति को जीवन बीमा पॉलिसी लेना आवश्यक होगा।

[30] स्टेट् एण्ड माइनॉरिटिज्–1947– बी.आर.अम्बेडकर, पृ. 136

4. कृषि राजकीय उद्योग घोषित होगा।
5. सरकार सभी प्रमुख उद्योगों, बीमा कंपनियों एवं कृषि भूमि का उनके मालिकों को डिबेंचरज के रूप में मुआवजा देकर राष्ट्रीयकरण कर लेगी।
6. कृषि उद्योग निम्न प्रकार से चलाया जायेगा।
   1. सरकार द्वारा अधिग्रहीत भूमि को उचित आकार के फार्मों में विभाजित करके ग्रामीण परिवार समूहों को इकाई मानकर उत्पादन करने हेतु निम्न शर्तों पर आवंटित किया जायेगा।
   2. फार्म पर सामूहिक खेती होगी।
   3. फार्म पर सरकार द्वारा बनाये गए नियमों के अनुसार उत्पादन किया जायेगा।
   4. किरायेदारी कर आदि देने के बाद बचे उत्पादन को निर्धारित तरीके से आपस में बांटा जायेगा।
   5. भूमि सभी लोगों में जाति धर्म आदि के भेदभाव के बगैर इस तरह बांटी जाएगी कि न तो कोई जमींदार होगा और न ही भूमिहीन मजदूर।
   6. पानी, उपकरण, पशु, खाद तथा बीज आदि उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेवारी होगी।

इस प्रकार हम देखते हैं की डॉ. अम्बेडकर द्वारा प्रस्तावित राष्ट्र निर्माण का आर्थिक स्वरूप राजकीय समाजवादी था। वे राज्य का सकारात्मक हस्तक्षेप सामाजिक आर्थिक रूपांतरण के लिए आवश्यक मानते थे। यह प्रारूप गांधीवादी प्रारूप से सर्वथा भिन्न और नेहरूवादी प्रारूप से

अधिक स्पष्ट, विकसित  और निर्णायक था। भारत में परंपरागत सामाजिक बंटवारा अन्यापूर्ण है और उस पर आधारित आर्थिक बंटवारा अमानवीय है। हमें इसे समाप्त करना है। यही हमारे लिए महाप्रश्न है। इस संदर्भ में कुछ विशेष न कर पाने के कारण ही आज जगह जगह हिंसात्मक संघर्ष फूट रहे हैं। इन्हें केवल कानून और व्यवस्था की समस्या के रूप में देखना समझदारी नहीं होगी। इसकी आशंका डॉ. अम्बेडकर को पहले ही थी। अतः उन्होंने उसी समय अपना राजकीय समाजवाद का नमूना देश के सामने रखा था। यह भारत जैसे पिछड़े देश के लिए आज भी प्रासंगिक है।

### 1.1.5 सांस्कृतिक

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर प्रख्यात तत्वचिंतक ऋषितुल्य मनीषी थे। जिनकी राष्ट्र निर्माता के रूप में सर्वमान्य छवि थी। डॉ. अम्बेडकर बहुपठित थे और राष्ट्रनिष्ठ थे। उन्होंने ऋग्वेद सहित संपूर्ण प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन किया और भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों का ज्ञान प्राप्त किया। वे एक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी विचारक थे। इस तथ्य को स्थापित करने का प्रयास बहुत से शोधार्थियों के लिए एक कौतूहल का विषय हो सकता है, परंतु उनके वक्तव्यों, भाषणों और मंतव्यों से यह सिद्ध हो चुका है कि वे एक सांकृतिक राष्ट्रवादी विचारक थे।

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में मंत्र है–

**'जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथैकसम्।**

**सहस्त्रं धारा द्रविणस्य में दुहां ध्रनेवधेनुरन पस्फुंरती।।' 12,1,45**

अर्थात् धर्मों के माननेवाले, विविध प्रकार के जन को पृथ्वी धारण करती है, इसमें स्पष्ट ही भाषा, धर्म और जन, इन तीन तत्वों के भेद को स्वीकार किया गया है, लेकिन इसमें कहीं भी जातिभेद का भाव नहीं हैं। अनेकता में एकता के भाव है। स्पृश्य और अस्पृश्य का भाव नहीं है। यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आधार है। अम्बेडकर इस मंत्र के भाव के आधार पर राष्ट्र एकता और हिंदू समाज की एकता के लिए सामाजिक सुधारक की भूमिका में खड़े हुए। जाति विभेद और एक जाति का दूसरी जाति के

प्रति विभेदात्मक व्यवहार हिंदू जाति की एकता और राष्ट्रीय एकता में बाधक है, इस बात की सार्वजनिक घोषणा की।

वे कहते हैं, "हिंदू यह भूल जाते हैं कि यह सामाजिक भावना उनकी अपनी जाति प्रथा का ही एक सबसे घृणित पक्ष है, एक जाति के लोग आनंद लेकर ऐसे गीत गाते हैं, जिनमें दूसरी जाति के प्रति घृणा छिपी रहती है। पिछले विश्वयुद्ध में जर्मन लोगों ने भी अंग्रेजों के लिए ऐसे ही अपमान भरे गीत गाए थे। हिंदूओं के साहित्य में जाति विषयों उद्‌गत के संबंध में ऐसे अनेक गीत हैं, जिनमें एक जाति को सर्वोच्च और दूसरी जाति को निंदा का पात्र बनाने का प्रयास किया गया है। इसने उपजातियों के आपसी संबंधों को भी विकृत किया है। स्वयं ब्राम्हणों की ही अनेक उपशाखाएं हैं, जैसे गोलक ब्राम्हण, देवरूख ब्राम्हण, कराड ब्राम्हण, पाल्श ब्राम्हण और चित्तपावन ब्राम्हण, लेकिन इनमें परस्पर जो असामायिकता की भावना है, वह उतीन ही अधिक उग्र है, जैसे कि ब्राम्हणों और अन्य गैर ब्राम्हणों के बीच है।"[31]

डॉ.अम्बेडकर एक जाति का दूसरी जाति के प्रति घृणा का व्यवहार सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विरूद्ध मानते थे। जब भारतीय का भाव है, सांस्कृतिक एकरूपता का भाव है तो दुराव कैसा? वे कहते हैं–' जब भी कोई समुदाय अपने स्वार्थ से प्रेरित हो जाता है तो उसमें असामाजिकता की भावना उत्पन्न हो जाती है। इसके कारण वह समुदाय अन्य समुदायों से पूरा संवाद–संपर्क बंद कर देता है क्योंकि वह अपने स्वार्थ की रक्षा

[31] डॉ.अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड–1, पृ.104

करना ही अपना उद्देश्य मान बैठता है। यह असामाजिक भावना अर्थात अपने स्वार्थ की रक्षा की भावना ही विभिन्न जातियों का एक दूसरे से अलग होने का वैसा ही विशिष्ट लक्षण है, जैसा कि अलग–अलग राष्ट्रों का। सभी जातियां एक दूसरे के विरूद्ध अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए कार्यरत हैं। इस प्रकार हिंदू समुदाय विभिन्न जातियों का एक संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि वह शत्रुओं का समुदाय हो गया है।'

बाबासाहब मानते हैं कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आधार समरसता है। जिस तरह प्रकृति और व्यक्ति में समरसता होनी चाहिए, उसी तरह व्यक्ति–व्यक्ति में भी समरसता होनी चाहिए। तभी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विकास होगा। भेद–विभेद सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को विकृत करता है। भेद–विभेद से कायरता और बुजदिली को हटा दिया जाए, जिसके कारण वे मुसलमानों से अलग हो जाते हैं तथा अपनी रक्षा के लिए वीरता के स्थान पर चालाकी से घटिया तरीके अपनाते हैं। मुसलमान को अपनी शक्ति पर विश्वास है और वह जानता है कि यदि किसी मुसलमान के ऊपर आक्रमण होता है तो सारे मुसलमान उसकी मदद को आएंगे। हिंदूओं के पास ऐसी शक्ति नहीं है, उनके मन में यह विश्वास नहीं है कि शेष हिंदू उसके बचाव के लिए आएंगे। अकेले होने के कारण वह शक्तिहीन रहता है और उसके मन में कायरता घर कर जाती है। लड़ाई होने पर वह या तो आत्मसमर्पण कर देता है या भाग जाता है। जब तक जातिप्रथा रहेगी, तब तक हिंदूओं में संगठन के नाम की कोई बात नहीं रहेगी और जब तक उनमें संगठन नहीं होगा, हिंदू कमजोर और

डरपोक रहेंगे। हिंदुओं की दयनीय स्थिति की कल्पना करना संभव नहीं है। उदासीनता किसी समुदाय को लगनेवाली सबसे घातक बीमारी है।'

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में सशक्त संगठन रहना एक अनिवार्य अवयव है। एकता का बोध उसका आधार है। इसलिए बाबा साहब ने सशक्त हिंदू संगठन के निर्माण पर बल दिया। सशक्त हिंदू संगठन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को आगे बढ़ा सकता है। बाबा साहब कहते हैं कि उदासीनता के कारण ही हिंदू असंगठित है। उनके अनुसार "हिदूओं के देवता भी धैर्यवान और सहिष्णु हैं। इसलिए अन्याय और उत्पीड़न के शिकार हुए हिंदूओं की दयनीय स्थिति की कल्पना करना असंभव नहीं है। उदासीनता किसी समाज को लगनेवाली सबसे घातक बीमारी है।"[32] हिदूं परस्पर इतने उदासीन क्यों हैं? मेरे विचार से यह उदासीनता जाति–प्रथा के कारण है और इसके कारण किसी अच्छे कार्य के लिए भी उसमें संगठन और सहयोग होना असंभव हो गया है।" [33]

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तब तक प्रबल नहीं हो सकता, जब तक हिंदू जाति में बंटे रहेंगे। हिंदू अपनी जाति पर गर्व करता है। मुसलमान, ईसाई आदि के लिए अपना धर्म प्रमुख होता है। जाति गौण होती है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार "किसी मुसलमान, सिख या ईसाई से पूछिए कि वह कौन है, तो वह यहीं कहेगा कि वह मुसलमान या सिख है। वह अपनी जाति नहीं बताएगा, यद्यपि उसकी भी जाति है। आप उसके उत्तर से संतुष्ट हो जांएगे। उससे यह नहीं पूछेंगे कि वह शिया है, सुन्नी है, शेख

[32] डॉ.अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड–1, पृ.107
[33] वही,पृ.सं. 112

है, सैयद है, खान है, खटीक है या पिंजारी। जब कोई अपने को हिंदू बताता है तो आप उसकी जाति अवश्य पूछेंगे या कोई ऐसे सुव्यवस्थित तंतु हैं, जो सामाजिक भावना जाति भावना से ऊपर ले जाते हों? हिंदूओं का यह भ्रम जितना जल्दी दूर हो, उतना ही अच्छा है।''[34]

बाबासाहब जिस सूत्र की खोज में थे, वह सूत्र सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। यही वह सूत्र है, जो जाति भावना से ऊपर उठकर सामाजिक भावना को बल देता है। समरसता को एक उत्सव में परिवर्तित करता है। हिंदूओं को एकता के सूत्र में बांधता है। सांस्कृतिक विचारधारा पर आधारित संगठन ही जाति का बंधन तोड़कर एकात्मबोध की स्थापना कर सकता है। डॉ. अम्बेडकर सांस्कृतिक राष्ट्रवादी इसलिए हैं कि उन्होंने मेले उत्सव की महत्ता को समझा। मेले और उत्सव विभेद मिटाते हैं। एक समाज का आनंद देते हैं। उन्होंने जाति तोड़क मंडल को सामूहिक उत्सव मनाने की जिम्मेदारी सौंपी। वे कहते हैं यदि अलग–अलग लोग एक जैसा ही सब कुछ कर रहे हैं, तब भी उन्हें उसी समाज का अंग नहीं माना जा सकता। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि हिंदूओं की विभिन्न जातियों के लोग एक से ही त्योहार मनाते हैं, किंतु अलग–अलग जातियों द्वारा उन्हीं त्योहारों को मनाए जाते रहने के बावजूद वे एक समाज में बंध नहीं पाए हैं। इसके लिए अनिवार्य है कि सभी लोग किसी सामूहिक कार्य में इस प्रकार बिल्कुल मिल–जुलकर बराबरी से हिस्सा लें कि उन सभी में भी वे ही भाव हों, जिनसे शेष अन्य लोग अनुप्राणित होते हैं। लोगों को जो आपस में एक सूत्र में बांधती है और उन्हें एक समाज में पूरी तरह शामिल

[34] डॉ.अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड–6, पृ.सं.164

करती है, वह यह है कि हर व्यक्ति को सामाजिक गतिविधियों में इस तरह हिस्सेदार या भागीदार बनाया जाए, ताकि उसकी सफलता में उसे स्वयं अपनी सफलता और उसकी विफलता में अपनी विफलता दिखाई दे।''[35]

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक अन्य आधार है। महापुरूषों का आदर करना और उनसे प्रेरणा लेना। महापुरूष ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के तंतुओं को सुदृढ़ करते हैं। भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अथवा एकात्म मानवतावाद स्वतंत्रता के बाद इसलिए सुदृढ़ नहीं हो पाए हैं कि हमने महापुरूषों को भी जाति के कठघरे में कैद कर दिया है। क्या यह विकृत रूप दिखाई नहीं पड़ रहा हैं। इससे समाज महापुरूषों की श्रेष्ठताओं से लाभान्वित होने से वंचित हो गया है। डॉ.अम्बेडकर ने कहा है कि ' हिंदूओं ने अपनी जाति के हितों की रक्षा करने में अपने देश के प्रति विश्वासघात किया है।'

बाबा साहब के इस भाव को और अधिक स्पष्ट करते हुए कृष्ण गोपाल अपनी पुस्तक बाबासाहब व्यक्ति और विचार में लिखते हैं 'क्षेत्रवाद और जातिगत भाव के हावी होने से लोगों ने महापुरूषों को भी अपने क्षेत्र तथा जाति की सीमाओं के अंदर बांधने की कोशिश की है। महापुरूष तो जाति–पथ और केंद्र की सीमाओं से ऊपर होते हैं, लेकिन आज देश में एक घातक प्रवृत्ति पनप रही है। लोकमान्य तिलक जैसे व्यक्ति को भी केवल महाराष्ट्र की विरासत समझा जाता है। वहीं लोग रवींद्रनाथ ठाकुर पर बंगाल का और महात्मा गांधी पर गुजरात का हक बताते हैं। इसी

[35] डॉ.अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड–1, पृ.119

प्रकार संत ज्ञानेश्वर ब्राम्हणों के तुकाराम बनिया के, नामदेव दर्जियों के, संत गोरा कुम्हारों के, चोखा मेला महारों के माने जाने लगे हैं। संपूर्ण मानवजाति को उनकी विरासत मिलनी चाहिए। उन वंदनीय को भी जाति क्षेत्र के संकुचित दायरे में बंद कर दिया जाता है। इसलिए इन श्रेष्ठ व्यक्तियों के बारे में भी यह गलतफहमी पैदा होती है कि उन्हें जो विश्व को देना चाहिए था, वह उन्होंने मात्र अपनी जाति को दिया। इस प्रवृत्ति के बारे में डॉ. साहब कहते थे–'' जातियता के बड़वानल ने गौतम बुद्ध, विवेकानंद, ज्ञानदेव, तुकाराम आदि सभी को खाक कर डाला।''[36] यह बात भी सभी को खटकती है कि बाबासाहब को उनके समर्थक और विरोधी एक वर्ग विशेष के नेता के रूप में निरूपित करते हैं। उन्हें रामास्वामी नायकर, जिन्ना, लाल डेंगा या फीजो की तरह एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला मानना उनके साथ सरासर अन्याय है और उनके विषय में घोर अज्ञान ही इसका कारण है।''[37]

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक पक्ष है कि समाज के वनवासी सबल बनें। वनवासी ही संस्कृति की रक्षा के आधार हैं। वनवासियों की सज्जनता और मौलिकता को कोई भी भटका सकता है।

समाज के कमजोर वर्ग आगे बढ़ेंगे तो धर्म–परिवर्तन जैसी समस्या का समाधान होगा। धर्म परिवर्तन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मार्ग में बाधक है। कृष्ण गोपाल कहते हैं –''डॉ. अम्बेडकर के सामने ही ईसाई लोग जोर–शोर से हिंदू समाज के कमजोर वर्ग को ईसाई बनाने की मुहिम में

---

[36] डॉ.अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड–1, पृ.120

[37] वही,पृ.सं. 122

जुटे हुए थे। उनका मुख्य लक्ष्य था कि अनुसूचित जाति और वनवासियों को ईसाई बनाया जाए। दलितों को ईसाई बनाने के प्रयत्नों को तो डॉ. अम्बेडकर अपने सामर्थ्य से रोक रहे थे, परंतु ईसाई मिशनरियों ने अपनी संपूर्ण ताकत दूर जंगलों में रह वनवासी जनजातियों के ऊपर लगा दी थी। डॉ. अम्बेडकर ईसाई मत में हो रहे इस परिवर्तन के दूरगामी तथा देशघाती परिणामों से भलीभांति परिचित थे। वे जानते थे कि किस प्रकार ईसाई लोग भोले–भाले, निरीह गरीब एवं अशिक्षित वनवासियों को ईसाई बनाकर हिंदू समाज के शत्रुओं की संख्या ही बढ़ा रहे हैं। इन वनवासियों को अपना बनाने का कर्य होना चाहिए। अर्थात् उनके मध्य जाकर रहना, उनकी शिक्षा, चिकित्सा आदि की व्यवस्था करना, जो जाति प्रथा की इस जड़ता के कारण शायद नहीं हो पा रहा। हिंदूओं को ईसाईयों द्वारा किए जा रहे इस आक्रमण की गंभीरता को समझना चाहिए और सभी रूढ़ियां को छोड़कर वनवासियों के विकास के लिए जुट जाना चाहिए।'

अम्बेडकर यदि जीवित रहते तो उन्हें यह जानकर प्रसन्नता होती कि आज संपूर्ण देश में इन्हीं वनवासियों में हजारों हिंदू युवक अपने जातिगत भेदभावों को भूलाकर वनवासी कल्याण आश्रम के नाम से समरसता का एक विशाल अभियान चला रहे हैं।

डॉ.अम्बेडकर उपनिषद् और वदों के सिद्धांत को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं थी। उपनिषद् और वेद भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पोषक हैं। डॉ. अम्बेडकर मानते हैं कि वेदों और उपनिषद् और वेद भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पोषक हैं। डॉ. अम्बेडकर मानते हैं कि वेदों और उपनिषदों में समानता और बंधुत्व की भावना भरी पड़ी है। उन्होंने कहा,

''हिंदूओं को इस बात पर विचार करना चाहिए कि उन्हें अपनी संपूर्ण सामाजिक धरोहर को सुरक्षित रखना है या जो उपयोगी है, केवल उसको चुनकर भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करना है, उससे अधिक बिल्कुल नहीं।''[38]

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में हर व्यक्ति को आगे बढ़ाने का मौका होता है। समाज के पुनर्गठन और पुनर्निर्माण का अवसर होता है। कर्मशील होने का संदेश मिलता है। यह सभी कुछ सांस्कृतिक और संवेदनशील मन से हो सकता है। बाबासाहब कहते हैं'' अपने पुरखों की तरह तुम भी चिथड़े पहनते हो। उनकी तरह तुम भी फेंके गए रोटी के टुकड़ों पर जिंदा हो, उन्हीं की तरह तुम भी इन गंदी बस्तियां में सड़ रहे हो। याद रखो कि केवल संख्यात्मक बहुमत में होना ही पर्याप्त नहीं होता है, तुमको सदैव जागरूक, शक्तिशाली, अच्छी तरह पढ़ा–लिखा तथा आत्मसम्मानी भी होना चाहिए, तभी तुम सफलता प्राप्त कर सकते हो और उसे स्थायी रूप से बनाए रख सकते हो।''[39]

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में कायरता का भाव नहीं होता। कर्मठता, वीरता, संवेदनशील और सहयोग का भाव होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य का मार्ग न छोड़ना सांस्कृतिक राष्ट्रवादी का संकल्प होता है। डॉ. अम्बेडकर लिखते हैं 'धन्य हैं वे लोग, जो उन बंधुओं के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के कर्तव्य के प्रति सचेत हैं, जिनमें वे पैदा हुए। वे पुरूष सौभाग्यशाली हैं, जो अपने बहुमूल्य दिनों एवं रातों को दासता के प्रति

[38] बाबासाहब, संपूर्ण वाड्.मय, खंड–1, पृ. 104
[39] लाइफ एंड मिशन, पृ. 235

विद्रोह के आंदोलन की प्रगति में न्योछावर करते हैं। धन्य हैं वे पुरूष, जो यह प्रतिज्ञा करते हैं कि उस समय तक दम नहीं लेंगे, जब तक अछूत पूर्णतः अपने मानवत्व को प्राप्त न कर लें, भले ही मार्ग में अच्छाई, बुराई, धुप, तुफान, सम्मान, अनादर आदि कुछ भी क्यों न आए।'

डॉ. अम्बेडकर महान राष्ट्रवादी थे। उनका राष्ट्रवाद पश्चिमी राष्ट्रवाद नहीं था। वे भारतीय राष्ट्रवाद के पोषक थे। भारतीय राष्ट्रवाद व्यष्टि एवं सृष्टि के समन्वय में विश्वास करता है। वे उदात्त सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाने को कटिबद्ध थे। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एकात्मक है। डॉ. अम्बेडकर सभी कुछ स्वीकार करने को तैयार थे, बस वे यह चाहते थे कि देश में स्वराज्य, स्वतंत्रता के साथ–साथ अस्पृश्यों को भी अधिकार मिलना आवश्यक है। वे मानते हैं– 'केवल स्वराज्य, स्वतंत्रता व संविधान के अंतर्गत ही आप लोगों को राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है। इसके बिना हम अपने लोगों की मुक्ति संभव नहीं बना सकते। गोलमेज सम्मेलन में जाते समय उन्होंने कहा कि, मेरे लोगों के लिए जो उपयुक्त है, मैं उसी की मांग करूंगा और निश्चित रूप से स्वराज्य की मांग के प्रति अडिग रहूंगा।' भले ही वह निर्णायक, न ही हो, भारत की मौलिक सांस्कृतिक एकता ही है। तब यह एकता क्यों छिन्न–भिन्न की जाए? क्या केवल इसलिए कुछ मुसलमान असंतुष्ट हैं? इसके टुकड़े–टुकड़े क्यों करते हो, जबकि ऐतिहासिक समय से यह एक संपूर्ण इकाई है।'

डॉ. अम्बेडकर मानते हैं कि भारत की एकता बहुत प्राचीन हैं, यही भाव सांस्कृतिक एकता है। सांस्कृतिक एकता को बनाए रखना ही

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। जो लोग यह मानते हैं कि भारत की एकता अंग्रेजों की देन है, वे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विरोध में विचार व्यक्त करते हैं। वास्तव में अंग्रेजों के आने के सैकड़ों वर्ष पूर्व भी यह एक राष्ट्र था। डॉ अम्बेडकर कहते है "यह देश हजारों वर्ष से अपनी सांस्कृतिक समरसता एवं विशिष्टता के कारण ही संगठित है। यह संकलन सांस्कृतिक रूप से अत्यंत गुंथा है। इसी आधार पर मेरा यह कहना है कि इस प्रायद्वीप को छोड़कर संसार का कोई ऐसा देश नहीं है, जिसमें इतनी सांस्कृतिक समरसता हो। हम केवल भौगोलिक दृष्टि से ही सुगठित नहीं हैं, बल्कि हमारी सुनिश्चित सांस्कृतिक एकता अविच्छन्न और अटूट है, जो पूरे देश में चारों दिशाओं में व्याप्त है।"[40]

डॉ. अम्बेडकर के उक्त विचारों से उनके सांस्कृतिक राष्ट्रवादी होने का बोध होता है। उनकी दृष्टि विशाल थी। वे भारत के सनातन सांस्कृतिक प्रवाह को स्वीकार करते हैं। भारत अपने जन और संस्कृति के नूतन विकास का साक्षी बनकर आज भी जीवित है। उसका मन विश्व मानवता के प्रति स्वच्छ है। डॉ. अम्बेडकर भी मानते हैं कि देश और भूमि के विषय में उसके सात्विक भाव संसार के लिए भी मूल्यवान है। तमाम जातिया एवं एक–दूसरे के प्रति घृणात्मक विडंबनाओं के बावजूद भारत की सांस्कृतिक एकता की संजीवनी हमारे समाज को बिखरने नहीं देती। सांस्कृतिक एकता की संजीवनी न हो तो क्षुद्रता के भाव हमारे मनों को दबोचने और सामूहिक जीवन के टुकड़े–टुकड़े कर डालें। भूमि की सांस्कृतिक एकता अनमोल वरदान है। इस ऐक्य का गंगाजल हमारे राष्ट्रीय एवं सामाजिक

---

[40] बाबासाहब, संपूर्ण वाड्.मय, खंड–8, पृ.सं. 348

दोषों को हटा सकता है, इसके प्रेक्षण से हमारे विचारों की संकीर्णता मिट सकती है। डॉ. अम्बेडकर ने इसी कारण से भारत की भौगलिक एवं सांस्कृतिक एकता को स्वीकार किया और उसी शक्ति के आधार पर सामाजिक कुवृत्तियों के निवारण के लिए संघर्ष किया।

### 1.1.6 शिक्षा

दलित वर्ग की अशिक्षा और अज्ञानता से डॉ.अम्बेडकर बहुत व्यथित थे। यही कारण है कि उन्होंने राजनीति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व दिया और जीवनभर समाज में फैले अज्ञानता के अंधकार को दूर करने का प्रयास करते रहे। किंतु डॉ.अम्बेडकर के पहले ज्योतिराव फुले ने भी बहुजनों की शिक्षा और जाति व्यवस्था को तोडने के लिए बहुत प्रयास किऐ। महात्मा ज्योतिबा फुले ने ब्राम्हणेतरों को जो मंत्र दिया था, उसी मंत्र से डॉ.अम्बेडकर प्रेरित थे। फुले का मंत्र था–

''ज्ञान के अभाव में मति यानी बुद्धि गई,
बुद्धि के अभाव में नीति गई,
नीति के अभाव में गति गई,
गति के अभाव में संपत्ति गई,
संपत्ति के अभाव में शूद्र बर्बाद हो गए,
केवल ज्ञान के अभाव में इतना अनर्थ हो गया।''[41]

शूद्रों की इस गुलामी के मूल में 'ज्ञान' का अभाव है। इस कारण शूद्रों को 'ज्ञान' के दरवाजे खोल देना जरुरी है। ऐसा उनका आग्रह था। महात्मा

[41] गुलामगिरी–ज्योतिबा फुले, सं.रमेश रघुवंशी, पृ.10

ज्योतिबा फुले के कारण ही परिवर्तन की एक श्रृंखला महाराष्ट्र में तैयार हुई। 'सत्यधर्म' और 'समतावादी समाज की निर्मिति' के लिए आवश्यक जमीन फुले ने तैयार की। फुले तथा उनके बाद के समाज सुधारकों की जमीन पर डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर खड़े हैं। बाबासाहब ने आगे चलकर भारतीय समाज को तीन सूत्र दिए– 'पढो', 'संगठित हो जाओ', 'संघर्ष करो'। किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए इन त्रिसूत्रों की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। इसे अलग से कहने की आवश्यकता नहीं है।

शिक्षा संबंधी उनके विचार बहुत ही स्पष्ट और सरकार की जिम्मेदारी की ओर संकेत करनेवाले हैं। समाज के सबसे सामान्य शोषित और उपेक्षित व्यक्ति तक शिक्षा की सुविधाएँ पहुँचनी चाहिए, ऐसा उनका आग्रह था। परंपरा से नकारे गये वर्ग को उच्च शिक्षा हेतु अधिक खर्च करना न पड़े ऐसी व्यवस्था हो ऐसा उनका आग्रह था। विश्वविद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा ''स्नातक और छात्रों के पाठ्यक्रम द्वारा सांस्कृतिक प्रगति करने के लिए महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को एकत्र होना जरूरी है।''[42]

शिक्षा को वे दुधारू शस्त्र मानते हैं। ''चरित्रहीन और विनयहीन शिक्षित व्यक्ति पशु से भी अधिक भयंकर होता है। सुशिक्षित मनुष्य का ज्ञान और उसकी शिक्षा जनहित के विरोध में जा रही हो, तो ऐसा व्यक्ति समाज के लिए शाप साबित होत है।''[43] शिक्षा संबंधी उनके इन विचारों में

[42] महामानव डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर–प्रभाकर दीघे, पृ. 144
[43] वही, पृ.सं.144

और प्रेमचंद के विचारों में अद्‌भुत समानता है। प्रेमचंद भी शिक्षा को 'कुशिक्षा और सुशिक्षा' में बांटते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने अपने एक साक्षात्कार में कहा था ''शिक्षा और संगठन तेजी से तैयार क बात खासकर ध्यान में रखें कि बहन–बेटियों को जरुर साथ लें। दलित शिक्षा आंदोलन में उन्हें अपने से कदापि पीछे न रहने दें। अन्यथा हम एक बार फिर गलती कर जाएँगे, धोखा खा जाएँगे। यानी दलित स्त्री शिक्षण के अभाव में हम ब्राम्हणवाद के विरूद्ध जीती हुई लड़ाई हार जाएँगे।''[44] दलित वर्ग के लिए उच्च शिक्षा को डॉ. अम्बेडकर ने अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। हमारे युवकों को चाहिए वे स्वयं व दूसरों में लिखाई–पढ़ाई का इच्छा पैदा करें। शिक्षा के लिए एक मिली–जुली आंदोलनात्मक आवाज उठाएँ। ''उच्च शिक्षा उच्च दर्जे की नौकरियों जैसे आत्मनिर्भरता के अनेक साधनों की हमें आवश्यकता है। शिक्षा हमारी सामाजिक स्थिति सुधारने में सहायक होगी। सामाजिक स्थिति सुधर जाएगी तो हम दूसरों के समान स्तर पर आ जाएँगे। तब कट्‌टरवादी हिंदूओं के दृष्टिकोण में भी उदार परिवर्तन आ जाएगा और यदि नहीं भी आएगा तब भी वह दलितों की कोई हानि नहीं कर पाएँगे।''[45]

इस प्रकार हम देखते हैं कि डॉ. अम्बेडकर दलित वर्ग के उत्थान हेतु शिक्षा को अमोघ अस्त्र मानते थे। इसलिए उनका नारा है। 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो'। नागपुर की 'डिप्रेस्ड क्लास' की सभा में वे कहते हैं "My fine words of advice to you is educate, agitate and

[44] मोहनकुमार नाथूसिंह–तंवर की डॉ. अम्बेडकर से मुलाकात– 'कोली राजपूत', मासिक अंक नव–दिस. 1950, अजमेर
[45] डॉ. अम्बेडकर के 15 व्याख्यान, अनु. चंद्रिका प्रसाद जिज्ञास, पृ. 36–37

organize, have faith in your selves and never lose hope. I shall always be with you as I know you will be with me."[46]

इस सूत्र का अर्थ स्पष्ट है कि संगठित होने और न्याययुक्त संघर्ष करने के लिए प्रथम शर्त शिक्षित होने की ही है। इस मामले में बाबा साहेब की दृष्टि एकदम साफ है। साधन सम्पन्न समाज के बच्चें के लिए जीवन में प्रगति के अनेक रास्ते हैं। वे अपने पैतृक साधनों का प्रयोग कर नये रास्ते तलाश भी सकते हैं और पहले से ही उपलब्ध रास्तों का अपने हि के लिए सुविधा से उपयोग भी कर सकते हैं। कम से कम जीवन की भौतिक प्राप्तियों के क्षेत्र में तो यह सब हो ही सकता है। लेकिन वंचित समाज के बच्चों के लिए, साधनों के अभाव में आगे के रास्ते बंद हो जायेंगे और वे जीवन भर दुःख और वेदना का नारदीय जीवन ही ढोते रहेंगे? ऐसा नहीं है। उनके लिए एक ऐसा रास्ता खुला है, जो साधन सम्पन्न लोगों को उपलब्ध सभी रास्तों से भी ज्यादा प्रभावी और गुणकारी है। वह रास्ता है शिक्षा प्राप्त करने का। शिक्षा से भौतिक जगत में गतिशील होने की क्षमता तो प्राप्त होती ही है, बौद्धिक विकास भी होता है। यही कारण था कि बाबा साहेब ने शिक्षा को प्राथमिकता दी है। ऐसा उन्होंने कहा ही नहीं बल्कि स्वयं अपने उदाहरण से करके भी दिखाया।

बाबा साहेब ने उच्च्य शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक कष्ट सहे, लेकिन उच्च्य शिक्षा प्राप्त करने के अपने ध्येय पर अडिग रहे। पाठशाला के दिनों में जाति भेद को लेकर उनको जो दिक्कतें उठानी पड़ीं। उनको शायद दोहराने की जरुरत नहीं है, वे सर्वविदित ही हैं। लेकिन जैसे ही

---

[46] Dr. Ambedlar- Rajput you all india depressed class conference in Nagpur, Held an july 18, 1942. P-51

आगे पढ़ने का वक़्त आया, भीमराव के पिता की नौकरी छूट गई। पुत्र में पढ़ने की और पिता में पढ़ाने की उत्कट लालसा और पैसे का संकट था। नौकरी की संभावना तलाशने परिवार मुंम्बई में आ गया। अम्बेडकर की की पढ़ाई वही हुई। बड़े शहर में जाति के कारण शायद उतना संकट नहीं था लेकिन अब तो आर्थिक संकट गहरा रहा था। लेकिन भीमराव अम्बेडकर ने हठ नहीं छोड़ा।

आगे रियासती सहायता से भीमराव विदेश उच्च शिक्षा के लिए गये और वहाँ विपरीत अर्थिक परिस्थितियों में भी अध्ययन जारी रखा। केवल इतना ही नहीं लंदन में भी उनको चिंता रहती थी कि उनकी पत्नी रमाबाई भी कुछ पढ़ रही है या नहीं। धन संपदा तो आनी जानी है लेकिन शिक्षा जैसा अनमोल धन अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

उन्होंने लंदन से अपनी पत्नी को पत्र लिखा, 'तुम्हारी पढ़ाई चल रही है, यह बहुत प्रसन्नता की बात है। पैसे की व्यवस्था करने का प्रयास कर रहा हूँ। मेरे पास पैसे नहीं हैं, इसलिये सीमित मात्रा में भोजन कर पा रहा हूँ। फिर भी आप लोगों की व्यवस्था कर पा रहा हूँ। पैसे भेजने में देर हुई और तुम्हारे पास के पैसे समाप्त हो जाये ंतो अपने अलंकरण बेच कर खाओ। आने के बाद फिर बनवा दूँगा। यशवंत व मुकुंद की पढ़ाई कैसी चल रही है?' अम्बेडकर का फ़रमान साफ़ है। पेट काट कर भी पढ़ना पड़े तो पढ़ाई को महत्व दो।

यह सारी कथा लिखने का उदे्श्य मात्र इतना ही है कि विदेश में जाकर उन्होंने शिक्षा से इतर, अर्थिक रूप से सम्पन्नता के लिए रास्ते तलाशने की कोशिश नहीं की। वे रास्ते उन दिनों भी अमेरिका व ब्रिटेन में सहजता से उपलब्ध थे। लेकिन बाबासाहेब ने स्वयं को ज्ञानार्जन के लिये

ही समर्पित कर दिया। क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि वे केवल अपनी प्रगति का रास्ता नहीं तलाश रहे, बल्कि भारत के पूरे वंचित समाज के लिए रास्ता तलाश रहे हैं और वह रास्ता केवल और केवल शिक्षा के माध्यम से ही निकलेगा। वे अपने आचरण से इसका उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे। वडोदरा के महाराजा और भीमराव अम्बेडकर का यह समाजवाद जो चांगदेव खैरमोडे ने उद्धत किया है, अत्यंत महत्वपूर्ण है।

''महाराजा –तुम किसा विषय की पढ़ाई करना चाहते है?

भीमराव मैं समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और विशेष रूप से पब्लिक फ़ायनांस की पढ़ाई करना चाहता हूँ

महाराजा– इस विषय की पढ़ाई करके तुम आगे क्या करना चाहते हो?

भीमराव– इस विषय के अध्ययन से मुझे इस  प्रकार के रास्ते दिखाई देंगे, जिससे कि मैं अपने समाज की पतनावस्था को सुधार सकूँ।

महाराजा– हँसते हुए– लेकिन तुम हमारी नौकरी करोगे या नहीं? फिर तुम पढ़ाई नौकरी और समाज सेवा आदि सभी बातें एक साथ कैसे पूरी कर सकोगे?

भीमराव–यदि महाराजा ने मुझे उस तरह का मौक़ा दिया, तो मैं ये सारी बातें सही ढंग से पूरी करके दिखा दूँगा।''[47]

भीमराव की योजना स्पष्ट है। वंचित समाज की दीन–हीन अवस्था को कैसे ठीक करना है, इसका रास्ता भी शिक्षा से ही पता चलेगा। एक बाररास्ता पता चल जाये, तो उसे फ़तेह करना इतना मुश्किल नहीं है। लेकिन ध्यान रखना होगा, अम्बेडकर के सूत्र में शिक्षा, एक बड़ी श्रृंखला

[47]महामानव डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर– प्रभाकर दिघे,प्र. आकांक्षा, सं. 2005

का पहला हिस्सा है। एकता और संघर्ष उसके साथ ही जुड़ा हुआ है। बाबासाहेब जब महाराजा को पढ़ाई नौकरी और समाज सेवा एक साथ साध लेने का संकल्प सुनाते हैं तो उनके मन में शिक्षा, एकता और संघर्ष का यह त्रिसूत्र ही दिखाई देता है। लेकिन बाबा साहेब शिक्षा की महत्ता रेखांकित करने के साथ–साथ उसको प्राप्त करने के पात्र की भी चर्चा करते हैं। वे कहते हैं, 'शिक्षा दुधारी शस्त्र हैं। इसलिये उसे चलाना ख़तरे से भरा रहता है। चरित्र हीन व विनय हीन सुशिक्षित व्यक्ति पशु से भी अधिक ख़तरनाक होता है।

यदि सुशिक्षित व्यक्ति की शिक्षा गरीब जनता के हित विरोधी होगी, तो वह व्यक्ति की शिक्षा गरीब जनता के हित विरोधी होगी, तो वह व्यक्ति समाज के लिए अभिशाप बन जाता है। ऐसे सुशिक्षितों को धिक्कार है। शिक्षा से चरित्र अधिक महत्व का है। युवकों की धर्म विरोधी प्रवृत्ति देखकर मुझे दुख होता है। कुछ लोगों का मानना है कि धर्म अफ़ीम की गोली है। परंतु यह सत्य नहीं है। मेरे अंदर जो अच्छे गुण हैं अथवा मेरी शिक्षा के कारण समाज का जो कुछ हित हुआ होगा, वे मेरे अंतर्मन की धार्मिक भावना के कारण ही है। मुझे धर्म चाहिऐ। परंतु धर्म के नाम पर चलने वाला पाखंड नहीं।' बाबासाहेब का अभिमत स्पष्ट है। शिक्षा जनहितकारी होनी चाहिए। शिक्षा से प्राप्त योग्यता का उपयोग वंचित समाज के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए। न कि उसके शोषण के लिए। शिक्षा का उद्देश्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' होना चाहिऐ न कि 'स्वहिताय स्वसुखाय'।

यही कारण है कि अम्बेडकर शिक्षा और शील को एक दूसरे का पूरक मानते थे। शील के बिना शिक्षा का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। शीलवान

व्यक्ति पारम्परिक अर्थ में शिक्षित न भी हो तो चल सकता है। क्योंकि शील साधना अपने आप में ही शिक्षा है। लेकिन शिक्षित व्यक्ति शीलविहीन हो इससे बड़ी त्रासदी और कोई नहीं हो सकती। डॉ.अम्बेडकर कहते हैं,'' इसमें कोई संदेह ही नहीं कि शिक्षा का महत्व है। लेकिन शिक्षा के साथ ही मनुष्य का शील भी सुधारना चाहिये। शील के बिना शिक्षा का मूल्य शून्य है। ज्ञान तलवार की धार जैसा है। तलवार का सदूपयोग अथवा दुरूपयोग उसको पकड़ने वाले पर निर्भर करता है।

वह उससे किसी का खुन भी कर सकता है और किसी की रक्षा भी कर सकता है। यदि पढ़ा लिखा व्यक्ति शीलवान होगा तो वह अपने ज्ञान का उपयोग लोगों के कल्याण के लिये करेगा। लेकिन यदि उसका शील अच्छा नहीं होगा तो वह अपने ज्ञान से लोगों का अकल्याण भी कर सकता है।'' भीमराव अम्बेडकर ने स्वयं अपनी शिक्षा का उपयोग अपनी सुख सुविधा के लिए नहीं बल्कि वंचित समाज के कल्याण के लिए किया। शिक्षा का इतना महत्व है तो शिक्षा देने वाले शिक्षक का महत्व तो उससे भी कई गुणा बढ़ जाता है। क्योंकि शिक्षा केवल किताबों से नहीं मिलती, वह शिक्षक के आचरण व व्यवहार से भी मिलती है। शिक्षा संस्कार बनाती है और संस्कार शिक्षक के आचारण से ही बनते हैं। इसलिए शिक्षा के मामले में बाबा साहब शिक्षक की भूमिका और चयन को लेकर अत्यंत सतर्क रहते थे। उन्होंने 1949 में अपने एक मित्र को लिखा, ' महाविद्यालय का प्राचार्य किसे नियुक्त किया जाये, इसको लेकर चिंता में हूँ। वेतन मात्र के लिए काम करने वाला प्राचार्य, संस्था को अपना मानकर आस्थापूर्वक कार्य नहीं करता। वह केवल स्वयं का विचार करता है। लेकिन मुझे तो योग्य प्राचार्य चाहिए।' शिक्षा और शिक्षक के मामले में अम्बेडकर जाति भेद

से कहीं दूर थे। उनके अपने मिलिंद महाविद्यालय के किसी आचार्य ने उनसे एक दफ़ा पूछा कि आप इतने ब्राम्हाण विरोधी क्यों हैं? अम्बेडकार का उत्तर मार्मिक था, 'मेरे मित्र! यदि मैं ब्राम्हाण विरोधी होता तो तुम इस महाविद्यालय में न होते। मेरी संस्था के शिक्षक बहुधा ब्राम्हाए ही हैं। मेरा विरोध ब्राम्हण जाति ये पहीं बल्कि ब्राम्हण से है'।

इसमें कोई शक नहीं की डॉ. अम्बेडकर शिक्षा को वंचित समाज के कल्याण और प्रगति का धारदार और कारगार हथियार मानते है। लेकिन शिक्षा को वे आईसोलेशन में पारिभाषित नहीं करते थे बल्कि उसके सर्वग्राही अर्थों में ही ग्रहण करते थे।

---

## 1.1.7 संगठन

हजारों वर्षों तक मनुवादीयों ने दलित समाज पर अमानुष अत्याचार किया। उन पर अमानवीय नियम लादे। उन्हें समाज से अलग रखा, शिक्षा से दूर रखा। उनके आत्मविश्वास को खत्म किया। हर तरह से उन्हें सताया गया। उन्हें यह महसूस कराया गया कि वे अस्पृश्य है। इस तरह वे गुलामी की जिदंगी जीने के लिए बाध्य हुऐ। यह सब हुआ अज्ञान के कारण। जब बाबासाहब ने इनत माम प्राप्त बाधाओं को पार कर उच्च शिक्षित किई और अपने समाज की इस गुलामी को दूर करने के लिए उन्हें जागरूक करने लगे। उनमें आत्मविश्वास भरने लगे। बाबासाहब ने सबसे पहले दलित समाज को शिक्षा ग्रहण करने को की प्रेरणा दी। इस अंधकार से निकलना है तो पहले शिक्षित बनो और फिर बाकी समाज को संगठित करो।

दलित समाज को एकत्रित होकर इस जातिव्यवस्था से लड़ना होगा। दलित समाज की स्त्रियों को एकत्रित होकर अपने परिवार को सही रास्ता दिखाना होगा। यह तब होगा जब घर की लड़की शिक्षित होगी। वह आने वाली पीढ़ियों को भी शिक्षित बना सकती है। इस तरह शिक्षा का प्रसार होगा। शिक्षा से ही अपने उपर होने वाले अन्याय के खिलाफ लड़ने की ताकद मिलेगी। इसी चेतना से सभी संगठित होगें और अपने मानवीय अधिकार की लड़ाई शुरू होगी।

''दलित समाज को शिक्षित होना चाहिए और अपने विचारों को उत्तेजित करना चाहिए। ताकि दलित समाज सामूहिक रूप से संगठित हो सके। एक साजा मिशन के लिए उत्तेजित मन उन्हें एक बल रूप में अपने सामान्य लक्ष्य के लिए एकजुट होने और संघर्ष करने में मदद करेगा। जब संगठित होने की बाद आती है, तो व्यक्ति को अपने ईरादे और मिशन के

प्रति ईमानदार होनी चाहिए। एक साधारण एजेंडा कभी भी कोई परिणाम नही देता है। और लोग असंगठित रहते है।''[48]

इस आंदोलन में दलित समाज को मनुवादी ताकतों से लड़ने के लिए उनका संगठित होना बहुत जरूरी है। संगठित होने पर ही मनुवादियों की ताकद कम होगी। बाबासाहब ने जितने भी आंदोलन किए उन सभी में उन्होंने सबसे पहले दलित समाज को एकत्रित किया। उन्हें पहले समस्या से रूबरू कराया। अपने अधिकारों की बात कही। जैसे पानी का अधिकार सार्वजनिक तालाबों से पानी लेना हमारा मानवीय अधिकार है। हम भी मनुष्य है। इस तरह समाज को समजाया। उनमें चेतना को जागरूक किया। धीरे–धीरे लोग संगठित होने लगे। फिर बाबासाहब ने चवदार तालाब का सत्यागह का आंदोलन शुरू किया। यह आंदोलन सफल हुआ । इस सफलता के पीछे दलित समाज का संगठित होना बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। क्योंकि हजारों सालों से तुटे हुऐ समाज को डॉ. अम्बेडकर ने एकत्रित, संगठित किया और उन्हें गुलामी का एहसास कराया। उनमें चेतना जगाई। इस तरह बाबासाहब ने दिए गये तीन सूत्र में से एक संगठित रहना यह दलित समाज ही गुलामी की झंझीर को तोटने के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

### 1.1.8 संघर्ष

[48] बी.आर.अम्बेडकर : स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज़, 1947, पृ.8

मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यू तक अनेकों संघर्षों से गुजरना होता है। खास तौर पर दलित समाज को समाज में रहने के लिए सामाजिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष, शैक्षणिक संघर्ष से गुजरना पड़ा है। महात्मा फुले के समय में भी दलितों को सार्वजनिक पानी लेने का अधिकार नहीं था। इस स्थिति से दलित समाज को उभारने के लिए ज्योतिराव फुले ने अपने घर का कुंआँ उनके लिए खुला किया। इस रूढ़ि परंपरा को तोड़ने के कारण ज्योतिराव फुले को समाज में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। आगे चलकर दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए भी संघर्ष करना पड़ा। इन्हीं से प्रेरणा ग्रहण करते हुए बाबासाहब अम्बेडकर ने उनको अपना गुरु माना और उन्हीं के नक्शे कदम पर चलते रहे। बाबासाहब ने पूरी जिंदगी दलितों को मानवीय मूलभूत अधिकार दिलाने के लिए अंत तक संघर्ष किया।

डॉ.अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को स्वीकार करके बौद्ध धर्म के मूल तीन तत्व स्वतंत्रता समता, भाईचारे को संघर्ष का मुद्दा बनाते हुए दलित मुक्ति आंदोलन को सक्रिय बनाया। समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का अवलंबन करने वाली नई समाज रचना का निर्माण करने के लिए और परंपराओं से बंधी हुई जीर्ण वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज व्यवस्था को नष्ट करने के लिए उन्होंने दलित समाज में चेतना जगाने का कार्य किया। हिंदू धर्म की वर्णव्यवस्था के कारण अंधकार पूर्ण जीवन बिताने पर दलितों को मजबूर किया गया और उसे सत्ता, संपत्ति, शिक्षा से वंचित रखा गया। इस विषमतापूर्ण स्थिति के खिलाफ संघर्ष करते हुए अनेक आंदोलन चलाऐ। बाबासाहब ने दलित समाज को आव्हान किया कि इस

मनुवादी ताकतों से लड़ना है तो संगठित हो जाओ, और फिर संघर्ष करते रहे।

### 1.1.9 स्वतंत्रता

स्वतंत्रता आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही प्रकार की होती है। आंतरिक स्वतंत्रता अधिकांशतः मनुष्य की भावनाओं पर आधारित होती है। प्रत्येक मनुष्य सहनशीलता से काम ले, तो वह आंतरिक रूप से स्वतंत्र है। लेकिन आंतरिक स्वतंत्रता स्वयं निरपेक्ष नहीं है। वह सापेक्षिक है, अर्थात् आंतरिक स्वतंत्रता बाह्य परिस्थितियों पर भी निर्भर है। समाज में पाये जाने वाले आचार–विचार उसके सहायक अथवा विरोधी सिद्ध हो सकते है। यह पक्ष इस बात को सिद्ध करता है कि मनुष्य को विभिन्न प्रकार की बाह्य स्वतंत्रताएं प्राप्त होनी चाहिए।

बाह्य स्वतंत्रता का अर्थ है कि मनुष्यों को एक दूसरे के हितों का ध्यान रखना चाहिए। सामाजिक संबंधों में यह बात सत्य भी है, क्योंकि हर एक व्यक्ति किसी–न–किसी के ऊपर निर्भर है। समाज के सभी सदस्यों में आपसी सहयोग होना चाहिए। संपूर्ण समाज व्यक्तियों पर उतना ही निर्भर है, जितना कि सब व्यक्ति समाज पर । ''बाह्य स्वतंत्रता व्यक्ति की वह भावना है, जो सामाजिक क्षेत्र में इस तरह कार्य करती है कि एक तरफ उसकी स्वतंत्रता पर दूसरे लोगों की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु कुछ नियंत्रण हो जाते हैं और दूसरी और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा हेतु अन्य लोगों की

स्वतंत्रता पर कुछ बंधन लगा दिये जाते हैं।''[49] यह पारस्परिक सहयोग मानव की स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है।

मानव सहयोग सामाजिक स्वतंत्रता की मांग करता है। सामाजिक स्वतंत्रता में मुख्यतः दो बातें आती हैं– 1. एक ही समुदाय में रहने वालों की स्वतंत्रता और 2. अन्य समुदायों से एक समुदाय की स्वतंत्रता। किसी समुदाय में रहने वाले व्यक्ति के ऊपर अनेक दबाव पड़ते हैं, तो उसे स्वतंत्रता नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उसके उदे्श्यों का निर्धारण वह स्वयं नही कर पाता है, अन्य ही लोग करते हैं। जब उसे सामुदायिक नियंत्रण एवं अत्याचार से मुक्ति मिल जाती है और वह अपने ध्येय के अनुसार जीवनयापन करने लगता है, तो वह स्वतंत्र माना जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि समाज में सब व्यक्तियों के लिए समान नियम, कर्तव्य एवं अधिकार होने चाहिए। प्रत्येक सदस्य हो रोजी कमाने, विचार–विनिमय, संगठन आदि की स्वतंत्रता होनी चाहिए, लेकिन व्यक्तिगत स्वतंत्रता से अन्य लोगों का अहित नहीं होना चाहिए। संक्षेप में, डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, ''समुदाय में स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि कोई मनुष्य भय एवं भूख से पीड़ित न हो। उस पर किसी का अनावश्यक नियत्रंण न हो और वह शांतिपूर्वक न्यायोचित समाज व्यवस्था में रहता हो''[50]

एक समुदाय की स्वतंत्रता का दूसरे समुदायों की स्वतंत्रता में अंतर है। प्रत्येक बड़े समाज में अनेक सामाजिक इकाइंया या समुदाय होते है। वास्तविक सामाजिक स्वतंत्रता तभी है, जब सब समुदाय एक दूसरे के

[49] एल.वॉन.मिसेल : सोशलिज्म,1953, पृ.192
[50] बी.आर.अम्बेडकर : स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947, पृ.3

नियंत्रण एवं अत्याचार से पीड़ित न हों। वे अपने जीवन को अपने मूल्यों के अनुसार चलाते हो। आपसी सहयोग एवं सामाजिक एकता का भाव ही सब समुदायों के लिए स्वतंत्रता ला सकता है। यही कारण है कि डॉ. अम्बेडकर ने अपने समाज में सामान्य हित पर जोर दिया । सामाजिक स्वतंत्रता की सफलता के लिए प्रत्येक व्यक्ति में सहनशीलता होना अति आवश्यक है। विभिन्नता में सहनशीलता एवं एकता सामाजिक स्वतंत्रता का मूल स्त्रोत है।

### 1.1.10 समता

मनुष्यों में कुछ व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं, जिनका अंत करना असंभव है। उनकी इच्छाएँ, भावनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ भिन्न होती हैं। अतः किसी भी क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्रता की कल्पना करना व्यर्थ है। ''डॉ.अम्बेडकर इस बात को पूर्ण रूप से स्वीकार करते थे। लेकिन जहां तक मनुष्य की कुछ सामान्य विशेषताओं का प्रश्न है, वहाँ पर समता का सिद्धांत स्वीकार किया जाना चाहिए। सब व्यक्तियों को सैद्धांतिक दृष्टि से समान समझना प्रजातंत्र का मौलिक आधार है। जाति, धर्म, लिंग, वर्ग एवं राष्ट्रीयता से परे सब व्यक्तियों में एक सामान्य विशेषता है और वह यह है कि 'सब लोगों में बुद्धि' है।''[51] इस दृष्टि से, सभी लोग मानव अथवा बौद्धिक समाज के सदस्य हैं। वे उन विशेष समुदायों के सदस्य नहीं, जिनमें वे पैदा हुए। समता का सिद्धांत मनुष्य की सामान्य विशेषताओं से निकलता है, न कि उन बातों से, जो उन्हें विभाजित करती हैं।

---

[51] डब्ल्यू. एबिन्स्टॉइन : टूडेज–इज्मस्, 1956, पृ.97.

''मूल प्रश्न यह है कि समता को व्यावहारिक रूप कैसे प्रदान किया जाये? समता केवल विचार–मात्र ही नहीं है, विचारों में ही अनुभव किया जा सके। इसके लिए व्यावहारिक मापदण्ड की आवश्यकता है। उसे अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाओं को इस प्रकार बनाना चाहिए कि वे उन संबंधों को बढ़ाएँ, जो समता को दृढ़ करे और उन अनावश्यक भिन्नताओं को कम करे, जो समता के भाव को दुर्बल बनाती हैं। यह सब कुछ मानव संगठन की दूरदर्शिता पर निर्भर है कि सब लोग मिलकर कहाँ तक समता का राज्य बनाने में सफल होते हैं।''[52]

सभी व्यक्तियों में मूल्यांकन करने योग्य कुछ, बातें होती हैं, जिन्हें उनके साथी आसानी से नाप सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य, जिस समाज में रहता है। उसके लिए योगदान करता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने समाज के नियम एवं कानून बनाने में कुछ आंशिक अधिकार होने चाहिए। आज सब लोग यह जानते हैं कि अधिकारों का जीवन में अधिक महत्व है। यदि वे कुछ वर्गों को न दिये जायें अथवा उनका हनन हो, तो अनेक उपद्रव होने की संभावना बनी रहती है। यदि सामान्य हित की रक्षा करनी है और समता का सिद्धांत दृढ़ बनाना है, तो ऐसे संबंध, जो जाति–पांति, छुआछूत एवं वर्ण–व्यवस्था पर आधारित हैं, समाप्त होने चाहिए। समता के सिद्धांत में उनका कोई महत्व नहीं है। अतः समता का प्रथम तत्व यह मांग करता है कि ''कर्तव्य एवं अधिकारी में संतुलन'' होना चाहिए। बिना उनके संतुलन के न्यायोचित समाज की स्थापना करना असंभव हैं।

इस दृष्टि से वैधानिक अधिकारों की और ध्यान जाता है। अधिकार विभाजन में अनावश्यक भिन्नता, वैमनस्य एवं घृणा का कारण है। यह एक

---

[52] बी.आर.अम्बेडकर : स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947, पृ.38

ऐतिहासिक तथ्य है कि जहाँ अन्याय एवं अत्याचार का जोर रहता है, वहाँ पर सामाजिक उपद्रव होत रहते हैं। अधिकारों की भिन्नता क्रांति का कारण है। अमेरिका एवं अफ्रीका में काले लोगों के अधिकारों का हनन वहाँ की अशांति का मुख्य कारण है। बिना अधिकारों के लोग एकत्रित होकर हिंसात्मक विधियों का भी प्रयोग कर सकते हैं। ऐसा होता भी है। अतः डॉ. अम्बेडकर इस बात पर बल देते थे कि शांति एवं न्याय–व्यवस्था बनाये रखने के लिए समान अधिकारों का होना आवश्यक है। इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि सब लोग कानून की दृष्टि में समान हैं। बाबासाहब ने भारतीय संविधान में अधिकारों की समता एवं कानून की व्यवस्था को भलीभांति प्रतिपादित किया है।

कानून की समता समान राजनीतिक अधिकारों पर भी बल देती है। इसका अर्थ है–'राजनीतिक समता'। राजनीतिक समता केवल व्यस्क मताधिकार ही नहीं है। यह तो इसका एक अंग है। राजनीतिक अधिकारों का महत्व उसी समय है, जब व्यक्ति शिक्षित हो। वे अपने अधिकारों को अच्छी तरह समजते हों, अन्यथा चालाक लोग अशिक्षित एवं साधनहीन मनुष्यों को ठगते हैं। उनकी इच्छानुसार कार्य न करने पर अनेक यातनाएँ झेलनी पड़ती हैं। इसलिए जब तक जन शिक्षा, पूर्ण व्यवसाय, समान अधिकार, अवकाश आदि न हो, तब तक राजनीतिक अधिकारों का कोई महत्व नहीं है।

कानून की दृष्टि से समता के अधिकार में यह भी सन्निहित है कि 'सबके साथ आर्थिक न्याय' हो। इसका अर्थ है –'आर्थिक समता'। आर्थिक समता यह नहीं कहती कि समस्त धन बराबर बांट दिया जाये। ऐसा सोचना बिल्कुल ही निरर्थक है। डॉ. अम्बेडकर ने केवल अवसर की समता

पर बल दिया, जिसका अर्थ है–' प्रत्येक से उसकी योग्यता एवं गुण के अनुसार काम लिया जाना चाहिए, प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार फल भी दिया जाना चाहिए।' जो व्यक्ति जिसके योग्य है, उनको ही वह कार्य मिलना चाहिए और उत्पादित धन का योग्यतानुसार समान वितरण किया जाना चाहिए। श्रमिक वर्ग को उचित वेतन एवं बोनस मिलना भी न्यायोचित है। काम के घण्टे भी कम से कम होने चाहिए, ताकि श्रमिक लोग अपना कुछ, समय सांस्कृतिक क्रियाओं में भी दे सकें। ऐसी अवस्था में ही अवसर की समता का सिद्धांत सार्थक एवं साकार हो सकता है।

यह स्वीकार करना उचित है कि राज्य उद्योग क्षेत्र में श्रम–कल्याण की और अधिक ध्यान दिया जाता हैं उन्हें और भी आर्थिक सुविधाएं दी जाती हैं। लेकिन पूंजीवादी वर्ग श्रमिकों का कुछ ध्यान नहीं रखते हैं, क्योंकि ऐसा करने से पूंजी पति अपनी आय का अतिरिक्त हिस्सा खो बैठते हैं। कभी–कभी वे अपने उद्योगों को बंद कर देते हैं, लेकिन श्रमिकों का वेतन बढ़ाना स्वीाकार नहीं करते हैं। वे श्रमिकों से काम अधिक लेते हैं और वेतन कम देते हैं। परिणाम यह होता है कि श्रमिक वर्ग गरीब होता चला जाता है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर के अनुसार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अवसर की समानता के सिद्धांत का गला घोंट देती है। श्रमिक वर्ग को लाभ पहूँचाने के लिए, राज्य द्वारा आर्थिक नियोजन होना आवश्यक है। साथ ही साथ राज्य कर्मचारियों को भी परिश्रमी होना चाहिए, ताकि राज्य के उद्योगों में हानि न हो। संक्षेप में, डॉ. अम्बेडकर का राज्य समाजवाद अवसर की समता के लिए एक उत्तम उपाय है।

डॉ. अम्बेडकर का राज्य समाजवाद ठीक ही प्रतीत होता है। इसके अतंर्गत उत्पादन के साधनों के मालिकों पर कुछ आवश्यक प्रतिबंध लगाने

का सुजाव है। उनका समाज उन सभी लोगों के लिए हितकर है। जो शोषित हैं और दीन–हीन एवं दुर्बल हैं। उन लोगों के लिए भी सुविधाएँ हैं, जो अशिक्षित एवं रोगग्रस्त हैं। अन्य शब्दों में, राज्य–समाजवाद सब तरह से मिश्रित अर्थ व्यवस्था का ही स्वरूप है। राज्य समाजवाद में ही वे आर्थिक न्याय को दृष्टिगोचर करते हैं।

बाबासाहब का समता का सिद्धांत कम वेतन, अधिक देर तक कार्य के घण्टे, दूषित, वातावरण, शक्ति क्षीणता, बीमारी, अशिक्षा, दुर्व्यवहार जो मजदूर वर्ग के साथ किया जाता है, आदि को सहन नहीं करता। ये सब बुराइयाँ न्यायोचित धन–वितरण, कुशल से, सामाजिक सहयोग बढ़ाने से और सामूहिक प्रयत्नों से समाप्त की जा सकती हैं। इसमें व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित दोनों हैं। वही सामाजिकता मिलती हैं और मानवता का आदर होता है।

### 1.1.11 भ्रातृत्व

भ्रातृत्व का अर्थ 'सभी मनुष्यों में प्रेम एवं भाई–चारे की भावना' से है, जिसके आधार पर सब लोग मिलकर शांतिपूर्वक रहते हैं। विभिन्न सामाजिक इकाइयों एवं विभिन्न देशों में एकता की भावना भ्रातृत्व का ही प्रदर्शन है। यह भावना तभी ठीक तरह अनुभव की जा सकती है, जैसा कि डॉ. अम्बेडकर पूर्व में ही कह चुके हैं, जब विचार–विनिमय अच्छे प्रकार से हो, जिसके द्वारा सभी सामाजिक परिवर्तन एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से जा सकें। विचार–विनिमय से विभिन्न प्रकार की बातों का ज्ञान होता है। इससे लोगों में निकटता के भाव का संचार होता है। कुछ लोगों

को ज्ञान एवं शिक्षा से वंचित रखना भ्रातृत्व की भावना का गला घोंटना है।

सामाजिक गतिशीलता के सिद्धांत का भ्रातृत्व से घनिष्ठ संबंध है। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ''गतिशीलता से तात्पर्य यह है कि सब वर्ग आपस में प्रेम भाव से रहें और समयानुसार इधर–उधर घूमकर अच्छे संबंध स्थापित करे। उनमें ऊंच–नीच का कोई भाव न हो। व्यक्ति को एक ही स्थान पर उसके जन्म की वजह से निश्चित नहीं कर देना चाहिए। वह एक ऐसी समाज–व्यवस्था में विश्वास करते थे, जिसमें एक व्यक्ति का स्तर उसकी योग्यता के आधार पर स्वतंत्रतापूर्वक परिवर्तित होता रहे। भ्रातृत्व का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि लोगों में एक ऐसा सामाजिक प्रवाह रहे कि विचार एवं घटनाओं का विनिमय होता रहे। डॉ. अम्बेडकर ने सदैव नवीन बातों को उत्साहित किया। अंतः सामाजिक गतिशीलता रखने के लिए विचार एवं संस्थाओं में मनुष्यों की आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहना चाहिए।''[53]

अन्य दृष्टिकोन से, भ्रातृत्व का अर्थ सामाजिक एवं आध्यात्मिक समरूपता तथा भावात्मक एकता से है। केवल धर्म–निरपेक्षता सामान्य शुभ, मानववादी दृष्टिकोण, समाजवादी उत्साह, प्रेम और सहयोग की भावनाओं से ही इस सिद्धांत की जड़े सुदृढ़ हो सकती हैं। धर्म एवं उच्चतम मूल्यों के द्वारा समाज में आध्यात्मिक एकता होनी चाहिए। कुछ लोग भ्रातृत्व से राष्ट्रवाद की भावना जोड़ देते हैं। यह भावना भी डॉ. अम्बेडकर के दर्शन में कूट–कूट कर भरी है। वह सच्चे राष्ट्रवादी थे। देश–भक्ति की भावना

[53] बी.आर.अम्बेडकर : एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, 1936,पृ.38.

उनके विचारों में भरी पड़ी है। उनका भ्रातृत्व का सिद्धांत व्यक्तिवाद एवं समाजवाद, राष्ट्रवाद एवं मानववाद और भौतिकवाद एवं आध्यात्मिकता के समन्वय का एक रूप है। यही कारण है कि वह वर्ग–विशेष के समर्थक नहीं रहे और देश की सीमाओं से आगे बढ़ कर मानवता की भलाई के लिए उन्होंने बुद्ध का संदेश दिया।

उपर्युक्त विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष होते हैं–

1. स्वतंत्रता एक सामाजिक आदर्श के रूप में व्यक्ति की स्वेच्छा पर आधारित होनी चाहिए। जो आध्यात्मिक संयम की ओर भी ले जा सके। यह मन एवं बुद्धि को स्वसंयम एवं स्वसंस्कृति को शुद्ध एवं प्रखर बनाने का एक उपयुक्त साधन है। इसमें सभी भाइयों से मिलने की पूर्ण स्वतंत्रता है। मानव एक बौद्धिक प्राणी है, उसे स्वतंत्रता की आवश्यकता है।
2. समता भी एक सामाजिक आदर्श के रूप में आत्मोन्नति एवं सामाजिक विकास का प्रमुख साधन है। सब मनुष्यों के बीच अधिकतम समता होनी चाहिए। सामाजिक धन का वितरण भी उचित हो। प्रत्येक मनुष्य को योग्यतानुसार कार्य एवं वेतन मिले, यही समता की मांग है।
3. भ्रातृत्व एक सामाजिक आर्दश के रूप में स्वतंत्रता एवं समता के बिल्कुल निकट है। यह एक ऐसी भावना है, जिससे सब प्रकार की एकता का आव्हान होता है। विचार–विनियम द्वारा सब में एकत्व की भावना का जागरण ही भ्रातृत्व कोई पृथक–पृथक मूल्य नहीं हैं।

तीनों जीवन के संगठित मूल्य हैं। उनकी समग्रता से ही जन कल्याण संभव है।

यहाँ यह कहा जा सकता है कि ये सिद्धांत किसी भी उचित समाज व्यवस्था के स्तंभ है। हमारे भारतीय समाज के ये मूलाधार हैं। डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक मानववाद का सिद्धांत समयानुकूल ही है, जो– 1. न्याय– सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक

**1.** स्वतंत्रता– विचार, विश्वास एवं पूजा

**2.** समता – अवसर एवं स्तर की ओर

**3.** भ्रातृत्व– व्यक्तिगत सम्मान एवं राष्ट्रीय एकता

पर बल देता है। आज ये राजनीतिक सिद्धांत ही समजे जाते हैं, किंतु आगामी युग में ये सब के लिए सामाजिक आर्दश बन जायेंगे, क्योंकि इनको सामाजिक आदर्श बनाये बिना भारतीय समाज का कल्याण संभव नहीं हो सकता।

## 1.2 मराठी दलित लोकगीतों की ऐतिहासिक परंपरा

हिंदी साहित्य के बरक्स एक ऐसी साहित्य धारा भी रही है, जो सोचने–समझने, अनुभवों को व्यक्त करने, अपने निर्णयों को तर्क–विवेक पर कसने से लेकर प्रतिरोध करने, विरोध की चेतना को जगाने का काम करती रही है। इस परंपरा को बौद्धों–सिद्धों, नाथों से लेकर, कबीर, नानक, दादू, मलूक, सरहपा, रैदास आदि ने आगे बढ़ाया है। यह हिंदी साहित्य के एक समानान्तर धारा रही है। इसमें परंपरा बतलायी गयी, रूढ़ियों और कृत्रिम संस्कारों के साथ–साथ सगुणभक्ति के आड़ंबरों और ढकोसलों, पाखंडों और आनुष्ठानिक पद्धतियों का प्रखर विरोध किया गया। वर्ण व्यवस्था की प्रस्थापित धार्मिकता और जातिवादी समाज व्यवस्था का विरोध निरंतर चलता रहा। उन्होंने इन आडंबरपूर्ण परिस्थितियों से मुठभेड़ करके ऐसे समाज की संकल्पना प्रस्तुत की जिसमें मानव समानता के आधार पर रिश्ता स्थापित कर सके।

संत साहित्य की यह परंपरा अत्यंत ऊर्जावान एवं प्रगतिशील रही है। जड़वादी सोच को गतिशील करने के लिए इस साहित्य के अध्यापन अध्ययन की बहुत दिनों से आवश्यकता महसूस की जा रही थी। भक्ति साहित्य के प्रमुख तत्व मानव को संघर्ष और विरोध कर सकने की ऊर्जा से विमुख रखने के लिए प्रेरित करते हैं। यह एक भाववादी साहित्य होने के कारण संत साहित्य में अकर्मण्यता और निष्क्रियता का कड़ा विरोध किया गया है। परंपराओं की रूढ़ता और सामाजिक जड़ता के सापेक्ष विद्रोह, चेतना, सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक आकांक्षा के इस

साहित्य में मानवीय गुणों के विकास के अवसरों को समता के धरातल पर विकसित करने पर बल दिया गया है।

क्रांति का जन्म शांति के गर्भ में नहीं होता। सामाजिक एवं राजनीतिक अशांति ही उसके जन्म का मूल कारण होती है। महाराष्ट्र में संतों के प्रादुर्भाव का प्रमुख कारण वहाँ की राजनीति एवं सामाजिक परिस्थिति है। मुस्लिम शासन के पूर्व वहाँ यादव वंशीय राजाओं का शासन था। महाराष्ट्र की जनता के लिए वह सुख एवं समृद्धि का काल था। इस काल में महाराष्ट्र में साहित्य, संगीत, कला तथा धर्मशास्त्र आदि विद्याओं की पर्याप्त उन्नति हुई। उन दिनों सारी विद्याएँ संस्कृत साहित्य में ही उपलब्ध थीं तथा जनसामान्य की पहुँच से बाहर थीं।

उन दिनों महाराष्ट्र में नाथ संप्रदाय, महानुभाव संप्रदाय, वारकरी संप्रदाय एवं समर्थ संप्रदाय का बोलबाला था। संत ज्ञानेश्वर पहले नाथ संप्रदाय में दीक्षित थे किन्तु व्यापक एवं मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण उन्होंने वारकरी संप्रदाय की नींव डाली। संत एकनाथ भी पहले दत्त संप्रदाय में दीक्षित थे किन्तु बाद में वारकरी संप्रदाय के आधार स्तम्भ बने। महाराष्ट्र में पाँच संप्रदाय मुख्य रूप से थे किन्तु उनमें कभी भी परस्पर टकराव की स्थिति नहीं आती थी।

सन 1490 से 1526 ई. के बीच बहमनी राज्य पाँच खण्डों में विभाजित हुआ जिनमें से अधिकांश का संबंध महाराष्ट्र से था। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में दूरदर्शी शाहजी के महत्वाकांक्षी पुत्र शिवाजी ने मराठा राज्य की स्थापना कर उसका विस्तार किया जिसमें परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से

एकनाथ, तुकाराम तथा रामदास आदि संतों का योगदान रहा। उन्होंने अपनी वाणी से जनता की अस्मिता को जगाया।

तेरहवीं शताब्दी के अंत में, पहले मुगलों के आक्रमण, फिर कुछ काल तक चलने वाला उनका शासन तथा बाद में आया बहमनी शासन महाराष्ट्र के जीवन के लिए किसी दैवी आपदा से कम नहीं था। उन्होंने मराठों की सत्ता के साथ–साथ मराठों का हिन्दू–धर्म, उनकी प्राचीन परंपराएँ तथा उनकी अस्मिता को ध्वस्त करने का मानों बीड़ा उठा लिया था। मराठा सरदार तथा विद्वान शास्त्री पंडित भी इसे नहीं बचा पाये। डॉ. पु.ग सहस्त्रबुद्धे लिखते हैं, 'ऐसी स्थिति में यदि ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम एवं रामदास जैसे संतों का इस भूमि पर पर्दापण न हुआ होता तो महाराष्ट्र का सर्वनाश अटल था।' उन्होंने अपनी वाणी से तथा कृर्तत्व से भारत के प्राचीन वैदिक धर्म का पुनरूद्धार किया और उस विनाशकारी सोच से समाज की रक्षा करने का प्रयास शूरू किया। महाराष्ट्र में वारकरी पंथ की स्थापना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। महाराष्ट्र में वारकरी पंथ की नींव किसने डाली यह कहना कठिन है। इस पंथ की दो प्रमुख विशेषताएँ है।

1. विठ्ठल भक्ति
2. पंढरी की वारी – यात्रा

ये दोनों बातें ज्ञानदेव से पूर्व भी प्रचलित थीं। ज्ञानदेव के माता–पिता पंढरी की वारी करते थे इसका उल्लेख नामदेव ने भी किया है। इसके अतिरिक्त द्वारकाधीश कृष्ण भक्त पुंडलिक से मिलने उसके घर आये थे

और पुंडलिक के कहने से वे अटाईंस युगों तक ईंट पर खड़े रहे इस बात का उल्लेख भी नामदेव ने किया है–

**'युगे अट्ठावीस विठेवरी उभा।'**

इससे इस बात की पृष्टि होती है कि विठ्ठल की पूजा ज्ञानेश्वर जी के पूर्व भी होती थी।

संत ज्ञानेश्वर के व्यक्तित्व के कई आयाम हैं किन्तु वारकरी या भागवत संप्रदास को संगठित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वयं भी समाज से बहिष्कृत होने के कारण उन्होंने समाज के विभिन्न तबकों का गहराई से अध्ययन किया। उस जमाने में बहुजन समाज अर्थात निम्नवर्ग के लोगों को धर्म, तत्वज्ञान, अध्यात्म आदि के ज्ञान से वंचित कर दिया गया था। बहुजन समाज के लोगों की आत्मिक उन्नति के संबंध में गीता में लिखा गया ज्ञान संस्कृत में होने के कारण वह ज्ञान बहुजन समाज के लिए दुरूह था। ज्ञानेश्वरजी ने गीता पर मराठी में टीका लिख कर वह ज्ञान 'बहुजन हिताय' कर दिया।

संत ज्ञानदेव के ही काल में पंढरपुर में संत नामदेव नामक एक भक्त पैदा हुए। वे सगुण उपासक थे और जाति के दर्जी थे। उन्होंने ज्ञानदेव के जीवन काल में तथा उनकी समाधि के चौवन वर्ष बाद तक इस पंथ का प्रचार–प्रसार किया। ' शतकोटि तुझ गाईन अभंग' यह प्रतिज्ञा कर उन्होंने अपने अभंगों के माध्यम से 'विठ्ठल का मिथक तैयार किया और कीर्तनों के माध्यम से उसे समाज में प्रसारित किया। इसका यह परिणाम हुआ कि अनेक संतों ने विठ्ठल भक्ति पर अगणित रचनाएँ की और नामदेव की शतकोटि अभंगों की प्रतिज्ञा पूरी की।

ज्ञानदेव के लगभग पौने–तीन सौ वर्ष बाद एकनाथ ने ज्ञानदेव के उपदेशों को नये प्रकाश में देखा। उन्हें प्रेम से 'ज्ञान का एका' भी कहते हैं। 'भागवत' के एकादशवें स्कंद पर उन्होंने विस्तृत टीका लिखी और ज्ञानदेव ने गीता के आधार पर जिस दर्शन का आविष्कार किया था उसी दर्शन का भागवत के आधार पर प्रतिपादित किया। इससे गीता के साथ–साथ भागवत भी वारकारी संप्रदाय में प्रतिष्ठापित हो गया। उनका साहित्य सामाजिक चेतना से विशेष रूप से प्रभावित है।

संत एकनाथ के पचहत्तर वर्ष बाद तुकाराम का अवतार हुआ। उन्हें 'नामयाचा तुका' भी कहा जाता है। इन्होंने भी अपने कीर्तनों के माध्यम से वारकरी तत्व का प्रचार–प्रसार किया। इन्होंने ज्ञानदेव, नामदेव तथा एकनाथ के साहित्य का गहराई से अध्ययन किया था। इन तीनों संतों के उपदेश भले ही एक जैसे लगते हों लेकिन उनमें थोड़ा अंतर है। ज्ञानदेव का आविष्कार आत्माभिमुख है, नामदेव का परमात्माभिमुख तथा एकनाथ का समाजाभिमुख है। तुकाराम इन तीनों का संगम है। तुकाराम के पश्चात इस पंथ का विकास रूक गया और केवल विस्तार होता रहा। तुकाराम कलश बन गये । संत तुकाराम की शिष्या संत बहिणाबाई ने अनेक अभंगों की रचना की। उपर्युक्त तीनों संतों की कृतित्व पर उन्होंने अपने अभंग में इस प्रकार प्रकाश डाला है।

**''सन्तकृपा झाली, इमारत फळा, आली,**
**ज्ञानदेव रचिला पाया, उभारिलें देवालया,**
**नामा तयाचा किंकर, तेणें केला हा विस्तार।**
**जनार्दनी एकनाथा, स्तंभ दिला भागवत,**

**भजन करा सावकाश, तुका झालासे कळस।''[54]**

महाराष्ट्र पर संतों की कृपा हुई और उन्होंने यहाँ एक अपूर्व मंदिर बनवाया। इस मंदिर की नींव संत ज्ञानेश्वर ने रखी, विस्तार नामदेव ने किया, संत एकनाथ ने इस मंदिर के स्तंभ बनवाये और संत तुकाराम ने इस पर कलश चढाया ।

वारकरियों के लिए वारी यात्रा करना सबसे महत्वपूर्ण नित्यकर्म है। वर्ष में कम से कम एक बार ये लोग पढंरपुर जा कर विठ्ठल का दर्शन करते हैं इसलिए पंढरपुर को किसी तीर्थक्षेत्र का महत्व प्राप्त हो गया है। काशी रामेश्वर आदि तीर्थों की यात्रा जीवनकाल में एक बार और वह भी वृद्धावस्था में की जाती हैं। किन्तु पंढपुर की यात्रा वर्ष में कम से कम एक बार करनी पड़ती है। विठ्ठल से भेंट करना यही इस यात्रा का उद्देश्य होता है। यह भेंट उसी प्रकार है जिस प्रकार कोई बेटी वर्ष में एक बार माँ से मिलने जाती है। मायके में माँ के सान्निध्य में कुछ दिन रहने से जिस प्रकार उसे ससुराल में होने वाले कष्टों को सहन करने का धैर्य प्राप्त होता है, उसी प्रकार वारकरी को वारी करने के बाद सांसारिक दुःखों का मुकाबला करने की शक्ति प्राप्त होता है।

संत ज्ञानदेव और संत नामदेव इन दोनों ने उत्तर भारत की यात्रा की और यात्रा के दौरान वहाँ भक्ति मार्ग का प्रचार किया। नामदेव से उत्तर भारत के संतों ने स्फूर्ति प्राप्त की, महाराष्ट्र के विठ्ठल समस्त भारत के विठ्ठल हो गये।

---

[54] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 10, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई. ।

संत ज्ञानदेव और संत नामदेव के समय मानों अध्यात्म के क्षेत्र मे जनतंत्र शुरू हो गया था। संत ज्ञानदेव के उपदेश के अनुसार अब अध्यात्म के क्षेत्र में सभी वर्णों का समान रूप से अधिकार मान लिया गया। अब स्त्री, शूद्र और पापी भी ईश्वर की भक्ति करने पर मोक्ष के अधिकारी हो गये। इसके फलस्वरूप प्रत्येक जाति में संत पैदा हुए। जिनमें संत नरहरी सोनार, संत सेनानाईं, संत गोरा कुम्भार, संत चोखोबा आदि प्रसिद्ध हैं। इनमें प्रायः सभी संतों ने अपनी ही जाति का उल्लेख किया है। सेना नाई कहते है पांडुरंग, मैं जाति का नाई हूँ। चोखोबा तथा कान्होपात्रा ने नितांत करुण अभंग लिखे हैं।

**''जोहार मायबाप जोहार। तुमच्या महाराचा मी महार।।**
**बहु भुकेला जाहलों। तुमच्या उष्टयासाठीं आलों।।**
**बहु केली आस। तुमच्या दासाचा मी दास।।**
**चोखा म्हणे पाटी। आणसी तुमच्या उष्टयासाठीं।।''[55]**

– संत चोखामेळा

अर्थात् मैं दासों का दास हूँ, अछूत से भी अधिक अछूत हूँ। जूठा खाना मेरा धर्म है। मैं आपके दरवाजे पर खड़ा रहने वाला दास हूँ ।

'संचित माझें खोटें मज असे ग्वाही।
तुज बोल नाहीं देवराया।।'

अर्थात् मेरा विश्वास है कि मेरा भाग्य ही खराब है, मैं तुम्हें दोष नहीं देती। विठ्ठल सम्प्रदाय या भागवत सम्प्रदाय महाराष्ट्र में बहुत प्रसिद्ध है। आषाढ़ या कार्तिक शुक्ल एकादशी को पंढरी की वारी करना आवश्यक

[55] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 60, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

माना गया। मराठी भागवत सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ 'ज्ञानेश्वरी' है। ज्ञानेश्वर के 'चांगदेव पासष्ठी' तथा 'अमृतानुभव' भी प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। सन् 1296 में ज्ञानेश्वर का अवतार कार्य समाप्त हो गया और इसी के साथ महाराष्ट्र का स्वतंत्रसूर्य अस्त हो गया।

डॉ. हेमंत इनामदार के अनुसार, 'ज्ञानदेव ने अपने निरूपण में सगुण और निर्गुण तथा द्वैत और अद्वैत का अपूर्व सामंजस्य स्थापित किया है। इस तरह उन्होंने आराधना के विभिन्न पंथों और मतभेदों का विरोध मिटा दिया।' ज्ञानदेव ने पहली बार यह प्रतिपादिति किया कि भगवान और भक्ति का नाता प्रियतम–प्रियतमा की कामुक वृत्ति पर आधारित नहीं होता। वारकारी भक्ति की धारणा है कि भक्तों के लिए विठुमाता से प्रेम धाराएँ फूट पड़ती है जैसे शिशु के मुँह मारने से माँ के स्तनों में दूध उतर आता है। संत जनाबाई का कहना है कि बालगोपालों को साथ ले कर घुमने वाला विठोबा स्नेहशील पिता है। भानुदास मानते हैं कि ममतामयी माँ जीवन की क्रांति है। वह भक्तों का प्रेम निभाती है। संत तुकाराम कहते है कि जब स्वयं विठ्ठल हमारी माँ है तो भला हमें किस चीज की कमी है?

इस प्रकार मातृभक्ति और वात्सल्य रस में भीगी हुई वात्सल्य भक्ति भागवत् धर्म को ज्ञानदेव का अमूल्य उपहार है। ज्ञानदेव कहते हैं कि उत्तम कुल, उच्च जाति अथवा श्रेष्ठ वर्ण ये बातें निरर्थक हैं। जीवन की वास्तविक सार्थकता अनन्य भाव से ईश्वर को अर्पित हो जाने में है। संत ज्ञानदेव के भक्ति सम्प्रदाय में भागवत जैसे ब्राह्मण से लेकर संत चोखाबा जैसे शूद्र तक सभी को समान दर्जा प्राप्त है। संत नामदेव ने एक और

संत ज्ञानदेव का चरित्र लिखा और भागवत भक्तों को उपदेश दिया, दूसरी और संत चोखाबा की अस्थियाँ लाकर पंढरपूर के महाद्वार के सामने उनकी समाधि बनायी और दासी जनी को 'जनाबाई को' अपने परिवार के साथ परमार्थ का मार्ग दिखाया। सामाजिक जीवन में गीताप्रणीत चातुर्वर्ण्य का प्रतिपालन करते हुए मराठी संतों ने धर्म के मामले में सामाजिक समता का ही दृष्टिकोण रखा। संत जातिभेद का पालन करते हुए भी जातिभेद से बचे रहे। अपने आचरण से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि अपनी देहरी के भीतर तुम चाहे जिस धर्म का पालन करो किन्तु भक्ति के प्रांत में वर्ण व्यवस्था का कोई मूल्य नहीं है।

सोलहवीं शताब्दी में पैठण के संत एकनाथ ने ज्ञानेश्वरी का पुनरुद्धार किया तथा भागवत धर्म को गति प्रदान की। एकनाथ ने ज्ञानेश्वर, नामदेव के कार्य को संपन्न किया। संत तुकाराम जनता के अत्यंत प्रसिद्ध संत कवि या भक्त हुए। उन्होंने ज्ञानेश्वर के तत्वज्ञान तथा भक्ति विचारों को गाँव –गाँव तक पहूँचाया। ग्यानबा–तुकाराम शब्द से महाराष्ट्र संस्कृति का यथार्थ बोध होता है। डॉ. दिवाकर कृष्ण कहते हैं–'महाराष्ट्र में संत तुकाराम के अंभग जनता के गले का हार हैं।'

महाराष्ट्र में समर्थ संप्रदाय के प्रवर्त्तक स्वामी समर्थ रामदास का विशिष्ट योगदान है। तत्कालीन महाराष्ट्र के राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उन्होंने एक अलग जीवन दृष्टि स्वीकार की। उनके साहित्य ने लोक जीवन में मनोधैर्य, स्वाभिमान एवं प्रतिकार करने की शक्ति जगायी। उन्होंने समाज की तत्कालीन आवश्यकता को ध्यान में रख कर कृष्ण के मुकाबले धर्नुधारी राम की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने

हनुमान की उपासना का भी प्रचार किया। जगह–जगह हनुमानजी के मंदिरों की स्थापना कर शक्ति की उपासना का वातावरण उत्पन्न किया।

प्रायः सभी संतों ने ज्ञानेश्वर, नामदेव आदि संतों के ही तत्व को प्रतिपादित किया है। दया, क्षमा और शांति यही सच्चा धर्म है इस सिद्धान्त को सभी संतों ने स्वीकार किया है।

आधुनिक काल में गजानन महाराज तथा शिर्डी के साईंबाबा का प्रादुर्भाव किसी अवतार से कम न था। गजानन महाराज ने कलियुग के लोगों को गलत रास्ते पर जाने से परावृत करने तथा उन्हें परमार्थ के मार्ग पर ले जाने का महान कार्य किया। उनकी कर्मभूमि शेगाँव अब एक तीर्थस्थान ही हो गया है और लोग ईश्वर के रूप में उनकी पूजा करते है।

शिर्डी के साईंबाबा हिन्दू और मुसलमान दोनों ही संप्रदायों के देवता हैं। उन्होंने अपना कोई संप्रदाय नहीं बनाया और न किसी को गुरुमंत्र ही दिया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को अपने–अपने उपास्य देवता को भजने का उपदेश दिया।

उसी काल के मराठी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करते समय यह ज्ञात हुआ कि संत ज्ञानेश्वर के काल में ही बारहवीं, तेरहवीं शताब्दी में महाराष्ट्र में ऐसे अनेक संत कवि हुए है, जिन्होंने अध्यात्म एवं भक्ति की धारा प्रवाहित की। भाव, विचार, विनय, भक्ति, लीनता, तल्लीनता श्रद्धा आदि की दृष्टि से यह सभी बहुत उच्च कोटि के कवि तथा परमादरणीय संत थे। दुर्भाग्य से इन कवियों का श्रेष्ठ काव्य आज तक भी हिंदी जगत तक नहीं पहूँचा है। यही नहीं, कई कवियों के तो नाम से भी हिंदी पाठक अपरिचित हैं। एक अन्य वास्ताविकता और यह सामने आयी कि यह सभी

कवि समाज के पिछड़े वर्गों से हैं। माली, सोनार, नाई, महार आदि तथाकथित निम्न जाति अथवा सामान्यजनों के बीच से उभरी यह धार्मिक भावना, इनके द्वारा लिखे अभंग यानी पद किसी भी साहित्य के लिए अमूल्य निधि है।

महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन की शुरुवात 13 वीं सदी में होती है। इस काल में दो भिन्न संप्रदायों का पारंभ होता है। जिसमें एक महानुभव संप्रदाय और दूसरा 'वारकरी संप्रदाय' है। इन दोनों में तीखे अंतर्विरोध हैं। एक संप्रदाय के लोग दूसरे संप्रदाय की कमजोरियों को लेकर व्यंग्य करते रहते थे। महानुभाव संप्रदाय की साहित्य परंपरा अल्प समय में ही विलुप्त हो गई थी लेकिन इस संप्रदाय ने चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था और असमतावादी विचारों का विरोध किया। हिंदू धर्म की रूढ़ियों, ढोंग और अंधविश्वास, विधि निषेध आदि पर प्रहार किया। महानुभाव पंथ के आद्याचार्य चक्रधर स्वामी और गुरु गोविंद प्रभु दोनों ने ही समता का प्रसार और विषमता का विरोध किया। चक्रधर स्वामी लीला चरित्र में अस्पृश्यता का विरोध करते हुए कहते हैं–

**''उत्तम म्हणजे ब्राम्हाण। आन अधम म्हणजे मातंग ऐसे म्हणे**
**परि तोही मनुष्य देही आन निष्पत्तिकारकची असे।**
**परि वृथा कल्पना करो।''**[56]

लीला चरित्रः विचार बंध, पृ. 181

परंतु कर्मकांड आधारित हिंदू धर्म का विरोध करने वाला समतावादी 'महानुभाव पंथ' लोकप्रिय नहीं हो सका। इसी काल में वारकरी पंथ का

[56] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 8, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

उदय हुआ जिसका बल शुद्ध आचरण, निर्मल अंतःकरण और निष्ठायुक्त भक्ति पर था। इस पंथ के संतों में सभी जातियों के लोग शामिल थे जिनमें पददलित समाज के संत भी अपनी भक्ति और रचनाओं के कारण महत्वपूर्ण स्थान पा चुके हैं। संत गोरा कुम्हार, सेना नाई, सावता माली, जनाबाई, संत चोखामेळा, बंका, नरहरी सोनार आदि प्रमुख हैं। चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था ने इन संतों को हमेशा मंदिर के बाहर रखा और मंदिर के कलश का दर्शन करके ईश्वर दर्शन के सुख का आभास करना पड़ा। अस्पृश्य होने के कारण इन्हें जो यातनाएँ और अवहेलना सहनी पड़ी थीं। उनके खिलाफ 'संत चोखामेळा' व्यथित हृदय से अपनी वेदना व्यक्त करते हैं–

**''हीन जाती माझाी देवा। कैसी घड़ेल तुझी सेवा।**

**मज दूर–दूर हो म्हणती। तुज भेटु कवण्या रीति।**

**माझा लागताची कर सिंतोड़ा घेताती करार**

**माझा गोविंदा गोपाला करुणा भाकी चोखामेला।''**[57]

अर्थात ईश्वर मेरी हीन जाति है, तब तेरी सेवा मैं कैसे करू? मुझे सब दूर–दूर रहने को कहते हैं। ऐसे में मैं तुझे कैसे मिलूंगा। मेरा स्पर्श होते ही सब पुनः स्नान करते हैं। हे मेरे गोंविद, गोपाल, तेरी दया की मैं भीख मांगता हूँ।

**''हे मेरे दिननिधान चोखामेला करे पुकार**

**मैं हीन जाति है ईश्वर, चरण स्पर्श कैसे करूं**

[57] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 10, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

**सदैव दूरदूराते मोहे सब, कब होवे भेट हमार**

**छूते ही मुझसे, लेत नादियां में डुबकी''[58]**

इसमें अपने अस्पृश्य होने की वेदना के साथ–साथ जन व्यवहार की अमानवीयता का विरोध भी है साथ–साथ ईश्वर के दर्शन की लालसा भी। इन अंत्यज संतों ने अस्पृश्यता के विरोध के लिए भक्ति काव्यों का सहारा लिया था परंतु यह विरोध एक सीमित दायरे के अंतर्गत ही रहा। हीन जाति में जन्म लेने का कारण, वे पूर्व जन्म के कर्म को मानते थे। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था को दोष नहीं मानते और पूर्व जन्म में किए गए पाप के कारण निम्न जाति में पैदा होने पर विश्वास जताते हैं। अपने आपको दोष देते हुए कहते हैं–

**''शुद्ध चोखामेला। करी नामाचा सोहला।**

**याती हीन भी महार पूर्वी निलाचा अवतार।**

**कृष्ण निंदा घड़ली होती। म्हणोनी महार जन्मप्राप्तिं**

**चोखा म्हणे विटाल। आम्हा पूर्वीचे हे फल।''[59]**

**अनुवाद**

**निर्मल चोखा मेला। जपे है नाम तेरा**

**मै जातिही न महार। पूर्व में जो नील अवतार**

**कृष्ण की निंदा जो की थी।**

[58] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 11,विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.
[59] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 117, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

**तब ही मिली हीन जाति।**

**कहे चोखा छुआछूत मुझसे। पूर्व जन्म का होवे फल।**

जाति व्यवस्था को तर्कसंगत बताकर चोखा अपने पूर्व जन्म के कर्म के फलस्वरूप हीन जाति में जन्म लेने के कारण अंधविश्वास को मान्यता देते हैं।

चोखामेला का पुत्र कर्ममेला में आत्म सजगता दिखाई देती है क्योंकि वह ईश्वर को इसके लिए दोषी बताते हैं–

**''आमुची केली हीन जाति। तुज का न कले श्रीपती।**

**जन्म गेला उष्टे खाता। लाज न ये तुझा चित्ता**

**आमचे धरी भात दही। खावोनी कैसा म्हणसी नाहीं।''**[60]

**अनुवाद**

**'मैं क्योंकर हुआ हीन जाति। तुम क्यों चुप हो ईश्वर**

**जूठन खाते बीति जिंदगी क्यों तुमको लज्जा नहीं आती?**

**घर पर मेरे दही–भात**

**क्यों कहते हो नहीं खाया '।**

कर्ममेला के स्वर में विद्रोह दिखाई देता है, जबकि चोखामेला के स्वर में केवल वेदना थी। इन अंभगों में दलित वेदना का आदि रूप प्रकट होता है। दलित साहित्य में युग–युग की चिर वेदना व्यक्त हुई है, जिसका आदि रूप संत चोखाबा के अंभगों में हम देखते हैं। चोखाबा की यह वेदना

[60] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 114, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

व्यक्तिगत नहीं थी, वह उनके समाज की वेदना थी। शब्दों में प्रकट होने वाला दुःख अंतःकरण को विदीर्ण कर देता है।

भक्ति साहित्य द्वारा 13 वीं सदी में दलित संतों ने अस्पृश्यता विरोधी आवाज उठाई थी लेकिन यह विद्रोही स्वर आध्यात्मिक और पारमार्थिक भक्ति काव्य में विलीन हो गया है। संत तुकाराम भी अंभगवाणी में छोटी जाति होने के कारण वेदों–शास्त्रों के अध्ययन से वंचित रहने से व्यथित है।

**''शूद्रवंशी जन्मलो। म्हणुनि दंभे मुकलो।**

**घोकाया अक्षर। मज नाही अधिकार।**

**सर्व भावे दीन। तुका म्हणे यातिहीन। ''**[61]

अर्थात शूद्रवंश में जन्मा मैं। जातिदंभ से रहा मुक्त अक्षर पढ़ने का नहीं अधिकार मुझे। यह दीनहीनता मेरी। तुका बोले मैं जातिहीन।

' शूद्र वंश में जन्म लेने के कारण मैं वेद शास्त्रों का अध्ययन करने से वंचित रहा। मुझे यह अधिकार प्राप्त नहीं है। इस दीनता का कारण हीन जाति है।'

इस तरह से शूद्र, अस्पृश्य होने का दुःख और वर्ण व्यवस्था के प्रति आक्रोश भी कुछ संतों की वाणी में अभिव्यक्त हुआ है।

मध्यकाल के बाद दलितों के प्रश्नों पर और अस्पृश्यता जैसी निघृण प्रथा के विरोध में साहित्य के अंतर्गत चर्चा 19 वीं सदी में प्रारंभ होती है। अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजी शिक्षा के कारण नई चेतना का

[61] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 119, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

निर्माण हुआ। चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था पर आधारित हिंदू धर्म पर पुनर्विचार होने लगा। हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति और हिंदू समाज में स्थित बुराईयों के मूल की खोज करने का प्रयास बाल शास्त्री जांभेकर से लेकर महात्मा ज्योतिबा फुले के समय तक अनेक विचारकों ने किया है। 1818 से 1860 तक के काल में इस प्रकार का प्रयास हुआ है। हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति और हिंदू समाज में अस्पृश्यता के इस महाभयंकर प्रथा के बीज कहां है इसकी खोज का प्रयत्न कुछ समाज सुधारकों और प्रगतिशील विचारकों द्वारा हुआ है। 'दर्पण' नाम से प्रसिद्ध होने वाली बालशास्त्री जांभेकर द्वारा संपादित पत्रिका के प्रथम अंक में (सन् 16 मार्च 1832) यह चर्चा शुरू हुई कि "संपूर्ण मानवजाति एक होते हुए उनमें जाति के नाम पर भेद क्यों हैं। 'प्रभाकर' नाम की पत्रिका में एक नेटिव्ह ने यह प्रश्न उठाया था कि अगर अंग्रेज अस्पृश्यों को अपने घर में नौकर रख सकते हैं और छुआछूत न मानकर वे उन्हें स्पर्श करते हैं तो सवर्ण हिंदूओं को ही अस्पृश्यों से नफरत क्यों है, जबकि वे अंग्रेजों तक का आदर सम्मान करते हैं। "[62]

इस तरह की चर्चाओं से यह प्रतीत होता है कि समाज प्रबोधन का कार्य तब शुरू हो गया था। कुछ लोग अस्पृश्यता निवारण के कार्य में संलग्न थे। 'तुकाराम तात्या पडवल' लिखित 'जातिभेद विवेक सार' नामक पुस्तक में 'विषमता पूर्ण समाज व्यवस्था का कारण दुष्ट जाति भेद ही बताया गया है। लोकहितवादी, महात्मा फुले आदि समाज सुधारकों ने ऊंच नीच की भावना को मिटाने का प्रयास किया। अस्पृश्यों के मन में

---

[62] बालशास्त्री जांभेकर—द्वारा संपादित पत्रिका— प्रभाकर, सन् 16 मार्च 1862

आत्मविश्वास जगाने का कार्य किया और पारंपरिक रूढ़िवादिता की अपने लेखन द्वारा आलोचना की। 'सत्यधर्म' की स्थापना के लिए उन्होंने सत्यशोधक आंदोलन का प्रारंभ 23.9.1873 में किया था। इस आंदोलन की प्रेरणा से प्रेरित होकर 'गोपाल बुवा कृष्णा वलंगकर' ने सन् 1896 में सेना से अवकाश प्राप्त होने के बाद 'अनार्यदोष परिहार' नामक संस्था की स्थापना की और 'विटालविध्वंसक' (अस्पृश्यता विघ्वंसन) नाम की पत्रिका का संपादन किया। 'शिवराम जानबा कांबले' द्वारा 'सोमवंशीय मित्र' पत्रिका का संपादन किया। 'शिवराम जानबा कांबले' द्वारा 'सोमवंशीय मित्र' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इन सभी पत्रिकाओं के माध्यम से अस्पृश्य समाज को जागृत करने का और उन्हें अपने खोये हुए स्वाभिमान और अस्मिता को फिर से प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई।

पत्र–पत्रिकाओं द्वारा इस तरह दलित समाज में चेतना जगाने के प्रयत्न हो रहे थे। सामाजिक स्तर पर भी कुछ सुधारकों की तरफ से प्रयत्न जारी थे जिनमें प्रमुख रूप से प्रयत्न करने वालों में महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे थे। उन्होंने 'अखिल भारतीय डिप्रेस्ड क्लास मिशन' की स्थापना कर इस मिशन द्वारा अस्पृश्यों के प्रश्नों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उधर राजर्षि शाहू महाराज ने अपने कोल्हापुर संस्थान में अपनी राजसत्ता के काल में अस्पृश्यता निवारण कार्य को धर्म कार्य जैसा महत्व देकर अनेक कानून जारी किये। अखिल भारतीय बहिष्कृत समाज परिषद् के (नागपूर में 30 मई 1920 को हुए) सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उन्होंने कहा था ''तुम अस्पृश्य नहीं हो, तुम्हें,

अस्पृश्य मानने वाले लोगों से तुम अधिक बुद्धिमान, पराक्रमी स्वाभिमानी हो और हिंदी राष्ट्र की इकाई हो। "[63]

सन् 1920 तक समाज में इस तरह की चेतना जगाने के प्रयत्न निरंतर हो रहे थे दलित भी मानव है, मानव होने के नाते मानव अधिकारों को प्राप्त करने का उसे अधिकार है। जाति पाति और ऊंच–नीच के भेदभाव को नष्ट करने पर जोर दिया जा रहा था। इन विचारों का प्रभाव तत्कालीन मराठी के कुछ लेखकों की कृतियों में यदा–कदा देखने को मिलता है।

[63] दलित साहित्यः वेदना व विद्रोह– भालचन्द्र फड़के, पृष्ठ–89, सं 1977

### 1.2.1 डॉ.अम्बेडकर पूर्वपरंपरा

मराठी के दलित गीतों की सैद्धांतिकी को समझने के लिए महात्मा ज्योतिराव फुले के प्रयासों से हुऐ सामाजिक बदलाओं को देखना जरूरी है। तभी गीतों की सैद्धांतिकी को समझने में आसानी होगी। किसी भी सामाजिक सुधार आंदोलन का विवेचन करने के लिए तीन पद्धतियों का प्रायः उपयोग किया जाता है। उस व्यक्ति के जन्म के पूर्व जो भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियाँ रही हो, उनका विवेचन और उसके आधार पर उस व्यक्ति के कार्यों का मूल्यांकन करना। उस व्यक्ति की जीवितावस्था में स्थित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियाँ, क्रांतिकारी कार्य के विरोध में सक्रिय शक्तियाँ तथा उनसे टकराने की उस व्यक्ति की क्षमता। उस व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त उसके कार्यों का बाद के समाज पर होनेवाला प्रभाव, उत्पन्न स्थितियाँ, परिवर्तन की प्रक्रिया को गति देने की उस व्यक्ति के विचारों की क्षमता आदि।

ज्योतिराव गोविन्दराव फुले 1827–1890 महाराष्ट्र के समाज सुधारकों में सर्वाधिक आक्रामक, प्रतिभा सम्पन्न और विद्रोही व्यक्तित्व के थे। पिछड़ी जाति में जन्म लेने के कारण शिक्षा ग्रहण करते समय उन्हें भी कई बार अपमानित होना पड़ा। अंग्रेजी शिक्षा के कारण हिन्दु समाज की विषम समाज रचना के प्रति उनके मन में चिढ़ पैदा हो गयी। प्राचीन ग्रन्थों का उन्होंने परिश्रमपूर्वक अध्ययन किया। इस अध्ययन से उन्हें यह स्पष्ट हुआ कि इस समाजव्यवस्था में दलितों, श्रमिकों और स्त्रियों को सर्वाधिक दबाया

गया है। इस समाज रचना के विरोध में सक्रिय होने हेतु उन्होंने तीन मार्गों का अवलम्बन किया।

1. बौद्धिक स्तर पर विषम समाज रचना का विरोध,
2. पिछड़ी जातियों और दलितों का संघटन
3. प्रत्यक्ष संघर्ष

उनका सबसे बडा कार्य 'ब्राह्मणी संस्कृति' का पर्दाफाश करना रहा है। उनके अथक परिश्रम के कारण ही आगे के प्रगतिशील आन्दोलनों को वैचारिक पृष्ठभूमि प्राप्त हुई। "किसी भी आन्दोलन को अगर सैद्धांतिक नींव प्राप्त हुई हो, तो ऐसा आन्दोलन जाति के कोश से बाहर नहीं निकल सकता। आन्दोलन कितना भी विद्रोही क्यों न रहा हो, उसे कितनी भी वैज्ञानिक दृष्टि प्राप्त हुई हो, उसका महत्व और बड़पन्न जाति के कोश से बाहर निकलने की क्षमता पर ही अवलंबित होता है।"[64] ज्योतिबा फुले का यह स्पष्टीकरण था कि समाज के अधोपतन का कारण विशेषतः शूद्रों, अतिशूद्रों और स्त्रियों की दयनीय दशा का कारण वर्णव्यवस्था और उसमें निहित जाति व्यवस्था है जो कि ब्राह्मणवाद का परिणाम है। इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर समय–समय पर आवेदन पत्रों द्वारा दबाव डाला कि नौकरशाही व प्रशासकीय पदों में ब्राह्मणवादी ताकतों के प्रभाव को कम किया जाए किंतु ब्रिटिश सरकार ने भारत में चली आ रही इस व्यवस्था को मान्यता दी उसमें हस्तक्षेप करने की कोशिश नहीं की लेकिन ज्योतिबा फुले इसमें निराश नहीं हुए।

[64] अम्बेडकर और मार्क्स: श्री रावसाहेब कसबे पृ. 18

जन अज्ञानता से निबटने के लिए उन्होंने लोगों को शिक्षित करने का जिम्मेदारी उठाई। उनका मानना था कि 'विद्या के अभाव में बुद्वि गई बुद्वि के अभाव में नीति गई, नीति के अभाव में धन गया, धन के अभाव में सब कुछ चला गया।' वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे "विद्या से वंचित रहना शूद्रों–अतिशूद्रों के पिछड़ेपन का, दयनीय अवस्था का और सर्वनाश का प्रबंध करता है।''[65] "समाज व्यवस्था ने जिनको विद्या उपार्जन से वंचित रखा उनके लिए फुले जी ने ज्ञान मंदिर के द्वार खोल दिए।''[66] ब्राह्मणवाद के तीव्रतम विरोध का कारण उनकी पाठशालाओं में पढ़ाने के लिए तैयार नहीं था तब ज्योतिबा फुले ने अपनी निरक्षर पत्नी सावित्री बाई फुले को पढ़ाया और सावित्री बाई फुले ने यह जिम्मेदारी सफलतापर्वूक निभाई। और इस प्रकार दलितों की शिक्षा का कार्य आरंभ हुआ। उन्होंने सन 1849 पूना, सतारा और अहमदनगर में कई स्कूलों की स्थापना की।

उन्होंने 23 सिंतबर 19873 को 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना कर सैकड़ों विवाह साधारण तरीके से बिना पैसे खर्च किए कराए। 'सत्यशोधक समाज' ने हिंदू धर्म में व्याप्त अंधविश्वास और पाखंडवाद की पोल खोलते हुए जनता द्वारा किए गए धन का मंदिर संचालकों द्वारा किए जाने वाले दुरूपयोग की जांच के लिए माँग की तथा धर्म खाते में आने वाले पैसे को दलितों और गरीबों की स्थिति में सुधार लाने के लिए उपयोग करने की माँग की। इसके अलावा उन्होंने छुआछूत जैसी रूढ़ि का भी सत्यशोधक

[65] ज्योतिबा फुले, गुलामगिरी,महाराष्ट्र सरकार का प्रकाशन बंबई।

[66] कन्हैया लाल चंचरीक, ज्योतिबा फुले, भारत सरकार प्रकाशन विभाग।

समाज के द्वारा विरोध किया और अछूतों को भी अन्य समुदायों की तरह बराबर समझे जाने के लिए बल दिया।

उन्होंने विधवा विवाह पर बल दिया तथा भ्रूण हत्या, बाल हत्या का विरोध करते हुए विधवा माँओं के लिए बालहत्या प्रतिबंधक गृह की 1852 में तथा 1864 में अनाथ आश्रम की स्थापना की।

इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने ही घर का पानी का हौज अछूतों के लिए खोल दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने सामाजिक कार्यों द्वारा परंपरावादी उच्च वर्णीयों को परिवर्तन के लिए चुनौती दी।

### 1.2.2 तमाशा की परंपरा

मराठी शाहीरी परंपरा में अनंतफंदी, होनाजीबाळा, परशराम, रामजोशी, प्रभाकर, सगनभाऊ आदि प्रमुख शाहिरों का योगदान रहा है। इन्हीं शाहिरों ने मराठी शाहीर साहित्य को प्रतिष्ठित किया। पेशवाई समय में शाहीरी साहित्य को राजाश्रय प्राप्त हुआ। राजाश्रय के कारण शाहीरी साहित्य आगे बढ़ता गया किंतु धीरे–धीरे इसमें अश्लीलता आने लगी। राजाओं को खुश करने के लिए शाहीरों ने श्रृंगारिता का नग्न वर्णन शुरू किया। शाहीरों से निकले तमाशा में अश्लीता पूर्ण रूप से विद्यमान हो गयी इसकारण अनेक तमाशा मंडळी याने 'फड' का निर्माण हुआ। 'फड' मराठी शब्द है। तमाशा ने समाज में नैतिकता दूर करने लगे। उन्हें अश्लीलता की ओर ले जाने का काम करने लगे। तमाशाकारों ने अनेक अश्लील मुकाबले भी किये। इसकारण लोगों में नैतिकता कम होने लगी। गाँवों–गाँवों में लोग अश्लीलेता के कारण दारू पिकर उनका संसारिक जीवन बरबाद होने

लगा। इसमें ज्यादातर किसान, मजदूर, मेहनत करनेवाले लोग ही शामिल थे।

आगे चलकर पेशवाई समय समाप्त हुआ और अंग्रजी शासन शुरू हुआ। पेशवाई राजाश्रय समाप्त होने के कारण शाहीर अब लोगों के आश्रय पर जीने लगा। किंतु धीर–धीरे समाज के लिए तमाशा अनैतीका के लिए जिम्मेदार साबित हुआ। इसकारण तमाशा पर बंदी आने लगी। मंनोरजन के नाम पर तमाशा में अश्लीलता होने के कारण समाज के कुछ वर्ग ने इस पर बंदी लगा दी। आगे चलकर 1850 में अंग्रेजों ने भी तमाशा पर बंदी लगा दी। महात्मा गांधी के समय में भी तमाशा पर बंदी लगाने का काम चलता रहा। इसी समय तमाशा की जगह जलसा इस नये प्रकार को शाहीरों ने आविष्कार किया। जलसाकारों ने समाज के ज्वलत विषयों पर जलसा आधारित किया। उँच–नीच, गरीब, दलित, शोषण आदि विषयों पर जलसा कारों ने अपनी रचनाएँ लिखी।

### 1.2.3 सत्यशोधकों के जलसे

सत्यशोधक जलसा की संकल्पना क्या है ? सत्यशोधक जलसा का स्वरूप, कार्य, और उसकी स्थापना करने का उद्देश्य क्या था। यह जानने के लिए तत्कालीन सामाजिक, परिस्थितीयों को जानना आवश्यक है।

19वी शताब्दी के अंत में सत्यशोधक जलसा का उदय हुआ। तत्कालीन समाज वर्णव्यवस्था के कारण दो भागों में बट गया था। धर्मग्रंथों के कारण सवर्ण अस्पृश्यों के ऊपर अन्याय–अत्याचार कर रहा था। इन

अन्याय–अत्याचार के ऊपर अंग्रेज शासन भी कुछ नहीं बोल रहा था हजारों सालों की गुलामी के कारण अस्पृश्यों की अस्मिता और अस्तित्व मिट गया था। इस स्थिति में महात्मा ज्योतीराव फुले ने 24 सप्टेंबर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की इस स्थापना के पिछे ज्योतिराव फुले का उद्देश्य था कि ईश्वर, धर्म, पुनर्जन्म, नीति, शास्त्र, रूढ़ी इन सभी का सत्य लोगों तक पहूँचे। सत्यशोधक समाज ने लोगों को भाईचारे से रहना, उँच–नीच नहीं मानना, सभी लोगों समान है, जादू टोना, अंधश्रद्धा को जड से उखाड़ फेकना, व्यसनमुक्ति, दुसरों की गुलामगिरी नहीं करना आदि संदेश समाज में प्रसारित करने का महत्वपुर्ण काम किया। ज्यातिराव फुले ने यह जान लिया था। कि समाज के पतन का कारण निरक्षरता है। स्त्रियों के लिए भी शिक्षा होनी चाहिए। इसलिए भी उन्होंने और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने प्रयास किये। सत्यशोधक समाज के प्रचार–प्रसार के लिए सत्यशोधक जलसे का निर्माण किया गया। फुले और कृष्णराव भालेकर इन दोनों ने सत्यशोधक जलसा की शुरूवात की। राजर्षी शाहु महाराज ने इन जलसा को आर्थिक मदद कर जलसों को और ज्यादा लोकप्रिय बनाया। सत्यशोधक जलसा का स्वरूप देखे तो रचना की दृष्टि से देखे तो सत्यशोधक जलसों के शाहिरों ने तमाशा के स्वरूप की थी। किंतु उद्देश्य लोक शिक्षण और समाजजाग्ती अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करना, मानवी मूल्य को जीवित कर उनकी स्थापना करना था। सत्यशोधक जलसा की शुरुवात करने से पहले शाहीर ईश्वर का गान करता है। इसकी रचना कृष्णराव भालेकर ने की है।

''आम्ही प्रथमचि नमू तुज भगवंता ।।धृ।।

दीन वत्सला कृपासिंधू। पावशी। धावशीं। त्वरिशी।

भय, भव हरिशी, घोर चिंता ।।1।।''[67]

प्रथम सत्यशोधकी जलसाकार शाहीर भीमराव महामुनी को माना जाता है। इन्होंने खुद जलसा मंडळी की स्थापना की । सत्यशोधक समाज के तत्वज्ञान के आधार पर भीमराव महामुनी ने पदरचना कर स्वयंम उनका गायन करते थे। उनकी रचनाएँ बहुत पसंद की जाती थी। सावकारशाही के कारण गरीब किसान पूरे तरीके से गुलाम बन गया था। इस गीत में उन्होंने किसान के दुःखों की रचना की है।

**'पोटासाठी बायकामुले करिती हेलपाटी मजुरी।**

**मलकी हक्काच्या असूनी जमिनी। खाउनी टाकल्या**

**कर्ज उंटानी।**

**सावकार हेच झाले धनी।'**

अर्थात 'पेट भरने के लिए बच्चे पत्नी करते है काम

**अपने हक की है जमीन। खा लिया कर्जदारों ने**

**जमीनदार हो गया धनी।**

इस गीत से महामुनी गरीब किसानों की अवस्था को बता रहे है। रात–दिन जीवन के साथ संघर्ष करने वाला किसान इंसानों का पेट भरता है और उसे इज्जत ढ़कने के लिए कपड़े का निर्माण करता है। इस तरह

[67] सत्यशोधकी आणि आंबेडकर जलसे– हिवराळे सुखराम, लेख '' मी पाहिलेले सत्यशोधक जलसे '' –माधवराव पाटील , पृष्ठ 4 ,संपा.

का चित्रण उन्होंने इस गीत में किया है। इस गीत में वे कहते है कि किसान की संपत्ती उसकी जमीन उसका गरीब महल, मुर्गी, बकरियाँ आदि इस गीत के माध्यम से किसान वर्ग के दरिद्रत का वर्णन किया है।

महामुनी की तरह कृष्णराव भालेकर ने भी अनेक पदों की रचना की है। इन्होंने अपने गीतों के माध्यमसे कुलकुर्णी, जमीनदार, पाटील, साहब, भटजी, महाराज, ब्राह्मण आदि के चरित्र को समाज के सामने रखा है। यह लोग किस तरह गरीब किसान का शोषन करते हैं। किसान का जीवन प्रकृति के ऊपर निर्भर रहता है। जब वर्षा कम होती है तब किसान भूखमरी की स्थिति में जाता है। इसका वर्णन उन्होंने यथार्थ स्थिति में किया है। इस तरह के गीतों की रचना जल्सों में की जाती थी।

इस तरह के गीतों को सुनने के लिए गरीब किसान, मजदूर, दलित समाज आदी की भीड़ जुट जाती थी। इन गीतों में उन्हें अपना ही प्रतिबिंब दिखाई देता था। शिक्षा, धर्म जाति, अंधश्रद्धा, जमीनदारी प्रथा, ब्याज चुकाना, आदि दृश्यों के कारण लोग होशियार बनने लगे। बुढ़े, जवान, स्त्रियाँ, बाल–बच्चे ऐसे जलसे को हजारों लोगों की भीड़ उमडती थी।

इस कारण गाँव के जागरुक युवक सावरकर, जमींनदार, महाराज, ब्राह्मण आदि के विरोध में आवज उटाते थे। इस जलसाकारों ने शोषण किस तरह होता है। और गरीब किसान किस तरह गलती कर रहा है ये भी गीतों के द्वारा समझाते थे।

हजारों सालों से गुलामी में जकड़े लोगों ने स्वतंत्र होने के लिए प्रयास शुरू किए। इस तरह से समाज में प्रगतिवादी विचार का प्रसार

करने का श्रेय जलसाकारों को दिया जाता है। इन जलसों के विरोध में सवर्ण द्वारा अनेक गतिविधियाँ होने लगी।

जलसों के माध्यम से अनेवाले विषय को सर्वसामान्य जनों के सामने अलग–अलग पात्रों के माध्यम से प्रभावकारी ढंग से रखे जाते थे। इनके विषय इस तरह सार्वजनिक शिक्षा का प्रसार, जमीनदारी प्रथा, अस्पृश्यता निवारण, जातिभेद, अंधश्रद्धा, बालहत्या, विधवा समस्या, पुनर्विवाह, शराब बंदी, दहेज प्रथा, स्त्री शिक्षा, किसानों की अवस्था आदि। इस तरह इन विषयों के माध्यम से सत्यशोधकी जलसे समाज में एक नया नवजागरण लाने का प्रयास कर रहे थे।

## 1.3 मानवमुक्ति की लड़ाई : अम्बेडकरी गीतों का शुरुआत

डॉ. अम्बेड़कर का जन्म नहीं होता तो? इस प्रश्न के जवाब में उनके कार्य, लेखन, आंदोलन और तत्वज्ञान की महानता का पता चलता है। हजारों पीढ़ियों से चली आ रही चातुर्वर्ण्यंव्यवस्था में जिनके जन्म से ही माथे पर अस्पृश्यता का कलंक चिपका दिया जाता था। योगेंद्र मेश्राम अपनी पुस्तक में कहते है कि ‘‘बाबासाहेब झाले नसते तर.... तर दलिताना स्वातंत्राचा श्वास घेता आला नसता. मान उंचावुन रस्त्याने चालता आले नसते, अंगावर वस्त्रे घालता आली नसती, मनुने हातात पुस्तक घेउ दिले नसते, स्वंतत्र विचार करता आला नसता सभेत धीटपणा आला नसता उत्स्फूर्तपणे विद्रोही कवितेची ओळ लिहिता आली नसती. पद–पदव्या

प्रतिष्ठा सांभाळता आली नसती, मानवी स्वांतत्राचे बेहोश गाणे गाता आले नसते''[68]

उपरोक्त दिए गये डॉ. मेश्राम के वक्तव्य से यह कहॉ जा सकता है कि डॉ. अम्बेडकर नहीं होते तो? आज भी दलितों को स्वतंत्रता क्या होती है इसका मतलब पता नहीं होता, उन्हें स्वाभिमान, अस्तित्व, अस्मिता क्रान्ति इन परिवर्तनकारी शब्दों की अहमियत पता नहीं होती। हजारों सालों से दास की जिदंगी जीनेवाले दलितों को मुक्त करने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने मानवमुक्ति का मेनिफेस्टो लिखा। उसे ही आज भारतीय संविधान कहाँ जाता है।

वर्णव्यवस्था के कारण दलितों के ऊपर लदी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय गुलामगिरी नष्ट करके समता के ऊपर आधारित बौद्ध धम्म की दीक्षा अम्बेडकर ने दलितों को दी। यह सब परिवर्तन एक दिन में नहीं हुऐ। इसलिए इस समाज उत्थान के लिए जिन–जिन आंदोलनों, सत्याग्रहों, का योगदान है उनके बारे में बगैर जाने हुए अम्बेडकरी गीतों का कार्य संभव नही हो सकता।

### 1.3.1 डॉ. अम्बेडकर और दलित आंदोलन

दलित आंदोलन की पृष्ठभूमि वैसे तो मध्यकालीन संतों की वाणी से ही बन रही थी और जाति–प्रथा का विरोध भी उसी के आसपास शुरू हो चुका था। लेकिन, सन् 1857 के संग्राम में दलितों ने जो मुख्य भूमिका निभाई उससे यह साफ हो चुका था कि दलितों की चेतना में बदलाव हुआ

---

[68] दलित साहित्यः उद्‌गम आणि विकास – डॉ. योगेंद्र मेश्राम पृ.सं. 30.

है और दलितवादी आंदोलन अपना सिर उठा रहा है। उक्त तथ्य इस बात की पुष्टि के लिए काफ़ी हो जाते हैं। बहरहाल सन् 1857 में दलितों द्वारा निभाई सक्रिय भूमिका के बावजूद भी दलित आंदोलन को एक दिशा प्रदान करने के लिए डॉ. अम्बेडकर का भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में प्रवेश बहुत मायने रखता है।

गौरतलब है कि दलित मुक्ति का मुद्दा सर्वप्रथम यदि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने उठाया और उनके पश्चात् लाला लाजपत राय ने, वैसे गांधी जी ने भी दलितों के पक्ष की बात की लेकिन वे वर्ण–व्यवस्था के प्रबल समर्थक भी थे। उन्होंने केवल अछूतोद्धार की बात की और अछूतोद्धार के नाम पर अछूतों को 'हरिजन' नाम दिया। दलितों की समस्या को ठोस आधार प्रदान करने में डॉ. अम्बेडकर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण तथा अविवादास्पद है।

डॉ. अम्बेडकर दलित–अछूतों के एक सर्वमान्य नेता के रूप में उभरकर सामने आये और सर्वविदित सत्य है कि दलितों के अधिकारों के लिए वे सही मायने में संघर्ष कर रहे थे। डॉ. अम्बेडकर यह घोषणा कर चुके थे कि, ''मैं हिन्दू पैदा हुआ यह मेरे बस की बात नहीं थी, लेकिन मैं हिन्दू रहकर मरूंगा नहीं यह मेरे बस की बात है।'' [69]

हिन्दू धर्म की तमाम बुराइयों ने अम्बेडकर को ऐसा कहने पर मजबूर किया था। शताब्दियों से भारत का सामाजिक जीवन पूर्णतः विषाक्त बना रहा है। हिन्दू धर्म के तथाकथित उच्च एवं सवर्ण लोगों में जो परिवर्तन

---

[69] अम्बेडकरवादी आन्दोलनः दशा और दिशा– जयप्रकाश कर्दम, पृ. सं. 13।

दिखाई भी दे रहा था कि वे जाति एवं वर्ण–भेद की तुच्छ एवं विकृत भावनाओं से ऊपर उठ गए हैं, कुछ अपवादों को छोड़कर यह खोखला शिष्टाचार अथवा स्वार्थपूर्ति का साधन मात्र था। गांधीजी उन लोगों में से एक थे जो यह जान गए थे कि अम्बेडकर दलितों के लिए मसीहा बनने जा रहे हैं। अतः उन्होंने दलितों के लिए शिक्षा एवं मंदिर आदि के द्वारा खोल दिए। दलितों ने गांधीजी की सहानुभूति पाकर उनके लिए अपना सर्वस्व त्यागने तक के लिए आमादा हुए और गांधीजी ने उनकी भावनाओं को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग किया।

डॉ. अम्बेड़कर ने मानव जीवन की सार्वभौतिकता का आदर्श सामने रखा तथा एक उच्च आदर्शयुक्त संस्था के रूप में समाज की रचना करने का स्तुत्य एवं श्लाघनीय प्रयास किया, जिसका एक मात्र ध्येय भारत की भूमि पर जनतंत्र की स्थापना करना था। किंतु सामाजिक जीवन के विषाक्त बने रहने के कारण जनतांत्रिक मूल्यों का विकास नहीं हो पाया, बल्कि जनतांत्रिक मूल्यों का निरंतर पतन हुआ है।

दलितों को सामाजिक समानता एवं सम्मान दिलाने के लिए डॉ. अम्बेडकर को बड़ी कठिन लड़ाई लड़नी पड़ी। दलितों को सार्वजनिक कुआं, नलों, या तालाबों से पानी पीने की अनुमति नहीं थी, मंदिरों में प्रवेश वे नहीं कर सकते थे, शिक्षा के द्वार उनके लिए बंद थे। वे समाज से अलग–थलग से थे और इसलिए सामाजिक जीवन में उनका कोई दखल नहीं था।

डॉ. अम्बेडकर पहले व्यक्ति हुए जिन्होंने दलित होते हुए सामाजिक जीवन में दखल दिया। उन्होंने सार्वजनिक तालाब से दलितों को पानी भी

पिलाया और मंदिर प्रवेश भी कराया। उन्हें बहुत कुछ सहना भी पड़ा। लेकिन यह सब उस अपमान और घृणा से कम था, जो वह अपने जीवन में भोग चुके थे। वह विचलित नहीं हुए तथा दलितोत्थान के अपने उद्देश्य की ओर दृढ़ता से बढ़ते रहे। उन्होंन दलितों के मुकदमे भी लड़े। दलितों के हित और उनके कल्याण के लिए डॉ. अम्बेडकर सरकार से भी लड़े और समाज से भी।

यद्यपि डॉ. अम्बेडकर ने दलित शोषित वर्ग के हितों की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया तथा समाज के बीच एक आंदोलन खड़ा कर मजदूर एवं उपेक्षित लोगों को सशक्त वाणी दी, किंतु जिस गति से यह आंदोलन आगे बढ़ना चाहिए था, उस गति से नहीं बढ़ पाया।

डॉ. अम्बेडकर ने देश का संविधान बनाया और संविधान में उन्होंने दलितों के उत्थान के लिए अनेक व्यवस्थाएँ की। उनको विश्वास था कि यदि संवैधानिक व्यवस्थाओं का ईमानदारी से पालन किया गया तो दलितों का उत्थान अवश्य होगा, शेष समाज के स्तर पर आकर वे भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ जाएँगे। लेकिन आज तक दलित मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाए।

### 1.3.2 महाड आंदोलन– चवदार तालाब सत्याग्रह

''दलित आंदोलनों में महाड़ शहर में 20 मार्च, 1927 को चवदार तालाब के मुक्ति संग्राम का महत्वपूर्ण स्थान है। एक तरह से इसे दलितों की स्वतंत्रता, स्वाभिमान, न्याय तथा उन्नति के लिए ऐतिहासिक संघर्ष भी कहा जा सकता है। वरिष्ठ पत्रकार सुभाष गाताड़े ने इसे दलित आंदोलन का एक प्रमुख पड़ाव माना है।''[70]

महाड़ आंदोलन हमें इतिहास के उन अध्यायों से जोड़ता है, जिसे पढ़ते हुए हमें डॉ़ अम्बेडकर तथा उनके अनुयायियों के द्वारा किये गये संघर्ष का पता चलता है। विशेष रूप से चवदार तालाब का सत्याग्रह पानी लेने की अस्मिता से जुड़ा संघर्ष है। उस समय में हिन्दू समाज मनुवादी नियम अपनाता था। तो दूसरी और कहता था कि पानी पिलाने से पुण्य मिलता है। प्रायः धनाढ्य लोग धर्मशालाओं के साथ प्याउ भी बनवाते थे, पर दूसरी तरफ प्यासे को पानी जाति पूछ कर दिया जाता था। विशेष रूप में शहर स्थित प्याउ में दलितों को पानी पिलाने के लिए नकली लगी होती थी। जबकि अन्य को गड़वे से पानी पिलाया जाता था। गाँवों में कुआं और तालाबों से दलितों को पानी लेना निषेध था। अधिकांशतः गाँवों में जोहड़ का सड़ा हुआ पानी दलित समाज के लोगों को पीना पड़ता था। उनकी बस्तियों में कुंए नहीं थे। साफ स्वच्छ पानी की आशा में उन्हें दो–दो, तीन–तीन मील पैदल चलना पड़ता था। तब जाकर उन्हें पानी नसीब होता था। उन परिस्थितियों की आज हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं,

[70] भारतीय दलित आंदोलनः एक संक्षिप्त इतिहास, मोहनदास नैमिशराय, पृ. 83.

जिन विषम और अमानवीय परिस्थितियों के खिलाफ डॉ.अम्बेडकर ने संघर्ष किया था। महाड़ आंदोलन हमें उन सब की याद दिलाता है।

पानी के लिए एक दशक तक चलने वाला दलितों का यह जनसंघर्ष 'महाड़ सत्याग्रह' के नाम से प्रसिद्ध है। महाड़ में एक अति विशाल तालाब है। इस तालाब को 'चवदार तालाब' के नाम से जाना जाता है। इस तालाब में पानी मुख्यतः वर्षा और कुछ प्राकृतिक स्रोतों से आता है। यह एक प्राचीन तालाब है और कोई नहीं जानता कि इसे किसने और कब बनवाया। लेकिन सन् 1761 में जब महाड़ में जब नगरपालिका की स्थापना की गई तो सरकार ने यह तालाब नगरपालिका को सौंप दिया। तब से चवदार तालाब को नगरपालिका का तालाब या सार्वजनिक तालाब माना जाता है। इस तालाब के चारों ओर तटबंध है। इसके चारों और लोगों की निजी मालिकाना हक वाली ज़मीन और सड़क थी। सड़क से परे सवर्ण हिदूंओं के मकान थे। महाड़ नगर में खरीददारी या सरकारी काम से आने वाले अछूत लोगों के लिए पीने के पानी का कोई इंतजाम नहीं था। उनके लिए चवदार तालाब ही पानी का एक मात्र स्रोत था।

यद्यपि यह एक सार्वजनिक तालाब था, लेकिन अछूत इस तालाब से पानी नहीं ले सकते थे। अछूतों को नगर के कोने पर बसी अछूतों की बस्ती में स्थिर कुंए से ही पानी लेना पड़ता था। एक तो यह कुआँ नगर के मध्य से कुछ दूरी पर था, दूसरा नगरपालिका की उपेक्षा के चलते यह गंदगी से भरा पड़ा था। नतीजा जीवन की मूलभूत आवश्यकता, पानी के विषय में अछूतों को काफ़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। बहुधा उन्हें काफ़ी लम्बे समय तक प्यासा रहना पड़ता था।

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री.एस के बोले ने 4 अगस्ट 1923 को एक प्रस्ताव रखा कि उन सभी सार्वजनिक जलाशयों, कुआँ, धर्मशालाओं का इस्तेमाल अछूत कर सकते हैं। जिनका निर्माण और रखरखाव सार्वजनिक निधि से हो या जो सरकार द्वारा नियुक्त या कानूनी तौर पर बनाए गए निकायों की देखरेख में हो। साथ ही यह भी प्रस्तावित किया गया कि वे सरकारी स्कूलों, अदालतों, कार्यालयों और डिस्पेंसरियों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। सरकार ने यह संकल्प मान लिया और मुंबई सरकार ने 11 सितम्बर 1923 को अपने अधीन सभी कार्यालयों और आदेश जारी कर दिया। आदेश मिलते ही महाड़ नगर परिषद ने एक प्रस्ताव पारित करके सरकारी आदेश को अपनी स्वीकृती दे दी।

20 मार्च, 1927 को सुबह 9 बजे आर्य समाज के सभा में भाई चित्रे ने आभार प्रदर्शन करते हुए कहा कि, ''यहाँ के तालाब का एक पैसे में एक घड़ा पानी के हिसाब से 40 रूपयों का पानी हम लोगों ने कीमत देकर लिया हैं। वह तालाब सार्वजनिक है, अब धूप तपने लगी है, अतः आप हम अध्यक्ष के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर चलेंगे, और तालाब का पानी पियेंगे। तालाब के किनारे सभी ने जाकर पानी पिया, और ये लौटकर भोजन मंडप में आये, कुछ लोगों ने भोजन कर लिया था। कुछ लोग भोजन कर रहे थे। उसी समय सैकड़ों सवर्णों ने हाथों में लाठिया लेकर हमला कर दिया। भोजन में मिट्टी मिला दी, और लोगों को मारा, जिनमें भानुदास कांबले और पां. ना. राजभोज को बहुत मार पड़ी थी। भाई चित्रे को जान से मारने के इरादे से सवर्णों ने सभी स्थानों पर उन्हें ढूँढा। किंतु

वे मिले नहीं, अगर वे उस समय उनके हाथों लग जाते तो महार परिषद में एक उच्चवर्णीय की बलि चढ़ी होती।''

महाड में स्पृश्यों और अस्पृश्यों के दो गुट जमा हुए थे। वातावरण तंग हो चूका था। डी.एस.पी ने दोनों गुटों के नेताओं से मिलकर उन्हें चालीस–पचास फुट की दूरी पर खड़े रख कर, हजारों लोगों के बीच दोनों गुटों के नेताओं से बातचीत करवाई।

इधर महाड के कुछ स्पृश्यों ने मिट्टी के 108 छोटे घाट गोमूत्र से भरकर तालाब में डाले। इस तरह उन्होंने तालाब को शुद्ध करदिया और अस्पृश्यों ने तालाब का पानी नहीं भरना चाहिए, इसलिए कोर्ट से मनाही हुक्म प्राप्त कर लिया। उधर पुलिस ने दंगा करने वाले अस्पृश्यों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाया।

दलित आंदोलनों के लिए यह एक मुख्य पड़ाव रहा। आंदोलनों की बुनियाद तो तब ठोस बनी जब मुंबई विधान परिषद के नए प्रस्ताव के बाद महाड नगरपालिका ने अपने यहाँ एक प्रस्ताव पारित कर अपने यहाँ के तमाम सार्वजनिक स्थान दलितों के लिए खुले करने का निर्णय लिया था। दुसरे महाड की वह भूमि थी जहाँ पर अंबेडकर के पूर्ववर्ती महात्मा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज के अग्रणी कार्यकर्ता 'गोपालबुवा वलंगकर' ने अपने जनजागृति की शुरुवात की थी।

अपने संगठन 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' के अंतर्गत बाबासाहेब ने तारीख 19, 20 मार्च को ही महाड में सम्मेलन करने का निर्णय लिया और वह भी तय किया गया की इसी दौरान दलितों के लिए निषिद्ध माने

जाने वाले चवदार तालाब पर जाकर लोग सत्याग्रह करेंगे। 20 मार्च की तपती दोपहर में लगभग चार हजार की तादाद में वहाँ जमा जनसमूह ने चवदार तालाब पर जाकर पानी पिया। गौरतलब है की इस ऐतिहासिक सत्याग्रह में गैर ब्राह्मम आंदोलन के शीर्षाथ नेताओं के साथ–साथ स्थानीय कम्युनिस्ट कार्यकर्ता भी शामिल थे।

स्पृश्यों द्वारा तालाब में गोमूत्र डालने की प्रक्रिया को डॉ. अम्बेडकर ने अछूतों का अपमान समझा। उन्होंने अपने पत्र 'बहिष्कृत भारत' के माध्यम से इसका प्रचार किया। उन्होंने अपने लेख में कहां कि ''संसार में भारत को छोड़कर ऐसा कोई देश नहीं है, जिसमें करोड़ों मनुष्यों को अछूत माना जाता है और ईश्वर की दी हुई वस्तुओं का भी उन्हें उपयोग करने नहीं दिया जाता। धरती, जल और हवा आदि तत्व मनुष्य को प्रकृति की और से मिले हैं। सभी मनुष्यों का इस पर समान अधिकार होता है, जो समाज इनके उपयोग में विभेद करता है उस समाज को यदि अज्ञानियों का समाज कहां जाए तो किसी को बुरा नहीं मानना चाहिए।''[71]

डॉ. अम्बेडकर ने पुनः सत्याग्रह की योजना बनाई। उधर महाड़ नगरपालिका ने सवर्ण हिदुंओं के दबाव में आकर आदेश रद्द कर दिया। जिसके अंतर्गत अछूतों को तालाब से पानी भरने का अधिकार दिया था। हिंदुओं का प्रतिरोध तो एक चुनौती थी पर महाड़ नगरपालिका ने एक और चुनौती प्रस्तुत कर दी। ड़ॉ अम्बेडकर ने दोनों चुनौतियों को स्वीकार

[71] बहिष्कृत भारत 22 मार्च 1927।

किया। उन्होंने महाड़ सत्याग्रह समिति की और 25, 26 दिसंबर 1927 के दिन पुनः सत्याग्रह के लिए निश्चित किए।

डॉ अम्बेडकर 24 दिसंबर 1927 को अपने 200 साथियों तथा प्रतिनिधियों सहित मुंबई से महाड रवाना हो गए और दूसरे दिन दोपहर वहाँ पहुँच गए। वहाँ पुलिस अधीक्षक ने उन्हें पहले जिलाधीश से मिलने को कहा। जिलाधीश से मिलने पर उन्होंने डॉ. अम्बेडकर से कहा कि'' सवर्ण हिंदुओं ने चवदार तालाब को व्यक्तिगत संपत्ति होने का दावा किया है। अतः जब तक इस बात का कानूनी फैसला नहीं हो जाता तब तक आप सत्याग्रह न करें।'

लेकिन डॉ. अम्बेडकर ने जिलाधीश को उनकी इच्छानुसार परिषद द्वारा आयोजित सभा में बोलने की अनुमति प्रदान की। उस सभा में लगभग 15000 स्त्री–पुरुष महाड़ सत्याग्रह के लिए एकत्रित हुए थे। जिलाधीश ने अपने उद्बोधन में अदालत के निर्णय तक सत्याग्रह को स्थगित रखने की सलाह दी।

जिलाधीश को सुनने के बाद सभा में प्रत्येक वक्ता ने सत्याग्रह का समर्थन किया। अछूतों में अपार उत्साह था और कई लोग बड़े उत्तेजित भी थे। स्थिति की कटुता से जिलाधीश को अवगत कराया गया। तब जलाधीश ने डॉ. अम्बेडकर से घंटों विचार–विमर्श किया और रात को सभी नेताओं की बैठक हुई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए यही निर्णय लिया गया कि सत्याग्रह स्थगित कर दिया जाए। दूसरे दिन डॉ. अम्बेडकर ने जन समूह को समझाया और कहा कि यह मत सोचना की यदि आप सत्याग्रह स्थगित करते हो तो उसमें कोई अपमान है। मैं

आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सत्याग्रह के स्थगित का अर्थ यह नहीं होगा कि हमने संघर्ष का परित्याग कर दिया है। संघर्ष उस समय तक जारी रहेगा जब तक चवदार तालाब पर हम अपना अधिकार प्राप्त नहीं कर लेते।'

लेकिन डॉ.अम्बेडकर ने यह जान लिया कि सत्याग्रह भविष्य में संभव नहीं होगा, अदालत में चवदार तालाब से अछूतों द्वारा पानी पीने के अधिकार के लिए दावा पेश कर दिया। वह मुकदमा कई वर्ष तक चलता रहा और डॉ.अम्बेडकर स्वयं उसकी पैरवी करते रहे। मुंबई हाईकार्ट ने 17 मार्च 1936 को अछूतो के पक्ष में फैसला दिया। दस वर्ष के अदालती संघर्ष के पश्चात अनेक प्रकार के कष्ट और कठिनाइयों को सहते हुए डॉ.अम्बेडकर को सफलता मिली। यह समूचे अछूत समुदाय के सम्मान की यह ऐतिहासिक विजय थी।

इस प्रकार महाड़ आंदोलन दलितों के उद्धार में प्रथम कारगर साबित हुआ। इसके पश्चात तो संपूर्ण भारत में दलित आंदोलन करवट लेने लगा और कालांतर में इस आंदोलन ने एक विशाल जनांदोलन का रूप धारण कर लिया। वास्तव में यदि देखा जाए तो महाड़ आंदोलन या' चवदार तालाब' सत्याग्रह केवल पीने के पानी के लिए किया गया सत्याग्रह नहीं था बल्कि इस तालाब का पानी सभी जाति, धर्म और पंथ के लोगों को समानता के आधार पर पीने के लिए मिले इसी हक्क के लिए की गयी लड़ाई थी। जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं पर एक मुट्ठी भर लोगों का कब्ज़ा कहाँ तक उचित था। लेकिन प्राचीन काल से यह कब्ज़ा चला आ रहा था। डॉ.अम्बेडकर के नेतृत्व में तथा

आधुनिकता के परिवेश में सभी कालबाह्य मूल्यों को चुनौती देने की आवश्यकता थी, जो महाड़ आंदोलन ने पूर्ण कर दी। यहाँ से दलितों की आवाज बुलंद होती गयी। इस आंदोलन के पश्चात न केवल महाराष्ट्र बल्कि भारत के कई राज्यों में भी इस प्रकार के आंदोलन होने लगे और दलित वर्ग अपने मूलभूत अधिकारों के प्रति जागृत होने लगा। इस आंदोलन ने भारतीय बुनियादी ढाँचे में सेंध लगा दी और फिर लगातार आंदोलन होते गये। इसी श्रृंखला में नाशिक का 'कालाराम मंदिर सत्याग्रह' भी हुआ जो दलितों द्वारा मंदिर प्रवेश कर अपने हक्क को अमलीजामा पहनाने का सफल उदाहरण है।

### 1.3.3 कालाराम मंदिर सत्याग्रह

वैसे नाशिक का कालाराम मंदिर सत्याग्रह इसलिए नहीं किया की दलित वर्ग ईश्वर के दर्शन का भूखा था। बल्कि इसलिए किया गया की दलित अब समाज में समानता चाहते थे। पिछले दो हजार वर्षों में अछूतों को ईश्वर के दर्शन नहीं हुए थे, इसलिए अछूत समाज का कुछ अड़ा हुआ नहीं था। नाशिक के मंदिर प्रवेश की लड़ाई में लोगों को जो पीड़ा हुई, उनको जो परेशानियाँ भोगनी पड़ी वह केवल इसलिए कि अन्य लोगों की तरह हम भी इंसान है और अन्य लोगों की तरह हमें भी मंदिर में जाने का अधिकार है, इस बात की स्थापना करने के लिए सत्याग्रह किया था। हम लोगों को इस तरह की बात बिलकुल समझ में नहीं आती कि हम अन्य इंसानों की तरह इंसान है फिर भी मंदिर में हमारे जाने से हिंदू मंदिर अपवित्र कैसे हो जाते हैं ? सवर्णों द्वारा हम

लोगों पर जबरदस्ती थोपा हुआ यह अछूतपन का घिनौना कलंक धोने के लिए और यह दिखाने के लिए कि हम भी इंसान है, हम किसी भी दृष्टि से अपवित्र नहीं हैं, इसलिए कालाराम मंदिर प्रवेश की लड़ाई लड़ना जरूरी थी।

मंदिर प्रवेश हेतु नाशिक अछूतों ने एक मोर्चा कमेटी गठित कर ली थी, जिसके सचिव 'श्री भावराव गायकवाड' ने कालाराम मंदिर के संस्थाचालक को लेख भेजा था कि यदि निश्चित तारीख तक उन्होंने मंदिर अछूतों के लिए नहीं खोला तो अछूत मोर्चा आरंभ कर देंगे। डॉ. अम्बेडकर 2 मार्च 1930 को ही बम्बई से नासिक पहुँच गये। उनकी अध्यक्षता में आम सभा हुई जिसमें भारी भीड़ थी। सर्वसमति से निर्णय लिया गया की सत्याग्रह अवश्य किया जाए।

सत्याग्रह का स्वतः बहुत प्रचार हो गया। सरकार ने शहर में दफा 144 लगा दी। यह सत्याग्रह लगभग एक माह तक चलता रहा। अंततः 9 अप्रैल 1930 का दिन आ गया। इस दिन 'रामनवमी' थी और इस दिन राम की मूर्ति की रथ यात्रा निकलती थी। सवर्ण हिंदूओं और अछूतों में समझौता यह हुआ की दोनों और से बलिष्ट व्यक्ति रथ खींचेंगे। इससे पहले कि डॉ.अम्बेडकर तथा उनके साथी रथ तक पहुँच पाते, कुछ उपद्रवी तत्वों ने उनको झगड़े में फंसा लिया और सवर्ण हिंदू रथ लेकर चल दिये। पुलिस पहले से तैयार थी, डंडे बरसाने लगे। पत्थर फेंके जाने लगे जिससे बहुत से लोग बुरी तरह घायल हो गए। परिणाम स्वरूप नासिक का कालाराम मंदिर पूरा एक वर्ष बंद रहा और मोर्चा अक्टूबर 1930 तक चालू रहा। मंदिर प्रवेश का सत्याग्रह रथ यात्रा पर

केंद्रित हो गया। इसकारण रथ यात्रा की प्रथा ही समाप्त कर दी। रथ यात्रा के बिना ही मूर्ति का स्नान करने के लिए ले जाने के लिए अनुमति दे दी। परंतु 1931 में उस पर भी प्रतिबंध लगा दिया। एक समय ऐसा आया जब मंदिर प्रवेश पर कानून बन गया और अक्टूबर 1934 में कालाराम मंदिर के दरवाजे के दर्शनार्थ खुल गए।

इस प्रकार महाड़ का सत्याग्रह जल के लिए था, तो नासिक का सत्याग्रह मंदिर प्रवेश के लिए दोनों में मानवीय अधिकारों की मांग निहित थी और डॉ.अम्बेडकर ने अछूतों के अधिकारों की दिशा में प्रबल संघर्ष छोड़कर विजय प्राप्त की।

दलितों का मंदिरों में प्रवेश बीसवीं सदी के तीसरे और चौथे दशक की अत्यंत महत्वपूर्ण घटना हैं यह वही प्रश्न है जिसके सहारे अंग्रेज भी अपनी रोटी सेकने का प्रयत्न कर रहे थे। हिंदू समाज के परंपरागत ढाँचे को तोड़ने के लिए गुजरात के 'नरसिंह मेहता' पर बीती एक घटना का जिक्र किया है। ''नरसी मेहता वैष्णव थे। एक दिन उन्हें दलित समाज के एक भक्त ने कीर्तन के लिए आमंत्रित किया। वे वहाँ गए। कीर्तन रात भर चला। प्रातः होते–होते नागर ब्राह्मणों में यह बात आग की तरह फैल गई। नगर के लोगों ने इसे अपनी समूची जाति का अपमान समझा और उन्हें जाति से बाहर कर दिया। इस तरह उन्हें जाति से बाहर कर ब्राह्मणों ने उनका अपमानित किया। 'नरसिंह मेहता' ने बहुत से पत्र लिखे हैं, जो 'ग्लोरी आफ गुजरात' के नाम से अंग्रेजी पुस्तक में संकलित हैं। ''[72]

---

[72] मोहनदास नैमिशराय – भारतीय दलित आंदोलन : संक्षिप्त इतिहास, पृ.सन – 39।

इस प्रकार हिंदूओं ने अछूतों के साथ कीर्तन करना भी निषिद्ध कर दिया था। ऐसे में कालाराम मंदिर प्रवेश करना आवश्यक था। हालाँकि मध्यकाल में संत कबीरदास ने सामान्य भक्तिमार्ग को इसलिए महत्वपूर्ण माना क्योंकि परंपरागत मान्यता के अनुसार अछूत मंदिर प्रवेश नहीं कर सकते थे। स्वामी रामानंद ने कबीरदास को अपना शिष्य नहीं बनाया था क्योंकि वे जुलाहा या निम्न जाति के थे। बहरहाल अम्बेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन को एक सही दिशा मिली, जिसके चलते आज दलितों को समाज में स्थान प्राप्त हो रहा है।

वास्तव में भारत की सबसे महान व्याधि जो इसे ले डूबी है, हिंदूओं की जन्ममूलक ऊँच–नीच की दुर्भावना अर्थात जात–पात है। इतनी ही क्यों, नौवीं शताब्दी में काबुल में भी पाल वंश के हिंदू राजा राज करते थे। परंतु आज हम देखते हैं कि आधा पंजाब मुसलमान हो गया, आधा बंगाल मुसलमान हो गया है और आधा मद्रास इसाई हो गया है। अनंत छोटी–छोटी जातियों में बंटे होने के कारण सब हिंदू मिलकर विदेशी आक्रमकों का सामना नहीं कर सके। हिंदू ऊपर से चाहे एक राष्ट्र दिख पड़ते हो, परंतु भीतर से झाँका जाए तो इनकी जितनी जातियाँ और उपजातियाँ हैं उतने ही अलग–अलग राष्ट्र हैं।

भारत के इस अलगाव को कम करने के लिए भी पानी के लिए सत्याग्रह करना एवं मंदिर प्रवेश करना अनिवार्य था। इसी में अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम भी सम्मिलित था।

### 1.3.4 भारतीय गोलमेज परिषद और दलित

सन 1930 मई लंदन में हुई पहली भारतीय गोलमेज परिषद में डॉ.अम्बेडकर भारतीय दलितों के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे। इस सम्मेलन में अछूतों के साथ सदियों से हो रहे अन्याय को दूर करके उन्हें सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार देकर सभी के साथ बराबरी तक पहुँचाने के लिए दलितों के अधिकारों की और साथ ही पृथक निर्वाचन की भी मांग की थी। जिसे ब्रिटिश सरकार ने मान्यता दी, परंतु महात्मा गांधी ने स्वतंत्र पृथक निर्वाचन की माँग के विरोध में आमरण अनशन किया। परिणाम स्वरूप गांधी–अम्बेडकर विवाद ने उग्र रूप धारण किया। गांधी का ऐसा मानना था कि दलितों को यह अधिकार मिला तो हिंदू बहुसंख्यक से घटकर अल्पसंख्यक होने की संभावना है।

संपूर्ण देश में डॉ.अम्बेडकर के खिलाफ रोष व्यक्त होने लगा। अंत में गांधी की जिद और उनकी बिगडती दशा को देखकर डॉ.अंबेडकर को इस राजनीतिक अधिकारों को छोड़ना पड़ा था। केवल विधानसभा में और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की सुविधाएँ मिली।

### 1.3.5 धर्मपरिवर्तन की घोषणा

डॉ. बाबासाहेब के ऊपर बचपन से ही धार्मिक संस्कार थे। उनके पिता कबीर पंथी थे। सारी बौद्धिकता और विद्वता के बावजुद वे धार्मिक थे। परंतु उनकी धार्मिकता में कर्मकण्ड और रूढ़ियों को स्थान नहीं था। 1917 से उनका सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ। तब से लेकर 1935 तक वे हिन्दू धर्म में सुधार लाने के लिए प्रयत्नशील रहे। वे चाहते थे कि हिंदू धर्म

अधिक उदारता से अछूतों की स्वीकार करे, उन्हें उनके मानवीय अधिकार लौटा दे। हिन्दू धर्म के प्रति उनकी शिकायत थी की, वह विषमता का समर्थन करता है। ''जो धर्म विषमता को समर्थन करता है। उसके विरोध का निर्णय हम ने लिया है। अगर हिन्दू धर्म अस्पृश्यता का धर्म है तो उसे समता का धर्म बनाना चाहिए अगर हिन्दू धर्म सामाजिक समता का धर्म बनना चाहता है तो अस्पृश्य को मंदिरों में मुक्त प्रवेश देकर बात बनने वाली नहीं है। इसके लिए चातुर्वर्ण्य निर्मूलन की नितांत आवश्यकता है। इस धर्म और समाज की विषमता की जड़ चातुर्वर्ण्य व्यवस्था है चातुर्वर्ण्य ही अस्पृश्यता की जननी है। जातिभेद और अस्पृश्यता विषमता के अन्य रूप है। अगर इस जड़ को नष्ट नहीं किया गया तो अस्पृश्य वर्ग इस धर्म को निश्चित ही त्याग देगा।'' [73]

इस उद्धरण से यह स्पष्ट है कि डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर हिंदू धर्म की सीमाओं को बतलाते हुए उसमें शुद्धता का आग्रह कर रहे थे। तत्कालीन विद्वजनों से, धर्मप्रमुखों से वे बार–बार अपील कर रहे थे कि हिन्दू धर्म में स्थित इन दोषों को प्रयत्नपूर्वक हटाया जाये। वे खुद समानता की दिशा में इस धर्म को उन्मुख करने के लिए प्रयत्नशील थे। चवदार तालाब का सत्याग्रह, नाशिक के कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह इस बात के प्रमाण हैं। वर्णव्यवस्था की अशास्त्रीयता को वे अपने ग्रंथों द्वारा सिद्ध कर रहे थे। परंतु हिन्दू धर्म के तथाकथित ठेकेदार उनके इस प्रयत्न को गंभीरता से ले नहीं रहे थे, उलटे वे इन सुधारों का विरोध ही

[73] महामानव डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर– प्रभारकर दिघे, पृ. 140

कर रहे थे। म. गांधीजी जैसे व्यक्ति भी आरम्भिक वर्षों में वर्णव्यवस्था का समर्थन कर रहे थे।

धर्म की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए अम्बेडकर कहते है कि– ''मैं आपको फिर से यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं है। जो धर्म तुम्हें मनुष्य के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहता, जो धर्म तुम्हें पीने के लिए पानी नहीं देना चाहता, वह धर्म कहलाने लायक नहीं होता। जो धर्म तुम्हारे ज्ञान और शिक्षा के अधिकार छीन लेता है, जो धर्म तुम्हारे भौतिक उत्कर्ष में बाधाएँ पहुँचाता है, वह धर्म कहलाने लायक नहीं है। जो धर्म अपने अनुयायियों को अपने ही धर्मावलम्बियों से मानवीयता का आचरण करना नहीं सिखलाता, वह धर्म न होकर एक बीमारी है। जो धर्म अपने अनुयायियों को अमंगल जानवरों के स्पर्श को पाप घोषित करता है, वह धर्म न होकर विशुद्ध पागलपन है। जो धर्म कुछ वर्गों को धनसंचय नहीं करने देता, हाथों में शस्त्र लेने की इजाजत नहीं देता, वह धर्म–धर्म न होकर मनुष्य जीवन की विडम्बना है। जो धर्म अज्ञानियों को अज्ञानी, निर्धनों को निर्धन रहने की सीख देता हो, वह धर्म न होकर भयावह कैदखाना है।" [74]

बुद्ध और उनके धर्म का भवितव्य नामक एक लेख डॉ. बाबासाहेब ने 1950 में लिखा था। लेख के आरम्भ में वे व्यक्ति जीवन में धर्म की आवश्यकता के चार प्रमुख कारण स्पष्ट करते हैं।

1. ''समाज की स्थिरता और नियंत्रण के लिए नीति की आवश्यकता होती है। इनमें से किसी एक के अभाव में समाज रसातल को जा

---

[74] डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर –धनंजय कीर, पृ. 281

सकता है। इसलिए किसी भी समाज को धर्म की आवश्यकता होती है।

2. धर्म अगर बना रहता हो तो उसे बुद्धिप्रामाण्यवादी और विज्ञान बुद्धिप्रामाण्यवादी होना चाहिए।
3. केवल नीति की संहिता का अर्थ धर्म नहीं। धर्म की नीति–संहिता में स्वतत्रता, समता और बन्धुता इन मूलभूत तत्वों को मान्यता प्राप्त होनी चाहिए।
4. दरिद्रता को पवित्र मानने का आग्रह किसी भी धर्म को नहीं करना चाहिए, अथवा दरिद्रता का उदात्तीकरण भी नहीं होना चाहिए।"[75]

उनके मतानुसार इन चारों की पूर्ति बौद्ध धर्म करता है। धर्म–परिवर्तन की घोषणा के बाद सिख, ईसाई और इस्लाम धर्म प्रमुखों ने उनसे सम्पर्क स्थापित किया। प्रत्येक का आग्रह था कि वे उनके धर्म में आए। दलितों की बहुत बड़ी संख्या अगर अपने धर्म में आ गयी तो अपनी शक्ति बढ़ेगी ऐसी प्रत्येक की धारणा थी। 1936 के बाद कुछ वर्षों तक उन्हें सिख धर्म का आकर्षण था। सिख धर्म शक्ति का पूजक है। दलित ऐसे धर्म में जाए जिससे उनकी भारतीयता सुरक्षित रहे ऐसी उनकी धारणा थी। हिन्दुओं से वे कहते थे, कि ''दलित अगर सिख धर्म में गये तो वे हिन्दू संस्कृति में ही रहेंगे।"[76]

हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति में वे अंतर करते थे। हिंदू संस्कृति से उनका तात्पर्य भारतीय संस्कृति से था। हिंदू संस्कृति से उनका तात्पर्य

[75] डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकरः धनंजय कीर, पृ.281
[76] डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर–धनंजय कीर, पृ.सं. 288

भारतीय संस्कृति–परिवर्तन सहज सम्भव है, परन्तु संस्कृति परिवर्तन एक असम्भव सी प्रकिया है। भारतीय संस्कृति से दलितों को काट देना उन्हें मान्य नहीं था और व्यवहारतः यह संभव भी नहीं है।

इस्लाम धर्म का उन्हें कभी भी आकर्षण नहीं था। उनकी सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि धर्म जनतंत्र के अनुकूल नहीं है, और वे जनतंत्र के सबसे बड़े हिमायती थे। उन दिनों इस्लाम के अनुयायी जिस तरीके से स्वतंत्र राष्ट्र की बात कह रहे थे वह उन्हें स्वीकार्य नहीं थी। बहुसंख्यक हिन्दू समाज की मानसिकता इस्लाम के अनुकूल नहीं है। इस्लाम को कबूल कर वे अपने समाज के प्रति और भी तिरस्कार की भावना पैदा नहीं करवाना चाहते थे।

1935 से 1956 तक के कालखण्ड में अम्बेडकर धर्ममंथन में डूबे रहे। दुनिया के प्रमुख धर्मों का वे अध्ययन कर रहे थे। प्रत्येक धर्म की सीमाओं से वे परिचित हो रहे थे। उनकी मेधावी प्रतिभा और तेजस्वी बुद्धिमत्ता को बौद्ध धर्म आकृष्ट कर रहा था। इस धर्म का अत्यंत बारीकी से अध्ययन कर उन्होंने अन्ततः इसी धर्म में दीक्षा लेने का निर्णय लिया था। उनका यह निर्णय भावुकता से भरा हुआ नहीं था। बौद्ध धर्म का नया भाष्य उन्होंने प्रस्तुत किया। परंपरा ग्रस्त, रूढ़िग्रस्त, जड़ और भ्रष्ट बौद्ध धर्म को शुद्ध करने का उनका प्रयत्न था और यह काम उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ किया। अन्य धर्मों के प्रति उनकी यह शिकायत थी कि ये धर्म अपरिवर्तनशील होने का दावा करते हैं। प्रचलित सभी धर्मों की नींव 'श्रद्धा' है। ईश्वर कृपा प्राप्त करना और उसकी अवकृपा से बचना यह 'धर्ममार्ग' है। इसके सिवा बाकी सभी अधर्म और निषिद्ध माना गया है। 'परमेश्वर

और 'श्रद्धा' इसके सिवा 'धर्म' में किसी और बात को स्थान ही नहीं है। मनुष्य की बुद्धी, उसके विचार, चर्चा आदि को किसी भी धर्म ने मान्यता नहीं दी हैं। इस कारण ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में चर्चा ही नही की जा सकती है। जिन्होंने ईश्वर की कृपा प्राप्त है, उन्हें ही धर्म चर्चा का अधिकार यहाँ प्राप्त है। इसी वृत्ति के कारण 'धर्म पीठ तैयार होते हैं और धर्म पीठों में स्थित आचार्य, महत्त और ब्राम्हणों का राज्य शुरू होता है। ईश्वर के नाम पर इनका राज्य अखंण्ड रूप से चलने लगता है। यह सब ईश्वर के नाम पर चलता है, इस कारण उसमें परिवर्तन की संभावनाएँ खत्म हो जाती है। इसी कारण सभी ईश्वरीय धर्म ईश्वर की तरह अनादि, अंनत, सर्वस्पर्शी, सर्वगामी, सनातन और अपरिवर्तनीय हो जाते है। ऐसे धर्म मनुष्य की बुद्धीमत्ता को चुनौती नही दे सकते। सिद्धार्थ नामक व्यक्ति ने जिस धर्म की बात कहीं है वह इन प्रचलित धर्मों से एकदम भिन्न है। एक व्यक्ति द्वारा अनेक व्यक्तियों से कहा गया धर्म है।

''इस धर्म में गुढ़ शक्ति को किसी भी प्रकार का स्थान नहीं है। ईश्वरीय कृपा या अवकृपा, वरदान या शाप स्वर्ग या नरक इसकी कोई गुंजाईश इस धर्म में नही है। सिद्धार्थ का यह धर्म हाड–मांस के व्यक्ति द्वारा उसके ही जैसे हांड–मांस के लोंगों के लिए, उनकी ही भाषा में, उनके ही शब्दों में कहा गया है। इस धर्म में 'श्रद्धा के लिए कोई स्थान नहीं है। उलटे किसी व्यक्ति या वस्तु पर अंधश्रद्धा न रखने का आग्रह इसमें किया गया है। प्रश्न करो, शंकाऐं उपस्थित करो, विचार करो, और अगर तुम्हारे विवेक को मान्य हो तो ही स्वीकारो– ऐसा इस धर्म आग्रह है। सिद्धार्थ कही पर भी सर्वज्ञता का दावा नही करता वह किसी का

संदेश नहीं देने की बात नहीं करता वास्तव में वही किसी भी प्रकार का आदेश नहीं करता। कोई र्निनायक बात नहीं करता। यही इस धर्म की शक्ति है।"[77]

डॉ. अम्बेडकर जैसी प्रतिभा को बौद्ध धर्म आकृष्ट क्यों कर गया इसका उत्तर उनके उपर्युक्त विवेचन में मिलता है। हिंदू धर्म की वर्ण–व्यवस्था की कल्पना, इस्लाम की कट्टरता और जनतंत्र से उसका विरोध, ईसाई धर्म की साम्राज्यवादिता और रंगभेद की नीति का खुला समर्थन इस कारण वे इन धर्मों से नाराज थे। समता, बन्धुता और स्वतंत्रता के मूल्यों का समावेश जिस धर्म में हो उसकी खोज में वे भटक रहे थे। बौद्ध धर्म में उन्हें यह मूल्य मिले। गौतम बुद्ध की मृंत्यु के बाद बौद्ध धर्म में अनेक अन्धश्रद्धाएं और कर्मकांड घुस गये थे। बाद के सैकडों वर्षों में इसके कई पंथ उपपंथ बने। ढ़ाई हजार वर्ष की परम्परा में मुक्त बौद्ध धर्म लुप्त हो गया था। डॉ. बाबासाहेब मूल बौद्ध धर्म को उसकी तेजस्विता के साथ प्रस्तुत करना चाह रहे थे। 'बुद्ध एण्ड हिज धम्मा' में उन्होंने यह कार्य पूर्ण किया है। यह ग्रंथ केवल बौद्ध धर्म की महिमा को ही स्पष्ट नहीं करता, उसका नया भाष्य प्रस्तुत करता है। हिन्दू धर्म की तरह यह ग्रंथ केवल बौद्ध धर्म की भी एक सीमा थी। बाइबल, कुरान या जेन्दावस्ता की तरह बौद्ध धर्म का कोई एक मूल धर्मग्रंथ नहीं है। इस धर्म के नाम पर अनेक ग्रंथ तथा सैकड़ों भाष्य उपलब्ध हैं। कुछ को परम्परा ने बहुत महत्व दिया है, कुछ में मतभेद या मीमांसा भेद है। उसके दार्शनिक सिद्धांत, संघ संबंधी नियम, उसकी शिक्षा आदि को लेकर अराजकता की स्थिति है। इन सबके बीच से मार्ग

---

[77] डॉ. अम्बेडकर आणि त्यांचा धम्म– प्रभाकर वैद्य पृ. 133,134

निकालकर बौद्ध धर्म के मूलभूत तत्वों को प्रस्तुत करना काफी परिश्रम का काम था।

बौद्ध धर्म की श्रेष्ठता को सिद्ध करने हेतु उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया। सिद्धार्थ गौतम को बुद्धपद प्राप्त हो जाने के बाद उनके चरित्र के सभी प्रसंग, उनके सभी बचन, प्रवचन, उनके संदर्भ, इन सब पर की टीकायें, भाष्य, विभिन्न बौद्ध पंथों का साहित्य इन सबका गंभीर अध्ययन डॉ. बाबासाहेब ने किया। 1935 से 1956 तक यह अध्ययन चलता रहा। बुद्ध के स्वतंत्र जीवन–दर्शन की खोज उन्होंने की बुद्ध धम्म का महल इसी जीवन–दर्शन की नींव पर खड़ा है। इस जीवन–दर्शन की खोज में अम्बेडकर ने अपनी सारी बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता, गवेषणापूर्ण वृत्ति, शास्त्रीय दृष्टि के दांव पर लगा दी। इतने प्रदीर्घ अध्ययन के बाद परम्परागत बुद्ध चरित्र कह कई विसंगतियां उनके ध्यान में आ गयीं।

बुद्ध चरित्र और बौद्ध दर्शन की नई सीधी–सादी तर्कबुद्धि और वैज्ञानिक दृष्टि पर आधारित व्याख्या करना वास्तव में एक साहस का कार्य था। यह ग्रंथ वास्तव में बीसवीं शताब्दी का एक नया भाष्य था। इस भाष्य की नैतिकता को पढ़कर विद्वानों ने इसकी तुलना 'नये बाइबल' के साथ की हैं। यह भाष्य उन्होंने नव बौद्धों के लिए तैयार किया है। ''बौद्ध धर्म का स्वीकार यह एक प्रासंगिक विषय नहीं है। वह राजनीतिक भी नहीं है। वह केवल सामाजिक ही नहीं है। अपितु एक नये जीवन–दर्शन को स्वीकारने का यह प्रश्न है। इस कारण बौद्ध धर्म में प्रवेश एक विशिष्ट काल की घटना न होते हुए निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है, ऐसी उनकी धारणा थी। इसलिए नवबौद्ध को स्थायी रूप से मार्गदर्शन करनेवाला,

सतत अध्ययन और चिंतन के लिए घर–घर में रखने के लिए, सार्वजनिक और व्यक्तिगत अध्ययन और प्रवचन के लिए इस अभिनव ग्रंथ की निर्मिति उन्होंने की है।"[78]

## 1.4 दलित अग्रदूतों का संक्षिप्त परिचय

आजादी के पहले और बाद में भी दलित क्रांति की शुरुवात हुई थी, उसे जगाऐ रखने के लिए दलित समाज से ही ऐसे अनेक लोग सामने आये जिन्होंने इस आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते हुए, अपनी पूरी जिंदगी इस दलित समाज को संगठित, और संघर्ष करने के लिए अर्पण की। सुशिक्षित लोगों ने महात्मा ज्योतिराव फुले, और डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के विचार, तत्वज्ञान आदि से प्रेरणा ग्रहण की और उनके आंदोलनों को मजबूत करने के लिए कार्य करते रहे। ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण दलित समाज सुधारकों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

### 1.4.1 संभाजी तुकाराम गायकवाड

इनका जन्म पोड, कोलाबा, में एक महार परिवार में हुआ था। अत्यंत निर्धनता के कारण वे औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके और 20 वर्ष की आयु में बंबई आकर मोटर मैकनिकी सीखी जिसमें उन्होंने कुछ ही समय बाद महारथ हासिल कर ली और रू. 350 प्रतिमाह तनख्वाह पाने लगे। उस समय के 350 रू. आज के जमाने में साढ़े तीन हजार रूपयों से अधिक हैं।

---

[78] डॉ. अम्बेडकर आणि त्यांचा धम्म– प्रभाकर वैद्य पृ. 117

1918 में उन्होंने दलितोत्थान आंदोलनों में हिस्सा लेना प्रारंभ किया। 1920 में बाबासाहेब द्वारा दलित मुक्ति आंदोलन शुरू किए जाने पर वे उनके कट्टर अनुयायी और समर्थक बन गए। बाबासाहेब द्वारा 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' स्थापित करने पर वे उसके सदस्य बन गए और बंबई में अछूतों की कई सभाएँ आयोजित की। बाबासाहेब द्वारा महाड चवदार तालाब के आंदोलन में वे उनके साथ थे और उन्होंने महाड के आसपास के क्षेत्रों में उनकी विचारधारा का जोरदार प्रचार किया। बाबासाहेब द्वारा आयोजित 18–20 मार्च 1927 को दलित वर्गों की महाड में हुई सभा में बहुत से लोगों को लेकर शामिल हुए और वे इसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। 'महाड सत्याग्रह' की सफलता इनके जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं का ही परिणाम थी। उनके प्रयासों से विभिन्न समुदायों जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं का ही परिणाम थी। उनके प्रयासों से विभिन्न समुदायों जैसे कबीरपंथी, रामानंदीपंथी, नाथपंथी और वरकारीपंथी लोगों का इसमें सहयोग मिला। बंबई में इन संप्रदायों की सभा आयोजित कर उनसे दलितोत्थान में बाबासाहेब का सहयोग देने के लिए उन्हें प्रभावित किया। माननीय गायकवाड जी ने 'महार समाज सेवा संघ' नामक संगठन स्थापित किया जिसके माध्यम से वे उन्हें संगठित कर जागृत करना चाहते थे। बंबई सरकार द्वारा नवंबर 1929 में नियुक्त ''स्टोर्ट कमिटी के समक्ष उन्होंने साक्षी दी कि वे दलित वर्गों की सामाजिक आर्थिक दशा की जांच करें।

वे नासिक के कालाराम मंदिर सत्याग्रह में अत्यंत सक्रिय थे। जब येवला में 13 अक्टूबर 1935 कि बाबासाहेब ने हिंदू धर्म त्यागने की इच्छा

की घोषणा की तो गायकवाड़ जी ने उनका प्रबल समर्थन किया। वे 1935 में बंबई में महार परिषद आयोजित करने में सक्रिय संगठक थे।

उन्होंने अपने निवास स्थान के पास बी.आई. चाल बंबई में अछूतों के लिए एक लाइब्रेरी चालू की जो अभी तक चल रही है। उन्होंने 1942 में 'महार देयाती पंचायत समिति' की स्थापना की जो अभी भी चल रही है। उनके आंदोलनों में निस्वार्थ जुटे रहने की प्रेरणा से सारे महाराष्ट्र समाज को प्रभावित किया है।

### 1.4.2 सीताराम एन. शिवतरकर

इनका जन्म बंबई की कामठीपुरा बस्ती में एक चमार दंपति माननीया एवं मा. नामदेव राव शिवतरकर के यहां हुआ था, जो एक शिक्षक थे। वे 1909 में वर्नाकुलर फाइनल पास करके परेल, बंबई के एक मराठी स्कूल में अध्यापक की नौकरी करने लगे। इसके बाद 1926 में वे हैडमास्टर तथा फिर शिक्षण सूपरवाइजर बने और 1940 में अवकाश प्राप्त हो गए।

वे सामाजिक कार्यकर्ता थे, इसलिए बाबासाहेब के संपर्क में 1940 में आए। जब बाबासाहेब इंग्लैड में पढ़ रहे थे तो उनके द्वारा 1920 में चालू की गई मूकनायक पत्रिका को उन्होंने डी.डी घोलाप की मदद से चालू रखा। 1924 में बाबासोहब द्वारा 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' स्थापित करने पर वे इसके सेक्रेटरी बनाए गए। वे महाड में 19 और 20 दिसंबर 1927 को हुई दलित वर्गों की सभा के एक आयोजक थे जिसे बाबासाहेब ने संबोधित किया था। शिवतरकर जी ने इसमें प्रस्ताव रखा कि 'सभी मनुष्य बराबर ही पैदा हुए हैं इसलिए सबके साथ बराबरी का व्यवहार करना

चाहिए।14 जून 1928 को बाबासाहेब द्वारा स्थापित 'डिप्रैस्ड क्लासेस एजूकेशन सोसाइटी' के वे सेक्रेटरी रहे। वे 2 मार्च 1930 को कालाराम मंदिर नासिक में प्रवेश के लिए हुई सभा में भी शामिल हुऐ। राउण्ड टेबल कांफरेन्स लंदन में वे बाबासाहेब के कट्टर पक्षधर थे और 1932 में पूना पैक्ट के एक हस्ताक्षर कर्ता भी। उन्होंने अकोला में 6 तथा 7 मई 1933 को हूई सी.पी. तथा बरार की राज्य डिप्रैस्ड क्लासेज कांफ्रेसं की अध्यक्षता की और मई 1933 में ही कापुस तालनी में हुई बरार के कौब्लर्स की सभा की भी अध्यक्षता की। वे दलितों के नकली नेताओं द्वारा गलत प्रचार के कट्टर विरोधी थे। और बाबासाहेब के विचारों के कट्टर समर्थक। बाबासाहेब द्वारा 1935 में येवला में की गई हिंदू धर्म को त्यागने की इच्छा की घोषणा का भी समर्थन किया। परंतु बाद में एन.एस. कजरौलकर की लुभावनी बातों में आ गए और 31 मई 1940 में हुई पूना में कांग्रेस की समर्थक दलितों की सभा, जिसकी अध्यक्षता नासिक के ए.डी. रनखम्बे ने की थी, में भी शामिल हुए।

प्रथम आम चुनाव में वे कॉंग्रेस के टिकट पर बंबई विधान सभा के लिए माननीय आर.डी. भंडारे के मुकाबले लड़कर जीते। 1952 से 1963 तक अध्यक्ष रहे। उनके निस्वार्थ और निर्भीकतापूर्ण नेतृत्व से दलितोत्थान की सेवाएं महाराष्ठ के लोंगों की बहुत बड़ी प्रेरणा श्रोत हैं।

### 1.4.3 सुश्री. जैबाई चौधरी

इनका जन्म उमरे नागपुर के पास में एक महार दंपत्ति के यहाँ हुआ था। 1896 में घोर अकाल के कारण उनका परिवार मजदूरी के लिए

नागपुर आ गया। प्राइमरी शिक्षा समाप्त होने के बाद ही अल्पायु में उनका विवाह 1901 में नागपुर के बापूजी चौधरी से हो गया।

अत्यंत गरीबी के कारण वे नागपुर से कामठी 10 मील दूर तक सिर पर भारी बोझ रखकर कुली का काम करती थी। इसी दौरान वे ईसाई मिशनरी मिस ग्रेगरी के संपर्क में आईं और उनकी मदद् से मिशन स्कूल तिमकी, नागपुर में अध्यापक की नौकरी पर लग गईं। किंतु सवर्ण हिंदुओं के बच्चों ने स्कूल जाना बंद कर दिया और उनके अभिभावकों को भी एक अछूत द्वारा उनके बच्चों को शिक्षा दिया जाना धर्म विरूद्ध लगा। इसलिए उन्हें यह नौकरी छोड़नी पड़ी।

सवर्णों की इस प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उन्होंने छुआछूत और जाति प्रथा के विरुद्ध लड़ने का दृढ़ निश्चय किया। शिक्षा को दलितोत्थान की मजबूत सीढ़ी मानते हुए उन्होंने अछूत लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया और 1922 में नागपुर की न्यू कालोनी में संत चोखा मेला गर्ल्स स्कूल खोला, जो 1922 से 1954 तक प्राइमरी तक था और 1954 से 1980 तक सेकेन्डी स्कूल और अब इन्टरमीडियेट कॉलेज है। उन्होंने जगह–जगह जाकर दलित महिलाओं को शिक्षित होने, अपना जीवन स्तर सुधारने और स्वच्छता रखने की प्रेरणा दी।

समाज में अपनी लोकप्रियता के कारण वे 9 अगस्त 1930 में नागपुर में आयोजित प्रथम दलित महिला सम्मेलन में स्वागत समिति की सदस्य बनाईं गईं और इसी प्रकार 1940 में नागपुर में हुई अखिल भारतीय दलित वर्ग महिला सम्मेलन में भी स्वागत समिति की सदस्य थीं, जिसे डॉ. अम्बेडकर और महत्वपूर्ण नेताओं ने संबोधित किया था। वे शैडयूल्ड

कास्टस फेडरेशन की सदस्य थीं और 1946 में राजनीतिक अधिकारों के लिए नागपुर में इसके सत्याग्रह में सक्रिय थी। 1956 में उन्होंने बौद्ध धम्म अपना लिया।

गरीबी के थपेड़ों में अपने को संभालते हुए वे उस समय की महिला समाज की अत्यंत गिरी स्थिति में भी एक अछूत होते हुए जिस मुकाम तक पहुँच सकी हैं, वह भारतीय दलित महिलाओं के लिए आदर्श मिसाल तो है ही, अन्य सभी वर्गों की महिलाओं के लिए भी अनुकरणीय हैं।

**1.4.4 गोंविदराव टी.मेश्राम**

इनका जन्म नागपुर के इंदौरा मुहल्ले में एक महार परिवार माननीया एवं मा. तुकाराम के यहाँ हुआ था जो एक सोडा फैक्टरी में काम करते थे। 1915 में मैटीकुलेशन पास करके वे भारतीय सेना में भर्ती हो गए, परंतु बाद में इसे छोड़कर नागपुर की नगर पालिका के एक सदस्य बन गए। जब बाबासाहेब ने 1935 येवला में हिंदू धर्म त्यागने की इच्छा की घोषणा की तो मेश्राम ने उसका जोरदार समर्थन किया। उन्होंने बाबासाहेब द्वारा बनाई इंडिपैंडैंट लेबर पार्टी के टिकट से फरवरी 1939 में चुनाव लड़े और हार गए।

मेश्राम जी नागपुर में 18, 19 तथा 20 जुलाई 1942 को हुई इंडिया शैड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन की स्वागत समिति के चेयरमैन चुने गए। यह संगठन बाबासाहेब की अगुवाई में दलितों का अखिल भारतीय स्तर का पहला राजनीतिक संगठन था। राव बहादुर एन. शिवराज इसके प्रेसीडैन्ट चुने गए। जब डॉ. अम्बेडकर वायसराय की कार्यकारिणी में श्रम सदस्य थे

तब मेश्राम जी ने भारत सरकार में ईस्टेट आफीसर का पद ग्रहण कर लिया। उनकी ईस्टेट आफीसर की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए गवर्नर जनरल ने उन्हें रावबहादुर की पदवी से विभूषित किया। वे डॉ. अम्बेडकर के शैक्षणिक कार्यों में जुटे रहे हैं और डॉ. अम्बेडकर द्वारा 8 जुलाई 1945 में स्थापित 'पीपल्स एजुकेशन सोसाइटी' के फाउंडर मेंबर थे और उनके प्रयासों से अलबर्ट और मेंकावा इमारते बहुत कम कीमत पर इस सोसाइटी को मिली थीं। जहाँ आजकल सिद्धार्थ कॉलेज स्थापित है। 1951 में ईस्टेट अधिकारी से अवकाश प्राप्त करने के बाद वे इस सोसाइटी के 'मिलिंद कॉलेज' औरंगाबाद के रजिस्टार बने और इनके ही प्रभावी प्रबंधन से कॉलेज की इमारत थोड़े समय में बन कर तैयार हुई थी।

1952 के चुनाव में 'शेडयूल्ड कास्टस फेडरेशन' के टिकट पर नांदेड़ सीट से लड़े परंतु हार गए। वे जन कल्याण के कार्यों के लिए अथक प्रयास करते थे और उनकी संगठित करने की क्षमता असाधारण थी। उनकी यही सेवाएँ महाराष्ट्र के युवा वर्ग के लिए अत्यधिक प्रेरणादायक हैं।

### 1.4.5 डी.एस.दत्तात्रय पवार

इनका जन्म कोल्हापुर में एक चमार परिवार में संतराम पवार के यहाँ हुआ था। जिनका पेशा चमड़े का काम करना था। इनके सिर से पिता का साया बचपन में ही उठ गया था अतः बच्चों के भरण–पोषण करने में असमर्थ उनकी माता ने छत्रपति शाहूजी महाराज से मदद् मांगी थी और महाराज ने बड़े पुत्र दतात्रय की जिम्मेदारी लेते हुए उनकी शिक्षा मैटिक तक दिलाई और कोल्हापुर के दीवानी कोर्ट में नाजिर के पद पर तैनात

किया। कोल्हापुर रियासत के भारतीय संघ में विलय हो जाने के बाद वे रत्नागिरी जिला के रायबाग में महालकारी पद पर नियुक्त हुए, जिस पद वे 1951 तक रहे।

जैसा कि ऊपर बताया गया है उन्हें छत्रपति शाहूजी महाराज की दयालू और उदार प्रवृत्ति के कारण ऊपर उठने का अवसर मिला था अंतः वे उनके अत्यन्त कृतज्ञ और उनसे अत्यन्त प्रभावित थे। 1917 में उनकी पहली मुलाकात बाबासाहेब से हुई और 1919 में उन्होंने छत्रपति साहूजी महाराज से उनकी भेंट कराई। दतात्रय के प्रयासों से 1920 में कोल्हापुर के निकट मनगांव में अछूतों की एक सभा हुई जिसमें बाबासाहेब अध्यक्ष और छत्रपित साहू जी मुख्य अतिथि थे। संभवतः यह देश में पहला ऐसा अछूत सम्मेलन था जिसमें किसी राजा ने सक्रिय भाग लिया हो। पवार ने 30, 31 मई 1920 में नागपुर में हुई दलित वर्गों की सभा में प्रस्ताव किया कि पिछड़े वर्गों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा विभाग में गैर ब्राह्मणों की तैनाती बड़ी संख्या में होनी चाहिए। सभा ने यह प्रस्ताव पास कर दिया। 1924 में उन्होंने कोल्हापुर में अछूत विद्यार्थियों के लिए महारानी इन्दुमती बोर्डिंग हाऊस प्रारंभ किया। जिसे 1929 में देखकर बाबासाहेब अत्यंत प्रभावित हुए थे।

वे बाबासाहेब के अत्यंत विश्वस्त सहयोगी थे, जिसका उन दोनों के बीच लंबे समय तक हुए पत्राचार से पता चलता है। उनके पुत्र डॉ. रघुनाथ पवार ने इस अविस्मरणीय पत्राचार को सजाकर रखा है। 1951 में वे कॉंग्रेस में शामिल हो गए और 1952 के आम चुनाव में बंबई विधानसभा की हतकनागले सीट के लिए शैड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन के प्रत्याशी

शिरके को हरा दिया। लेकिन 1957 में वे उसी सीट से पराजित हो गए। मा.पवार जी ने भुखमरी और घोर निर्धनता में पलकर दलितोत्थान में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वह आज भी दलित पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

### 1.4.6 डी.बी. देवाजी खोब्रागडे

इनका जन्म चन्द्रपुर महाराष्ट्र में एक महार परिवार पाइका बाई और भिकाजी खोब्रागडे के यहां हुआ था जो एक कृषक थे। उन्होंने चन्द्रपुर से प्राइमरी परीक्षा पास की परंतु हाई स्कूल में असफल रहे। 1917 में पढ़ाई छोड़कर वे महाकाली कोयलरी में टाइम कीपर का काम करने लगे। उन्होंने कृषि उत्पादों के लिए एक ब्रोकर की फर्म खोली। 1942 में उन्होंने बल्लारपुर में एक लकड़ियाँ बेचने की दुकान खोली। वे अत्यंत मेहनती थे और आर्थिक रूप से सुदृढ़ थे।

अपनी युवावस्था में ही वे सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय थे और चन्द्रपुर जिले में दलित मुक्ति आंदोलन चलाया। जून 1932 में चन्द्रपुर में तुलाराम सखारे की अध्यक्षता में हुई मध्य प्रांत और बिरार की दलित कांग्रेस में वे स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। 1937 से 1942 तक वे चन्द्रपुर कोर्ट में ज्यूरी सदस्य थे।

1928 से ही वे बाबासाहेब के विश्वस्त सहयोगी थे। 1937 में प्रांतीय एसेम्बली चुनाव में ब्रहापुरी (चन्द्रपुर जिला) सीट से वे इनडिपैंडेंट लेबर पार्टी (बाबासाहेब की  राजनीतिक पार्टी) के प्रत्याशी थे और कांग्रेस के तुलाराम सखारे को पराजित किया था। सन 1946 से सन 1947 तक वे

बल्लाहरशाह की म्युनिसिपल नोटीफाइड एरिया कमिटी के अध्यक्ष रहे। उन्होंने मई 1940 में छिंदवाड़ा में महाकौशल क्षेत्र की अनुसूचित जातियों की सभा की अध्यक्षता की। उन्होंने 16 अक्टूबर 1956 को चन्द्रपुर में बौद्ध धम्म में परिवर्तन के लिए समारोह सभा आयोजित की जो इस प्रकार की दूसरी और अंतिम सभा थी जिसमें बाबासाहेब अध्यक्ष थे। इसमें 2 लाख लोगों ने धर्म परिवर्तन किया। उनके बड़े पुत्र भाऊराव खोब्रागडे प्रसिद्ध बैरिस्टर एवं दलित नेता थे जो राज्यसभा के उपाध्यक्ष भी चुने गए थे। उनके बड़े भाई पत्रूजी से उन्हें पूरा सहयोग एवं प्रेरणा मिलती रही थी। खोब्रागडे की मेहनत, लगन एवं उनके द्वारा किए गए अपने लिए तथा समाज उत्थान के लिए कार्य अत्यंत प्रेरणादायक हैं।

### 1.4.7 एल.एस.भटकर

लक्ष्मण राव भटकर जन्म अमरावती जिले के महार जाति में श्रवण भटकर के यहाँ हुआ था जो पुश्तैनी पेशे से ग्राम के सेवक थे। उनकी शिक्षा कक्षा 8 तक महर्षि वी.आर.शिंदे द्वारा संचालित 'डिप्रैस्ड क्लासेज मिशन हाई स्कूल', बंबई में हुई।

लक्ष्मण राव ने समाज सेवा की शुरुआत बुलढाना के पंढारी नाथ पाटिल तथा आनंद स्वामी नामक गैर ब्राह्मण पार्टी के नेताओं के संरक्षण में सत्यशोधक समाज के सदस्य के रूप में शुरू की। वे गैर ब्राह्मण आंदोलन का बुलढाना जिले में प्रचार अपने गीतों और जलसों द्वारा करते थे। वे लोकगीत रचते थे और वाग या लोक कहानियाँ लिखते थे और उनका मंचन करते थे जो कि बहुत प्रभावशाली रहती थीं।

अछूतों के उत्थान के लिए शिक्षा की महत्ता समझते हुए और गरीबी के कारण उनके शिक्षा से वंचित रहने की स्थिति को ध्यान में रखकर उन्होंने 1921 में बुलढाना के चिखाली में चोखामेला होस्टल प्रारंभ किया जिसमें प्रारंभ में केवल 15 विद्यार्थी रहते थे। होस्टल वासियों के लिए वे सुबह भिष्या मांगते थे और तब उन्हें खिलाते थे। सी.पी. और बिरार विधानसभा के दो सदस्यों सर्वमान्य जी.ए. गवई और नंदगवली ने उन्हें होस्टल चलाने के लिए प्रेरित और उत्साहित किया और आर्थिक सहायता प्रदान की।

भटकरजी 1933 में मुनिसिपल कौंसिल के उपाध्यक्ष चुने गए तथा 1937 में गैर ब्राह्मण आंदोलन कमजोर होने के कारण वे कांग्रेस में शामिल हो गए। 1959 में वे विदर्भ क्लासेज लीग के अध्यक्ष चुने गए जिस पद पर वे जीवनांत तक रहे। 1946 वे कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा के लिए लड़े परंतु हार गए परंतु सी.पी. और बिरार एसैंबली से वे कांस्टीट्यूट एसेम्बली के लिए चुने गए। वे 1952, 1957 और 1962 में लोक सभा के सदस्य चुने गए। संसद में उन्होंने बहुत सी समितियों और डिबेटों में भाग लिया।

उन्होंने कई सत्याग्रहों में भी भाग लिया जैसे कि बुलढाना जिला के लोनार में सार्वजनिक जलाशय से जल लेने में, भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लेने में जिसके लिए उन्हें एक माह की सजा भी हुई। उनकी सत्यशोधक समाज और प्रार्थना समाज में आस्था थी और मूर्ति पूजा में अनास्था। वे ब्राह्मणवाद के खिलाफ थे और संत गाडगे बाबा के विचारों और शिक्षाओं से भी प्रभावित थे। यद्यपि वे प्रारंभ से बाबासाहेब के पृथक चुनाव की मांग के समर्थक थे परंतु बाद में वे गांधीवादी हो गए। उनके

लंबे समय तक संसद से दलितोत्थान के प्रयासों एवं अन्य सामाजिक सेवाओं के लिए उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा।

### 1.4.8 रामचंद्र चंदूरकर

इनका जन्म पूना में एक चमार परिवार माननीया तुलसी बाई और बालजी चन्दूरकर के यहाँ हुआ था जो रैगड़ जिला के गोरेगाँव के पास चंदोर के निवासी थे और पूना में 117 वीं मराठा लाइट इन्फैन्टरी के जमादार थे। पिताजी की मृत्यु के बाद से अपनी माँ के साथ बंबई आ गए जहाँ उनकी माँ को कारपोरेशन के एक स्कूल में शिक्षिका तैनात कर लिया गया। रामचंद्र चंदूरकर मैटीकुलेशन तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद दलितोत्थान कार्यों में जुट गए।

वे डॉ. अम्बेडकर के कट्टर अनुयाई थे और उन्होंने अपने सहयोगियों आर.एस. बनमाली, बाबाजी बनमाली, के.जी. शिरादकर और केशव चंदूरकर के साथ पूना, नासिक, ठाणे, कोलाबा रत्नागिरि और अन्य स्थानों पर अम्बेडकर के सिद्धांतों का खूब प्रचार किया, जिसके परिणाम स्वरूप दलित लोग अपने सामाजिक उत्थान के लिए आगे बढ़े। चन्दूरकर जी ने 1927 में महाड चवदार तालाब के सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया और गोरे गावँ के तालाब के पानी का प्रयोग करने में भी आगे आए। 1930 में नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश के सत्याग्रह में भी वे अग्रणीय थे।

अपने लोगों के उत्थान के लिए उन्होंने 1923 में 'रोहितदास ध्यानोदय समाज' की स्थापना की परंतु अपने ही सदस्यों में मतभेद हाने के कारण वह बंद हो गया। बाद में 1933 में 'रोहितदास सुधारक मंडल' की स्थापना

की । इन दोनों संगठनों का उद्देश्य था अछूतों में नई सामाजिक और राजनीतिक चेतना जागृत करना और उन्हें एक प्लेटफार्म में संगठित करना।

वे डॉ. अम्बेडकर द्वारा लंडन की गोलमेज में मांगे गए अलग प्रतिनिधित्व के कट्टर समर्थक थे और इसके लिए उन्होंने लंडन में प्रधानमंत्री को टेलीग्राम भी भेजे। उनके निस्वार्थ एवं निर्भीक नेतृत्व से महाराष्ट के लोगों को अत्यंत प्ररेणा मिली हैं और उनकी दलितोत्थान की सेवाओं के सम्मान में बंबई म्युनिसिपल कारपोरेशन ने बैखला में एक सड़क का नाम उनके नाम पर रख दिया है।

### 1.4.9 एल.बी. भिंगरदेवे

लक्ष्मण राव का जन्म सांगली जिले के खानापुर के वीता नामक स्थान में एक मांग दंपति एवं बाबा जी भिंगर देवे के यहाँ हुआ था जिसका पेशा भेड़ें पालना था। उन्होंने 1934 में बी.ए. तथा 1939 में एल. एल.बी. की डिग्री बंबई विश्वविद्यालय से पास की। उसके बाद वकालत करने लगे। लक्ष्मण राव कर्मवीर भाउ राव पाटील से बहुत प्रभावित थे और 24 वर्ष की आयु में 1932 में उन्होंने दलितोत्थान के प्रोग्रामों में भाग लेना शुरू कर दिया। चूंकि माँग, रमोसी और कुछ अन्य जातियों को अपराधी जाति माना जाता था इसलिए उन्हें नजदीक के पुलिस स्टेशन में प्रतिदिन हाजिरी देनी पड़ती थी। यह प्रथा अन्यायपूर्ण एवं उन्हें सताने के लिए थी इसलिए लक्ष्मण राव ने इसके विरूद्ध आवाज उठाई।

समाज सुधार के लिए उन्होंने पोतराज प्रथा समाप्त करने पर जोर दिया। उनके प्रयासों से नाइयों ने अछूतों के बाल काटना शुरू कर दिया। वे बुद्ध जयंती मनाते थे और अपने जाति भाइयों को स्वच्छता रखने और उच्च चरित्र रखने की सीख देते थे। उन्होंने सांगली जिले में अछूत छात्रों के लिए कई हॉस्टल प्रारंभ किए।

वे युवावस्था से ही कांग्रेस में शामिल हो कर गांधी जी के अनुयाई हो गए और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदार रहे। 1946 में वे बंबई विधानसभा के लिए सदस्य चुने गए। 1962 में उन्होंने बंबई में 'भारतीय दलित विकास संघ' की स्थापना की जिसके वे अध्यक्ष बनाए गए। संघ द्वारा पूना, उदगीर, वीटा, सोलापुर, में होस्टल प्रारंभ किए गए तथा कुछ तकनीकी संस्थान भी चलाए।

उन्होंने 'भारतीय मजदूर पक्ष' नामक राजनीतिक दल की स्थापना की और भारत के तत्कालीन गृहमंत्री वाई.वी चौहाण को कई मांगों का एक मांग पत्र दिया जिसमें दलितों के लिए सामाजिक और राजनीतिक न्याय के लिए उनकी आर्थिक दशा में सुधार करने का और उनकी बेगार प्रथा समाप्त करने पर जोर दिया था।

उन्होंने 1965 में पूना से 'दलित समाचार' नामक साप्ताहिक शुरू किया। उन्होंने अपना शेष जीवन विभिन्न शिक्षण संस्थानों को चलाने और सामाजिक राजनीतिक मसलों पर लेख लिखने में लगाया। यद्यपि वे बाबासाहेब अम्बेडकर के साथ नहीं थे फिर भी उनकी सामाजिक सेवाओं ने जन मानस के मन में अपनी छाप छोड़ रखी है।

### 1.4.10 रामचंद्र खंडाले

इनका जन्म पूना जिला के धोण्ड तालुका के कुरकुंभ गाँव में एक मांग जाति के माननीया गेबूजी खण्डाले के यहाँ हुआ था जो गरीब कृषि मजदूर थे। इन्होंने 1931 में कक्षा 4 पास की। इन्हें परंपरानुसार पोतराज के रूप में देवी को अर्पित किया गया परंतु उन्हीं की जाति के बाबासाहेब के अनुयाई धोण्डके बाबा वाघमारे द्वारा समझाने बुझाने से पोतराज के रूप में देवी की पूजा न करें वे प्रभावित हुए और अपने बाल कटवा लिए। एक बार पूना जिला के इन्द्रापुर में रामचंद्र हरि बनसोड द्वारा आयोजित जलसे से प्रभावित हो रामचन्द्र खण्डाले ने बाबासाहेब के नेतृत्व में अछूतो त्थान के कार्य करने का दृढ़ संकल्प कर लिया। 1932 में रामचंद्र खण्डाले ने अपने दलित भाइयों को एकजुट करने के लिए 'अखिल भारतीय मातंग सेवा समाज' की स्थापना की। 1934 में उन्होंने धोण्ड में बंबई प्रदेश मातंग परिषद की सभा आयोजित की जिसमें मुख्य अतिथि बी.के. गायकवाड तथा अध्यक्ष पी.एन.राजभोज थे और इसमें बाबासाहेब का अनुकरण करने का संकल्प किया था। 1936 में उन्होंने बाबासाहेब को इस परिषद की सभा में आमंत्रित किया था। यह परिषद 1944 तक सक्रिय रही। बाबासाहेब के समर्पित अनुयाई होने के कारण उन्होंने पृथक निर्वाचन की मांग का समर्थन किया था। उन्होंने महाराष्ट्र में मांग और महारों की एकता का प्रयास किया और अपने अनुयाइयों को गो मांस भक्षण बंद करने, मद्यपान निषेध करने, हिदूं देवी–देवताओं की पूजा न करने पर जोर दिया। देवी के लिए पोतराज प्रथा, देवदासी प्रथा और मुरली प्रथा के विरोधी थे। वे महारों

तथा मांगों द्वारा परंपरागत की जा रही क्रमशः 'महारकी' और 'मांगकी' के विरोधी थे।

मान्यवर खण्डाले 1937 में इनडिपेंडैंट लेबर पार्टी, 1942 में शैड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन और 1957 में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया में शामिल हुए थे और इन पार्टियों के सभी प्रोग्रामों में सक्रिय भाग लेते थे। 1960 में वे महाराष्ट्र यूनिट के आर.पी.आई. के संयुक्त सचिव चुने गए। इसके पूर्व 1953 में उन्हें भूमिहीन लोगों के लिए सत्याग्रह में मदद् करने के लिए मराठवाडा भेजा गया जिसके लिए उन्हें 1.5 माह की जेल भी भेजा गया। 1956 में उन्हें कोल्हापुर के कालम्बा में भूमि के लिए सत्याग्रह के लिए 15 दिन के लिए जेल भेजा गया। उन्होंने सागर जिले के राहुरी में 1959 में तथा 1964–65 में धौण्ड में सत्याग्रह किया।

1939 में वे जिला स्थानीय बोर्ड पूना के सदस्य चुने गए। 1952 के आम चुनाव में एस.सी.एफ के टिकट पर विधानसभा के चुनाव में हार गए और 1957 में बौद्ध होने के कारण वे सुरक्षित सीट पर नहीं लड़ सके। 1962 के चुनाव में सामान्य सीट तथा 1972 के चुनाव में भी वे विजयी नहीं हो सके।

उन्होंने 1959 में धौण्ड में अनुसूचित जाति के लड़कों के लिए 'नव जीवन विद्यार्थी हॉस्टल' की स्थापना की और उसकी देखभाल के लिए वे आजीवन लगे रहे। 14 अक्टूबर 1956 को वे बाबासाहेब के साथ ही बौद्ध धम्म में दीक्षित हुए और आजीवन बाबासाहेब के प्रति निष्ठा के लिए 21 मई 1987 को उन्हें आर.पी.आई. की प्रेसीडैंट मननीया ईश्वरी बाई की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में 15,051 रू. की थैली भेंट की गई।

### 1.4.11 गनपतराव वाघमारे

इनका जन्म नांदेड जिला के बिलौली तालुका के मांजराम गाँव के एक चमार जाति के मान्यवर मानिक राव वाघमारे के यहाँ हुआ था जिनकी गाँव में काफी कृषि भूमि थी परंतु अपने पुत्र की शिक्षा के लिए नांदेड चले आए। गनपत राव ने कक्षा 9 तक शिक्षा प्राप्त की और फिर अपने दलित भाइयों के दमन को देखकर वे समाज सेवा में कूद पड़े।

उन्होंने समाज सेवा की शुरुआत 'हरिजन सेवक संघ' के सदस्य होकर की। परंतु 1939 में वे निजाम राज्य के बी.एस. वेंकटराव के नेतृत्व में डिप्रैस्ड क्लासेज एसोसिएशन में शामिल हो गए। हनुमंत राव उर्फ काका साहेब इसके अध्यक्ष तथा गनपत राव इसके सेक्रेटरी थे। उन्होंन 1942 में परभणी में मराठवाडा क्षेत्र की डिप्रैस्ड क्लासेज एसोसिएशन की सभा आयोजित की जिसे बी.एस. वेंकटराव और हैदराबाद के बी. श्याम सुंदर ने सुशोभित किया था। इस सभा में निर्णय लिया गया कि अछूतों को सभी पुरानी कुप्रथाओं को त्याग देना चाहिए तथा अछूतपन और जातिप्रथा के भेद से छुटकारा पाना चाहिए। ऐसी सभाएं परभनी, औरंगाबाद और अन्य कई स्थानों में आयोजित की गईं। बाद में वेंकटराव और सुबैया में मतभेद होने के कारण सुबैया द्वारा नया संगठन 'हैदराबाद स्टेट शैड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन' बनाया गया और 1945 में अन्य नेताओं द्वारा भी शेड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन बनाया गया।

उनके दलितोत्थान के प्रयासों प्रभावित हो निजाम सरकार ने उन्हें 17 जनवरी 1946 को हैदराबाद एसेम्बली के लिए नामांकित किया और प्रेरणास्त्रोत वेंकटराव की तरह वे भी निजाम को सहयोग देते रहे। परंतु

17 सितंबर 1947 को पुलिस कार्यवाही की निजाम राज्य में सफलता के कारण उन्हें हैराबाद छोड़ना पड़ा बाद में वे एम.लक्ष्मैया, अरिग्य रामास्वामी और के.आर. स्वामी के नेतृत्व में गठित 'दलित जातीय संघ' में शामिल हो गए।

उन्होंने 1962 में और 1967 में नांदेड़ लोकसभा की सीट के लिए निर्दलीय के रूप में चुनाव लड़ा परंतु असफल रहे। मा. श्याम सुंदर ने 1968 में 'शैड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन' को पुनः संचालित किया तो वे इसमें शामिल हो गए। वे अपने को जन्म जात बौद्ध मानते थे और हिंदू धर्म को त्याग दिया था। उनकी निर्भीक दलितोत्थान हेतु की गईं सेवाएँ

महाराष्ट्र के दलितों के लिए मार्गदर्शक है।

### 1.4.12 डॉ. गंगाधर पानतावणे

दलित साहित्य के प्रमुख भाष्यकार एवं प्रणेता के रूप में विख्यात वरिष्ठ विचारक डॉ. गंगाधर पानतावणे का जन्म नागपुर में 28 जून 1937 को हुआ। उनके पिताजी का नाम विठोबा एवं माता का नाम दसराबाई था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा नागपुर में हुई। वे नागपुर के सरकारी मौरिस कॉलेज से उच्च शिक्षित प्रथम श्रेणी में एम.ए हुए।

डॉ. अम्बेड़कर द्वारा स्थापित मराठवाडा के मिलिदं महाविद्यालय में मराठी के व्याख्याकार के रूप में 1962 में कार्य करने लगे। तत्पश्चात मराठवाडा विश्वविद्यालय में मराठी के प्रोफेसर के रूप में 1997 तक कार्यरत रहे एवं विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिर्वृत हो गए। डॉ. अम्बेडकर की पत्रकारिता पर उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की। उन्होंने 1968

में औरंगाबाद में 'अस्मितादर्श' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रारंभ की, जो विगत 42 वर्षों में निरंतर जारी है। वे इस पत्रिका के संस्थापक संपादक हैं। इस पत्रिका के माध्यम से ही भारत में दलित साहित्य का आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिक में महाराष्ट्र के विख्यात दलित लेखकों जैसे दया पवार, नामदेव ढसाल, फ.मुं. शिंदे, योगिराज वाघमारे, वामन होवाल आदि की प्रथम रचनाएँ प्रकाशित हो चुके हैं, जो संदर्भ–ग्रंथ के रूप में मान्यता प्राप्त हैं। 'अस्मितादर्श' एवं डॉ. पानतावणे पर महाराष्ट्र में शोधकर्ता ने शोधग्रंथ लिखकर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

सुविख्यात लेखक के रूप में उनकी महाराष्ट्र में अलग पहचान है। तथा डॉ. अम्बेडकरवादी विचारक के रूप में वे ओजस्वी वक्तव्य के लिए प्रसिद्ध हैं। समीक्षा, व्यक्तिचित्र, शोध, लेख प्रस्तावना आदि विषयों पर उनके द्वारा 17 ग्रंथ लिखे गए हैं तथा उन्होंने 10 से अधिक ग्रंथों का संपादन किया है। उनके ग्रंथों को महाराष्ट्र शासन एवं सामाजिक संस्थाओं ने पुरस्कार प्रदान किए हैं। अस्मितादर्श पत्रिका को भी उत्कृष्ट संपादन के लिए विशेष पुरस्कार मिल चुका है। वे सरकारी एवं गैर सरकारी कंपनियों में अध्यक्ष और सदस्य के रूप में मनोनीत किए गए हैं। उन्हें साहित्य सेवा के लिए राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। अमेरिका के सेन होजे शहर में 2007 में प्रथम विश्व मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप के कार्य कर चुके हैं। महाराष्ट्र सरकार तथा सामाजिक संस्थाओं के अभी तक 25 पुरस्कार उन्हें गौरवान्वित कर चुके हैं। 200 से ज्यादा सम्मेलनों एवं सभाओं में उनके व्याख्यानों को सहारा गया है। इनमें सम्मेलनों के अध्यक्ष के रूप में वे आमंत्रित किय गए थे।

### 1.4.13 किसन फागूजी बनसोडे

इनका जन्म नागपुर के पास मोहापा ग्राम में एक महार परिवार में हुआ। उन्होंने यद्यपि नारमल स्कूल अध्यापक का प्रशिक्षण लिया था परंतु वे समाज सेवा में जुट गए। दलितों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने के लिए उन्होंने 'सन्मार्ग बोधक अस्पृश्य समाज' नामक संस्था 1901 में नागपुर में स्थापित की और इस संगठन के माध्यम से उन्होंने पूरे विदर्भ में जागृति की जहाँ यह अत्यंत लोकप्रिय भी था।

वे न केवल लड़कों की शिक्षा के पक्ष में थे बल्कि लड़कियों की भी और इसीलिए उन्होंने पंचमावली, नागपुर में 1907 में 'चोखामेला गर्ल्स स्कूल' की स्थापना की। वे जाति प्रथा, अंधविश्वासों आदि के खिलाफ थे और समता उच्च चरित्र और आत्म निर्भरता पर जोर देते थे। जिससे अछूतों की दशा में सुधार हो सके। वे 'ब्रह्म समाज' की विचारधारा से प्रभावित हो अक्टूबर 1901 में ब्रह्म समाजी हो गए।

सामाजिक और राजनीतिक जागृति के लिए वे प्रेस को महत्व देते थे और 1910 में पंचपावली, नागपुर में उन्होंने एक प्रेस लगाया। 1910 में 'निराश्रित हिंद नागरिक' और 1913 में 'विटल विध्वंसक' 1918 में 'मजूर पत्रिका' और 1931–36 में 'चोखामेला' नामक पत्रिकाएँ प्रकाशित की। उनकी पत्नी माननीया तुलसी बाई बनसोड प्रेस में उनकी पत्रिकाएँ निकालने में मदद् करती थीं। उनके सामाजिक विषयों पर लेख महाराष्ट्र से प्रकाशित होने वाले कई अखबारों में भी छपते थे।

मई–जून 1920 में नागपूर में आयोजित आल इंडिया डिप्रैस्ड क्लासेज कांफ्रेस के 2 सेक्रेटरियों में से ये एक थे जिसमें हिंदुओं द्वारा दलितों पर होने वाले दुर्व्यवहार पर विचार रखे गए। इस सभा में उन्होंने घोषणा की कि वे अपनी लड़की भंगी जाति में ब्याहने को तैयार हैं और अपने लड़के के लिए ब्राह्मण लड़की स्वीकार कर सकते हैं। उनके इस कथन पर सवर्णों में अत्यंत क्रोध हुआ।

वे राष्ट्रीय स्वंतत्रता संग्राम में भी अग्रणीय थे और 1920 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में अन्य कांग्रेसी सहयोगियों के साथ सी.पी. और बिहार प्रांत में सक्रिय आंदोलनकारी थे। उन्होंने मजदूरों को संगठित करने का भी प्रयास किया जिसमें उनके सहयोगी थे जी.ए. गवई तथा जी.एम. थवारे।

यद्यपि गांधीजी से उनके अच्छे संबंध थे परंतु अछूतों को उनके द्वारा दिए गए नाम 'हरिजन' का वे विरोध करते थे। वे संतों और समाज सुधारकों द्वारा लिखे साहित्य में रूचि रखते थे और उन्होंने स्वयं भी 1942 में मराठी में 'संत चोखामेला चरित्र' और 'सत्यशोधक जलसा' पुस्तकें लिखीं। दलितों में प्रेरणा देने के लिए उन्होंने कई कविताएँ भी लिखी। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि महारों की संघर्ष किए बगैर मुक्ति नहीं। उनके द्वारा दलितोत्थान के कार्यों से सारे महाराष्ट्र को प्रेरणा मिली है।

### 1.4.14 रायभान जाधव

इनकां जन्म चिखाली, जिला बुलढाणा में महार जाति में मा. पुनाजी के यहा गाँव हुआ था, जो एक कृषक थे। रायभान मैटिक तक भी नहीं पढ़ सके। वे वन विभाग में तैनात थे। वहीं से 1941 में रिटायर हुए। वे अपने सेवा काल एवं उसके बाद भी दलितोत्थान में लगे रहे। पहले वे सत्यशोधक समाज से प्रभावित थे और अपने लोगों को गोमांस भक्षण से रोकने, स्वच्छता करने और बच्चो को पढ़ाने पर जोर देते थे। 1938 में उन्होंने अछूत विद्यार्थियों के लिए चिखाली में अपने खर्चे से एक बोर्डिंग हाउस चलाया जिसमें 15–20 विद्यार्थी रहते थे और यह लगभग 5 वर्ष तक चला। इस हॉस्टल में रहकर कई छात्र जिलाधीश, कमिशनर, दूसरी सेवाओं, के प्रथम वर्ग के अधिकारी आदि बने।

1942 में वे 'शैड्यूल्ड कास्टस फेडरेशन' में शामिल हुए और 1946 में वे मध्य प्रांत और बिरार विधानसभा में कांग्रेस के प्रत्याशी एल.एस.भटकर को हराकर पहुँचे। 1946 में उन्होंने नागपुर में राजनीतिक अधिकारों के लिए सत्याग्रह में भाग लिया। उन्होंने अछूतों के लिए होटल भी चालू किया क्योंकि अछूतों को होटलों में जाने की मनाही थी।

इसी प्रकार हिंदू मंदिरों में प्रवेश की मनाही के कारण उन्होंने उनके लिए एक हनुमान मंदिर बनवाया। बुलढाना के कर्मठ नेता बलराम देवा जी और गोपालराव सखाराम जी जाधव उनके सहयोगी थे। उनके भाई रम्भाजी पुनाजी जाधव भी सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। 1956 में बौद्ध धम्म अपनाकर वे आजीवन उसका प्रचार–प्रसार करते रहें।

सीमित आर्थिक साधनों के होते हुए भी जिस प्रकार उन्होंने दलितोत्थान में आर्थिक सहयोग दिया है वह उनकी समाज के प्रति सच्ची लगन का प्रतीक है तथा अनुकरणीय है।

## 1.5 डॉ. अम्बेडकरपूर्व दलित लोकगीतकार/शाहीर

अस्पृश्यता निवारण और बहुजनसमाज के हित के लिए संपूर्ण जीवन कार्य करने वाले महात्मा ज्योतिबा फुले इस सामाजिक आंदोलन के नेता थे। उन्होंने सामाजिक विषमता के खिलाफ संघर्ष करने हेतु 'सत्यशोधक आंदोलन' का नेतृत्व किया। जातिभेद धर्मभेद की आलोचना करते हुए उन्होंने मानव की समानता का प्रचार किया। इनके विचारों के प्रचार में दलित शाहीरों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन शाहीरों ने दलित बस्तीयों, गाँवों में जाकर दलितों को जागरूक करने और उनमें चेतना लाने का कार्य किया। इन्हीं दलित शाहीरों का हम संक्षिप्त परिचय प्राप्त करनेवाले हैं।

### 1.5.1 लहुजी बुआ साल्वे

इनका जन्म पुरंदर किला के पास गाँव पेठ में एक मांग परिवार माननीय और मा. रघु सल्वे के यहां हुआ था जो अपने जीवन यापन के लिए पूना चले आए। इनकी औपचारिक शिक्षा तो नहीं हुई थी लेकिन अपने पिता से तालीम हासिल की। लहुती पूना के मीठ गंज में रहते थे।

उन दिनों अछूतों की पशुओं से भी खराब हालत थी इसलिए उन्होंने अछूतोत्थान का बीड़ा उठाया और पूना के गंजपेठ में एक तालीम खाना खोला जहां अछूतों के अलावा अन्य महान हस्तियों जैसे सदाशिवराव परांतपे, मोरो विठठ्ल वल्वेकर, महात्मा ज्योतिबा फुले, वासुदेव बलवंत फडके, बालगंगाधर टिलक को भी अच्छी सैनिक शिक्षा मिली थी। किंतु महात्मा फुले उनके साथ दलितोत्थान के सहयोगी बने जिनके साथ मिलकर 1850 के बाद अछूतों में शिक्षा प्रचार करने लगे। लहुजी और रानोजी महार ने मिलकर पूना मे महात्मा फुले के सच्चे मित्र और अनुयाई होने के कारण वे उनके द्वारा स्थापित 'सत्यशोधक समाज' की विचारधारा को मानते थे और ब्राह्मणवाद, अंधविश्वास और हिंदू धर्म ग्रंथों का विरोध करते थे।

उनके समसामयिक एवं सहयोगी रानोजी उनके सहकर्मी भी थे जिन्होंने महात्मा फुले की विचारधारा को महाराष्ट्र की दो बड़ी जातियों महारों और मागों के बीच फैलाया। यद्यपि ये दोनों ही महान समाज सुधारक थे परंतु उनके बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनके द्वारा दलितों एवं विशेषकर फुले को शारीरिक रूप से सक्षम बनाने की आज भी न केवल महाराष्ट्र में बल्कि सारे देश में प्रशंसा होती है।

### 1.5.2 गोपाल बुवा कृष्णावलंगकर

भारत में अतिशूद्र अवर्ण समाज सदियों से उत्पीड़ित अपमानित और उपेक्षित रहा है। वर्ण व्यवस्था को धर्म से जोड़कर उसे जड़ बना दिया गया। महाराष्ट्र में इसका सर्वाधिक प्रभाव दिखाई पड़ता है। गोपाल बुवा कृष्णावलंगकर का जन्म कोलाबा जिले में वलरा गाँव में एक महार परिवार

में 1840ई. में हुआ। महाराष्ट्र में गोपाल बुवा कृष्णावलंगकर अंग्रेजी सेना में सिपाही की हैसियत से भर्ती हुए 1886ई. में हवलदार के पद से सेवा निवृत्त हो गए। सेवा निवृत्ति के बाद वलंगकर को अपने समाज को उपर उठाने की भावना जगी। उन्होंने दलित उद्धार के लिए एक संस्था बनाई जिसका नाम 'अनार्य मंडली' था। इसके द्वारा सामाजिक दोष परिहार और दलितोद्धार का कार्य शुरू किया। इसलिए इन्हें महाराष्ट्र में प्रथम दलित सुधारक नेता माना जाता है। वे दापोली महाराष्ट्र में रहते थे। जब यह सेना में भर्ती हुए तो यह पढ़े–लिखे नहीं थे किंतु सेना में भर्ती होने पर इन्हें शिक्षा प्राप्त करने का भी अवसर मिल गया। सेना में रहकर ही इन्होंने नार्मल की परीक्षा पास की।

'गोपाल बुवा कृष्णा वलंगकर' को फुले से प्रेरणा मिली। उन्होंने हिंदू धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया। उससे उन्हें जानकारी मिली कि आर्य लोग जिनमें सवर्ण जातियों थीं वे देश के बाहर से आए हुए लोग हैं। यहाँ के मूलनिवासी अनार्य है। इसलिए आर्यों ने इन्हें नीच बना रखा है। धर्म ग्रंथों के वे ही रचयिता हैं इसलिए अपने को उंचा और अनार्यों को नीचा बना रखा है। बलंगर ने अनार्य दोष परिहार मंडली के द्वार काम करना शुरू किया। उन्होंने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम 'विटाल विध्वंसन' था। इसमें उन्होंने बताया है कि अस्पृश्यता मानवकृत है न कि ईश्वरकृत। उस समय ईश्वरवाद का जोर था। हर काम ईश्वर की मर्जी से ही होना माना जाता था। ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, ईश्वरकृत माना जाता था। इसलिए वलंगकर ने सबसे पहले ऊँच–नीच ईश्वर द्वारा बनाई हुई नहीं है। यह बात लोगों के मन में बैठने का प्रयास किया। सवर्ण जातियों के

सुझाव में आकर 1892ई. में अंग्रेजों ने भी सेना में इनकी भर्ती बंद कर दी। इसके विरोध में वहाँ के दलितों ने आंदोलन किया। 'जस्टिस रानाडे' के द्वारा अंग्रेज सरकार को एक ज्ञापन इसके विरोध में भेजा गया। वलंगकर ने सभाओं और अपने लेखों द्वारा आर्यों के चंगुल से निकलने की प्रेरणा दी।

मनुवादी लोगों ने 'गोपाल बुवा कृष्णवलंगकर' के इन कार्यों का विरोध किया किंतु विरोध की परवाह न करते हुए वलंगकर अपने कार्य में लगे रहे समाज बदलने की प्रेरणा देते हुए सन 1900ई. में वलंगकर इस दुनिया से चले गऐ। अपने कार्यों की छाप उन्होंने महार समाज पर छोड़ी, जो आगे चलकर दलित समाज में चेतना पैदा करने का कारण बनी।

### 1.5.3 पतित पावन दास

इनका जन्म टिगांव वर्धा जिला के महार जाति के मा. केशव नारायण देव के यहाँ हुआ था। प्रारंभ में वे फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज और महर्षि शिंदे द्वारा स्थापित डिप्रैस्ड क्लासेज मिशन से प्रभावित हो इन्हीं के माध्यम से दलितोत्थान करना चाहते थे। परंतु वे संतों जैसा जीवन व्यतीत करते हुए दलितों की मुक्ति आध्यात्मिक मार्ग से करने के लिए भक्ति भाव के भजन कीर्तन आदि रचते थे। जब उन्हें बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के बारे में जानकारी हुई तो महाड के चवदार तालाब में पानी के उपयोग के लिए हो रहे समता संघर्ष में उन्होंने मार्च 1927 में दलित संतों की सभा आयोजित की जिसका नाम भारत संत समाज हुआ। 1930 में वे नासिक में कालाराम मंदिर प्रवेश की सत्याग्रह समिति के अध्यक्ष थे जो लगभग 5 वर्ष चला। उन्होंने मई 1932 में कानपुर में मुन्नूस्वामी

पिल्लई की अध्यक्षता में हुई डिप्रैस्ड क्लासेज कान्फरेस में भाग लिया। 1935 में उन्होंने लखनऊ में दलितों की सभा की अध्यक्षता की जिसमें उन्होंने हिंदू धर्म के दोषों की विवेचना करते हुए दलितों से बाबासाहेब को समर्थन देने की अपील की। 1935 में ही अमरावती में हुई मध्य प्रांत और बिरार डिप्रैस्ड क्लासेज कांफ्रेस में वे इसके अध्यक्ष थे जिसमें उन्होंने धर्म परिवर्तन का समर्थन किया। नागपुर में कामठी में उनकी अध्यक्षता में हुई दलितों की सभा में उन्होंने हिंदू धर्म के विरोध में हिदू धर्म के देवी–देवताओं को सार्वजनिक रूप से जला दिया। अक्टूबर 1936 में तिरोडा जिला भंडारा में उनकी अध्यक्षता में बाबासाहेब द्वारा प्रस्तावित धर्म परिवर्तन का समर्थन किया। इसके समर्थन में कई स्थानों में सभाएँ कीं। दलितों में जागृति के लिए उन्होंने सितंबर 1936 में नागपुर से 'पतित पावन' साप्ताहिक का प्रारंभ किया जो दो साल तक चला।

### 1.5.4 भीमराव कर्डक

1937 में कासरवाड़ी दादर (तत्कालीन बॉम्बे में), में आगामी भारतीय प्रांतीय चुनावों पर चर्चा के लिए एक बैठक आयोजित की गई थी। उस कार्यक्रम में डॉ. अम्बेडकर और भीमराव कर्डक और शाहिरो का दल भी मौजूद था। कार्यक्रम के शुरुवात में कर्डक और उनका दल मंच पर आये और उन्होंने गीत प्रस्तुत किया।

**'हा पैसा देईल धोका,**

**हरन करेल तुमची माणुसकी**

**मारा पैश्याला एक लाथ,**

**बाबासाहेबाना दया मत,**

**निवडून आना विधानसभा,**

**जय जय गजवा अम्बेडकरी'**

**हिंदी अनुवाद**

**'यह पैसा आपको धोखा देगा,**

**यह आपकी मानवता नष्ट कर देगा**

**इस पैसे पर लात मारो,**

**बाबासाहेब के लिए वोट दो,**

**उन्हें विधानसभा में चुनो**

**जय जय बाबासाहब की विजय करो'**

भीमराव कर्डक का जन्म 11 नवंबर 1904 को नाशिक जिले में कसाबे कुनबी के छोटे गाँव में हुआ था। छात्र दशा में कर्डक को जाति व्यवस्था के दर्द का सामना करना पड़ा। आगे चलकर पारिवारिक सकंट के कारण उन्होंने अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़ दी और अपने दोस्तों के साथ अम्बेडकर के आंदोलन में पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए। भीमराव कर्डक ने 14 सदस्यों के साथ 'नाशिक जिला युवक जलसा मंडल' का गठन किया, जिसे कर्डक का जलसा भी कहा जाता है।

भीमराव कर्डक ने तमाशा और लावणी से संगीत के बारे में बहुत कुछ सीखा और इसका प्रयोग उन्होंने अपनी शाहीरी में किया। उन्होंने बल गंधर्व और पेंढारकर के नाटकों को भी देखा। और नाटकीय गायन का अभ्यास शुरू किया। गायन करते समय उन्होंने लेखन के कौशल्य को

मजबूत किया। भीमराव कर्डक ने अपनी शाहिरी और जलसे के माध्यम से दलितों की चेतना को बढ़ाने में सतत कार्यरत रहे।

1930 के बाद डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के आंदोलन से राजनीतिक और सामाजिक परिस्थिति में तेजी से बदलाव आने लगे। इस बदल का एक कारण अंबेडकरी जलसा को मानना गलत नहीं होगा। भीमराव कर्डक ने अपने जलसों से दलित लोगों में चेतना और ऊर्जा देने का काम किया। उन्होंने जलसों के माध्यम से जातिहीन समाज का दृष्टिकोन भी प्रस्तुत किया, जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुता पर आधारित था।

भीमराव कर्डक ने गानों, शाहिरी, पोवडा आदि के माध्यम से लगभग दो दशकों तक यानी 1953 तक जाति विरोधी आंदोलन में योगदान दिया। भीमराव कर्डक ने आत्मकथा सहित 9 किताबें भी लिखी हैं। कर्डक ने आजीवन संगीत के माध्यम से अंबेडकर के संदेश को प्रसारित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान हैं।

## 1.6 डॉ. अम्बेडकर के समकालीन लोकगीतकार

डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर ने दलितों के उत्थान के लिए आंदोलनों और सभाओं से लोगों में जनजागृती, चेतना लाने का कार्य करते रहे। किंतु सामने बैठा दलित समाज अनपढ़, अशिक्षित, रूढ़ि परंपरा से जकड़ा हुआ था। हजारों सालों से लदी हुई गुलामी से मुक्त नही हो रहा था। इसलिए महाराष्ट्र के अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के आंदोलनों और उनके विचारों को गीतों के माध्यम से आसान भाषा में समझने का प्रयास किया। इनके इन प्रयासों के कारण बाबासाहब के

आंदोलनों को दलित समाज समजने लगा और आगे आकर इन आंदोलनों में सक्रिय होने लगा। इस तरह इन लोकगीतकारों ने बाबासाहब के आंदोलनों को मजबूती प्रदान की। इन अम्बेडकरी लोकगीतकारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

### 1.6.1 अण्णाभाऊ साठे

जिस तरह दीपक प्रकाश देता है, मगर इसके लिए उसे तिल–तिल जल कर मरना होता है। यही बात महाराष्ट्र के लिए शाहीर अण्णाभाऊ भाऊ साठे पर लागू होती है। अण्णा भाऊ का पूरा नाम तुकाराम भाऊ साठे था। आपका जन्म 1 अगस्ट 1920 को सांगली जिले के वाटे गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम भाऊराव और माता का नाम वालूबाई था। आपका विवाह जयवंती बाई से हुआ था। शुरू में आप बंबम्ई के घाटकोपर के चिराग नगर की एक चाल में रहा करते थे।

इनका जन्म मांग जाति में हुआ था जिसे अंग्रेजों ने अपराधी जाति घोषित कर रखा था। हिंदू वर्णाश्रम धर्म में मांग जाति के लोगों का कार्य गाँव की पहरेदारी करना होता है। उनके घरों की दीवारां पर तलवारे लटकती रहती है। मगर घर में खाने को नहीं रहता। अण्णाभाऊ भी इससे अलग नहीं थे। हालाँकि अन्नाभाऊ साठे महाराष्ट्र में एक शाहीर के रूप में परिचित हैं, उन्होंने कहानियों और उपन्यासों के साथ–साथ साहित्य को भी संभाला। तकनीकी रूप से, अनपढ़, अशिक्षित, व्यक्ति ने मराठी साहित्य में सभी प्रकार के मजबूत और समृद्ध बनाए हैं जैसे कि लोक साहित्य, कहानी, नाटकीय, लोक नाटक, उपन्यास, फिल्म, पावडे, लावणी, आभूषण

और यात्रा। इन्होंने सामान्य श्रम आबादी में विचारों के प्रचार के लिए कविता प्रकार के पोवाडे, लावणी, गीत और पदों का उपयोग किया। आजादी के बाद और आजादी के दौर में, उन्होंने महाराष्ट्र में राजनीतिक मुद्दों के बारे में बहुत जागरूकता पैदा की। उन्होंने संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन, गोवा मुक्ति संग्राम आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1944 में उन्होंने 'लाल बहता' टीम की स्थापना की और इसे शाहीर के रूप में देखा। अण्णा भाऊ ने रूस में छत्रपती शिवाजी के चरित्र को बताया बाद में रूसी भाषा में अनुवाद किया गया और राष्ट्रवादियों द्वारा सम्मानित किया गया। 16 अगस्त, 1947 को शिवाजी पार्क पर हुई बारिश को आजादी जोडी की भारत की शादी' कहा जाता था। हालांकि अण्णा भाऊ पीछ नहीं हटे। अण्णा भाऊ ने अपने छोटे से जीवन में 21 लघु कथाएँ और 30 उपन्यास लिखे। उनके सात उपन्यासों पर, मराठी फिल्मों के प्रसिद्ध निर्देशकों द्वारा फिल्माकंन किया गया। उपन्यास 'फकीरा' 1961 में राज्य सरकार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास पुरस्कार और तत्कालीन वरिष्ठ साहित्यकार के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। सी खांडेकर ने भी उपन्यास की प्रशंसा की ।

'वैजयंता' उपन्यास में पहली बार तमाशा में काम करने वाली कलात्मक महिलाओं के कारनामों को चित्रित किया है। अण्णा भाऊ तमाशा की लोक कला लेकर आए उन्होंने आम कार्यकर्ताओं के बीच अपने सामाजिक विचारों को प्रचारित करने के लिए कविता के रूपों जैसे पवाडा, लावणी और गीत का इस्तेमाल किया। उन्होंने आजादी से पहले और बाद में महाराष्ट्र में लोगों को राजनीतिक मुद्दों के बारे में जागरूक किया।

संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन और गोवा मुक्ति संग्राम के दौरान एक शायर के रूप में उनके योगदान के लिए उनके योगदान का विशेष महत्व है।

अण्णा भाऊ को समाजवादी लेखक कहा जाता था क्योंकि उन्होंने अपने लेखन को सामाजिक आंदोलनों से जोड़ा था। समस्याओं के प्रति उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता उन्होंने अपने उपन्यास वैजयंता के परिचय में अपने साहित्यिक रूख को स्पष्ट किया है।

अण्णा भाऊ के लिए संगीत ने केवल समझने के लिए एक उपकरण बन गया, बल्कि जाति और पूंजीवाद के खिलाफ लड़ने के लिए भी जोर दे रहा था। वह शायद मुंबई में उत्पीड़नके स्त्रोत का पर्दाफाश करने वाले पहले शाहीर थे, जो अपने पॉश इलाकों में पाए जा सकते हैं। वह लिखते हैं–

**''मुम्बई अनचावरी। मालाबार हिल्स, इंद्रपुरी**

**कुबेरची वस्ती तीखे सुख भोगती। परेर रहीले**

**रात दिन राबून। मागेल ते खाऊन जगती**

**फोरास रोड टीन बती। गोल्पीथी नाक्या वरती**

**शरीर विकुन कित्येक पोट भरती**

**हिंदी अनुवाद**

**मुंबई में, शीर्ष पर, मालाबार हिल्स, इंद्रपुरी है**

**कुबेर की कॉलोनी है, आनंद में डूब गई है, वे परेल में रहते हैं।**

**पूरे दिन और रात में कड़ी मेहनत करें,**

**जो कुछ भी मिलता है उसे खाएं और जिए,**
**गोल्पीथा के कोने पर फोरास रोड, टीन बती में**
**कितने शरीर बेचे जाते हैं और जीवित रहते हैं।**

लेकिन उनका सबसे शक्तिशाली गीत 'माजी मेना गाँवाकडे राहिली' 'मेरी मेना गाँव में पीछे छूट गयी है। नामक गीत संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन के दौरान लिखा गया था। जो अधिकतर लोगों को प्रभावित करता था, इसे महाराष्ट्र में शाहिरी के इतिहास में एक क्लासिक माना जाता है। इस गीत के माध्यम से, उन्होंने अस्पृश्य श्रमिकों की एक पूरी पीढ़ी के दर्द की आवाज उठाई गई है। जो जीवन में गरिमा की तलाश के लिए गांवों से शहरों में चले गए। 18 जुलाई 1969 को, अण्णा भाऊ साठे की मृत्यु हुई। कहते है कि वे इतने दिनों से भूखे थे और भूख के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

### 1.6.2 वामनदादा कर्डक

अपनी ओजस्वी एवं प्रखरवाणी से डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर के विचार जनमानस तक पहुँचाने का महान कार्य करनेवाले गीतकार, गजलकार तथा गायक वामन दादा कर्डक का जन्म 15 अगस्त 1922 में महाराष्ट्र के नासिक जिले के सिन्नर तहसिल के अंतर्गत आने वाले देशवंडी में एक श्रमजीवी महार परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम तबाजी कर्डक तथा माता का नाम सईबाई था। बचपन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति में गुजरा। परिश्रपूर्वक आजीविका चलाते चलाते थक जाने पर उनकी माँ ने गाँव छोड़कर अपना गुजर–बसर करने के लिए मुंबई जाने

का निर्णय लिया। यहाँ पर भी उन्हें अनेक छोटे–मोटे काम कर गुजारा करना पड़ा। अक्षर ज्ञान न होने के कारण वे स्वयं को कोसने लगे और प्रबल इच्छा शक्ति के बल पर पढ़ना–लिखना सीख गये।

इस पूरे प्रसंग का वर्णन करते हुए वामन कर्डक के गीत–गजलों के संकलनकर्ता तथा सुप्रसिद्ध गायक प्रोफेसर डॉ. अशोक लिखते हैं, ''एक बार चाल के किसी व्यक्ति ने उनको एक पत्र पढ़ने की प्रार्थना की। वामनदादा को पढ़ना नहीं आता था ना ही लिखना। उन्हें बहुत बुरा लगा। बिना शिक्षा के मैं पढ़–लिख नहीं सकता इसका उन्हें मलाल हुआ। उनके आँखों से आँसू बहने लगे। बाद में आपने देहलवी नामक मास्टर से बारहखडी यानी अक्षर ज्ञान सीख लिया।''[79] आगे उन्हें पढ़ने–लिखने की धुन सवार हो गयी। दुकानों के बोर्ड पढ़–पढ़ कर उन्होंने अपने पढ़ने की क्षमता को बढ़ाया। निरंतर स्वयं अध्ययन से पढ़–पढ़कर वामन दादा ने अपने आपको एक सृजनशील साहित्यकार के रूप में तैयार किया।

युवावस्था में ही वामनदादा कर्डक डॉ. अम्बेडकर के व्यक्तित्व की और आकृष्ठ हुए। परिवार की जिम्मेदारी उठाने के लिए उन्हें मुंबई जाना पड़ा। यहीं पर उन्हें पहली बार डॉ.अम्बेडकर को देखने सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके बाद निरंतर रूप से वे डॉ.अम्बेडकर से मिलते रहे। महाराष्ट्र के औरंगाबाद के विश्वप्रसिद्ध मिलिंद महाविद्यालय की निर्मिति के लिए डॉ.अम्बेडकर अक्सर औरंगाबाद आते थे। तब कर्डक भी उन्हें देखने सुनने के लिए वहाँ पर गये। यहाँ पर उन्हें डॉ.अम्बेडकर का सानिध्य भी मिला तथा उनकी सेवा करने का भी मौका मिला । इसका वर्णन बड़े गर्व

[79] जाग उठो, लेखक डॉ. अशोक जोंधळ, पृ.सं. 24।

के साथ करते हुए वे लिखते है, ''बाबासाहेब कॉलेजकडे असले की मी कॉलेजकडे आसयचो. बंलल्याकडे असले की बंगल्याच्या व्हरंडयात बसून असायचो. बाबासाहेब कॉलेजकडे निघाले की मी छत्री घेऊ धूम ठोकायचो आणि बाबांच्या गाडीच्या आधीच कॉलेजवर पोहचायचो. बाबा आले की लगेच बाबांना घ्यायला धावायचो. बाबांच्या एका हातात डोक्याएवढी वेळूची काठी असायची. तर एक हात माझ्या खांद्यावर असायचा.''[80]

महामानव डॉ. अम्बेडकर का स्पर्श और सानिध्य पाकर वामनदादा कर्डक के जीवन की दिशा ही बदल गयी। किसी समय सिनेमा में अभिनेता होने के सपने देखने वाले वामनकर्डक ने अपने समस्त जीवन को डॉ. अम्बेडकर के प्रेरक व्यक्तित्व को तथा उनके क्रांतिकारी जीवन दर्शन को गीतों के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने का संकल्प किया। यह राह इतनी आसान नहीं थी। इसमें अंतिम साँस तक वामन दादा ने निश्चय पर अडिग रहे।

वामन दादा कर्डक ने अपने समग्र काव्य में विशेषतः डॉ. अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण के पश्चात वामन दादा ने केवल और केवल अम्बेडकरवाद की प्रतिष्ठापनार्थ तथा प्रचारार्थ ही काव्य सृजन किया। डॉ. अम्बेडकर ने समाज के लोगों को बार–बार यही बात समझायी थी संगठन में बड़ी ताकत होती है। इसलिए अज्ञान विषमता के अंधेरे में चलते समय एक साथ मिलकर चलना उचित है तथा विचारों का दीपक लेकर चलना चाहिए।

'' अंधेरे में जब के चलना पडेगा।

[80] माझ्या जीवनाचं गाणं –वामनदादा कर्डक

नया दीप बनके जलना पड़ेगा।

अकेला–अकेला चलना सकोगे।

साथ–साथ सबको चलना पडेगा।''[81]

वामन कर्डक वास्तव में डॉ. अम्बेडकर के निर्देशों का तथा आदेशों का पालन करने वाले प्रतिबद्ध रचनाकार थे। 'हकदार' इस गजल में वामनदादा अम्बेडकर का एक सार्थक पहलु स्पष्ट करते हुए लिखते हैं–

'' देश के लोग यहाँ देश के हकदार बने

देश के धनी बने, देश के सरदार बने।

लोग जरदार हैं उँचे मकानवाले हैं

क्यों न हम भी यहाँ देश के जरदार बने।''[82]

देश का सर्वहारा समुदाय वर्णव्यवस्था की घिनौनी साजिश का शिकार बन कर जीवन के सभी साधनों से वंचित रहा है। देश की समस्त धनसंपदा केवल गिनेचुने लोगों के पास ही होने के कारण बहुजनों का जीवन श्रमसाध्य तथा कठोर मेहनत में गूजर जाता है। वामनदादा अम्बेडकरवादी विचारों से प्रेरित रचनाकार होने के कारण समता का आग्रह करते हुए उत्पादन के संसाधनों के समान वितरण का आग्रह करते हैं। यहाँ यह भी देखा जा सकता है कि वामनदादा कर्डक का विचार विशुद्ध अम्बेडकरवादी है। समता, स्वाधीनता, बंधुता तथा सामाजिक न्याय का सपना लेकर आगे बढ़नेवाली उनकी गजल वास्तव में डॉ.अम्बेडकर की विशुद्ध मानवतावादी विचारधारा है

[81] जाग उठो, लेखक डॉ. अशोक जोंधळ, पृ.सं.61

[82] जाग उठो, लेखक डॉ. अशोक जोंधळ, पृ.सं.60

### 1.6.3 विठ्ठल उमप

विठ्ठल गंगाराम उमप का जन्म 15 जुलाई, 1931 को मुंबई के नायगाँव में हुआ था। वह एक मातंग जाति से थे और गरीब परिवार से आता था। उनकी माँ की इच्छा अंग्रेजी शिक्षा लेने की थी लेकिन उन्होंने अंग्रेजी सीखने से रोक दिया। उन्होंने अपने करियर के शुरुआती दिनों में स्कूल चपरासी के रूप में काम किया। उन्होंने आठ साल की उम्र में अम्बेडकर पर खुलकर बोलना और गाना शुरू कर दिया था। जब विठ्ठल उमप आठ साल की उम्र में ही अम्बेडकर के विचारों पर खुलकर बोलना और गाना शुरू कर दिया था। जब वे थोड़े बड़े हो गये तो विठ्ठल उमप ने भी अपने लोकगीतों और पदनाट्य के माध्यम से समाज के लिए काम करना शुरू कर दिया। उनका घर संगीत के वातावरण से ही बना हुआ था। उनके आस–पास संगीत का स्वर सुनाई देता था। विट्ठल उमप ने मुंबई के विक्रोली में एक छोटे से कमरे में रहते थे। वही पर उन्होंने अपने बच्चों को पाला और उन्हें संगीत सिखाया। उनके दो बेटे संदेश और नंदेश अब मराठी और हिंदी फिल्मों में प्रसिद्ध गायक हैं।

विठ्ठल उमप के गीतों में अम्बेडकर की प्रशंसा और उनके संघर्ष का महिमामंडन दिखाई देता है। अम्बेडकर जलसा केवल गीत का उत्सव नहीं है बल्कि यह श्रम है जो दिखाता है कि शोषण की जड़े कहाँ है। विठ्ठल उमप ने अपने जीवन में एक हजार से अधिक लोक गीत लिखे। उन्होंने 10 मराठी फिल्मों में काम किया, उनमें से एक प्रसिद्ध निर्देशक जब्बार पटेल, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, तिंग्या और 'विहिर' प्रमुख है। वे लोक गायक के विभिन्न रूपों के विशेषज्ञ थे। पोवाडा, बहुरूपी, भारूड, भजन,

गण, लावणी, कवने, तुम्बाडी, बोबाडी, धनगरी गीते, कोली गीते, वासुदेव, डोंबरी, पोतराज, गोंधली, आदि गीत प्रकारों को गाते थे। जबकि अधिकांश लोग आम तौर पर इन रूपों में से केवल एक को सीखने में अपना पूरा जीवन लगा देते थे। किंतु विठ्ठल उमप इन सभी प्रकारों को अच्छी तरह से जानते थे। उन्होंने कव्वाली और गज़ल भी सीखी। विठ्ठल उमप ने "फू बाई फुगड़ी फू" शीर्षक से आत्मकथा लिखी है। उनके लोकगीतों में 'मेरी आवाज भीमचरणी, रंग शाहिरी जैसे अनेक लोकगीतों की रचना की। विठ्ठल उमप एक बहुत अच्छे लेखक, गायक, नर्तक आदि भूमिकओं में लोगों के सामने आते रहे। एक दिन लाइव प्रदर्शन करते समय दीक्षाभूमि नागपुर में दिल का दौरा पड़ने के कारण उनका निधन हो गया। उनका अंतिम शब्द था 'जयभीम'।

### 1.7.4 प्रल्हाद शिंदे

महाराष्ट्र में भक्ति गीतों और भीम गीतों की परंपरा में प्रल्हाद शिंदे का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रल्हाद शिंदे का जन्म महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के मंगलवेढा गावं 1933 में हुआ। उनके पिता भगवान दादा की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नही थी। इनके पिता एक अच्छे मुक्केबाज थे, साथ ही वह भक्ति गीत, भाव गीत, कव्वालि और भीम गीतों को गाते थे। साथ में उनके तीनों बेटे को भी संगीत में रूचि होने लगी। इस कारण भगवान दादा ने अपने तीनों बेटों को गाने के लिए साथ में लेकर जाते थे। इस तरह प्रल्हाद शिंदे ने अपने पिता से गाना सीखा। धीरे–धीरे भक्ति गीतों एवं भाव गीतों, भीम गीतों में प्रल्हाद शिंदे की ख्याति होने लगी। महाराष्ट्र में भीम संगीत परंपरा में प्रल्हाद शिंदे का नाम सुप्रसिद्ध है। इनका देहांत 23

जून 2004 में महाराष्ट्र में हुआ। इनके कुछ प्रसिद्ध गीतों के नाम निम्नलिखित है।

1. प्रणाम नामु गौतम 1991
2. साई मौली 1995
3. मेरे साईं 1996
4. त्यागी भीमराव 1996
5. भीम ज्वालामुखी 1997
6. त्रिसरण का टीका 2000

**प्रल्हाद शिंदे के भक्ति गीत**

1. विठ्ठल वैरी 1999
2. जेजुरीचा राजा 2001
3. महिमा मोती महादेवा 2001
4. चाला जाउ अलंडिला 2001
5. सांवलिया विठ्ठला 2001
6. पंढरीला जौनी येटा 2001
7. बप्पा मोरया

## 1.7 अम्बेडकरोत्तर लोकगीतकार

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर का महापरिनिवार्ण होने के बाद पूरे देश में खास तौर पर उनकी कार्य भूमि महाराष्ट्र में उदासी और निराशा का माहौल फैला। सन् 1956 में बाबासाहब ने धर्मांतरण किया और लाखों लोगों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी। दीक्षा देने के कुछ ही महीनों में बाबासाहब के जाने से दलित समाज और भीमगीतकारों में पराये होने का

भाव जागृत हुआ। कई लोग इतने दुःखी हुऐ थे कि उन्होंने बाबासाहब की जलती हुई चिता को देखकर भीम गीत गायन से संन्यास ले लिया। धीरे–धीरे बाबासाहब का दलित मुक्ति का सपना कमजोर पड़ने लगा। तत्कालीन समाज में बाबासाहब के जाने के बाद समाज में परिस्थितियां बिगड़ने लगी। इसी अत्याचारों के खिलाफ आवाज बुलंद करने के लिए 'दलित पैंथर' की स्थापना होती है। आने वाली नई पीढ़ी को बाबासाहब के कार्य, विचार, आंदोलन को जगाऐं रखने के लिए फिर से अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने अपने स्वर लगाऐं। इन लोकगीतकारों ने फिर बाबासाहब के विचारों के माध्यम से दलित समाज में चेतना जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। नीचे कुछ महत्वपूर्ण अम्बेडकरी लोकगीतकारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

### 1.7.1 आंनद शिंदे

आनंद प्रल्हाद शिंदे एक मराठी गायक हैं। उनका जन्म मुंबई में हुआ। उन्होंने एक हजार से अधिक गीत और 3 फिल्मों में प्रदर्शन किया है। शिंदे भीम गीतों और लोक गीातों के लिए भी जाना जाता है। शिंदे परिवार पांच पीढ़ियों से गायन के क्षेत्र में कार्यरत है। आंनद शिंदे के पास प्रसिद्ध गायन प्रल्हाद शिंदे को विरासत में लोक संगीत की एक मजबूत विरासत मिली। जब वे 4 साल के थे तब से पिता के साथ कार्यक्रम में कोरस में गाते थे।

आनंद शिंदे के दादा भगवान शिंदे एक उत्कृष्ट मुक्केबाज थे। जबकि उनके बेटे सोनाबाई एक तबला वादक थे। उनके तीन बच्चे सदाशिव, नारायण और प्रल्हाद ने संगीत के क्षेत्र में काम किया। उनका

परिवार मूल रूप से सोलापुर जिले के मंगलदेव का रहने वाला है। लेकिन इनका बचपन मुंबई में ही बीता। आनंद शिंदे कम उम्र से ही अपने पिता के साथ गाते थे। उनको कव्वाली की प्रतियोगिता बहुत पसंद थी। इनका मन कभी स्कूल में नहीं लगा। उनको स्कूल में सीखने से ज्यादा सभा में गाना पसंद था। नौवीं कक्षा में असफल होने के बाद स्कूल बंद हो गया। तब उनके पिता ने उन्हें तबला सिखाना शुरू किया। साथ ही गाना सीखना भी शुरू किया।

1979 में, आनंद शिंदे की शादी सातवीं में पढ़ने वाली विजया के साथ हुई। आनंद शिंदे की विवाह के समय आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इसलिए शादी में विजया को नकली मंगलसूत्र देना पड़ा। किंतु उनके मन में इस परिस्थिति से उभरने की दृढ़ इच्छा थी। उनकी मेहनत और लगन से आगे लचकर उन्होंने अपनी पत्नी विजया को सोने के आभूषनों से सजाया। आगे चलकर इनको तीन बच्चे हुऐ, हर्षद, उत्कर्ष और आदर्श।

महाराष्ट्र में दलित समाज के मन पर राज करने वाले आनंद शिंदे ने कई गाने गाऐ। साथ ही उनके बडे भाई मिलिंद शिंदे ने भी मराठी लोक गीतों के साथ अम्बेडकरी लोकगीतों को भी गाया। महाराष्ट्र में इन दोनों गायकों के गीतों से लोगों के दिन की शुरूवात होती थी। आनंद शिंदे ने बाबासाहब के विचार को लोकगीतों के माध्यम से दलित समाज तक पहुँचाया है। आनंद शिंदे ने शुरूवाती दौर में भक्ति गीत, भाव गीत आदि भी गये। किंतु उनको ज्यादा पहचान भीम गीतों के कारण ही मिली। वर्तमान समय में भी वे अपने गीतों के माध्यम से मनुवादीयों की वर्चस्व

वादी संस्कृति को भीमगीातों के माध्यम से चुनौति देते नजर आते हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध गीत निम्न लिखित है।

1. राज्या राणीच्या जोडीला पाच मजली माडीला
2. **निळ्या** निशाना खाली सर्वांनी एक व्हावे
3. **तुझ्या** हाथी तुप आले **तुझ्या** हाथी साय अरे समाजाच काय **गड्या** समाजाच काय?
4. माजी मैना गावाकडे राहिली
5. नवीन पोपट हा लागला मिटू मिटू बोलायला
6. उड जाएगा पंछी एक दिन रहेगा पिंजरा खाली
7. अंगठी सोन्यांची बोटाला
8. भीमाची रिंग टोन रिंग टोन

### 1.7.2 आदर्श शिंदे

आदर्श आनंद शिंदे एक पार्श्व गायक हैं। उनका जन्म 3 मार्च 1979 एक मराठी परिवार में हुआ। आदर्श शिंदे अपने गीतों के लिए जाने जाते हैं और उन्होंने कई लोकगीत और फिल्मों में गीत गाया है। आदर्श शिंदे को अपने पिता से संगीत की परंपरा मिली। उनके परिवार में परंपरा से ही दिवंगत गायक प्रल्हाद शिंदे, मिलिंद शिंदे, आनंद शिंदे आदि से संगीत चलता आ रहा है।

आदर्श शिंदे ने उम्र के दसवे वर्ष से गीत सीखना शुरू किया। उन्होंने सुरेश वाडकर से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली है। वे एक बहुमुखी गायक के रूप में उभरे हैं और विभिन्न शैलियों में गाते आ रहे हैं। अपने विनम्र स्वभाव और प्रयोगों को करने के साथ वह कई संगीत निर्देशकों के बीच पसंदीदा बन गए है।

उन्होंने अपने पिता और चाचा मिलिंद शिंदे के साथ एल्बमों में गाकर अपने करियर की शुरुवात की। आदर्श शिंदे ने एक रियालिटी शो से शुरुवात की तभी से वे प्रसिद्ध हो गये। शो के बाद उन्होंने कई हिट फिल्मों के लिए पार्श्वगायन का काम किया।

आदर्श शिंदे की असली पहचान अम्बेडकरी लोकगीतों से ही हुई। वर्तमान समय में उन्हें 14 एप्रिल के लिए पुरे महाराष्ट्र में कार्यक्रम के लिए बुलाया जाता है। आदर्श शिंदे को दादासाहेब फाल्के आवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें मिर्ची संगीत पुरस्कार 'रेडियो मिर्ची' से भी सम्मानित किया गया है।

**आदर्श शिंदे के भीम गीतों को हम नीचे देखेंगे।**

1. **भीमराव कडाडला**
2. **काळ्या रामाजा दरवाजा**
3. **भीमा कोरेगांव**
4. **भीम जंयती 126**
5. **भित नाही कोणाच्या बापाला भीमाची पोर**
6. **भीमजी का जलवा**
7. **माझ्या भीमाची पुण्याई**
8. **भीमराव एक नंबर**

**मराठी फिल्म गीत**

1. **सुंदरा, देवा तुझ्या, फुल टू फटाका, आला रे राजा आदि।**

### 1.8.3 अमनकुमार अढाव

इनका जन्म 2 जून 1975 में अहमदनगर जिला कोपरगांव तहसील में कासली नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम नामदेव सुखदेव आढाव और माँ का नाम इंदूबाई नामदेव आढाव है। इनके परिवार में माँ बाप एक भाई और एक बहन है। यह परिवार में सबसे छोटे है। इनकी स्कूल की पढ़ाई गाँव में ही हुई। आगे की पढ़ाई के लिए अमनकुमार पड़ोसी गांव में कर्मवीर भाऊराव पाटील इनकी रयत शिक्षण संस्था के स्कूल में हुई। दसवीं पास करने बाद कॉलेज के लिए कोपरगांव में इनटर मीडिट तक ही पढ़ाई कर पाऐ क्योंकि इनके परिवार की आर्थिक स्थिति खराब थी। इनको गीत लिखने की प्रेरणा महाकवी वामनदादा कर्डक के गीतों से मिली है। जब वे अपने माँ, पिता को एकतारी के उपर भजन गाते हुए सुनते थे, तभी से इनमें गाने में रूचि आने लगी और माँ, पिता के साथ वे कभी–कभी गाते भी थे। कभी गाँव में बाबासाहब के गीत गाने वाली मंडली आती तो इनके गाने को वे अच्छे से सुनते और गाँव में गाते। इसी तरह इनका बचपन बाबासाहब के गानों के बीच गुजरा ।

कुछ समय के बाद वे अपनी बहन के पास चले गये। किंतु कुछ दिनों के अंदर बहन के पति का देहांत हुआ। बहन और उसकी तीन लडकियों की जिम्मेदारी माँ  के ऊपर आयी इस कारण माँ ने बहन को गाँव लेकर गयी। अब मुबंई शहर में अमनकुमार अकेले जीवन संघर्ष करते रहे। साथ ही वे किताबों को पढ़ा करते थे। इन किताबों से इन्हें डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर को समझने का मौका मिला। धीर–धीरे वे बीएसपी के कार्यकर्ता से मिले और आंदोलनों में सक्रिय भाग लेने लगे और बाबासाहब

के विचारों को गीतों के माध्यम से दलित समाज को जागरूक करने लगे। उन्हें बाबासाहब के विचारों को समझने लगे। एक दिन बौद्ध भिक्षु ने इनका नाम भाउसाहब से अमनकुमार रख दिया तब से यह अपनी पहचान अमनकुमार ही बताते है। इनका पहला गीतों का संकलन ''भीमराव वदले आणि बुद्ध हसले'' 2005 में आया जो डी.व्ही बाबा म्यूजिक कंपनी द्वारा दलित समाज के सामने आया।

वर्तमान समय में इन्होंने बहुत सारे गीतों की रचनाएँ की हैं। पच्चीस साल से वे बाबासाहब के गीत लिखते और गाते आ रहे है। इनकी खुद की जलसा मंडली हैं। इसका नाम 'अमनकुमार आढाव आणि संच' है। आज वे महाराष्ट्र के अनेक गाँवों में जलसा कार्यक्रम करते है।

इनके गीतों के नाम इस तरह है।

1. भिमराव वदले बुद्ध हसले
2. परतूनी येना भिमा
3. 22 प्रतिज्ञा
4. झुजार मुक्तिदाता
5. भिमामुळं घेता एसीची गार गार हवा
6. भीमदीवानों सुनलो जरा।
7. अपनी आज़ादी बाकी है।

### 1.7.4 संभाजी भगत

संभाजी भगत महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध गायक हैं। संभाजी भगत का जन्म 1 जून 1969 में सातारा जिले में पंचगनी के पास, लहु गाँव में एक गरीब परिवार में हुआ था। संभाजी बचपन से ही कुनबी और मातंग समुदाय के कलाकारों का संगीत सुनकर बड़े हुए थे। जब वे सातारा से मुंबई पढ़ने के लिए आए तो छात्र प्रगति संगठन के माध्यम से वाम आंदोलन में शामिल हो गए।

संभाजी भगत ने कई गाने गाए हैं। उन्होंने फिल्म 'कोर्ट' में एक गाना गाया है जिसे राष्ट्रपति ने स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। संभाजी को भीमनगर मोहल्ले के प्रसिद्ध नाटक में भूमिगत शिवाजी ने उन्हें एक नई पहचान दी है। वर्तमान समय में संभाजी भगत बाबासाहेब के गीतों से युवकों को चेतना और जागृत करने का काम कर रहे हैं। वे वर्तमान राजनीति पर गीत रचना कर उनकी कडी आलोचना करते है। उनकी रचनाएँ इस प्रकार है।

1. कातळाखालचे पानी आत्मकथा, तोड ही चाकोरी, रणहलगी लेखसंग्रह, बॉम्बे 17 नाटक, शिवाजी अंडरग्राउंड इन भीमनगर मोहल्ला नाटक।

उनके गीत इस प्रकार है।

उंदीर भारूड, जीव एकटा एकटा पोवाडा, माझे गं माय पोवाडा

1. नागरिक इस मराठी फिल्म का संगीत संभाजी भगत ने दिया।

2. संभाजी भगत ने तेलंगणा के कडवे साम्यावादी शाहीर गद्दर इनके अनेक गीत हिंदी और मराठी में अनुवादित किऐ हैं।

संभाजी भगत को दिये गए पुरस्कार

1. अस्मितादर्श पुरस्कार
2. प्रबोधनमित्र पुरस्कार 2014
3. मुंबई में हुए 5 वे राज्यव्यापी शिक्षक साहित्य संमेलन के अध्यक्षपद मिला।
4. संत तुकाराम पुरस्कार आदि।

### 1.7.5 विलास घोगरे

विलास का जन्म पूना के मंगलवारा पेठ में 1 जून 1946 को एक दलित महार समाज में हुआ था। इनके पिता का नाम भिकाजी घोगरे था। विलास का घराना कबीर पंथी था। वह देवी–देवता और पोंगा–पंथियों में विश्वास नहीं करता था। विलास करीब चार साल का रहा होगा, तभी इनके माता–पिता चल बसे थे। विलास का बचपन उनके काका और बुआ के पास बीता था। विलास ने बड़े ही आर्थिक तंगी में अपना बचपन गूजरा था। वह मुश्किल से दसवीं तक पढ़ सका था।

स्कूल छोड़ने के बाद विलास का सामना जिंदगी की कडवी सच्चाई से हुआ था। उसके सामने पेट भरने की समस्या आई.विलास ने कोई भी काम करने में कोई शर्म नहीं की। कुली से लेकर सब्जी बेचने तक का कार्य विलास ने किया। साथ ही विलास को गाने का शौक था। उसे

बचपन से ही गाने का शौक था। दस बारह वर्ष की आयु से ही विलास रोज शाम को बच्चों को इकट्ठा करके टीन का डिब्बा बजा–बजा कर गायन किया करता था। उसके पिता को भी गाने का शौक था। वे इकतारा बजा कर गाते थे। विलास को जब भी मौका मिलता चाहे अम्बेडकर जयंती हो या गणेश उत्सव वह मंच पर शायरी करने पहुँच जाते। विलास सन 1965 में मुंबई आ कर कुर्ला के झोपड़–पट्टी में अपनी चचेरी बहन के पास रहने लगा था।

यहाँ पर उसने साड़ी में जरी करने का काम किया। मगर वह शाहिरी भी कर रहा था। उसने विलास आर्केस्टा बना कर मोहम्मद रफ़ी के गीत गाना शुरू किया था। विलास की शायरी में ही उसे एक लड़की से प्रेम हो गया। लड़की जो चमार समाज की थी। विलास ने विवाह कर लिया। मगर उनका दांपत्य–जीवन अधिक समय तक चल न सका। एक साल के अंदर ही डिलेवरी के समय आई गड़बड़ी के कारण जच्चा और बच्चा चल बसे। विलास एकाकी हो गया। एकाकी से सम्भलने विलास को थोडा वक्त लगा। उसने शायरी के क्षेत्र में खुद को झोक दिया।

विलास ने अपना पहला स्वरचित गीत सन 1971 में एक कार्यक्रम के दौरान गाया था। तब गर्जा महाराष्ट्र नामक विलास के इस गीत ने लोगों के बीच बड़ी धूम मचाई थी। इसी बीच विलास आशा नामक एक लड़की के साथ विवाह–सूत्र में बंध गए। उनके तीन बच्चें हुए। परिवार के साथ मुंबई आकर विलास मुलुंड डम्पिंग रोड स्थित लान्जेवाड़ी की झोपड़–पट्टी में रहने लगे। इस बार विलास को वागले स्टेट की एक रबर कंपनी में काम मिल गया। यहाँ पर अपने साथ काम करने वाले कामगारों के शोषण

को विलास ने नजदीक से देखा। परंतु यह कंपीन जल्दी ही बंद हो गई। विलास फिर सड़क पर आ गया। उसने परिवार का पेट भरने के लिए कूली का काम करना शुरू किया। उसकी सोच भी थी कि सामाजिक परिवर्तन के गीतों के लिए जीवन में संघर्ष का होना जरूरी है।

विलास मुलुंड में जहाँ वह रहता था, वहाँ कवि–गायकों की मंडळी थी। विलास उसका प्रमुख शाहीर था। विलास ज्यादातर बुद्ध और भीम के गीत गाया करता था। प्रत्येक वर्ष 6 दिसंबर को विलास अपने गायन पार्टी के साथ दादर के चैत्य भूमि में हाजिर रहता था। वहाँ पर पूरी रात विलास का कार्यक्रम चलता। ऐसे अवसरों के लिए विलास ने कुछ खास गीत रचे थे। जंगमस्वामी नामक शाहीर का विलास बड़ा दीवाना था। किंतु उनसे विलास की मुलाकात कभी नहीं हुई। इसी बीच विलास नवरंग राजणे नामक शाहीर के सम्पर्क में आये। आगे जाकर विलास पूना के ही शाहीर बाल पाटस्कर की मंडळी में रहने लगे थे। बाल पाटस्कर के साथ विलास लम्बे अरसे तक रहे। विलास ने उनसे काफी कुछ सीखा। इसी बीच विलास नक्सलवादी आंदोलन से प्रेरित संस्था आवाहन नाट्य मंच के संपर्क में आये।

नक्सलवादी आंदोलन से प्रेरित संस्था आवाहन नाट्य मंच की स्थापना सन 1979 में की गई थी। इस संस्था के सदस्य जनचेतना के लिए चौराहों पर नुक्कड़ नाटक किया करते थे। स्मरण रहे इसी समय आंध्र प्रदेश के तेलंगाना में पीपुल्स नामक नक्लवादी आंदोलन चल रहा था। प्रसिद्ध क्रांन्तिकारी लोक कवि ग़दर द्वारा ही शुरू की गई थी। उनके ही नेतृत्व में आवाहन नाट्य मंच ने आम जनता की लोक कला की गायन शैली में गाने लिखने और गाने की शुरूवात की थी। विलास को ग़दर की

काव्य शैली से बड़ी प्रेरणा मिली थी। उसने इसी शैली को अपने लोकगीतों और शायरी में अपनाया था। ग़दर जैसी हस्तियों से संबंध होने के कारण विलास की पहचान भारत के कई राज्यों के लोक रचनाकारों से हुई। उसे जनचेतना के लिए विभिन्न राज्यों में अयोजित कार्यक्रमों में जाने का अवसर मिला था। निश्चय ही इससे विलास की दुनिया व्यापक हुई थी। कहा जाता है कि भूमिगत होने के दौरान ग़दर कुछ दिन विलास के घर ठहरे थे। विलास ने 1980 और 1990 के दशक में लोक जागृति की शाहीरी की।

सन 1982 में मुलुंड के लोहाना ट्रस्ट के एक स्कूल में विलास को चपरासी की नौकरी मिल गई थी। इससे उसके घर में थोडा सुधार आया। मगर तब भी वह अपने लिए एक अदद घर नहीं बना सका। विलास के लिए गीत लिखना बाये हाथ का खेल था। वह किसी भी ज्वलंत समस्या पर बैठे–बैठ गीत बना लेता था। वह चंद मिनटों में ही गीतों को लय बद्ध कर लेता था। मराठी, हिंदी और गुजराती तीनों भाषाओं पर उसका प्रभुत्व था। इसी कारण वह अनुवाद भी जीवंत कर लेता था। उसने कई गुजराती, तेलगु गीतों का अनुवाद किया था। विलास के हिंदी गीतों को पढ़ कर कहीं से नहीं लगता कि वह हिंदी भाषी नहीं है। उसने हिंदी का अत्यंत सरल और सहज रूप स्वीकार कर अपनी अभिव्यक्ति को सक्षम बनाया था। विलास शब्दों को बहुत घिसा नहीं करता था। उसके गीतों में अनुभव की व्यापकता और आंतरिक तडप दिखाई देती थी।

सन 1978 में मराठवाडा नामांतर ने तीव्र रूप धारण कर लिया था। मराठवाडा में आगजनि कत्ल और बलात्कार जैसी घिनौनी घटनाओं ने

भीषण रूप धारण कर लिया था। गाँव और शहरों में दलितों पर हमले होने लगे थे। विलसा और उसके साथियों ने इस कत्लेआम का विरोध करने के लिए मुंबई की सडकों पर गाने का कार्यक्रम रखा। इसी वक्त विलास ने जलतोय मराठवाडा गीत की रचना की थी। इस गीत ने मराठवाडा के गाँव–गाँव में तहलका मचा दिया था। विलास मराठवाडा के गावं, शहरों में घूम–घूम कर दलित मोहल्लों में अलख जगा रहे थे। जेलों में ठूंस दिए गए निरपराध दलितों को रिहा करेने के उद्देश्य से विलास गली–सड़कों की खाक छान रहे थे।

15 जुलाई 1995 को घटी एक घटना ने विलास को तोड़ कर रख दिया। विलास की बड़ी बेटी नूतन ने घर कलह से तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। विलास ने अपने तीनों बच्चों को आर्थिक तंगी के बावजूद बड़े जतन से पाला था। वह शायरी के सिलसिले में घर से बाहर तो रहता मगर जब भी घर पर रहता बच्चों का पूरा ख्याल रखता। उसने बच्चों को अपने पैरों पर खड़े होने की शिक्षा दी थी।

विलास के एक बेटे को सरकारी नौकरी मिल गई थी। वह बेटे की शादी भी करने वाले थे। दादर के अम्बेडकर भवन में 12 अप्रेल 1997 को पुलिस द्वारा हमले के विरोध में ली गई आम सभा विलास का अंतिम कार्यक्रम था।

### 1.7.6 **शीतल साठे**

शीतल साठे एक मराठी लोक गायक, कवि अम्बेडकर आंदोलन के कार्यकर्ता हैं। इनका जन्म महाराष्ट्र के पुणे में कासेवाड़ी गाँव में एक दलित परिवार में हुआ था। शीतल साठे और उनके साथीयों ने विद्रोह के गीत गाये है। यह बिहार के श्रमिकों, पंजाब के किसानों के साथ–साथ देश के कई वंचित समुदायों के प्रश्न को गीतों और नाटकीय रूप से प्रस्तुत करते है। शीतल ने अपनी शिक्षा पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज में की थी, लेकिन कॉलेज जाने से पहले उन्होंने गाना शुरू कर दिया था। इसी दौरान सचित और कबीर कला मंच कलाकार के संपर्क शीतल आयी। शीतल साठे पुणे विश्वविद्यालय से स्वर्णपदक विजेता रही है। शीतल साठे का कहती है 'कि वे देश और दुनिया में व्याप्त असमानता और शोषण को मिटाने के लिए जनता को जगाने के लिए गाते है।

2002 में अमरनाथ चेंदेलीया के 'कबीर कला मंच में शीतल साठे शामिल हुई। यह संस्था पंजीकृत की गई। यह संस्था समाज में सांस्कृतिक संगठन और जनजागृती का काम करती है। किंतु तथाकथित लोगों को इनका यह काम पंसद नहीं आया इस कारण इन पर शहरी नक्सली और लोगों को सरकार के खिलाफ भड़काने के कई आरोप लगे है।

2002 में फिल्म निर्माता आनंद पटवर्धन ने कबीर कला मंच के प्रदर्शनों को डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से फिल्माया और जय भीम कॉमरेड के लिए फुटेज एकत्र करते हुए बड़े पैमाने पर साक्षात्कार किया। 1997 में रमाबाई नगर, मुंबई में पुलिस हत्याओं से जातिगत तनाव और हिंसा के बारे में एक फिल्म बनाई जिसका नाम जय भीम कॉमरेड है। यह फिल्म

कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, आदि सोशल मीडिया पर प्रसारित की गई। इस फिल्म के निर्माता आनंद पटवर्धन का कहना है कि शीतल जैसे लोग फिर से खुले में बाहर आ सकें और यह साबित कर सकें कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है,। कमजोर और शक्तिहीन समाज की और से बोलना कोई अपराध नहीं है। 2 अप्रैल 2013 को मुंबई के महाराष्ट्र के विधान भवन में छुपकर निकले और आत्मसमर्पण करते हुए कहाँ कि यह अभियान मुक्त अभिव्यक्ति के लिए है। शीतल साठे ने आत्मसमर्पण किया तब वह गर्भावस्था में थी। मुंबई सेशंस कोर्ट द्वारा उनकी जमानत को खारिज किया जाने पर अंत में उन्हें 2 जून 2013 को मानवीय आधार पर बॉम्बे हाई कोर्ट ने जमानत दे दी।

## निष्कर्ष

इस अध्याय के मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि मराठी संत सुधाराकों के साहित्य में दलित चेतना के अंश मिलते हैं। यह चेतना काल की गति के साथ तीव्रता से आगे बढ़ती रही। 18 वीं शताब्दी में महात्मा फुले ने इसे शिक्षा के साथ जोड़कर दलित समाज को दिशा देने का प्रयास किया। उन्होंने मनुष्य के गुलामी के कारण खोजने का सफल प्रयास किया और बहुजन समाज को शिक्षा से जोड़ने का अथक परिश्रम किया। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने दलित समाज के अधिकारों को संवैधानिक संरक्षण दिया। साथ ही वे आजीवन उनके अधिकारों के लिए लड़ते रहे। उनके महापरिनिर्वाण होने के बाद अनेकों आंदोलनों के माध्यम से यह लड़ाई वर्तमान समय में भी जारी है। इस

लड़ाई में दलित समुदाय, विद्यार्थी, आंदोलनकर्ता, अम्बेडकरी लोकगीतकार आदि के द्वारा मानवीय अधिकारों की मांग तीव्र गति से मनुवादीयों के कानों तक पहुँचाई जा रही है।

# दूसरा अध्याय

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद

2.1 मराठी से हिंदी में दलित साहित्य के अनुवाद की परंपरा

2.2 मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण

- 2.2.1 सामाजिक लोकगीत
- 2.2.2 आर्थिक लोकगीत
- 2.2.3 राजनीतिक लोकगीत
- 2.2.4 ऐतिहासिक लोकगीत
- 2.2.5 शैक्षणिक लोकगीत
- 2.2.6 स्तुतिपरक लोकगीत
- 2.2.7 क्रांतिकारी लोकगीत
- 2.2.8 वैचारिक लोकगीत
- 2.2.9 वंदन लोकगीत

**निष्कर्ष**

## 2.1 मराठी से हिंदी में दलित साहित्य के अनुवाद की परम्परा

दलित साहित्य की शुरुआत महाराष्ट्र में मराठी भाषा में हुई। इसको हम नकार नहीं सकते। मराठी के दलित साहित्य को जो चेतना या ऊर्जा मिली वह अम्बेडकरी विचार है। इसी विचार को लेकर मराठी दलित साहित्य विविध विधाओं में अपनी अभिव्यक्ति कर रहा है। उपन्यास, आत्मकथा, नाटक, कहानी, कविता, लोकगीत आदि विधाओं से लेखक सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार कर रहे हैं। इसी रचनाओं को हिंदी भाषा के सम्मुख रखकर हिंदी समाज को भी मराठी दलित साहित्य के अनुभवों से परिचित कराने के लिए मराठी साहित्य के लेखक इन श्रेष्ठ रचनाओं का हिंदी में अनुवाद कर रहे हैं। मराठी का दलित साहित्य भारतीय स्तर पर ले जाने का पूरा श्रेय मराठी साहित्य के अनुवादकों को है। मराठी दलित साहित्य के अनुवाद के कारण सबसे पहले हिंदी में दलित साहित्य की चर्चा हुई।

सन 1980 की शुरुआत में मध्य प्रदेश साहित्य परिषद ने चन्द्रकांत पाटिल की मदद से एक राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी मराठी दलित कविता पर आयोजित की थी। उसमें हिंदी के त्रिलोचन, प्रयाग शुक्ल, ज्ञानरंजन, चद्रंकान्त देवताले, कमलाप्रसाद, भगवत रावत के साथ अनेक प्रतिष्ठित कवि उपस्थित थे। दलित साहित्य को उन्होंने समझ लिया। बाद में मराठी दलित कविता का संकलन "सूरज के वंशधर" नाम से 1982–83 में प्रकाशित हुआ। यह संकलन चन्द्रकांत पाटिल ने अनुदित किया था। उसमें मराठी के दलित साहित्य की निर्मिति के कारणों की चर्चा की है। इसके माध्यम से 'नामदेव ढसाल' हिंदी में और हिंदी से अन्य भारतीय भाषा में

विशेषतः मलयाली, बंगाली, पंजाबी असम भाषा में चर्चा में आए। दलित आत्मकथा भी मराठी से हिंदी में और हिंदी से अन्य भाषाओं में अनूदित हुई। साम्यवादी साहित्य के तथा सबआल्टर्न अभ्यास के कारण दलित साहित्य को साहित्य ज्ञाताओं में प्रतिष्ठा मिली। दलित साहित्य में चित्रित दलित शोषितों के दुःखों की तीव्र अभिव्यक्ति के कारण आम जनता ने भी दलित साहित्य को स्वीकार किया। इसी पद्धति से एक दशक में ही मराठी का दलित साहित्य भारतीय दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत बन गया। इसी दशक के अंत में नोबेल विजेता 'व्ही.एस. नायपॉल' ने अपने भाषा विषयक तीसरी पुस्तक में 'नामदेव ढसाल' के संबंध में 40–42 पन्नों का लेख लिखा। संदर्भ में दलित साहित्य की चर्चा मराठी दलित साहित्य को विश्व स्तर पर लेकर गई। अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश भाषा के पाठकों की भी इस साहित्य में रूचि बढ़ने लगी। इसके बाद प्रकाशित हुआ "वसुधा" का 'दलित साहित्य विशेषांक' और 'रमणिका गुप्ता' का कार्य पाठकों को ध्यान में लेना चाहिए। अनुवाद ने संवाद की भूमिका निभाई, इसमें 'चंद्रकांत पाटिल', 'दामोदर खडसे', 'डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे', 'निशिकांत ठकार', 'दिनकर सोनवलकर' महत्वपूर्ण है।

इन अनुवादकों ने मराठी के दलित साहित्य को विश्वस्तर पर रखा। 'कमलेश्वर', 'राजेंद्र यादव', और 'महीप सिंह' ने दलित साहित्य का समर्थन किया। 'मोहनदास नैमिशराय', 'ओमप्रकाश वाल्मीकि', 'मलखानसिंह' और 'सूरजपाल चौहान' जैसे दलित लेखक राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हुए। 'सोहनपाल सुमनाक्षर' ने दलित आंदोलनों को गति दी। मराठी के 'दया पवार', 'लक्ष्मण माने', 'लक्ष्मण गायकवाड', 'बेबी कांबले', 'शंकरराव खरात,

‘प्र.ई.सोनकांबले’, ‘किशोर काले’, ‘माधव कोंडकवलकर’, ‘दादासाहेब मोरे जैसे लेखक हिंदी में स्थान बना पाए। इनमें से दो–तीन नाम ही राष्ट्रीय स्तर पर गए। सवर्ण समाज दलित साहित्य पढ़ रहा है, समझ रहा है, अभ्यास कर रहा है, उस पर संशोधन कर रहा है। परंतु दलित मनुष्य के संबंध में तथा उसके जीवन विषय के बारे में उदासीन है। सवर्ण समाज बस दिखावे की राजनीति कर रहा है। असलीयत में वह कुछ करना ही नहीं चाहता और कुछ किया तो वह मीडिया, और समाज के दबाव में बस इसके आगे उसकी इच्छा होती नहीं है। यह बेचैन करनेवाला चित्र है।

वैश्वीकरण के कारण विश्व के नजदीक आने की प्रक्रिया शुरू हुई है। उसमें इलेक्टॉनिक मीडिया और मल्टी नेशनल कंपनी को महत्व प्राप्त हुआ है। मल्टी नेशनल कंपनी दलित साहित्य की पुस्तकें छाप रही है। दलित साहित्य की काफी मांग है। मराठी दलित आत्मकथा पुस्तक रूप से अन्य भाषा में अनूदित हुई है। रामानाथ चौहाण का ‘वामनवाडा’ और दत्ता भगत का ‘वाटा पलवाटा’ इन नाटकों का अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

‘लक्ष्मण माने’, ‘लक्ष्मण गायकवाड़’ और ‘दया पवार’ इनकी आत्मकथा विदेशी भाषाओं में प्रकाशित हुई है। ‘शरणकुमार लिम्बाले’, ‘किशोर काले, ‘वसंत मून’ और ‘नरेंद्र जाधव’ इनके पुस्तकों का अंग्रेजी अनुवाद हुआ है। दलित लेखकों का साहित्य अन्य भाषा में अनूदित हो रहा है। इस बहाने अन्य भाषा के तुलना में मराठी दलित साहित्य ने मराठी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ाई है। यह ध्यान में लेना चाहिए।

दलित लेखक अपनी व्यथा–वेदना स्पष्ट करने के लिए लिखता रहता है। अपना दुःख, अपने प्रश्न लोगों को समझना चाहिए यह उसकी

भूमिका है। अब विश्व का पाठक यह साहित्य पढ़नेवाला हैं। इस कारण दलित लेखकों के लेखन अभिव्यक्ति को महत्व आनेवाला है। दलित लेखक के प्रश्न जाति व्यवस्था से संबंधित हैं। आगे स्थानीय और वैश्विक दो अलग–अलग विभाग निर्माण होनेवाले है। भविष्य में वैश्विक पुस्तक बाजार और लोगों की रूचि पकड़ना लेखकों के लिए जरूरी है। एक भाषा की मर्यादा में लिखना और विचार करने की आदत बदलनी पड़ेगी। मराठी चित्रपट जगत जैसी स्थिति कल मराठी साहित्य को आनेवाली है। इस पर मराठी लेखकों को विचार करना चाहिए। दलित साहित्य का प्रवाह प्रस्थापित हुआ है।

मराठी उपन्यासों के अनुवाद की संख्या तुलनात्मक दृष्टि से सर्वाधिक है। 'का.र. मित्र', 'ह.ना.आपटे', 'वा.म.जोशी', 'वि.स. खांडेकर', 'भा.वि. वरेरकर', 'माडगुलकर', 'पु.शि साने गुरूजी', 'विश्राम बेडेकर', 'व्यकटेश माडगुलकर', 'सुमति क्षेत्रमांडे', 'वि.दा सावरकर', 'बा.भ.बोरकर', 'मालतीबाई बेडेकर, जयवंत दळवी, 'दया पवार', भालचंद्र नेमाडे, रा.रं.बोराडे, 'शरण कुमार लिंबाळे', 'नागनाथ कोतापल्ले' आदि मराठी उपन्यास शिल्पियों की रचनाओं ने हिंदी को प्रभावित किया हैं।

सन 1956 में दलितों ने नागपुर की भूमि पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की प्रेरणा से धर्मांतरण किया। हिंदू धर्म ने दलितों के प्रति अत्यधिक अमानवीय व्यवहार करने के कारण यह धर्मांतरण हुआ था। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में दलित बौद्ध बने। इसके पश्चात दलितों में चेतना उत्पन्न करने के लिए और प्रेरणा निर्माण करने के लिए दलित साहित्य द्वारा दलितों का प्रबोधन करना शुरू हुआ। आरंभ में गीत, कहानी

और कविता के माध्यम से यह प्रबोधन होता रहा परंतु बाद में उपन्यास और आत्मवृत्तों द्वारा भी समाज प्रबोधन शुरू हुआ। 1970 के आसपास दलित उपन्यास लिखे गए। इन सभी प्रवृत्तियों का परिचय हिंदी पाठकों को कराने का कार्य हिंदी अनुवाद ने किया।

दलित आत्मवृत्तात्मक रचनाओं का भी निर्माण हुआ हैं। इसमें लेखकों ने जो देखा, जो अनुभव किया उसका ही संवेदनशील चित्रण किया है। रामनगर की 'रामनगरी' दया पवार का 'बलुतं' इनका हिंदी अनुवाद क्रमशः अछूत के नाम से हुआ है। लक्ष्मण माने का 'उपरा आदि में अपनी अपनी जाति की संस्कृति पर प्रकाश डाला हैं। अरूण साधु, नामदेव ढसाल आदि लेखकों ने दलित संस्कृति, दलित समस्या, दलितों की अर्थिक दुर्बलता, उन पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार उनकी स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार एवं बलात्कार आदि पर प्रकाश डाला गया है। इनकी कृतियों के हिंदी अनुवाद द्वारा महाराष्ट्र की दलित संस्कृति का परिचय हिंदी साहित्य जगत को कराने का प्रयत्न किया गया।

मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य को एकत्रित रूप में प्रस्तुत करना हो तो पर्याप्त लंबी सूची देनी होगी। पर इतना कहना पर्याप्त होगा कि परंपरा से चलता आया मराठी–हिंदी अनुवाद का क्रम आधुनिक काल में टूटा नहीं, बल्कि उसे और शक्ति एवं बल मिला है।

## 2.2 मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण

अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण हम विषयवस्तु के आधार पर करने वाले है। किंतु अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण करने से पहले हम महाराष्ट्र में किन स्तरों पर अम्बेडकरी भीम गीतों की परंपरा वर्तमान में चल रही है यह देखेंगे।

महाराष्ट्र में अम्बेडकरी लोकगीतों को गाने वाले अनेक प्रकार के गायक मिलते है। जैसे कि एक व्यक्ति ग्रामीण जगहों पर अकेला एक वाद्य लेकर भी अम्बेडकर के गीत गाकर समाज में प्रबोधन करते हुए अपनी रोजी–रोटी चलता हैं। ऐसे बहुत सारे लोग पूरे महाराष्ट्र में मिलेंगे। इनके पास कोई साधन सामग्री नहीं होती है। वे सिर्फ अपनी आवाज को 'महार' समाज के घरों में जाकर सुनाते है और गाना होने पर उन्हें कुछ धनराशि दी जाती है। उससे वे अपना परिवार चलाते है। छोटे शहरों में भीम गीत गाने वालों ने अपनी खुद की मंडळी बनाई है। जैसे 'भीम ज्योति परिवर्तन संस्कृतिक मंडळ', 'कबीर कला मंच', 'अमनकुमार आढाव आणि संच' आदि इन छोटे जलसाकारों के पास वाद्य सामग्री होती है। जैसे हारमोनियम, झांझ, तबला, ढोलक, इकतारा, आदि। यह जलसाकर भीम जंयती के अवसर पर गीत गायन का कार्यक्रम करते है। ये जलसाकार हर गाँव, तालुका, जिला स्तर पर मिलते हैं। ये एक कार्यक्रम के लिए दस हजार से लेकर पच्चीस हजार तक की फीस लेते हैं। तीसरा स्तर पर बडे जलसाकर आते हैं। जो लाखों में अपनी फीस लेते हैं। ये जलसाकार पेशेवर होते हैं। वे अपने गीतों को बडे स्तर पर यानी गीतों को रेकॉर्ड कर उसे सोशल मीडिया पर रिलीज करते हैं। इनके पास सभी तरह के

अत्याधुनिक साधन सामग्री उपलब्ध होती है। इन जलसाकारों ने शास्त्रीय गायन की तालीम ली होती है। ये मराठी, हिंदी फिल्मों में भी गाने का काम करते हैं। इन गायकों में 'आनंद शिंदे' 'आदर्श शिंदे', आदि। इनके गीत हमें इंटरनेट, सीडीज, टी.वी. पर भी देखने मिलते हैं। इस तरह महाराष्ट्र में अम्बेडकरी लोकगीतकारों को तीन स्तरों पर देखा जा सकता है।

अम्बेडकरी लोकगीतों में मराठी दलित समाज का ऐतिहासिक दस्तावेज छुपा हुआ है। ये लोकगीतकार अपने समाज पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों को अपने शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहे हैं। अम्बेडकरी लोकगीतों में दलित समाज के सभी पहलुओं पर विचार किया जा रहा है। अम्बेडकरी लोकगीतों का वर्गीकरण विषयवस्तु के आधार पर नीचे दिया जा रहा है।

### 2.2.1 सामाजिक लोकगीत

अम्बेडकरी गीतों में दलित समाज को एकत्रित करने और उनके अदंर चेतना जगाने की कोशिश हो रही हैं। अम्बेडकरी लोकगीतों का लक्ष्य यह भी है कि ''मानव प्राणियों में सामाजिक एकता स्थातिप करना है।''[83] अम्बेडकरी गीत प्रांसगिक है। अम्बेडकरी लोकगीतकार समाज में दलितों की सामाजिक स्थिति को देखकर अपने गीतों की रचना करते हैं। दलित समाज के नये—नये प्रश्न और चुनौतियों को अपने गीतों के माध्यम से दर्शाता है। तत्कालीन समाज की कट्टरता और राजनीतिक परिस्थितीयों को देखकर दलित समाज डरा सहमा दिखाई दे रहा हैं। इन सभी खतरों

---

[83] ऑउटलाइन्स ऑफ सोशल फिलासॅफी, पृ. 14

के बावजूद अम्बेडकरी लोकगीत कार बिना डरे समाज में प्रबोधन करता जा रहा है। इन लोकगीत कारों के ऊपर हमले भी होते रहते हैं फिर भी ये लोकगीतकार डॉ. बाबासाहब के बलिदान और संघर्ष को याद कर उनके सपने को साकार करने के लिए दलित समाज में अपने गीतों के माध्यम से चेतना लाने का काम निरंतर करता जा रहा है।

दलित समाज के शोषण में रूढ़ि परम्पराओं की बड़ी अहम् भूमिका रही है। इन रूढ़ि परम्पराओं के आधार पर भाग्य या भगवान का भय दिखाकर दलित वर्ग का शोषण किया जाता है। ये लोकगीतकार रूढ़ि, परम्पराएँ, देवी देवताएँ, अस्पृश्यता, जाति भेद, अमीर गरीब आदि तमाम सामाजिक बुराइयों का जमकर विरोध करते हैं और बाबासाहब के दिखाए हुए मार्ग पर चलते हैं।

अम्बेडकरी गीतकार केवल अधिकारों की माँग नहीं करता, वरन् सुविधाएँ मिल जाने के बाद, अधिकार प्राप्त हो जाने के बाद अपने कर्तव्यों के निर्वहन की बात भी करती है। आज की वास्तविकता पर ऊँगली रखते हुए कवि कहता है कि आरक्षण का लाभ लेकर तुमको नौकरी मिल गई, तो तुम अपनी नौकरी से ही चिपक गए और तुम्हारा अतीत क्या है? तुम इसे जानना ही नहीं चाहते हो.... सच तो यह है कि तुम सुविधाभोगी हो गए हो यही तुम्हारे पतन का कारण है।

वर्तमान समय में दलित समाज की एकता ही उसका बहुत बड़ा अस्त्र है। डॉ. अम्बेडकर ने एक मौलिक सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि सभी हिंदू भाइयों को अपने परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन लाना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि

इस संसार में कोई भी वस्तु सनातन नहीं है। कोई भी विचार निरपेक्ष सत्य नहीं है। परिवर्तन जीवन का एक प्राकृतिक नियम है। परिवर्तन ही विकास का आधार है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन बिना परिवर्तन के प्रगतिशील नहीं बन सकता। मानव समाज भी परिवर्तनशील है। इसलिए, डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, समाज में निरंतर रूप से परिवर्तन होते रहने चाहिए। ''हिंदूओं को यह भली प्रकार समज लेना चाहिए कि जिस प्रकार मानव जीवन को चलाने के लिए नियमों की आवश्यकता है, उसी प्रकार उन्हें समय–समय पर परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित करने की भी आवश्यकता है। अन्यथा मनुष्य का सामाजिक जीवन गतिहीन बन कर अनके रोगों से ग्रस्त हो सकता है।''[84] वास्तव में, हिंदू समाज की गतिहीनता समस्त प्रगतिशील विचारों में बाधक है।

यहाँ गीतकारों ने बहुत सटीक बात कही है कि आज के दलित को जब कुछ प्राप्त हो जाता है, तो वह स्वयं को दलितेतर समझकर दूसरों को यानी अपने ही भाइयों को जो समाज की पिछ़डी पंक्ति में दबे और कुचले पड़े रहते हैं, अपने से, निम्न समझकर स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगता है। वास्तव में यह आज का कटु सत्य है। अम्बेडकरी गीतकार सचेत करते हैं कि अपने अतीत को मत भूलो। अपनी मानसिकता को स्वार्थी मत बनाओ। यदि तुमको आरक्षण का लाभ मिला है और तुम ऊंचाई पर पहुँच गए हो, तो अपने नीचे खड़े हुए आदमी को भी अपना हाथ बढ़ाकर सहारा दो ताकि वह भी ऊपर ऊंचाई पर चढ़ सके।

[84] एनिहिलेशन ऑफ कास्ट–बी. आर. अम्बेडकर, 1936, पृ.सं. 79,80

अम्बेडकरी गीत में गीतकार कहता है कि 'सुविधाभोगी' मत बनो तो इसके पीछे भी कई ठोस कारण हैं....आज मुख्य मुद्दे पद और अर्थ प्राप्त करना ही नहीं है, इससे भी पहले जाति को ही अपमानजनक तरीके से देखा जाना भी मुख्य मुद्दा है.....यदि तुम्हारे पास पद और अर्थ हो भी गया लेकिन सामाजिक सम्मान प्राप्त नहीं हुआ तो पद और अर्थ किस काम का? सामाजिक सम्मान प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना है।

आज का दलित क्या सोचता है? उसकी मानसिक स्थिति कैसी है? आज वे छुआछूत, ऊंच–नीच को अपमान को किसी भी किमत पर सहन नहीं करना चाहता। उसके खिलाफ वो संघर्ष की स्थिति में है और संघर्ष की स्थिति में न सही तो विरोध की स्थिति में तो है ही। आज दलित वर्ग मानसिक रूप से अपने अधिकारों के लिए समाज में अपने स्थान के लिए और आत्मसम्मान के लिए सचेत हो गया है।

अम्बेडकरी लोकगीतों में मराठी दलित समाज की सामाजिक परिस्थिती का जीवंत चित्रण नीचे कुछ लोकगीतों में दिखाई देता है, इन लोकगीतों का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया गया है जो इस प्रकार है। 'महारवाडा अब भीमनगर बना', 'राजा रानी के जोडी को', 'पानी लाया मैं', आदि।

**राजा रानी के जोडी को (हिंदी अनुवाद)**

राजा रानी के जोड़ी को पांच मंजिल के मकान को
है किसका योगदान लाल दिऐ के गाड़ी को।। धृ।।

तू कुल का भिखारी अब आ गयी बढ़त्तोरी
उस मकान गाड़ी में आंबा शंकर मल्लारी
मेले करता है तू उस गांव के मौहल्ले में ।। 1।।

पंच पकवान खानेवाले के जुबान पर जयभीम
तुम्हें बासी रोटी खिलाई उसे करता है सलाम
तुम्हें स्वंतत्रता नहीं थी मंदिर, चौहराये पर ।। 2।।

बड़ा साहब हो गया अम्बेडकर को भूल गया
गया होता स्मशान में भक्ष था गिद्ध का
तुम्हें भीम ने इंसान बनाया श्रम तेरे लिए किया
मत भूल भीम का मोल बोल गर्व से जयभीम बोल
भीम के कार्य में जान रहें कभी समय ना चौहराये ।। 3।।

**महारवाडा अब भीम नगर बना**

गाँव के बाहर का रूप अब बदल गया है।
कल का महारवाड़ा अब भीम नगर बन गया है। ।। धृ।।

कल तक थी जो झोपड़ी घास की
अब आ गये बंगले में
आज नरम नरम गद्दी मिल गई
फ्रिज, टी.वी और कूलर सब घर में आया
कल का महारवाडा अब भीम नगर बन गया है। ।। 1।।

कल तक कुछ नहीं था पेट में
अब पकवान आ गये थाली में
घूमता है गाडी में रुबाब से
अंगूठी डाल के उगली में
किसी भगवान ने नहीं यह भीम ने किया
कल का महारवाड़ा अब भीम नगर बन गया है। ।। 2।।

शिक्षा के दम पर गया बड़े जगह पर
कहीं पर हो अन्याय तो प्रतिकार करता है भीम वीर
ऐसा दूध शेरनी का दिया मेरे भीमने
कल तक जो था महारवाडा अब भीम नगर बन गया है। ।। 3।।

कल तक की जिनकी गुलामी
आज करते हैं वही सलाम
यह चमत्कार संविधान का बताता हूँ बड़े जोर से
हमारी प्रगति देख करक जल रहे है लोग
कल का महारवाड़ा अब भीम नगर बन गया है। ।। 4।।

**जन्म है लिया**

बहुजनों को बचाने भीमराव ने जन्म लिया
भीमाई का भीम जन्म लिया
कदम कदम पर हमें साहब बनना

धर्म के नाम पर हमें डराया
हजारों पीढ़ीयों का शोषण हैं किया बहुत
जाति धर्म को जमीन में गाड़ने
मातृभूमि से रहे इमानदार
दिन–रात परिश्रम कर
संविधान लिखा देश के लिए
पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर
गंगाधर ने बौद्ध धर्म हैं अपनाया
मुक्तिपथ पर लेकर चले
जन्म लिया बहुजनों को बचाने
भीमराव ने जन्म लिया।

**हात में आयी कलम**

जिन हातों ने निकाला गोबर
उस हात में आयी कलम
तेरे पीढ़ी दर पीढ़ी का बेटा
मेरे भीमने किया सोना
छोटासा पहन कर लंगोट
भूखे पेट के लिए
हात में घुंघरू बंधी लकडी
कहे रोटी दो रोटी
कुत्ते से भी हीन था तेरा जीना

बाघ जैसी आयी ताकत
बोलने को आयी हिम्मत
सम्मान कुछ भी नहीं था तुझे
आयी आज मनुष्य को कीमत
अरे भीम के संविधान से
तुम्हें मिला नया बल
तुम्हारा मान सम्मान देख
मनुवादियों का दुःखता है पेट
तुम ध्यान से सुनो
मत करो भीम के साथ धोखा
जिन हातों ने निकाला गोबर
उस हात में आयी कलम

**बुद्ध जिसने दिखाया**

बुद्ध दिखाया पिंपल के पत्ते में
तोड़ी समाज की विषम व्यवस्था
लक्ष्य था समता का भीम पहलवान का
बुद्ध दिखाया पिंपल के पत्ते में
जाति का शोषण हुआ रूढ़ि के कारण
क्रांति के फुल आये इस सूखे रेगिस्तान में
गांव में जोहार करना मिटाया
दिल्ली देखी हमने भीम के संविधान में

हमारे स्पर्श से हुई बैलगाड़ी अछूत
मैं अब टाय, कोट पहनकर जाता हूँ विमान में
पूरा विश्व जीता बुद्ध के धम्म पर
हा... हा... बुद्ध के धम्म पर
समता का सपना था भीम का
मन के संकल्प ने क्रांति कर दिखाई
इतिहास रचा मेरे भीम बाबा ने

**गुलामी का टूट गया जाल**

ये है मेरे भीम का कमाल
भिखारी बने हे मालामाल ये है
मेरे भीम का कमाल
लाखो करोडो दिल के उजाले थे
सर झुकाकर खूब चले थे
पर चलते है शेर की ओ चाल
अब ना गुलामी अब ना सलामी
अब की अब होगी नीलामी
बने है गुलाम राजपाल
प्रतापसिंग करे सलाम
नागपुर का देखो ये मेला
बीस लाख आते है हर साल
गुलामी का टूट गया जाल
ये है मेरे भीम का कमाल

## भीम का संघर्ष

भीम के संघर्ष से तुम्हारी खुशी
भीम के संघर्ष से तुम्हारा जीवन बना
हुआ है परिवर्तन तेरे जीवन में
जो नही था देखने को
अरे वह है तुम्हारे खाने में
मंदिर का जूठन
खा कर ना भरा तुम्हारा पेट
भीमा के कारण आज खाने में पंच पकवान
भूलना नही तुम अपने भीम बाबा को
रखना हमेशा याद
जीन की वजह से आज
तुझे मिलता है स्वाभिमान
आज से जुड़कर रहा करो
नहीं कोई अर्थ दूर रहकर
धम्म बुद्ध का दिया भीम ने
यह तुझे समज में ना आये
सलों साल नागपुर को नाही जाता

## पानी लाया मैं

पैर आगे बढ़ाते हुऐ मैं आगे जाने वाला हूँ।
पानी चवदार तालाब का पीने वाला हूँ।। धृ।।

पानी के लिए जीव तड़प रहे हैं
मनुष्य–मनुष्य के ऊपर क्यों अत्याचार करता है
स्पर्श करके मैं पानी पीनेवाला  हूँ
मनुष्य को समान अधिकार देने वाला हूँ मैं।। 1।।

पानी यह पर्यावरण की देन है।
मनुष्य दूसरे मनुष्य को अस्पृश्य क्यों मानता है।
सभी मनुष्य एक साथ रहेंगे।
सत्य के लिए लड़नेवाला हूँ ।। 2।।

सत्याग्रह है चवदार तालाब का
मानव के अधिकार का
दृष्ट रूढ़ि को मैं तोड़ दूंगा
मनुष्य में परिवर्तन लानेवाला हूँ मैं
पैर आगे बढ़ाते हुऐ में आगे जने वाला हूँ
पानी चवदार तालाब का पीने वाला हूँ ।। 3।।

**भीमराव पट्टा**

अरे बाटता था जाति–जाति में हमारे हिंदू देवताओं का समूह
जन्मा भीमराव बहादूर, मिटाया जाती का कलंक
गले में मटका, हाथों में लकडी
मिले पेट को जब लगाऐ गाँव में झाडू
ऐसी की, जातिवादियों ने हमारे जाति की दशा
जन्मा भीमराव बहादूर, मिटाया जाती का कलंक
भरी धूप में उठए कष्ट
नहीं पहनने को कपड़ा
अरे भीम कारण आज सभी बने रंगीन
जन्मा भीमराव बहादूर, मिटाया जाती का कलंक
बनाया भीम ने संविधान
चकीत हुए विष्णु, महेश, ब्रम्हा
भीम के कारण मिला हिंदू देवताओं से छुटकारा
जन्मा भीमराव बहादूर, मिटाया जाती का कलंक
हिंदू धर्म को त्याग कर
बौद्ध धर्म दिया हमे

**भीमराव मेरा**

उस बामण का दामाद है मेरा भीमराव

रामजी का वह बेटा

काला राममंदिर का संघर्ष बड़ा

है उसमें भीम का हिस्सा

अभी बनो सभी जागृत

काले मंदिर में काला राम

दर्शन देने वाला मेरा भीमराव

संविधान बदला अगर कोई

करेगें उसके हाथ कलम

हम भीमराव की संतान

नहीं उलझो हमारे साथ

शासन कर्ता है अगर जातिवादी

किंतु संविधान लिखने, कानून बनाने वाला

मेरा भीमराव है रे

हजार पांच सौ के नोटों पर गांधी

उस गांधी को बचाने वाला

मेरा भीमराव है रे

## मेरा भीमराव

भीमाई का बेटा भीमराव
बहुजन की माता
लिखकर देश का संविधान
जग में गूंजा गुणगान
शिक्षा का रहा अभाव
घर में थी गरीबी
मग्न होकर शिक्षा ली
भीम बना भारत के संविधान का निर्माता
सूबेदार रामजी का बेटा
बहुत ही होशीयार
भले रहे स्कूल के बाहर
फटाक से देता प्रश्नो का उत्तर
उस दुष्ट शिक्षक ने किया जाति भेद
लड़का महार का समजकर
मना किया अंदर आने
मेरे जीवन को सुंदर बनाएगा
गुलामी से मुक्त करेगा
जीवन से संकट मिटाएगा
जब दीपक के नीचे बैठकर
की है पढ़ाई

हिंदुस्थान को सवरा

## हिंदू–मुस्लिम सिख ईसाई

हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई
हम सब भाई–भाई
जाति–पाँति, नाते–रिश्ते

मिलकर ऐसे गीत गाए
नहीं चाहिए हुकुमशाही
लोकतंत्र को स्थापित किया
उनकी कीर्ति है भूमि पर
भारत माँ के हाथ
उनकी कीर्ति है भूमि पर
लोकतंत्र का निर्माता डॉ. अंबेडकर
लाल बहादूर, पंडित नेहरू,गांधी,सावरकर
पैदा हुए सभी महान रत्न
डॉ. अंबेडकर जैसे सपूत
लोकतंत्र का करते है आदर
उनकी कीर्ति है भूमि पर
शुर वीर शिवाजी,टिळक,आगरकर
होगा नाही ऐसा कोई वीर पुरुष
बने सावित्रीबाई फुले
उनकी कीर्ति है भूमि पर

मानवता का कल्याण होगा दिया ऐसा मंत्र
सत्य, शांती देकर गये महावीर गौतम बुद्ध
शाहीर खुपे के शब्द
नहीं होगे कभी झूठ
लोकतंत्र का करते है आदर
उनकी कीर्ति है भूमि पर
भारत माँ के हाथ
उनकी कीर्ति है भूमि पर

### 2.2.2 आर्थिक लोकगीत

दलितों का शोषण कई स्तरों पर किया जा रहा है, इनमें से आर्थिक स्तर महत्वपूर्ण है। साथ ही वर्ग और वर्ण दोनों शोषण का माध्यम बने रहे। दलित वर्ग दोनों पाटों के बीच पीसता रहा है। निश्चित रूप से आर्थिक आधार एक मजबूत आधार होता है। परंतु आर्थिक आधार के मूल में भी सामाजिक आधार है। क्योंकि अभी भी पेशा जाति के साथ जुड़ा हुआ है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने कहा है कि 'तुम किसी भी दिशा में जाओ जातिवाद के राक्षस से तुम्हें दो–दो हाथ करने ही पड़ेंगे। जब तक इस राक्षस को नहीं मारोगे तब तक कोई भी राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन नहीं ला सकोगे।'

कई सदियों से दलित समाज को मूलभूत सुविधाओं से वंचित रखा गया। मनुवादी मानसिकता वाले समाज ने दलित समाज को धन इकट्ठा करने को कभी मौका नहीं दिया। इस कारण उनका आर्थिक ढांचा पूरी तरह से टूट गया। उन्हें कपड़ों से अच्छे मकानों से, अच्छा खाने से दूर रखा गया। इस तरह उन्हें पूरी तरीके से दरिद्रता की जिंदगी जीने के लिए बाध्य किया गया।

किंतु बाबासाहब अम्बेडकर की वजह से दलित समाज वर्तमान स्थिति में मूलभूत सुविधाएँ पा रहे हैं। इसी सुविधाओं से वह शिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरियाँ कर रहा हैं। डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि वे लोग ''जो समाज का ढांचा समाजवादी अर्थव्यवस्था के आधार पर चाहते हैं, इसकी सफलता के लिए सामान्य कानून का सहारा नहीं लेना चाहिए क्योंकि सामान्य कानून सरकारों के परिवर्तन के कारण आये दिन बदलते

रहते हैं। इन शीघ्र बदलने वाली सरकारों के उद्देश्य राजनीतिक अधिक होते हैं। उनके यथार्थ अभिप्राय मालूम नहीं हो पाते हैं। एक राजनीतिक दल अपनी पूर्व सरकार के अच्छे से अच्छे कानून भी बदल देता है।''[85] अतः यह स्पष्ट है कि संसदात्मक राजनीतिक व्यवस्था प्रजातंत्रीय आर्थिक ढांचे की सुदृढ़ता लाने में क्यों असमर्थ रहती है। आर्थिक सुदृढ़ता के लिए स्थायी कानून– व्यवस्था का होना आवश्यक है।

अब पहले की तरह दरिद्रता की जिंदगी नही रही है। आज दलित समाज अच्छा खान–पान कर रहा है। इस तरह बाबासाहब के कारण दलित समाज की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होने लगा है। दलित समाज की इसी आर्थिक स्थिति का दिखाते हुए अम्बेडकरी लोक गीतकारों ने अनेक गीतों की रचनाएँ की हैं। इन गीतों का उल्लेख निम्नवत किया गया है – 'मेरे भीम की मेहरबानी, सोने की अंगूठी उंगली में', 'मंहगाई का खाता है आज, आदि।

**महंगाई का खाता है आज**

महंगाई का खाता है आज
बदाम काजू पिस्ता
भूखा मर गया होता अगर
मेरा भीम न होता
अरे जब विदेश में शिक्षा पाने भीम गये
आधा पाव खाकर पढ़ाई की
अठरा घंटो के पढ़ाई की भूख थी भीम को

[85] स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्– बी.आर.अम्बेडकर, पृ. 33.

तुम्हारे हमारे लिए
सहन की है बहुत तकलीफे
भूखा मर गया होता पागल
मेरा भीम न होता
अरे किये तुम्हारे लिए भीम ने जीवन में संघर्ष
तब कही जाकर समजा तुझे स्वाभिमान
जब तक जीवीत है तु रखना उनका मान
अरे भीम के संघर्ष की नही तुझे शान
स्वार्थ के लिए मुख में
जय भीम क्यों?
भूखा मर गया होता अगर
मेरा भीम न होता

**मेरे भीम की मेहरबानी, सोने की अंगूठी उंगली में**

नहीं मिलता था पेट को
अब कम नहीं पैसों को
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की उंगली में
गुजरी हुई पीढीयों ने गुलामी सही
अनेक वर्षों से जीवन जलता रहा
बहुत तरसे हुए एक घूंट पाणी के लिए
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की उंगली में

उन माँ बहनों ने सही है लाचारी

आज आवाज उठाती दिल्ली के दरबार में
आज लड़कियां लगाती लाली होठों को
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की उंगली में
नाही जाएगा हमारे मेहनत का मोल
बिना पैसों के 24 तास करे गुलामी
अब खुशबू आयी सूट बूट कोट को
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की उंगली में
कोई बाईक घुमाता, कोई गाड़ी घुमाता
इस विश्व में बड़पन, करता दिनानाथ
आज हमें रहने को बंगला बड़ा
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की उंगली में

## भीम का खाकर फूला है पेट

भीम का खाकर फूला है पेट

कतराते जयभीम कहने

उसे समाज से बाहर कर दो

चौरस्ते पर पकडो उसे

मिट्टी का तेल

डाल के आग लगाओ

ऐश आराम से जो घुमता

ए सी गाडी में भीम की पुण्याई से

रहे बांगले में

कहे कोई शान से जयभीम

तो नीचे झुकाता शर्म से अपनी कर्दन

उसे पहना दो, चप्पल का हार

सब अधिकार लेकर भीम के

बैठा बड़े पद पर

सभी खुशियां आयी गधे के घर में

जीभ को लगी चटक बड़ी

पंच पकवान मांगता खाने के लिए

उसे गोबर खाने को दे दो

### 2.2.3 राजनीतिक लोकगीत

दलित समाज सदियों से सभी सुविधाओं से दूर था। उसे मानवीय अधिकार भी नही दिये गये थे। किंतु बाबासाहब के प्रयत्न से समाज को मूलभूत मानवीय अधिकार मिले। वर्तमान समय में शिक्षा ग्रहण कर लोग आज समाज की प्रगति के लिए राजनीति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। डॉ. अम्बेडकर ने आजादी के बाद भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में राजनीति में प्रवेश किया। उससे पहले उनका राजनीति में कोई स्थान नहीं था। बाबासाहब ने समजा था कि जब तक दलित राजनीति में अपने लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं करेंगे, तब तक उनका विकास नहीं होगा।

डॉ. अम्बेडकर जनतंत्र को एक जीवन पद्धति मानते हैं। वे व्यक्ति की श्रेष्ठता पर बल देते हैं और सत्ता के परिवर्तन को एक साधन मानते हैं। राजनीति में समता और आर्थिक क्षेत्र में विषमता इस दृश्य को बदलना जरूरी है। इन दोनों के बीच की यह विसंगति जल्द से जल्द समाप्त होनी जरूरी है। निकट भविष्य में अगर ऐसा नहीं हो सका तो, ''विषमता में जो छटपटा रहे हैं, ऐसे वर्ग जनतंत्र में मुखौटे का पर्दाफाश कर देंगे। ऐसा इशारा वे संविधान सभा में देते हैं।''[86]

दलितों की आवाज हजारों सालों तक दबाई जा रही थी, किंतु अब संवैधानिक अधिकार से दलित समाज राजनीति में आ सकता है और अपने लोगों की बात कर सकता है। क्योंकि दूसरी राजनीतिक पाटीया अपने हितों के लिए अपने ही समाज की ओर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। इस कारण दलित समाज में कोई ठोस नेतृत्व नहीं आ रहा है। कुछ नामों को छोड़कर

[86] डॉ. अम्बेडकर :विचार मन्थन–श्री.वा.ना.कुबेर, पृ.216.

बाकी केंद्र की राजनीति में दलित समाज का कोई चेहरा नज़र नहीं आता है। इसी कमतरता को अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने उजागर कर समाज, राजनीति आदि का चित्रण अपने लोकगीतों के माध्यम से समाज के सामने रखा है।

**कानून भीमा का**

कानून भीम का पर फोटो गांधी का
कानून भीम का पर फोटो गांधी का
अच्छा दिखता है क्या नोटो पर
कितना अच्छा दिखता भीम नोटो पर
टाय और कोट पर
कानून भीम का किंतु फोटो गांधी का
अच्छा दिखता क्या नोटोपर
सच्चा देश प्रेमी रहा भीम संविधानकार
ऐसी शिक्षा पायी जो कहलाऐ शिक्षा गुरू
ऐसा ज्ञानी ऐसा ज्ञानी
देश को सवारा गांधी को बचाया
कलम के दम पर
कितना अच्छा दिखता भीम नोटो पर
टाय और कोट पर

## इंसान बनाया किसने ?

कोण था तु क्या बन तु
भीम के उपकार भूल गया तू
पहन के सूट बूट घूमता है गर्व से

तुम्हें इंसान बनाया किसने
मेरे भीम जी ने भीम जी ने
पढ़ लिख कर मिला है ओदा
भीम के कारण मिली हे तुझे उच्च पदवी
अरे तुम्हारे लिए समर्पित किया जीवन
याद रखो भीम के उपकारों को
बन धनवान तु बना बलवान तु
चार लोगों से लेता सम्मान तु
भीम जी के श्रम से बना जीवन का सोना
जिनकी कृपा से आज साहब तु बना
उनका ही खाकर तुम्हें अहंकार क्यों आया
बाप के बाप को तु बैमान बन गया
स्वार्थ के लिए तुम्हें समाज को धोका दिया
जैसा मिलता गया वैसा तु जैब भरता गया
समाज हित का लक्ष्य कभी देखा नही
है भीम की शान तुम भी मानो

## विद्ववान भीम

ऐसी विद्ववता कहीं नही
किसी ब्राम्हण, भट में
395 कलम थे भीम के हाथों में
ऐसा भीम ने लिखा है कायदा
उन कायदों में किया है वादा
हिंदू मुस्लिम, सिख, इसाई
सभी लोगों का हुआ है फायदा
देखकर यह सब दुःखता है पेट मनुवादीयों का
जब भीमराव दिल्ली में बोले
तब दिल्ली शासन हिले
मेरे भीम के संविधान पर
पुरे देश का शासन चले
शपथ लेकर शासन करे
आमदार, खासदार शान से
भीम के बाद नेता पढ़े–लिखे
पढ़े किंतु वह भी नीकले झुठे
भीम की विद्ववता देख कर
वे भी झुके भीम के सामने
चद्रकांत ने भीम का नाम लिखा
हृदय के ऊपर

## संघर्ष

अरे संघर्ष देखो
उसे नष्ट करो
और रहो एकता से
जलता है मराठवाडा
जलता है जलता है मराठवाडा
कैसे जलता है मराठवाडा
देखो जलता है मराठवाडा
कोई कांबले, कोई राम
पेट भरते है पसीना बहाकर
गाँव का दुश्मन रहा
गूंगे होते हैं कहकर जय भीम
जंगल में अकेले देखकर
रस्सी से बांधकर
पहजे हात पांव तोडकर
डाल दिया अग्नि में
तो जलता रहा धूँ धूँ
भीमराव का सैनिक
जाति के कारण जलता है मराठवाडा
कोई बनसोडे की बहू
दूसरे के खेत में मेहनत करें
अंधेरा होते ही
लगती चुल्हा जलाने में

उस पर गाँव का कर्ज
वह थी बस महार
रूप सौंदर्य की खान
जैसे गरीब घर का सोना
उसकी तोड़ी चूड़िया
यह अन्याय कितना
कौन देगा उसे न्याय
जलता है मराठवाडा
जलता है मराठवाडा
कैसे जलता है मराठवाडा
हम पूना, मुंबई के लोग
बस नकली हमारा देखावा
जयभीम जयभीम कहते
गांडू का जीवन जीते
आओ सब एक होकर
आओ सब एक होकर अब
और रहो एकता से
कैसा जलता है मराठवाडा
देखो जलता है मराठवाडा
अरे प्रसंग देखो
उसे नष्ट करो
और रहो एकता से
जलता है मराठवाडा

जलता है जलता है मराठवाडा
कैसा जलता है मराठवाडा

## सूट बूट कोट पर

सुनिए गांधी लगना नहीं हमसे
गरजकर बोले भीम कोट पर
मैं ही लाऊंगा समाज मेरा सूट बूट टाय और कोट पर
नहीं चाहिए हमें अब मीठे–मीठे बोला
आप मन से कपटी, कहे हमें हरिजन
केवल सहानुभूति, तुम्हारे पूछता कोण
बोलो तुम्हें कोण देता सम्मान
इरादा समजा हमें तुम्हारा
तुम्हारे सामने ही लाऊंगा
समाज हमारा सूट बूट टाय और कोट पर
बनाऊंगा तो मनुष्य मैं ही
नही  तो खुद को गोली मार लूंगा
कहे शान से भीमराव रोख ठोक से
जीत गए लेखनी के टोक पर

### 2.2.4 ऐतिहासिक लोकगीत

ऐतिहासिक गीतों को समजने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखना जरूरी है तभी उस गीत के भाव, विचार, संदेश आदि को आत्मसात कर सकते हैं। 'पांच सौ महार लड़े' यह गीत 1 जनवरी 1818 भीमा कोरेगांव के संग्राम पर आधारित है। इस गीत को महाराष्ट्र के अनेक अम्बेडकरी लोकगीतकार 1 जनवरी और भीमजयंती के अवसरों पर गाते हैं। इस युद्ध में महारों का नेतृत्व सरदार सिद्धनाथ कर रहे थे। युद्ध के पहले सरदार सिद्धनाथ ने पेशवा बाजीराव से कहा कि 'हमें अंग्रेजों के साथ लड़ने की कोई इच्छा नहीं है। आप और हम एक साथ लड़कर अंगेजों को हरा सकते हैं। किंतु हम आपकी तरफ से लड़े तो हमारे लिए आप के राज्य में और सैना में हमारे समाज का क्या स्थान होगा'। इस पर पेशवा ने कहा कि 'सुई की नौक पर जितनी जगह है उतना भी स्थान आपको नहीं मिलेगा। चर्तुवर्ण व्यवस्था ने जो नियम बनाये है, वही नियम आपके लिए लागू होंगे। इस जवाब से सिद्धनाथ ठिठुर गये उनका खून खोल गया और वे गरज पडे 'हम आज तक तुम्हारे अन्याय अत्याचार सहते रहे, लेकिन अब तुमने स्वयं ही अपनी मृत्यु रेखा खिचली है। पेशवओं के अत्याचार से महार जाति परेशान थी और फिर इधर पेशवाओं के आव्हान से चिंनगारी और भडकी।

जैसे बाबासाहेब अम्बेडकर कहते हैं जहाँ सहन शक्ती खत्म हो जाती है वहाँ क्रांति का जन्म होता है। महारों ने सदियों से चले आ रहे अपने अपमान का बदला लेने के लिए पेशवाओं के खिलाफ युद्ध शुरू किया और आधुनिक भारत में समतामूलक समाज निर्माण के नये इतिहास की

शुरूआत हुई। भीमा नदी के किनारे बसे कोरेगांव की बात है। एक तरफ 500 महार सैनिक, 250 घोड़ सवार, दो तोफे और दूसरी तरफ 25 हजार पेशवाओं के सैन्य बल 3 हजार घोड़ सवार। युद्ध शुरू हुआ महार सेना का नेतृत्व रत्ननाथ, जन्मनाथ, भिखनाथ कर रहे थे। 1 दिन 1 रात युद्ध चला और देखते ही देखते 500 महार सैनिकों के सामने पेशवाओं की विशाल सेना बोनि साबित हुई। लड़ाई के धरातल पर महारों का सामर्थ्य किस स्थर का है यह पूरी दुनिया ने देखा और इतिहास इस घटना से गौरान्वित हुआ। युद्ध में वीर गती को प्राप्त हुऐ सैनिकों की शौर्य गाथा दुनिया के इतिहास में अमर हुई। जो भीमा कोरेगांव के 75 फीट उंचे विजय स्तंभ पर दर्ज है। इस क्रांति स्तंभ, विजय स्तंभ को सैलूट करने हर साल 1 जनवरी को बाबासाहेब यहाँ जरूर आते थे। बाबासाहब कहते है कि ''जो इतिहास को भूल जाते है वे इतिहास कभी नहीं बना सकते।''[87] इसी परंपरा को बरकरार रखते हुऐ संपूर्ण दलित समाज 1 जनवरी को भीमा कोरेगांव को नतमस्तक होकर अपने इतिहास का गौरवगान करता है। इस तरह ऐतिहासिक लोकगीत का हिंदी अनुवाद निम्ववत प्रस्तुत किया जा रहा है।

**500 महार लड़े देखो**

मिटा दी पेशवाई
गवाही देता है इतिहास
ना पिछे हटे ना घबराएँ

पांच सौ महार लड़े देखो पांच सौ महार लड़े देखो
शूरवीर–शूरवीर थे वह पांच सौ महार

[87] लाइफ एण्ड मिशन– डॉ. अम्बेडकर, पृ. 248

पांच सौ महार लड़े देखो पांच सौ महार लड़े
देखो सभी शूर वीर थे
और घबराऐ अठ्ठाईस हजार पेशवे
कितने–कितने पांच सौ पांच सौ
कभी न हुआ ऐसा कर दिखाया
खून की नदी बहा गये
और थर–थर काँपे पेशवे अठ्ठाईस हजार
पांच सौ महार लड़े देखो पांच सौ महार लड़े देखो।

### 2.2.5 शैक्षणिक लोकगीत

शिक्षा लोगों को संस्कारित करने का एक आधारभूत तत्व है और यह समाज के कमजोर वर्गों में सामाजिक परिवर्तन तथा उच्च जीवन स्तर का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा का बहुमुखी और गहरा प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। इससे व्यक्ति में जागरूकता पैदा होती है, तो वहीं दूसरी ओर वैचारिक दृढ़ता, प्रखर चिंतन, महत्वकांक्षा, परिपक्वता, बुद्धिमता इत्यादि गुणों का समावेश होता है।

दलितों की सामाजिक अयोग्यता, सामाजिक एवं आर्थिक शोषण, सामाजिक पराधीनता आदि का प्रमुख कारण अशिक्षा है। इसी वजह से दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपनी तीन सूत्रीय योजना में शिक्षा को प्रथम स्थान दिया था। इन जातियों के अशिक्षित रहने का मूल कारण सवर्ण हिंदूओं द्वारा उन पर आरोपित सामाजिक एवं धर्मिक निर्योग्याताएं थीं। स्मृति तथा धर्मग्रंथों के अनुसार शूद्रों द्वारा धार्मिक ग्रंथों

का पठन या श्रवण एक अपराध था जिसके लिये कठोर दण्ड का प्रावधान था। कुछ समय पूर्व तक सवर्ण हिंदूओं के बच्चों के साथ दलितों के बच्चों को पढ़ने नहीं दिया जाता था क्योंकि सवर्ण दलित शिक्षा के कट्टर विरोधी थे।

शिक्षा संबंधी उनके विचार बहुत ही स्पष्ट और सरकार की जिम्मेदारी की और संकेत करनेवाले हैं। समाज के सबसे सामान्य शोषित और उपेक्षित व्यक्ति तक शिक्षा की सुविधाएं पहुँचनी चाहिए, ऐसा उनका आग्रह था। परम्परा से नकारे गये वर्ग को उच्च शिक्षा हेतु अधिक खर्च करना न पड़े ऐसी व्यवस्था हो ऐसा उनका आग्रह था। विश्वविद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा ''स्नातक और छात्रों के पाठ्यक्रम द्वारा सांस्कृतिक प्रगति करने के लिए महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को एकत्र होना जरूरी है।''[88]

शिक्षा को वे दुधारू शस्त्र मानते हैं। ''चरित्रहीन और विनयहीन शिक्षित व्यक्ति पशु से भी अधिक भयंकर होता है। सुशिक्षित मनुष्य का ज्ञान और उसकी शिक्षा जनहित के विरोध में जा रही हो, तो ऐसा व्यक्ति समाज के लिए शाप साबित होता है।''[89] शिक्षा संबंधी उनके इन विचारों में और प्रेमचंद के विचारों में अद्भुत समानता है। प्रेमचंद भी शिक्षा को 'कुशिक्षा और सुशिक्षा' में बांटते हैं। डॉ. अम्बेडकर शिक्षा की अपेक्षा चरित्र को अधिक महत्व देते थे। तत्कालीन युवकों की धर्मविरोधी वृत्ति से उन्हें दुःख होता था।

[88] हिंदुची जातिप्रथा व ती मोडण्याचा मार्ग—डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर, पृ. 14.
[89] वही. पृ. 15

वर्तमान समय में अम्बेडकरी गीतकार गीतों के माध्यम से अम्बेडकर के विचारों का प्रचार–प्रसार कर रहा है। लोकगीतकार अपने गीत के माध्यम से दलित समाज को शिक्षा ग्रहण करते वक्त किन–किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, और आज शिक्षा ग्रहन करने पर दलित समाज की प्रगति अनेकों क्षेत्रों में हो रही है। इसका चित्रण कर रहा हैं।

शिक्षा के महत्व को प्रस्तुत करते हुऐ अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने बाबासाहब अम्बेडकर के शिक्षा संबंधी विचारों को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। शिक्षा से संबंधीत गीतों की सूची नीचे दी गई है– 'हमारा शिक्षक पढ़ाते', 'भीमराव मेरे गए विदेश में' आदि।

**हमारा शिक्षक पढ़ाते**

नहीं लिया पाठशाला में महार जाति वालों को
आज हमारे शिक्षक पढ़ाते ब्राह्मण के बेटे को ।। धृ।।

कितना लाचारी का जीवन था दलित का
भीम के कार्य से हो गया सोना मिट्टी का
अब रुबाब आ गया ढोर–चामार जाति को ।। 1।।

नहीं थी झोपड़ी बच्चा तपता धूप में
हाल देखते हमारे भीम क्रांतिकारी बने
अब बंगला शोभा देता है महारवाडे के पड़ोस में ।। 2।।

कल का महार संदीप वह आज साहब बना
है ब्राह्मण का चपरासी उसे पानी देने को
ऐसा सपना था भीम का आज पूरा हुआ
आज हमारे शिक्षक पढ़ाते ब्राह्मण के बेटे को। ।।3।।

**मेरा बेटा अफसर बनाया**

पहनकर सूट बूट चले शान से
कलम है जेब में दो
अरे बेटा मेरा अफसर बना
यह है बाबासाहब का रहना
ना था खाना पीना
ना था अच्छा रहना
ओरों का पहनावा देख, मन मेरा ललचाएं
आज थाट–बाट से चले बेटीयां
फिकी पड़े अभिनेत्रीयां
किताब नहीं देखी पुरखों ने कभी
जाना नही था समाज को कभी
हमारे समाज में थी अशिक्षा
उन्होंने सिखाया सभी को जीना
मेरा बेटा अफसर बना
समाज में थी अछूत हमारी परछाई

आज है बाबा हमारी राजशाही
ब्राम्हण की बेटीयां बनी हमारी बहू
करते एक ही थाली में भोजन
मेरा बेटा अफसर बना
शूर बनी भीम की कन्या
भीम ने दिया नया ज्ञान विज्ञान
दुश्मनों का उतरा गुरुर
भीम ने हटाई दुःख की परछाई
शूर बनी भीम की कन्या
तोड़ सारे घरेलू बंधन
शिक्षा से जोड़ा अपना संबंध
शेरनी जैसे दहाड़ रही है
शूर बनी भीम की कन्या
धन्य हुई कांचन भीम के कारण
गाती है पंचशील के गीत
है भीम की शीतल छाया
शूर बनी भीम की कन्या

**भीमराव मेरे गए विदेश में**

भीमराव मेरे गए विदेश में
भोली रमा संसार संभालती

उन्हें रात–दिन नींद नहीं
भीमराव मेरे शिक्षित हुए
शिक्षित होकर डॉक्टर बने
भीमराव मेरे मुंबई को गए
भीमराव मेरे गए विदेश में
भोली रमा संसार संभालती
शिक्षा लेकर बैरिस्टर बने
भीमराव मेरे दिल्ली गये
भीमराव मेरे गए विदेश में
भोली रमा संसार संभालती
शिक्षा लेकर वकील बने
भीमराव मेरे पुणे गये
भीमराव मेरे गऐ विदेश में
भोली रमा संसार संभालती

**दर्द तब होता बामण के पेट में**

क्या कहूँ माई तुझे
क्या कहूँ माई तुझे
भीम जब बोले
सूट बूट कोट पहनकर लोगों में
दर्द तब होता बामण के पेट में
क्या कहूँ माई तुझे

बामण ही शिक्षित होना

और बड़ा होना

महार जीवनभर अनपढ़ ही रहे

महार का लकडा उच्च शिक्षा ली

शिक्षा लेकर गऐ बड़े पद पर

अरे दर्द तब होता बामण के पेट में

दर्द तब होता बामण के पेट में

**भीम की महानता**

शिंदे बाई कहे, जोशी बाई को

उसके साथ बैठकर

तुम्हारा बेटा है डायव्हर मेरे साहब के गाडी को

वर्चस्व था तुम्हारा

किया भीम ने चमत्कार भारी,

हो गये बेटा–बेटी साहब

नहीं अब कमी किसी को

हर समय है सबसे आगे

अधिकार दिए समानता के

इसलिए मेरी बहू बनी साहब

बहू बेटा मिल कर जाऐ ऑफिस गाडी में

ज्ञान की होड़ में संघर्ष करता भीम का अनुयायी

भीम की महानता, कम नही कुछ भी अब

कांप्यूटर, वॉशिंग, टी.वी घर में आये
नौकर रहे घर में हमारे
करे इस्त्री बहू के साडी को
संदीप साहब बन गया नही शर्म भीम कहने को
भीमराव ने दी आवाज, गाते है गीत सुबह, शाम
अभी तक नही भूले भीमबाबा का

## 2.2.6 स्तुतिपरक लोकगीत

आज पूरे विश्व में दलित समाज 14 एप्रिल को बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर की जयंती मनाता है। बाबासाहब के जन्म का आनंद उत्सव मनाया जाता है। खास तौर पर बाबासाहब की जहाँ कार्य भूमि रही है, वहाँ पर उनके जन्म का महोत्सव एक एप्रिल से ही शुरू होता है, पूरा एप्रिल महीना यह उत्सव चलता है। अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। खास तौर पर इन कार्यक्रमों में भीम गीतों के गायन का विशेष महत्व होता है। गीतों के माध्यम से बाबासाहब के कार्य, उनके विचार उनकी प्रेरणा शक्ति, आदि को जीवित कर नयी ऊर्जा ग्रहन की जाती है।

अम्बेडकरी गीतों को लिखने वाले और गाने वाले कलाकार वर्तमान स्थिति में पूरे महाराष्ट्र में मिलते हैं। समाज में इन गीतकारों ने ही बाबासाहब को अपने गीतों के माध्यम से जीवित रखा है। जहाँ पर भीम गीतों को गाने का कार्यक्रम होता है। वहाँ यह गीतकार बाबासाहब की प्रतिमा को नमन करते है और गीतों की शुरूआत वंदन गीत से करते हैं।

इस गीत में तथागत बुद्ध, संत कबीर, महात्मा फुले, और बाबासाहब को याद करते हुए उन्हें नमन करते हुऐ गीतों को शुरू करते हैं। इन गीतकारों के गीतों में बाबासाहब के प्रति अत्यंत श्रद्धा भाव देखने को मिलता है।

वे अपने गीतों के माध्यम से बाबासाहब के कार्य, उनके विचार, उनके संघर्ष को याद करते हुए उनके प्रति आभार प्रकट करते हुए उनकी स्तुति करता है। अम्बेडकरी लोकगीतकार बाबासाहब के कार्य से मिले मानवीय मूलभूत अधिकार के प्रति आभार प्रकट करते हुऐ गीतों में उनकी स्तुति करते हैं। स्तुतीपरक लोकगीतों के नाम इस तरह है– 'तुम्हें भीम ने बनाया शेर', 'क्रांतिवीर महापुरूष पैदा हुऐ इस धरती पर', 'दर्द तब होता बामण के पेट में', 'बिंदी', 'भीमराव एक ही राजा, 'मेरा दादा कहता है बाप, मेरा बाप भी कहता है बाप', आदि।

**भीमराव एक ही राजा**

जिनका रूबाब राजे शाही
सूट बूट में हर दिन रहे
जिनका विश्व में गुण–गान
भीमराव एक ही राजा

जिनकी शेर जैसी चाल
सीना फौलादी, ढाल
अकेला ही लढा सीना ठोक के
बोलना सीखाया गुंगे को
जिनका विश्व में गुण–गान
भीमराव एक ही राजा

जाति वादियों की भागम भाग

जब पानी को लगाई आग

क्रांति का माहौल मैदान में

लड़ाई में जातिवादियों की झुकी शान

कालाराम मंदिर का थरथराऐं दरवाजा

जिनका विश्व में गुण–गान

भीमराव एक ही राजा

ज्ञानवान का उठा आवाज

बुद्ध धम्म का सजा ताज

जीवन जीने का बना आर्दश

जीवन में श्रेष्ठता का मिला दान

जिनका विश्व में गुण–गान

भीमराव एक ही राजा

**लगे रमा को**

लगे रमा को पुस्तक मैं बन जाऊं

हमेशा बाबा साहब के हात में रहूं

बाबा साहब को पुस्तकों का शौक

फुलों से भी बड़कर है उनमें सुगंध

उनको भी गर्व है हमेशा

बाबासाहब के हाथ में रहकर

पुस्तकों से बढ़कर नही कोई सेवा

आया कोई भी बड़ा सेवक

पुस्तकों से बढ़कर नही कोई सेवा

बताओ पुस्तक को मेरी दया करे

हमेशा बाबा साहब के हाथों में रहे

पत्नी और बच्चों से भी ज्यादा पुस्तकों में ध्यान

मेरे से भी बडकर है कितना भाग्यवान

बताओ पुस्तक को मेरी दया करे

हमेशा बाबा साहब के हाथों में रहे

**विश्व में एक नंबर**

हात जोड के, पेर जोड के

कमर झुका कर कहता हूं

सारे विश्व में एक नंबर मेरे बाबा है अम्बेडकर

इज्जत बड़ी है या वादा बड़ा है

गांधी बड़े है या संविधान बड़ा है

निकालो दिमाग का षड़यंत्र, रखो उपकारों का मान

सुविधा ली तो, तुम बनोगे कलेक्टर

मन रखो शुद्ध तभी बनोगे बुद्ध

व्यवहार मत रखो अशुद्ध, बुद्ध ने त्याग युद्ध

भीम विचारों के संग रखो नाता

तुम्हारे पास था क्या घर

सोने को मिटी में मिलाया तो सोना और निखरता है।

भीम है हजारों में एक

घर, मोहले को सजाएं

भीम हजारों में एक नबंर

सरे विश्व में एक नंबर

मेरे कर्ताधर्ता है अम्बेडकर

**ऐसी शरमाई रमा**

ऐसी शरमा के बावरी हुई

रमा भीम की पत्नी हुई

बड़े लाड प्यार से बड़ी हुई रमा

दिखने में लाखों में एक

सरल स्वभाव की सच्ची रमा

भीम के लिए जचे रमा सुंदर

जैसे चांद की चांदणी आयी

रमा भीम की पत्नी हुई

भीमा देखे, शरमाई रमा

कभी नही रमा रूठी

हमेशा हंसते रही रमा भीम की

भीम सहवास से धन्य हुई

रमा भीम की पत्नी हुई

## आया भीम जयंती का उत्सव

आया भीमजंयती का उत्सव बाई
ससुराल नही रहना बाई, मुझे मायके जाना
जाऊंगी मैं, देखूंगी मैं भीम जयंती
माँ का मायका माँ का मायका
ससुराल में खुशियां फिर भी
मायके जाने की मन में इच्छा
पति के मन को कैसे समजाऊँ
बाई मुझे मायके जाना है
जब सपने में मायका आया
मन मेरा व्याकुल हो गया
14 अप्रैल का दिन प्यार भरा
बाई मुझे मायके जाना है
सभी जमा होगी माताएँ
बुद्ध विहार में शाम को
विष्णु भाई लिखते है भीम गीत गाथा
बाई मुझे मायके जाना है।

## शिव और भीम

एक नीला और एक भगवा
दसों दिशाओं में लगाया दिया

एक बाघ तो एक सिंह
जीजाई का शिवाजी और भीमाई देवी भीम

कुलपती छत्रपती भोसले का वंश
गरीबों की रखी शान
दिया जग को प्रकाश नया
देकर प्राण बन गये वे महान
संविधान निर्माता अम्बेडकर
उन्होंने सजाये हमारे घर
दिखाया विश्व को पराक्रम नया
विश्व में है जिनका बोल बाला
एक बाघ तो एक सिंह
जीजाई का शिवाजी और भीमाई देवी का भीम

**युगपुरुष निर्माता रमाई**

युगपुरुष को साथ देना, उनकी हिम्मत बहुत बड़ी
गोबर के उपले जमा किऐ उनका मूल्य बहुत बड़ा
संकटों से घिरी। रमाई कभी ना डरी
स्वप्नों को साकार करणे वाली मेहनत बहुत बड़ी
मन में ना दुविधा। ऐसी थी रमाई
स्वयं की चिंता छोड़ी, समाज हित में लगी

जो रात–दिन संघर्ष किया। तूफानों में दीप को संभाला

चिंता उनकी मन में ऐसी क्रांति की ज्योति

रहकर भूखे पेट बाबा साहब पढ़े ग्रंथ भंण्डार

रमाई के राजगृह में दौलत बहुत बड़ी

**भीमराव सभी में नंबर वन**

भीमराव सभी में नंबर वन

गांधी, सावरकर, टिळक, आगरकर

आये और गये कितने

सूट बूट में सूट बूट में सुंदर दिखते

भीमराव साहब सभी में नंबर वन

जिनके ज्ञान से होता देश का सम्मान

देश को जोड़ा संविधान के कलमों से भीम ने

भीम शिल्पकार और संविधान निर्माता

झुका उनके सामने सारा अंबर

सूट बूट में सूट बूट में सुंदर दिखते

भीमराव साहब सभी में नंबर वन

बुद्ध, कबीर ,फुले की समता का मार्ग

लड़ाई क्रांती की, लगाई आग जन मानस में

चलाई कलम और किया निश्चय

करने समाज का भला
सूट बूट में सूट बूट में सुंदर दिखते
भीमराव साहब सभी में नंबर वन

## तारों की रोशनी कहने लगी

सुबह हो गई, प्रभा कहे भीम जयंती आई
तरों की रोशनी नीचे आकर कहने लगी
सफेड़ साड़ी पर सफेद चोली
पहन कर आयी गगन से भोली
आरती उतारने भीम की तड़पने लगी
तारों की रोशनी नीचे आकर कहने लगी
कोई घर में बनाये पुरन पोली
कोई गाये गीत भीम के
प्रतिमा के पास बैठकर
बुद्ध के तत्व ज्ञान देकर
मानवता की रक्षा कर हमें इंसान बनाया
गर्व से गीत गाये भीम के
नीले आकाश के नीचे
सुबह हो गई, प्रभा कहे भीमजयंती आई
तारों की रोशनी नीचे आकर कहने लगी

## भीम का गाना डी जे को बाजता

जय भीम नाम विश्व में गूंजता

जय भीम नाम विश्व में गूंजता

नाचने को लड़का लडकी नहीं शरमाते

गाना भीम का गाना भीम का

भीम का गाना डी जे को बाजता

अरे भीम का गाना डी जे को बाजता

यहाँ सभी दिखते हैं नीले—नीले

खुशी से जय भीम के बेटे

हमारे बाबा साहब की जयंती गाना बजाव कहती

खुशी से नाचने, गाने दो हमें

गाना भीम का गाना भीम का

भीम का गाना डी जे को बाजता

अरे भीम का गाना डी जे को बाजता

देखिऐ जुलूस निकला शान से

भीम के सैनिक हर जगह पर

देखो जुलूस जा रहा शान से

भीम के फ्लेक्स हर जगह पर

लाखो में खर्च सारा हमारा

जयंती का खर्चा हमें नहीं बोज

भीम का गाना डी जे को बाजता

अरे भीम का गाना डी जे को बाजता

संविधान लिखकर किया कमाल
वन मैन आर्मी बना भीमराव महान
अब करता है राज दिया भीमने आवाज
मधुर आवाज में साजन के गाना सजता है
भीम का गाना डी जे को बाजता
अरे भीम का गाना डी जे को बाजता।

## आऐ नीली नीली गाडी में

आया सूट बूट कोट पहन के
आया भीम वाडी में आया भीम का बच्चा
आया नीली नीली गाडी में
हात में नही पुस्तक और लेखनी
थी माथे पर गोबर की टोकरी
यह बात नही झूठी
बच्चों को लेकर रहते ऊँचे–ऊँचे मकानों में
आया नीली नीली गाडी में
सभी परंपरा को तोडकर
मेरे जीवन का हुआ सोना
अब नही किसी चीज की कमी
हीरे मोती की माला डाली है मेरी झोली में

आया नीली नीली गाडी में

कल थे हम बेजूबान

नही था शिक्षा का अधिकार

अभी हुआ है सीना चौडा

आज हर दिन बैठ है पुस्तक पढ़ते

आया नीली नीली गाडी में

**बाबा साहब की रिगंटोन**

गाना भीम का रूकेगा नहीं, अत्याचारों के कारण

फिर भी बच्चे बजाएंगे, बाबा साहब की रिगंटोन

प्राण गया तो भी हमारे जातिवादी की लड़ाई में

फिर भी भीम का फोटो लगाएंगे दिल में

माना है भीम को पिता यहाँ छोटे बड़ों ने

फिर भी बच्चे बजाएंगे, बाबा साहब की रिगंटोन

भीम के नाम पर अगर हुऐ हम कुर्बान

नसों नसों में बजाएंगे बाबा साहब का गाना

किया सोना जीवन का हमारे

यहाँ के क्रांतिकारों ने

फिर भी बच्चे बजाएगे, बाबा साहब की रिगंटोन

## भीमराव सभी में नंबर वन

भीमराव सभी में नंबर वन
गांधी, सावरकर, टिळक आगरकर
आये और गये कितने
सूट बूट में सूट बूट में सुंदर दिखते
भीमराव साहब सभी में नंबर वन

जिनके ज्ञान से होता देश का सम्मान
देश को जोड़ा संविधान के कलमों से भीम ने
भीम शिल्पकार और संविधान निर्माता
झुका उनके सामने सारा अंबर
सूट बूट में सूट बूट में सुंदर दिखते
भीमराव साहब सभी में नंबर वन
बुद्ध, कबीर ,फुले की समता का मार्ग
लड़ाई क्रांती की, लगाई आग जनमानस में
चलाई कलम और किया निश्चय
करने समाज का भला
सूट बूट में सूट बूट में सुंदर दिखते
भीमराव साहब सभी में नंबर वन

## तारों की छाया कापूर की काया

तारों की छाया कापूर की काया
माँ का प्यार था मेरा भीमराव
माँ का प्यार था मेरा भीमराव
अपने मुख का निवाला देता
माँ का प्यार भी देता था
भीमाई जैसे सभी बच्चों को
पंख का सहारा था मेरा भीमराव
माँ का प्यार था मेरा भीमराव
बोलते है सारे विकास की भाषा
नष्ट हुई निराशा नष्ट निराशा
सात कोटी के विकास के पहले
प्रगति का आधार था मेरा भीमराव
माँ का प्यार था मेरा भीमराव
हो गऐ नेता पैसों के धनी
वामन के मन आती पुरानी यादें
संघर्ष किया सारा रामकुंडा के लिए
पत्थरों, डंडे का सामना करने था मेरा भीमराव
माँ का प्यार था मेरा भीमराव
तारों छाया कापूर की काया।

## क्रांतिवीर महापुरुष पैदा हुऐ इस धरती पर

क्रांतिवीर महापुरुष पैदा हुऐ इस धरती पर

यह सत्य है सत्य

यह सत्य हे सत्य

भीमराव रामजी अंबेडकर

बाबासाहब अंबेडकर

नाम यह गूंजता है दुनिया भर

नाम यह गूंजता है दुनिया भर

क्रांतिवीर महापुरुष पैदा हुऐ इस धरती पर

भीमराव अंबेडकर धन्य यह

भीमराव अंबेडकर

## भोली रमाई

मिली भीम को भोली रमा

अरे जोड़—जोड़ के संसार बनाया

आ.....आ....आ.....

वलकर की थी एक बड़े मन की

कभी आस नही कि धन दौलत की

पती रमा का बैरिस्टर, बहू सुबेदार की

पसंद से पहने रमा फटे पुरानी साडी

स्वयं कष्ट करके साथ दी रमा

अरे जोड–जोड के संसार बनाया
रमा जैसी कोई होगी क्या?
अरे पति सेवा करने के लिए
अपना जीवन कोई अर्पण करेगा क्या?
खाकर सूखी रोटी दिन कोई दिन निकाले गा क्या?

**चैत्र की चांदणी , खुशी के पालना**

चैत्र की चांदणी , खुशी के पलना
झुला झुलाए भीमाई गीत गाते–गाते
सुभेदार रामजी के यह रत्न चौदह
आँखे भर कर कितना देखे
मिला है जैसे स्वाती नक्षत का अनमोल मोती
गूँजा सब संसार बजे ढोल नगाडे
भीम नाम से परिचित हुआ महु गाँव
भीम झुला झुले, फैले खुशियां चारों ओर
फलटन के सारे सिपाई जमे
इस महापुरुष को वंदन करने
खुशी के त्यौहार में गाती बुआ मीरा
अठारह सौ इक्यानबे की याद ताजी
कहे देखो सुदंर सखु दादी

बजते ढाल नगाडे खुशी के साथ

**मेरा दादा कहता है बाप, मेरा बाप भी कहता है बाप**

मेरा दादा कहता है, बाप
मेरा बाप भी कहता है, बाप
मैं भी कहता हूँ बाप
मेरा बेटा कहता है बाप
मेरी दादी भी कहती है बाप
मेरी लडकी कहती है बाप
ऐसा खोज, ऐसा खोज
ऐसा खोजकर देखो विश्व में
ऐसा है क्या किसी का किसी से
मेरे भीम के जैसा रिश्ता
क्या कहूं कोई सहायता नहीं करे
हम इंसान होकर भी इंसान न कहे

वह पैदा हुऐ, हमारे माँ–बाप बने
मरे हुऐ समाज को जागृत किए
ऐसे कभी हुआ नहीं
और नाही होगा
किताबों, ग्रंथों और इतिहासों में नहीं
देखो विश्व के गिनीज़ बुक में
ऐसा है क्या किसी से किसी का

मेरे भीम जैसा रिश्ता
हमारे लिए झेले उन्होंने अपमान
खुले किऐ हमारे लिए विकास के द्वार
समुदंर के पार लाचारी को छोड़ा
दलित सैना का हुआ वह सरदार
यह है उनका दान
इसलिए हमारा सम्मान
खिलखिला कर हंसता है इतिहास का पन्ना
देखते हुए चित्र देखते हुए चित्र
गाते हुऐ मन
ऐसा है क्या किसी का किसी से
मेरे भीम जैसा रिश्ता
उनके लिए जीना और उनके लिए मरना
ऐसा उपदेश कहे मेरे गुरु का भी गुरु
अच्छे धम्म को अपनाएं
चलो अब जनसेवा करे
ऐसा है क्या किसी का किसी से
मेरे भीम जैसा रिश्ता

## बिंदी

मेरे भीम के नाम की बिंदी लगाई रमाने

बिंदी लगाई रमाने बिंदी लगाई रमाने ।। धृ।।

रमा भूखी रही और बिंदी लगाई रमाने

ऐसी मधुर वाणी

सुनो रमा की कहानी

उसने पीके श्रम

बिंदी लगाई रमाने बिंदी लगाई रमाने ।। 1।।

ना गई आज्ञा के बाहर

कभी ना याद किया ससुराल

वही रही मन से

बिंदी लगाई रमाने बिंदी लगाई रमाने ।। 2।।

## भीम का बंगला

गुलाम देश के महूं गाँव में

गुलाम देश के महूं गाँव में

एक छोटे से घर में पला बड़ा

किंतु इंग्लंड जैसे देश में

है मेरे भीम का बंगला

घर में थी गरीबी परेशानी
फिर भी ज्ञान की दौलत कमाई
भीम के ज्ञान का सुगंध विश्व में फैला
किंतु इंग्लंड जैसे देश में
है मेरे भीम का बंगला
उनका करे कितना गुण गान
हुआ भीमराव देश का घटनाकार
आज संविधान के रंग में भारत रंग गया।
किंतु इंग्लंड जैसे देश में
है मेरे भीम का बंगल

**भीम मेरा गुरु भाई**

भीम कहूँ भीम मेरा गुरु भाई
अरे ! मेरा गुरूभाई भीम मेरे गुरु भाई
सोने की सलई से चावल को आकार
चावल को आकार देती चावल को आकार
भीम कहूँ भीम मिठाई का लड्डू
मिठाई का लड्डू भीम, भीम मिठाई का लड्डू
नाम लेती ही अच्छी बनी मेरी झोपड़ी
बौद्ध विहार को सोने का दरवाजा
मेरे ही बेटे को बुद्ध की आस
सफेद साड़ी को पहन कर जल्दी जल्दी
बाबा साहब की दीक्षा लेती मेरी माता

दीक्षा लेती मेरी माता, दीक्षा लेती मेरी माता

**तुम्हें भीम ने बनाया शेर (हिंदी अनुवाद)**

बहुत परिश्रम से सुख का करके त्याग
तुझे भीम ने बनाया शेर, क्यों फिरता है भेड़िया के पीछे?।। धृ।।
सिर्फ दिखने के लिए दिखता है तू भीम अनुयायी
तुम्हारी दहाड़ कान को क्या नही सुनाई देती।
शरीर झटका के उठ गरज
तुझे भीम ने बनाया शेर, क्यों फिरता है भेड़ियों के पीछे ? ।। 1।।

तुम्हारे शरीर में है बाघ की ढाल
दहाड़ अब ऐसे जबड़ा खोल लंबी ले झड़प
कर दुश्मन की भागम भाग
तुझे भीम ने बनाया शेर, क्यों फिरता है भेड़ियों के पीछे ? ।। 2।।

ऐसे पिंजरे का कैदी मत बनो तुम
उस सर्कस जैसे तुम गोल चक्कर मत लगाओ
उठो वीर तुम भीम जैसे दिखाओ क्रांति की आग ।। 3।।

तुम्हारे हात में रखो नीला झेंड़ा
भीम का लगाओ माथे पर टीका
टीका भीम के विचारों का
तुझे भीम ने बनाया शेर, क्यों फिरता है लोमड़ी के पीछे ?

**वराडी गीत**

बगल में बच्चा हाथ में झाड़ू
सिर पर गोबर की टोकरी
ना कपडा ना लता
जूठन भत्ता
बेइज्जती थी बड़ी
मेरे भिमने बापने रे
ओ मेरे भीमने
गोद मेरी सोने से भर दी।
टूटी झोपड़ी को था टुटा दरवाजा
फटी साड़ी में बंदी थी सतरा पैबंद
हजार गांठ
बेटे हुए साहब अफसर और बहू हुए अफसरीन
बताते है ज्ञान की बाते
मेरे भीम ने मेरे बाप ने रे
मेरे भीमने गोद सोने से भर दी।

### 2.2.7 क्रांतिकारी लोकगीत

दलित समाज को हजारों सालों तक मनुवादियों ने गुलामी में रखा। उनके साथ अमानवीय अत्याचार किए। उनको सभी सुविधाओं से वंचित रखा। उनको यह एहसास कराया गया कि तुम अछूत हो, तुम जानवर हो तुम इंसान नहीं हो। इस तरह की दुखद स्थिति से दलित समाज गुजरा है। ''क्रांति का जन्म शांति के गर्भ में नहीं होता। सामाजिक एवं राजनीतिक अशांति ही उसके जन्म का मूल कारण होती है।''[90] जब महात्मा फुले आये तो उन्होंने अपने समय में इस गुलामी के खिलाफ आवाज बुलंद की। उन्होंने सबसे पहले शिक्षा के महत्व को समजते हुए, दलित समाज में शिक्षा का प्रचार प्रसार किया। खास तौर पर लड़कियों की शिक्षा के लिए उन्होंने कई स्कूल खोले। यही से दलित समाज के परिवर्तन की शुरूआत हुई। आगे चलकर बाबासाहब ने महात्मा फुले के विचारों को ग्रहण कर भारतीय दलित समाज में नये क्रांति का आगाज किया। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने मनुवादी संस्कृति को नष्ट करने के लिए सबसे पहले मनुस्मती का दहन किया। उन्होंने दलित समाज के पानी के लिए चवदार का सत्याग्रह, कालाराम मंदिर का सत्याग्रह, आदि कई आंदोलन किया। इन सभी क्रांतिकारी आंदोलनों को सिर्फ पुस्तकों में पढ़ा जा सकता है किंतु वर्तमान समय में इन क्रांतिकारी आंदोलनों को अम्बेडकरी गीतों में जीवित रूप में देखा जा सकता है। यह लोकगीत कार बाबासाहब के कार्य, उनके विचारों को क्रांतिकारी अंदाज में अभिव्यक्ति कर रहे है।

---

[90] मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं.119, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई.

दलित समाज में क्रांतिकारी गीतों की आवश्यकता जरूरी है। क्योंकि आने वाली पीढ़ी को इतिहास के बारे में जानकारी मिले और वे हमारे इतिहास पर गर्व करें। क्रांतिकारी लोकगीतों की सूची नीचे प्रस्तुत की गई है—'महार की तलवार', ' चौदार तालाब पर आये भीम', 'क्रांति गीत', 'नये क्रांति की दिशा में एक ललकार है' आदि।

**महार की तलवार**

शूर वीर की तलवार, उस महार की तलवार
कैसे फिरे चरचरा
चुंडी के साथ कटा पेशवाओं का घंमड
विश्व में हुई यह लड़ाई नई
पच्चीस हजार पर पड़े पांच सौ भारी
भीमा कोरे गांव में बही रक्त की नदियां
चुंडी के साथ कटा पेशवाओं का घंमड
अरे मर्द की औलाद, मर्द की जात
नाम दर्ज किया मैंने इतिहास में
भटों के सैनिक मारे चर चरा
चुंडी के साथ कटा पेशवाओं का घंमड
कप कपाया शनिवार वाडा, पगड़ी भी कप कपाई
मनु की सेना पूरी घबराई
रन स्तंभ साक्ष है, करे सुनील वीरों, को वंदन
चुंडी के साथ कटा, पेशवाओं का घंमड

**नये क्रांति की दिशा में एक ललकार है**

नये क्रांति के दिशा में एक ललकार है
भीम का ज्ञान दूध की धार है ।। धृ।।

करार रुतबा चाहिए आज मुक्ति के लिए
मिटाया भीमने अपने आज को तुम्हारे लिए
प्रेरणा लो अब तुम्हारा उद्धार है ।। 1 ।।

ज्ञान अर्जित कर खुद को कर जागृत
लगा बाजी प्राणों की भीम के सरदार
नयी चेतना पैदा करेगी क्रांति यह भीम की
तोड़ इस प्रथा को मत कर अब गुलामी ।। 2 ।।

जंजीरों को तोड यही तुम्हें पुकार है।
निकाल फेक इन रूढ़ीवादी वस्त्रों को
रथ खींचने के लिए अग्र पंथी का
नयी क्रांति की दिशा में एक ललकार है
भीम का ज्ञान दूध की धार है ।। 3।।

औरंगाबाद विश्वविद्यालय को डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर यह नाम देने के लिए 15 साल तक संघर्ष करना पड़ा न जाने कितने प्राणों की आहुति लोंगों ने दी।

भीम नाम के लिए हम खून बहाऐ है

किसी में दम है तो नाम मिटाए ।। धृ।।

जलाया जिसने ज्ञान का दीया है।
नाम नहीं उन्हीं का आया है।
नाम भीम के कारण आ गया इसे मोल
मिटा के दिखाओ इसे है कोई मायका लाल ।। 1।।

गौतम ने प्राण गवाया, कौची राम ने लढ़ी
सुवासिनी और प्रतिभाने जातिवादियों को सिखाया पाठ
परिधान की महीमा गाऐंगे यहाँ के हर एक ग्राम
है कोई मायका लाल तो मिटा के दिखाओ नाम ।। 2।।

नाम भीम का देख कर जल उठे बाम्हणवादी
तिल तिल कर मर रहे है ये जातिवादी
हो गया है इन्हें घाव देखकर भीम का नाम
है कोई मायका लाल तो मिटा के दिखाओ नाम ।। 3।।

**चवदार तालाब पर आए भीम चवदार तालाब पर आए भीम**

चवदार तालाब पर आए
भीम चौदार तालाब पर आए भीम
सोचा नहीं कुछ भी

भीम चवदार तालाब पर आये

न डरे किसी धमकी को

वे गए चलकर तालाब

पानी पिए स्वयं

और पिलाए जनसमूह को

धैर्य नहीं खोया

सोचा नहीं कुछ भी

भीम चवदार तालाब पर आए

मेरे भीम जैसा है क्या कोई ज्ञानी

अरे शेर की तरह आए भीम शेर की तरह आये

भीम चवदार तालाब पर आए भीम

सोचा नहीं कुछ भी

भीम चवदार तालाब पर आए

**प्रहार जयभीम का**

लगाई हुई वह तेज धार चाहिए।

प्रहार जयभीम का आर पार चाहिए

मनुवादी लोग बहन के ऊपर आंख लगाए

भीम शक्ति से तुम करो उस पर हमला

कोई छुआछूत कर बंद पाठशाला

खोज निकालो वह कपटी

मनु के मानसिकता वह कपटी

भीम के प्रतिमा का अपमान होने पर

दंड दो उस कपटी मनुवादी को

समाज भीम के उपर प्राण न्यौछावर करे

किंतु कुछ नेता गहरी नींद लेते

बलवान भीम का सरदार चाहिए।

भीम की तरह क्रांति करो ऐसा मन में संकल्प करो

**पहने चुड़िया हाथों में**

याद करो भीम ने जो कहाँ

अपने अधिकारों के लिए लड़ो, खून बहाओ।

भीम के वीरों अब उठो, लडो लड़ाई

नहीं तो भरो हाथों में चुडियां

पढ़ो, संगठित रहो, आर्दश बनों

संगठित करो और आर्दश बन,

लडो लड़ाई भीम की, उठो भीम वीरों

समय नही घर मैं लाचार बन बैठने का

जातिवादियों के षड़यंत्र को तोड़ो

भीम के वीरों अब उठो, लड़ो लड़ाई

मर्द की तरह जिओ,

जैसे भीम की वाणी मर्द कैलास कहे युवाओं को

अपने अधिकारों के लिए लडो, खून बहाओ।

### 2.2.8 वैचारिक लोकगीत

बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर से प्रेरणा ग्रहण करते हुए लोकगीतकारों ने अनेक गीतों की रचना की। इन लोकगीतकारों ने बाबासाहब के जीवन संघर्ष के प्रत्येक क्षणों को गीतों की पंक्तियों में बसाया है। अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने बाबासाहब अम्बेडकर के समता, बंधुत्व, शिक्षा, संगठन, और संघर्ष आदि विचारों को आधार बनाकर भी गीत रचना की है।

धर्म की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा, ''मैं आपको फिर से यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि धर्म मनुष्य के लिए नहीं है। जो धर्म तुम्हें मुनष्य के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहता, जो धर्म तुम्हें पीने के लिए पानी नहीं देना चाहता, वह धर्म, धर्म कहलाने लायक नहीं होता। जो धर्म तुम्हारे ज्ञान और शिक्षा के अधिकार छीन लेता है, जो धर्म आपने अनुयायियों को अपने ही धर्मावलम्बियों से मानवीयता का आचरण करना नहीं सिखलाता, वह धर्म न होकर एक बीमारी है। जो धर्म अपने अनुयायियों को अमंगल जानवरों के स्पर्श को सहने को कहता है परंतु उसी समय अपने ही धर्मावलम्बियों के स्पर्श को पाप घोषित करता है, वह धर्म न होकर विशुद्ध पागलपन है। जो धर्म कुछ वर्गों को धनसंचय नहीं करने देता, हाथों में शस्त्र लेने की इजाजत नहीं देता, वह धर्म–धर्म न होकर मनुष्य जीवन की विडम्बना है। जो धर्म अज्ञानियों को अज्ञानी,

निर्धनों को निर्धन रहने की सीख देता हो, वह धर्म न होकर भयावह कैदखाना है।''[91]

इन लोकगीतकारों ने तथागत गौतम बुद्ध के शांति, अंहिसा, सम्यक जीवन आदि विचारों को अपने गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इन वैचारिक गीतों के नाम इस प्रकार है – 'रास्ता', 'बनाउंगी नयी पीढ़ी', 'वह धम्म अमर करता है', 'बनाया बंगला नया', 'महाज्ञान के महामानव को', 'यह हंस किस का', आदि।

**बनाया बंगला नया**

मुझे मालूम है, तुझे कमी नहीं कुछ भी
अभी बंगला बनाया नया
उसमें भीम का फोटो नहीं
तेरे बंगले को करना क्या?
ईश्वर लाता घर
कैसे तेरे समज में आता नहीं
बुद्ध होकर दीक्षा लेकर
मन से अंधकार जाता नहीं
तेरे दरवाजे पर गणेश की मूर्ति
तुम्हें शर्म क्यों नहीं आती
घर में बुद्ध की नहीं मूर्ति
तेरे बंगले को करना क्या
राजनीति छोड़ के भ्रष्टाचार करके

[91] हिंदुची जाति प्रथा मोडण्याचा मार्ग–डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर, पृ. 39

जैब भर के पैसा कमाया

बाप नशा करे

बेटा नाचते–नाचता रहे

कितना कहे उसे

सुनता नहीं मेरी

घर से निकाला मां बाप को

सुनता नहीं कोई किसी का

तेरे बंगले को करना क्या

उसमें भीम का फोटो ही नाही

**56 की विजया दशमी विश्व में गूंजी**

पीपल की छाया में भीम प्रतिमा विराजमान

तोड़कर पुरानी नीति और पुरानी परंपरा

सच्चा, महान धर्म हमें बौद्ध ने दिया

त्रिशरण, पंचशील विश्व में फैले

होकर इंसान दूर रखा इंसान ने इंसान को

मां की ममता भीम ने दी इन तड़पते इंसानों को

बुद्ध के विचार लाखों लोगों तक पहूंचाएं

धन्य हुआ समुंदर, धरती मां गर्व करे

बुद्ध की प्रतिमा जब ह्रदय में विराजे

बाबा के चेहरे पर तेज रूप दिखे

तीन बार वंदन कर संदीप, धम्म गीत गाऐ

आशा का दिप जलाएं यह गीत दिलों में

**महामानव का महाज्ञान**

महामानव का महाज्ञान
महान त्यागी उस बुद्ध गौतम को
दुखी जीवों को देखने वाला
मार्ग सत्य का दिखाता हमें
ऐसा धम्म दीन दुखीयों का प्रकाश,
मार्ग सत्य का दिखाता हमें
महान त्यागी बुद्ध गौतम को
वंदन करतो हूँ भीम को
बड़ी–बड़ी बातें कहते हैं
मेरे भीम के सामने लगते छोटे
महामानव का महाज्ञान
महान त्यागी बुद्ध गौतम को
जाति पर थी जुल्मी सत्ता
मेरे भीम ने रची है उसकी चिता
रूढ़ी कपकपाई उस पराक्रम से
महान त्यागी बुद्ध गौतम को
वंदन करतो हूँ भीम को

**बनाऊंगी नई पीढ़ी**

बनाऊंगी नई पीढ़ी मैं

रमा तेरी छोटी बेटी मैं
रही ना मैं अबला नारी
शक्ती देती भज, साऊ, सुजाता
गुलामी की बेड़िया तोडूंगी मैं
सभी को करके लेकर जाना
विकास की सीढ़ी पर
कठिन मार्ग हजारो संघर्ष रमा
वस्त्र निवारा ना मिले तो भी
पुराणी पहनूंगी साडी
ऐसा मैं बना लड़ते लड़ते
भीम की गाथाओं को पढ़ते पढ़ते
छू लूंगा ऊंचाई को
नारायण का मधुर गीत
पिलाते रहेगा महाड का पाणी
उस पाणी में से जैसे पाणबुडी

**यह हंस किस का**

लगा तीर हंस को अचानक
गिरा जमीन पर हो गया घायल।। धृ ।।
कापता, छटपटाता, उसका प्राण छोटा
यह हंस किसका यह हंस किसका

देखा युवराज ने राजहंस को
भागते हुए गये उस जगह को
उठा के पीनी पिलाऐ उस हंस को
धीरे से बाण निकाल दावा लगाई ।। 1 ।।

उसी वक्त चचेरा भाई देवदत्त आया
सिद्धार्थ को देखकर बोला
शिकार है मेरी हंस दो मुझे
में उसका मालिक हूँ मैंने मारा तीर ।। 2 ।।
अरे रे रे देव दत्ता तूने ये क्या किया
उस जीव को मार के तूने क्या पाया
देखो मैंने मृत्यु के दरबार से उसे बचाया
तूने मारा किंतु मैंने उसकी रक्षा की ।। 3 ।।

मुझे यह तत्वज्ञान मत सीखाओ
शिकार करना यह क्षत्रियों का धर्म है
मेरे शिकार पर मेरा अधिकार है गौतम
वाद विवाद से दोनों में बात बड गई
ऐसा असंभव प्रश्न सुलझ ना सखा
फिर राजा के सामने प्रश्न प्रस्तुत किया
बोले न्याय दो इस दरबार में
शुद्धोधन राजा ने सोचकर दे दिया निर्णय
मारने वाले से श्रेष्ठ है प्राण बचाने वाला

यह हंस सिद्धार्थ का है यह सिद्ध कर दिया ।। 4 ।।

सिद्धार्थ ने उस हंस को जीवदान दिया।
डरे हुऐ हंस को आकाश में छोड़ दिया
गौतम को समाधान मिला।
समता, बंधू भाव करुणा सागर,
गौतम बुद्ध अमर हो गऐ
वह धर्मज्ञान, भूषण क्रांति के सागर
मैं नमन करता हूं
यह हंस किसका यह हंस किसका ।। 5 ।।

## रास्ता

रास्ता फुले का छोड़ के
अंबेडकर विचारों को तोडकर
नहीं जा पाएगा आगे
तु नहीं जा पाएगा आगे
सूरज की किरणें निकली
फुले के विचारों की चर्चा
नहीं कर पाओगे बंद
मनुवादी विचार धारा
मेरे बाबा साहब को
नहीं थी पसंद कभी
छोड़ के तथागत को

वामन तेरे रथ

नहीं हील पाऐगा

कभी नहीं हील पाऐगा

**वह धम्म अमर करता है।**

जो बुद्ध पूजा करते है वह धम्म अमर करता है।

त्रिरत्न का अनुसरण करने से वह धम्म अमर करता है।

धम्म का निर्माता बुद्ध दीनों का दाता

संघ बाताएं रास्ता धम्मपद या गाथा

जो मार्ग स्वीकारता है, वह अमर होता है।

बुद्ध पुजा से सद्धम्म चिरस्थायी होता है।

तन, मन, धन जो लगाएं उससे पुण्यवान दूसरा कोई नाही

पीड़ितों के दुःख नष्ट करें, वह धम्म अमर करता है।

सचेत रात–दिन धम्म का सच्चा अनुयायी

बुद्ध संदेश हो घर–घर में वह बुद्ध अमर करता है।

सुक्तों का दिन–रात पाठ करें

बुद्ध संस्कृति दिनचर्या, जीवन का रास्ता

सूर्यकांत धम्म का अनुसरण करता, वह धम्म अमर करता।

### 2.2.8 वंदन लोकगीत

अम्बेडकरी लोकगीतकार कार्यक्रम की शुरुआत वंदन गीत से करते है। वंदन गीत में लोकगीतकार तथागत गौतम बुद्ध, कबीर, ज्योतिराव फुले, शाहू महाराज, सावित्रीबाई फुले, बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर आदि महापुरुषों को नमन करते हुए, अपने शब्दों के माध्यम से फुलों को अर्पित करते हुए अम्बेडकरी लोकगीतकार कार्यक्रम की शुरुआत करते है।

बुद्ध, कबीर, फुले, शाहू और भीमराव को
वंदन करता हूँ पहले इन महामानवों को ।। धृ ।।

जाता हूँ शरण पहले उस बुद्ध गौतम को
प्रेम से जीता है जिसने, इस विश्व और समाज को
हाल जीवन का वह दुः ख खोजते समय ।। 1 ।।

संतों की परंपरा इस भूमि को मिली
सर्वश्रेष्ठ रही कबीर की शैली
गुरु माना उस भीमराव ने कबीर को ।। 2 ।।

जातिवादी गिद्धों के मुँह बंद किए
ऐसा दीन दलितों का महात्मा ज्योतिबा फुले
जिसने सिखाया स्त्रियों को महागुरु कहो उनको ।। 3 ।।

शाहू राज्य का था ध्यान इस जनकल्याण पर

दलित, शोषित और बहुजनों पर
लोकप्रिय हुआ राजा जनहित करने को ।। 4।।

जिसने लाया है इस समाज को वैभव में
नाविक होकर भीमराव ने इस बहते प्रवाह में
दादाराव कहे नहीं देखा कभी झुकते भीम को ।। 5।।

## वंदन गीत

विद्वान बने विश्व में भीमराव
शरण उन्हें जाएंगे
महापुरुष के कार्य को
काव्य के फुल अर्पण करेंगे
ज्ञान की खान थे भीमराव
ज्ञान के बल पर गुंजता नाम
भीम ज्ञान की घर घर में ज्योति
ऐसी लगाएंगे
विद्या के डॉक्टर भीमराव बने
एक ही विद्वान विश्व में मिला
भीम के ज्ञान महती अब देखाएंगे।

चलो जाएंगे भीम प्रथ पर

मध्यम मार्ग को स्वीकार कर
एक सुर में आएंगे सारे
वंदन गीत गाएंगे

**गौतम तुम ही मेरे भीम गुरु के गुरु**

इस शुभ अवसर पर तुम्हें याद करू
गौतम तुम हो मेरे गुरु के गुरु
कार्य है तुम्हारा महान
विश्व ने माना पहला गुरु
जो नही माने वह है स्वयं का शत्रु
तुम्हारी महानता समजी अंतकरण ने
इसलिए हो मेरे गुरु के गुरु
सबसे पहले मैं तुझे वंदन करू
तुम्हारे सिद्धांत है हृदय में
धम्म का अनुयायी बना
अपनी खुशी से आया
तेरे चरणों में जीऊ या मरूँ
गौतम तुम हो मेरे गुरु के गुरु

## निष्कर्ष

मराठी से दलित साहित्य की शुरुआत होती है। इसमें कोई मतभेद नहीं है। महाराष्ट्र में कुछ युवकों ने पढ़ लिखकर दलितों के लिए सामाजिक आंदोलनों को पुनर्जीवित किया। इन आंदोलनों को दलित समाज ने पूरी शक्ति के साथ आगे बढ़ाया। अब इन सुशिक्षित लोगों ने साहित्य को हथियार बनाकर अपने इतिहास की जड़े खोजने की कोशिश की और झूठे इतिहास को नकारते हुए दलित समाज का इतिहास लिखने की कोशिश की। साहित्य की अनेक विधाओं में उन्होंने अपने अनुभवों को वाणी दी। सबसे पहले लोकगीतों के माध्यम से इन दलित लेखकों ने अम्बेडकरी गीतों की रचनाएँ की। इन रचनाओं को दलित समाज तक पहुँचाया। इसके बाद मराठी में दलित आत्मकथाओं से इन लेखकों ने स्वयं के और दलित समाज के अनुभवों को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया। उपन्यास, कविता, कहानी आदि विधाओं से दलितों ने अपने यथार्थ अभिव्यक्ति कर मनुवादी मानसिकता को चुनौती दी। इन्हीं सब रचनाओं को हिंदी के पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास मराठी के अनुवादकों ने किया। दलित साहित्य के अनुवाद की परंपरा को वर्तमान समय में भी जारी है। नयी–नयी रचनाओं को मराठी के अनुवादक हिंदी में अनूदित कर रहे हैं।

अम्बेडकरी लोकगीतों का मराठी से हिंदी में अनुवाद कर हिंदी पाठकों को मराठी दलित आंदोलनों और दलित संस्कृति से रूबरू करने का यह प्रयास महत्वपूर्ण है।

# तीसरा अध्याय

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का विश्लेषण

3.1 सामाजिक रूढियों के प्रति विद्रोह

3.2 शास्त्र का विरोध

3.3 वर्चस्ववादी राजनीति का विरोध

3.4 ऐतिहासिक परंपराओं का खंडन

3.5 वर्ण व्यवस्था का विरोध

3.6 राज्य समाजवाद का समर्थन

3.7 दलित समाज का यथार्थ

3.8 मानवतावादी चेतना के स्वर

**निष्कर्ष**

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर को गुजरे 64 साल हो चले है। आज भी उनके दिए हुए संवैधानिक अधिकारों के प्रति दलित समाज उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। यह कृतज्ञता परंपरा से चली आ रही है, इसलिए उनके जन्मोत्सव का महाआयोजन किया जाता है। 14 एप्रिल इस महीने में लोग भीमगीतों का आयोजन करते हैं। महाराष्ट्र में भीमगीतों को गाने वाली बहुत से जलसा मंडली देखने को मिलेगी। इस जलसा में बहुत बड़ा जनसमुदाय उमडता हैं। जलसा मंडली में छोटे स्तरों से लेकर बड़े स्तरों की मंडली देखने को मिलती हैं। बडे स्तरों के जलसे शहरों में किए जाते है क्योंकि इन के पास आयोजकों ने अपने पैसे लगाऐ होते है। इस तरह के जलसों में बडे–बडे साउंड सिस्टम, बड़े कैमरा, लाईटिंग, बहुत सारे लोगों के द्वारा इस का आयोजन होता है। छोटे स्तरों के जलसों को गांवों, कसबों और पंचायतों में इनका आयोजन होता है। इन जलसों में बहुत कम आर्थिक सहायता मिलती है, इसी कारण इनके पास कुछ माईक, और संगीत का सामान होता है। किंतु इन दोनों जलसों में एक बात समान है, वह है चेतना, ऊर्जा। बाबासाहब के कार्य और उनके संघर्ष पर आधारित यह संगीतमय जलसों से पूरा वातावरण ऊर्जा से भर जाता है। दोनों जलसों में यह देखने को मिलता है। 21वी सदी में अंबेडकरवादी गीतों से सभी परिचित है। किंतु बिना किसी पृष्ठभूमि के अंबेडकरवादी गीतों को समझना असंभव सा लगता है। इसलिए यहाँ गीतों को विभिन्न पृष्ठभूमि पर उतारकर परिचय देना चाहता हूँ। सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक, मानवतावाद आदि क्षेत्रों में अंबेडकरवादी गीतों को विभाजित करके

दलितों की समस्याओं को समझने योग्य तथा आसान करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

सर्वप्रथम साहित्य की उत्पत्ति कविता से ही हुई है। दलित साहित्य का मूल भी कविता को ही मानना पड़ेगा। दलित साहित्य में प्रथमतः दलितों ने अपने सुख, दुःखों की घटनाओं को गीत रूप में व्यक्त करके इसका इतिहास पीढ़ी दर पीढ़ी तक बरकरार रखा है। लोकगीत, जनपद गीत आदि इसके योग्य उदाहरण हैं। इससे यह अंदाजा लगा सकते हैं कि साहित्य का जनक मूल रूप से दलित, मजदूर व्यक्ति ही है। फिर इसको लिपिबद्ध किया गया। उदाहरण के लिए मजदूरों ने किसी कठिन परिश्रम से थकान महसूस करने के पश्चात मन में उभरे भाव को गीत पद्धति में गुनगुनाते हुए कार्य करता है। खेत—खलिहानों में रासी करते समय किसान अनेक लोकगीतों को गाते हुए अपना काम निपटाते हैं। कभी—कभी मन में उमड़े हुए दुःख दर्द, कष्ट की भावनाओं को गीत रूप में उतारकर दूसरों के सम्मुख रखता है। उन अनुभवों को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए गीत पद्धति की सहायता से गरीब, किसान, लाचार व्यक्ति इन पंक्तियों को पुनरुच्चार करने लगा है। इसे ही हम गीत या कविता या लोकगीत के नाम से पहचानते हैं।

कविता हृदय के सहज भाव से उत्पन्न होती है। यह जीवन में कष्ट, दुःख दर्द आदि भावनाओं के अनुभवों के भयानक ज्वालामुखी से फूटती है। ऐसी कविताओं में ना कोई लय दिखता है, ना कोई ताल श्रृंगार या अंलकार। यह तो अपने अनुभवों से प्रस्फुटित होती है। ऐसा ही अनुभव अंबेडकरी लोकगीतों में दृष्टिगोचार होता है। युगों—युगों से दबाये गए

दलितों के मन अब अणु बॉम्ब सा विस्फोट होकर, जातिवादियों की धज्जियां उड़ा रहा है और उन्हें चेतावनी देकर कह रहे है, कि सदियों से हमें दुःख देते आने वालों, इसकी एक झलक तुम्हें भी लगनी होगी, वही तमाचा दलित साहित्य अनेक विधाओं के माध्यम से दे रहा है। सदियां बीतेगी लेकिन दलितों से निर्मित साहित्य अब नहीं मिटेगा। चाहे युग घटेगा। लेकिन दलितों की कही बात नहीं मिटेगी। यह सभी को पता है कि वाल्मिकी के विचार अमर हैं। व्यास के महत्वपूर्ण तत्व, बारहवीं शताब्दी के महात्मा बसेश्वर के समय के अनुभवी शरणों के वचन, तथा आधुनिक युग के निर्माता में डॉ. अंबेडकर का संविधान और वर्तमान में दलित साहित्य का सच एक महत्वपूर्ण कार्य है।

हिंदी के दलित साहित्यकार, डॉ. तेजसिंह का कहना है–''दलित साहित्य की शुरुआत कविता से होती है, और आज भी कविता उसकी प्रमुख विधा है। आज की दलित कविता अपनी परंपरा को आत्मगत करके विकसित हुई है। उन्हीं के रचनात्मक अनुभूति में बदलकर दलित कविता को परिपक्वता के मुकाम तक ले गई है।''[92] मुख्यतः संत साहित्य में कविता या अभंगों को देख सकते हैं। हिंदी साहित्य में भी संतों की वाणी का दर्शन कविता के रूप में ही होता है। आगे चलकर इस विधा को दलित साहित्य में बड़े ही तेज गति से अपनाया गया है।

हजारों वर्षों से सहा गया अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि समस्याओं को दलित सहन करने के कारण अब वही दमन की भावना विस्फोटक

[92] डॉ. भीमसेन निर्मल, डॉ.वी. कृष्णा– भारतीय दलित साहित्य, पृ. 21

बनकर गीतों का रूप धारण कर रही है। इसलिए, क्रोध, विद्रोह से भरी दलित कविताओं और गीतों ने भारतीय भाषाओं में अपनी अलग–सी पहचान बना ली है। दलित गीतों ने शोषित जनों को काव्य सृजन का विषय बनाया, उनके सुख–दुःखों को गीतों में जीवित रूप देकर सजीव बनाया हैं। सामाजिक अन्याय से दबे हुए दलितों की समस्याओं को नया रूप दिया है। मराठी दलित साहित्य का असर समस्त भारतीय भाषाओं के दलित साहित्यकारों पर भी होने लगा। आधुनिक मराठी साहित्य की बात करे तो दलित चेतना का स्वर केशवसुत की कविताओं में दिखाई देता है। उनकी कविताओं में परंपरागत विरोध दिखाई देता है। उन्नीसवीं सदी में इन्होंने अपनी कविता मरणासन्न अचेतन में नई चेतना भर दी। धीरे–धीरे दलितों की समस्याओं का जिक्र कविताओं में होने लगा फिर भी ब्राह्मणवाद का जोर कम नहीं हो रहा था। केशवसूत के पश्चात मराठी साहित्य में वा. सी.मर्ढेकर की कविताओं में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति मिली। इन दोनों मराठी के महान कवियों ने दलित साहित्य की ओर प्रेरित होने का संकेत दिया है।

मुख्यतः दलित साहित्य की प्रेरणा महात्मा ज्योतिबा फुले तथा डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की प्रेरणा से ही मानी जाती है। 1960 के पश्चात अनेक पत्र–पत्रिकाओं ने भी दलित साहित्य को प्रकाशित करने का महत्वपूर्ण कदम उठाया है। जो कि भाषा प्रधान की अनेक निषिद्धताओं को खारिज करके इन नई अनुभूतियों को गीतों एवं कविताओं में स्वीकृति दी है। इस भाषिक आंदोलन ने दलित तथा अविकसित जातियों के लेखकों में अहसास जगाया कि उनकी आवाज सुनी जा सकती है। इस आंदोलन में

मुख्य रूप से 'राजा ढाले' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने कई पत्रिकाओं का संपादन करके अनेक दलित साहित्यकारों की नई रचनाओं को प्रकाशित करने लगे। इसलिए अब दलित साहित्यकारों में धैर्य भरा कि सामाजिक अव्यवस्था के विरोध कुछ कर सकते हैं।

दलितों में शोषण के विरोध में आक्रोश उभरा और कुछ कर दिखाने की लालसा मन में पैदा हुई। यह कार्य प्रथमतः महाराष्ट्र में जोर–शोर पर चल रहा था। किंतु हिंदी प्रांत में इसका अभाव रहा है। इसका मुख्य कारण हिंदी भाषा–भाषी क्षेत्रों के दलितों ने शिक्षा के महत्व को नहीं समझा। किंतु जब देश आजाद हुआ तब उत्तर भारत के दलितों में शिक्षा का सिलसिला शुरु हुआ और दलितों में अस्मिता की चेतना जागने लगी। हिंदी भाषा क्षेत्र में दलितों की समस्याओं पर दलित कवि अछूतानंद ने पहले ही दलित कविता लिखी थी परंतु इसका परिचय आम दलितों को अस्सी के दशक में हुआ है।

मराठी दलित साहित्य का परिचय तो संत साहित्य से होता है परंतु उसका असली रूप, महात्मा ज्योतिबा फूले तथा डॉ. अम्बेडकर के साहित्य में दृष्टिगत होता है। इसके पश्चात साठवें दशक में 'नामदेव ढसाळ' लिखित कविता संग्रह 'गोळपिठा' से होता हैं यह कृति मराठी वाचकों के सम्मुख आने के पश्चात कुछ नया सा महसूस करने लगे और समीक्षकों के लिये भी एक सवाल बनकर उभरा।

महाराष्ट्र में अनेक दलित नवयुवकों ने विद्यार्जन करने के पश्चात साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण किया। 'नामदेव ढसाळ', 'दया पवार', 'नारायण

सुर्वे', 'अर्जुन डांगळे', 'ज.वि.पवार', 'वामन निंबाळकर', 'प्रल्हाद चेंदवणकर', केशव मेश्राम, 'यशवंत मनोहर', 'त्रेंबक सपकाले', अरूण कांबले, 'आत्माराम कनिराम राठोड', 'राम दोतोंडे, 'मीना गजभिये', 'मल्लिका अमरशेख', 'प्रज्ञा लोखंडे', 'ज्योति लांजेवार', 'उषा किरण आजराम', 'सुरेखा भगत' आदि दलित कवियों ने मराठी दलित कविता विधा को समृद्ध बनाया है। दलित साहित्यादोंलन के पूर्व भी महाराष्ट्र में अनेक दलित लोकगीतकारों, शाहीरों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया है। गीत नाटक, लोकगीत, शाहीरी लिखने में 'अण्णाभाऊ साठे', 'बाबा वलंगकर', 'किशन फागुजी', 'भीमराव कर्दक', 'वामनदादा कर्दक', 'विलास घोगरे' आदि लोकगीतकारों ने महत्वपूर्ण कार्य किया हैं। अब महाराष्ट्र में दलित लोकगीतकारों के साहित्य की भरमार है।

किंतु लोगों के मन में प्रश्न निर्माण होता है कि दलित साहित्यकारों ने कविता, लोकगीत विधा को ही ज्यादातर क्यों अपनाया है? इसका उत्तर देने के लिए हमें महात्मा फुले के पहले महाराष्ट्र में लावणी परंपरा को देखा है। हमनें पहले अध्याय में 'लावणी' के बारे में चर्चा की है किंतु यहां संक्षिप्त रूप में कहना चाहता हूँ कि लावणी परंपरा को चलाने वाले लोग दलित समाज से ही आते थे। लावणी करने वाले लोग अशिक्षित थे। वे लोग गांव के सामंत लोगों के मनोरंजन के लिए लावणी करते थे। एक तरह से अपने आत्मसम्मान को बेचा जाना भी कह सकते है। किंतु बाबासाहब अम्बेडकर के आने के बाद यही लावणी करने वाले लोग उन्हीं सामंतों के विरोध में लावणी करने लगे और समाज के नीचले दबके को

एक आत्मविश्वास, चेतना निर्माण करने का काम करने लगे। इसी परंपरा से समाज में धीरे–धीरे लोक शाहीरों, लोकगीतकारों का आगमन हुआ।

भारतीय दलित समाज अनपढ़, अशिक्षित होने के कारण उन्हें बाबासाहब के भाषानों को समजने में कठिनाई आती थी। किंतु इन लोकगीतकारों ने उनके भाषनों को अपने लोक गीत शैली में अपने अदांज से लोगों के सामने पेश किया और लोगों को वह शैली समजने लगी बल्कि समाज में जागरूकता आने लगी। गहरी नीदं में सोया हुआ समाज जागने लगा, उसमें चेतना आने लगी, वह अब प्रतिरोध करने लगा। एक दिन बाबासाहब अम्बेडकर ने लोकगीतकार शाहीर भीमराव कर्डक को सुनने के बाद कहा था कि 'कर्दक का लोकगीत मेरे एक भाषण से भी कहीं अधिक प्रभावकारी है'। यहाँ पर हम कह सकते है कि अम्बेडकर भी समज गये थे कि समाज में चेतना जगाना और प्रबोधन करना लोकशाहीरों के बिना सभंव नहीं हैं। लोकशाहीर गाँव–गाँव जाकर बाबासाहब अम्बेडकर के उपदेशों को गीतों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाते थे। इसका यह परिणाम हुआ कि बाबासाहब सबके ओठों से गीत के माध्यम से निकलने लगे और समाज में नवक्रांति का मार्ग बनाने लगे।

डॉ. तेजसिंह कहते हैं कि ''दलित कविता की सामाजिक भूमिका और उसके सामाजिक सरोकार को आज के युवा कवियों ने बड़ी शिद्दत से महसूस किया है। इसलिए आज का युवा कवि शौक से कविताएं नहीं लिखता और ना ही वह जबरदस्ती कविताएं गढ़ता है, जिसकी चुभन पीड़ा दिलों दिमाग पर अंकित हुई है और जिससे उपजे शब्दों की परिणति कविता में हुई है। कविता मन की सहज अभिव्यक्ति है। इसलिए अधिकांश

युवा दलितों का दिलों–दिमाग कविता में ज्यादा रमता है। उन्हें लगता है कि वे अपनी पीड़ा दुःख दर्द वेदना और मन की छटपटाहट को गीतों या कविता के माध्यय से ज्यादा ईमानदारी से व्यक्त कर सकते हैं। इसलिए कविता या गीत उनकी सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।''[93]

महाराष्ट्र में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के आंदोलन के साथ गीतों का उद्गम हुआ है। 'प्रबुद्धभारत' साप्ताहिक पत्रिका में सर्वप्रथम मराठी दलित लोकगीत प्रकाशित हुऐ है। सन 1960 के पूर्व भी महाराष्ट्र में दलित लोककवि दिखाई देते हैं, उनमें हैं– 'किशन फागूजी बनसोड', 'वामन कर्डक', 'दीनबंधु शाहीर हेगडे', 'सोकले, 'लखमापूरकर', 'मधूकागारे' आदि कवियों ने अम्बेडकरी लोकगीत लिखे हैं। इनमें सबसे श्रेष्ठ वामन कर्डक की कविताएँ मानी जाती हैं।

जो वाणी हजारों वर्षों तक के गूंगेपन से अन्याय, अत्याचार सहन कर रही थी। वही आज डॉ. अम्बेडकर के दिखाए मार्ग पर चलकर नवजीवन और नए विचारों को प्रस्तुत कर रही है। लोककवि वामनदादा की रचनाओं से अछूतों के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ, उसका परिचय इस गीत में मिलता है। लोकगीत इस प्रकार है–

''उद्धरली कोटी कुले भीमा तुझ्या जन्मामुले,

एक ज्ञान ज्याति ने कोटी–कोटी कुल को प्रकाशित किया। यह सब भीम जन्म से हुआ।

---

[93] डॉ. भीमसेन निर्मल, डॉ.वी. कृष्णा– भारतीय दलित साहित्य, पृ. 22

1967 में महाराष्ट्र में दलित साहित्य पर चर्चा हुई इसके फलस्वरूप अम्बेडकरी गीतों को अच्छी गति प्राप्त हुई है। महाराष्ट्र में दलित साहित्य का सही आविष्कार नामदेव ढसाल की कविताओं से ही दृष्टिगत होता है। नामदेव ढसाल की कविताओं में दलित संस्कृति का हु–ब–हू चित्रण हुआ है। दलितों की इच्छाँ, आचार–विचार, ध्येय–उद्‌देश्य, जीना–मरना, सामाजिक विषमता आदि विषयों पर कविताएं रची गई हैं। यही सारी समस्याएँ हिंदी भाषा के प्रांत के दलितों में भी दिखाई देती हैं। इसलिए हिंदी के दलित साहित्यकारों ने भी इन्हीं समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया है।

महाराष्ट्र के दलित साहित्यकारों ने अम्बेडकर आंदोलन को अपने लोकगीतों एवं कविताओं में उतारकर जग जाहिर किया है। उदाहरण– अजिंठा की शिल्पकला, दीक्षा भूमि, चैत्य भूमि, चवदार तालाब, महाड का सत्याग्रह, कालाराम मंदिर प्रवेश आदि महत्वपूर्ण घटनाओं को साहित्य के विषय वस्तु बनाया। बौद्ध संस्कृति को लेकर भी अनेक लोकगीत रचे गऐ है। पूरे विश्व को शांति मार्ग देने वाले बुद्ध को गीतकार वंदन करता है।

‘दुःखी जीवों को देखने वाला
मार्ग सत्य का दिखाता हमें
ऐसा धम्म दीन दुःखीयों का प्रकाश,
मार्ग सत्य का दिखाता हमें
महान त्यागी बुद्ध गौतम को
वंदन करतो हूं भीम को।’

हिंदी के दलित साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने भी बौद्ध संस्कृति को लेकर अनेक कविताएं, लेख तथा उपन्यास लिखे हैं। दलित साहित्यकार कल्पना को कोसों दूर छोडकर आपबीती घटनाओं को ही अंतःकरण से उभारने का प्रयन्त किया है। आज हिंदी और मराठी में दलित कविताएं शीर्घ गति से आगे बढ़ रही हैं। अन्य साहित्यिक कविता विधा से इसकी सृजनशीलता का ढंग कुछ अलग सा नजर आता है।

दलित लोकगीतों में एकता का भाव प्रकट होता है। अकेलापन अथवा अलगाव कहीं भी दिखाई नहीं देखता। हिंदी के दलित कवि शिवकुमार पराग अपनी कविता में कहते हैं ''यही गुनाह बार–बार कर रहा हूं मैं कि सारी हदे पार कर रहा हूँ मैं। उखाड़ फेंकना आसान तो नहीं लेकिन हवा को, लहर को तैयार कर रहा हूं मैं कुछ और देर में बदलाव नज़र आयेगा। नयी सुबह का इंतजार कर रहा हूँ मैं। जो गिर पड़े हैं उन्हें शब्द सहारा देंगे। गज़ल की सोच का विस्तार कर रहा हूँ मैं।''[94]

यह समस्या कवि अकेले की नहीं है यह तो समस्त दलितों की पीड़ा है। इसलिए कवि कहता है कि दबे हुए दलितों के मन में अस्मिता का संचार कराना है। ऐसे अनेक उदाहरण दलित लोकगीतों में प्राप्त हैं। समस्त दलितों की समस्याएँ एक सी होने के कारण ही एकता दलितों की पूंजी बन बैठी हैं।

'अरे संघर्ष देखो
उसे नष्ट करो

[94] डॉ. जयप्रकाश कर्दमः संपादित, दलित साहित्य, 2003, पृ.179

और रहो एकता से

जलता है मराठवाडा

जलता है जलता है मराठवाडा

कैसा जलता है मराठवाडा

देखो जलता है मराठवाडा।'

पेट पालने के लिए दलितों ने अलग–अलग काम अपनाये हैं, परंतु सामाजिक असमानता की समस्या सभी की समान है, इसलिए समस्त भारतीय दलितों के मन में एकता के भाव हैं। एकता का नारा बुलंद कर दिखाने के लिए अब दलित लोकगीत का सहारा लिया जा रहा है।

वर्तमान समय में मराठी लोकगीत कार अपने गीत के माध्यम से समाज में प्रबोधन करने और देश में दलितों की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिती क्या है? इन सभी चुनौतियों को कैसे बदला जा सकता इसका उत्तर वह इन लोकगीतों के माध्यम से दे रहा है। इनका यह प्रचार तथा दलित जागृति का कार्य जोरों पर चल रहा हैं। इसी कार्य का विश्लेषण हम उनके गीतों के माध्यम से करने वाले है।

## 3.1 सामाजिक रूढियों के प्रति विद्रोह

दलित समाज की वेदनाओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति देने में मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दलित लोक साहित्यकार स्वतंत्रता और भाईचारे के पौधे को विकसित करने में कटिबद्ध हैं। दलित समाज को जीवन में अपमान, अन्याय, लाचारी, गुलामी के लिए इन्हें बाध्य किया गया था।

किंतु दलित शाहीरों, लोकगीतकारों ने इन सामाजिक विषमता, वर्णव्यवस्था का विरोध किया है। डॉ. बाबासाहब के तत्वों को मानकर दलित समाज में आत्मसम्मान और धैर्य भरने का कार्य मराठी के दलित जन कवि किशन फागू बनसोडे ने किया है। वे कहते हैं

''विश्व में कहीं नहीं। वैसा भेद यहाँ देखो।
जन्म से ही वर्ण निश्चित होता यह हिंद देश मेरा।
ऊँचा पद मिले भटों को। अन्य सभी नीच बताएँ।
धर्म के नाम पर लड़े आपस में।
यह हिंद देश मेरा मनुष्य को पशु से हीन इन्होंने यहाँ बनाया।
क्या वही आर्यावर्त कहलाता यह हिंद देश मेरा।''[95]

जग में कहीं नहीं देखने वाला भेद–भाव भारत में है। यहाँ दलितों को जानवरों से भी गया–गुजरा समझा जाता है। इसीलिए लोक कवि फागूजी बनसोडे कहते हैं।

''इस गुलामी को तोड़ो और बुरा काम छोड़ो

---

[95] विमल थोरात– मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक राजनीतिक चेतना, पृ. 96

न सहो किसी का जुल्म। न हो किसी के गुलाम।

छोड़ दो नीच काम सारे।''[96]

इस तरह किसन बनसोडे लोकगीत के द्वारा दलितों को अपना स्वाभिमान बनाएँ रखने की सीख देते हैं और सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करके दलितों में अस्मिता जगाने का काम करते है। दलित लोकगीतकार किशन फागू बनसोडे कहते हैं–

''ठीक नहीं है बेगारी। यह तो गुलामी गीरी।
इसके कारण बने हम भिखारी। करो विचार मन में
जनता समझती है इन्सानियत को तुम्हारी।''[97]

मराठी के दलित लोककवि बनसोडे सामाजिक रूढ़ि– परंपरा को त्यागकर नया समाज का निर्माण करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहे ऐसा लोककवि दलितों से कह रह हैं। इनके अलावा अनेक मराठी दलित कवियों ने भी सामाजिक रूढ़ि परंपरा का जमकर विरोध किया है।

1960 के पश्चात मराठी के दलित कवियों में यह प्रथा जोरों पर चली है। नामदेव ढसाल का नाम इस विषय में सम्मान से लिया जाता हैं। दया पवार, ज.वी. पवार, ज.वी.पवार, नारायण सुर्वे आदि मराठी के दलित कवियों ने सामाजिक कुरीतियों पर जमकर प्रहार किया है। जिसमें सामाजिक, राजनीतिक परंपरा का जोरदार खंड़न हुआ है। दलित कवि नामदेव ढसाल भी जातिवादी समाज व्यवस्था को नष्ट करने का बीड़ा उठाया है। महोदय की आशा पूर्ण हो वे सपना देखते हैं कि भारतीय

---

[96] वही पृ. 97
[97] विमल थोरात–मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक राजनीतिक चेतन,पृ.97

समाज व्यवस्था का रूपांतरीकरण हो और परिवर्तन के कारण दलितों का जीवन सन्मान योग्य और सुखकर बने। वे क्रोधित होकर कहते हैं–

''रक्तात पेट लेल्या अगणित सूर्यानो।
किती दिवस सोसायची ही घोर नाके बंदी?''
मरे पर्यंत रहायचे का असेच युद्धकैदी?
ती पहा रे ती पहा. मातीची अस्मिता आभाळभर झालीय।
माझेही आत्म्याने झिंदाबादची गर्जना के लिये,
रक्तात पेटलेल्या अगणित सूर्यानों।
आता या शहर शहराला आग लावीत चला।''[98]

**हिंदी अनुवाद**

(मेरे लहू में प्रज्वलित 'जन्मे' अनगिनत सूर्यबिंबों।
कितने दिन सहोगे यह घोर बंदीवास।
क्या बने रहोगे इस तरह युद्ध कैदी?
वह देखो–रे–देखो मिट्टी की अस्मिता।
आकाश भर में फैल गई है।
मेरी आत्मा भी जिंदाबाद की घोषणा कर बैठी।
मेरे रक्त में प्रज्वलित अनगिनत सूर्यों,
अब इन नगरों महानगरों को आग लगाते चलो )

कवि अपनी अस्मिता को आकाश में फैलाना चाहता है। धर्म संस्कृति से निर्मित बड़े नगरों को शहरों को आग लगाकर ध्वस्त करके नये समाज का निर्माण करना चाहता हैं इन दोनों दलित कवियों के विचार एक से लगते हैं दोनों ही घटिया संस्कृति का नाश चाहते हैं।

---

[98] नामदेव ढसाल– गोलपिठा पृ. 13

मराठी के इस वराडी लोकगीत में समाजिक विषमता को स्पष्ट किया गया है। दलित समाज की औरते क्या काम करती है। इस लोकगीत में देख सकते है–

'काकेत पोरग हातात झाडण।
डोईवर शणाची पाटी
कपडा ना लता
खरखटा भत्ता
फजिती होती बाई मोठी
माय भिमान, भिमान माय
सोन्यांन भरली ओटी।'

दलित समाज को षड्यंत्र कर ज्ञान की परंपरा से दूर रखा गया और उन्हें समाज की गुलामी करने के लिए बाध्य किया गया। इस लोकगीत में गायक दलित समाज की औरतों का चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहते है कि इनके सर पर गोबर की टोकरी, एक हाथ में बच्चा इतना गंदा काम करने के बाद भी हमें खाने को जूठन ही मिलती थी। भला हुआ जो मेरे भीम ने मुझे इस व्यवस्था से आजाद कर मुक्ति का मार्ग बताया।

दलित लोकगीतकारों का विद्रोह किसी भी मनुष्य से नहीं है। बल्कि मानव निर्मित जाति व्यवस्था से है। भोगने वाले अनेक सुख–सुविधा भोग रहे हैं परंतु वही समाज में अस्पृश्यता के नाम से पहचाना जाने वाला मानव, एक घूंट पानी के लिए भी तरसता नजर आता है। नदी, नाले, कुओं, तालाब सभी पर सवर्णों ने अधिकार जमा रखा था। इसके विरोध डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर ने सबसे पहले संघर्ष किया है। इनके पहले महात्मा बसवेश्वर तथा महात्मा ज्योतिबा फूले भी सामाजिक समानता लाने

का प्रयत्न किया, परंतु सफल नहीं हुए, आगे चलकर बाबा ने यह जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। यही संघर्ष दलितों के जीवन का पहला क्रांतिकारी विरोध था जो इन सामाजिक बंधनों से मुक्ति दिलाने की प्रथम क्रांति चवदार तालाब से प्रारंभ होकर समस्त भारत में फैली थी। इस मुक्ति संग्राम को मराठी के दलित कवि सुखराम हिरवाले इस प्रकार कविता में उतारते हैं ''कोटी–कोटी ओंजली भरून आणल्या महाड चवदार तळयाचा पाण्याने। तृप्त झालीं युगायुगाच्य बंदिबानाची तहानलेली तहान। एक महान युद्ध घडले महाडच्या रणक्षेत्रावार।''[99] (कोटी–कोटी अंजलिया भर–भर के लाये महाड चवदार तालाब का पानी। तृप्त हुई युग–युग के बंदियों की प्यासी प्यास महाड रणक्षेत्र पर एक महान युद्ध ही लड़ा गया)

यह ऐतिहासिक युद्ध असमानता के विरोध और मानवीयता के लिए लड़ा गया है। एक घूंट पानी के लिए लड़ा गया था। सामाजिक विषमता का नाश करने के लिए लड़ा गया था। ऐसी महान घटनाओं को कवि नहीं भूला है।

ऐसी अनेक ऐतिहासिक घटना की याद ताजा करके आज के दलितों में विद्रोह की भावना भरकर सामाजिक असमानता का विरोध करने की प्रेरणा लोककवि देना चाहते हैं। भीमा कोरेगांव का ऐतिहासिक महासंग्राम की घटना को लोकगीत कार अपने अंदाज में लोगों को सुनाते हैं–

'गई वह पेशवाई,

गवाई देता है इतिहास

[99] सुखराम हिरवाळे–निकाय मासिक पत्रिका, मार्च–अप्रैल,1997

पिछे ना आये न किसी से डरे
पांचसो महार लड़े देखो पांचसो महार लड़े देखो
कितने कितने पांचसो पांचसो
देखो सभी शूर वीर थे
और घबराऐ अठ्ठाईस हजार पेशवे
कभी न हुआ ऐसा कर दिखाया
खुन की नदी बहा गये।
पांच सौ महार लड़े देखो पांचसो महार लड़े देखो।'

कवि दलितों के लिए लड़े गये मुक्ति संग्राम को एक महत्वपूर्ण घटना मानकर प्रण करते हैं कि जब तक समाज मे समता, बंधुता मानवीयता की मर्यादा नहीं प्राप्त होती तब तक संघर्ष पथ पर चलकर बाबा के सपनों को साकार करने का वादा करते हैं। मराठी के दलित लोककवि कहते हैं कि इस देश में औरों की तरह हम भी मानव हैं। क्यों हमे अस्पृश्य कहां जाता है? क्यों हमें गांव की सीमा के बाहर रखा जाता है? हमें पानी पीने को छुने का अधिकार क्यों नहीं? किंतु अब बस हुआ जिस धर्म में हम जन्मे उस धर्म में हम नहीं मरेंगे। कब तक यह हीन जीवन जीना है कहकर अपने विचार व्यक्त करते हैं।

'हमें कभी मंदिरों में जाने नहीं दिया
कुओं से पानी लेने नहीं दिया
हम सदा तुम्हारे नाम जपते रहे
हे परमेश्वर, हे विष्णु, हे शंकरा, हे कृष्णा, हे दत्ता
कितने नामों से पुकारूँ।'

अस्पृश्यता के कारण दलितों ने जिस जिंदगी को झेला है। उसके प्रति गीतकार की वेदनाएं उमड़ पड़ी है। गायक का स्वर अंतरआत्मा की वेदनाओं को गीत में उडेलता है।

'हमने सदा तुम्हारे नामों का जाप किया
पुकार पुकार कर थक गए
अब मैं तुम्हारी पुजा नहीं करूँगा।
तुम्हारी पत्थर की मूर्ति की प्रार्थना नहीं करूँगा
मैं हिंदू धर्म मैं मरूंगा नहीं।'

लोक गायक दलित समाज ने झेले हुए व्यथाओं को आंसू बहाकर चुप रहना नहीं जानते। वे बाबासाहब के मार्ग पर चलकर असमानता के सारे किलों को चिंदी–चिंदी करके नये समाज का निर्माण करना चाहते हैं–

'कल तक थी जो झोपड़ी घास की
अब आ गये बंगले में
आज नरम नरम गद्दी मिल गयी
फिज, टी. ही और कुलर सब घर में आया
कल तक जो था महारवाडा अब भीम नगर बन गया है।
कल तक कुछ नहीं था पेट में
अब पकवान आ गये थाली में
घुमता है गाडी में रूबाब से
अंगूठी डाल के उगली में
किसी भगवान ने नहीं यह भीम ने किया

कल तक जो था महारवाड़ा अब भीम नगर बन गया है।'

इन गीतकारों के गीतों में युग–युग से चिपकी हुई अस्पृश्यता दलितों से कब दूर होगी? वे युगों–युगों का तिरस्कृत जीवन को त्यागना चाहते हैं। और मनुवादी विचारों का नाश करके, दलितों को भी स्वतंत्र एवं स्वछंद मन से जीने की आशा, लोककवि की है। मराठी के दलित कवि चेतावनी देते हुए कहते हैं, बस बहुत हुआ अब तक सह चुके सब कुछ नाश हो जाएगा कहते हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं– (यह ज्वालामुखी जागृत होगा। ऊष्ण उफनते लावे की बाढ़ आयेगी। जो भी आये मार्ग में उसे भस्म करेगी) ''हा ज्वालामुखी जागृत होणार। धग–धगत्या उसळणास्य। लाव्हाचा महापूर बाहणार जे मार्गत येईल ते स्वाहा करणार।''[100]

मराठी लोकगायकों ने सामाजिक चेतना को अपने विचार के माध्यम से गीतों के जरिये व्यक्त किया हैं। इन गीतों में शोषण, पीड़ाएं और सामाजिक अपमान होने के कारण, अन्याय के विरोध खौल उठने वाली मन की वेदनाएं नजर आती हैं। इनके गीतों में सामाजिक बुराई का जोरदार खंड़न किया हुआ दिखाई देता है। इन सभी के गीतों में उत्पीड़न की आग नज़र आती है। दलित लोकगीतकार सामाजिक परिवर्तन चाहते हैं और सन्मान का जीवन जीने का अधिकार मांगते हैं। इसके गीतों में निराशा के भाव कहीं नहीं दिखाई देते वे संघर्ष करना जानते है। उन्हें बाबासाहब के संविधान पर पूरा भरोसा है।

[100] त्रयंबक सपकाळे– सुरंग, पृ.22

## 3.2 शास्त्र का विरोध

शास्त्रों के प्रति पवित्रता की भावना का अंत होना आवश्यक है। यह बुद्धि एवं नैतिकता की मांग है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में यदि कोई भी परिवर्तन आता है, तो वह बुद्धि अथवा नैतिकता का ही परिणाम होता है। लेकिन जब पवित्रता का भाव बहुत शक्तिशाली बन जाता है, तो बौद्धिक एवं नैतिक प्रगति पर वह रोक लगा देता है। पवित्रता के भाव से एक और हानि होती है कि प्रगतिशील प्रवृत्तियों को निरूत्साह होना पड़ता है। हिंदू समाज व्यवस्था को आदर्श एवं पवित्र ही नहीं समजा जाता है, बल्कि उसे दैविक भी माना जाता है। फलस्वरूप इसमें अनेक बुराइयों का समावेश हो चुका है। इसलिए यदि नवीन समाज की स्थापना करनी है, तो शास्त्रों के प्रति दैवीय एवं पवित्रता की आस्था का अंत करना ही होगा।'' [101]

चातुर्वण्य व्यवस्था को हिंदू ग्रंथो में बढ़ा चढ़ा कर लिखा गया है। इस व्यवस्था में तथाकथित शुद्रों को अत्यंत अमानवीय पद्धतीसे अपमानित एवं प्रताड़ित किया गया। दलित साहित्य ऐसी किसी भी मान्यता का चाहे वह धार्मिक हो सांस्कृतिक या साहित्यिक उसका विरोध करता है। साथ ही वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृतियां, मनुस्मृती तथा अन्य हिंदू धर्मशास्त्र, ग्रंथ और पौराणिक गाथाओं का जमकर विरोध करते हुए उन्हें चुनौती देते है।

इन शास्त्रों के कारण ही हिंदू धर्मियों ने पाप–पूण्य का डर बताकर मासूम दलितों को सदियों से सामाजिक सुविधाओं से वंचित रखा। देवी देवताओं के प्रकोप के कारण ही तुम्हारा जन्म शुद्र वर्ण में हुआ है आदि

[101] एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, –बी.आर. अम्बेडकर, पृ. 61

अनेक झुठी बातें बताकर दलितों के मन में डर निर्माण करके उनका शोषण किया गया। आज का दलित इस ढोंगी धार्मीक शास्त्र ग्रंथों को नकारता है और अपने साहित्य से इन ढकोसलों के विरूद्ध अपनी रचाओं में आवाज उठाता है।

भीमाई का भीम जन्म लिया
कदम कदम पर हमें साहब बनना
धर्म के नाम पर हमें डराया
हजारों पीढ़ीयों का शोषण हैं किया बहुत
जाति धर्म को जमीन में गाड़ने
मातृभूमि से रहे इमानदार
दिन–रात परिश्रम कर
संविधान लिखा देश के लिए

दलित साहित्य की मूल संवेदना यह है कि असमानता, अपमान, अत्याचार और अन्यायपरक व्यवस्था को समाप्त कर समतामूलक समाज व्यवस्था की स्थापना करना। एक समाज से दूसरे समाज के बीच की दूरियों को मिटाने का कार्य दलित साहित्य करता है।

युगों–युगों का इतिहास यथावत परंपरावादी सा चलते आया है। नसीब और पुनर्जन्म का डर बताकर दलितों को गुलाम बनाया गया। बोलने का अधिकार भी छीना गया। दलित को पढ़ाई की ओर झांकने से भी सजा मिलती थी। इन्हें सिर्फ जानवरों सा मेहनत करने के लिए बाध्य किया गया था। इन हीन कृत्यों से बचने के लिए दलित तड़प रहा था।

ऐसी अवस्था में ही बाबासाहब का जन्म हुआ और सदियों से चली आई हुई ऐतिहासिक परंपरा को तोड़ने के लिए उन्होंने बड़ी मेहनत की। इस अमानवीय देश में उन्होंने अनेक संकट झेलकर दलितों को न्याय दिलाया है। महाड़ की क्रांति, कालाराम मंदिर प्रवेश आदि ऐतिहासिक घटनाओं को बाबा साहब ने मानवीयता के लिए लड़ा था। मराठी दलित लोकगीतकार कहते है कि

'सत्याग्रह है चौदार तालाब का

मानव के अधिकार का
दुष्ट रूढ़ि को मैं तोड़ दूंगा
मनुष्य में परिवर्तन लानेवाला हूँ मैं
पैर आगे बढ़ाते हुऐ में आगे जने वाला हूँ।
पानी चौदार तालाब का पीने वाला हूँ ।'

यह गीत महाड जिले में 1927 को डॉ. अम्बेडकर ने चौदार तलाब की ऐतिहासिक क्रांति पर आधारित है। पानी यह प्रकृति की देन है। इस देश के सवर्ण लोग अस्पृश्य समाज को अपने अधिकारों से दूर क्यों रखते हैं। इस धरती के सभी मनुष्यों का इस पर अधिकार है। इस तरह 1927 में डॉ. अम्बेडकर ने महाड़ जिले में चवदार तालाब का पानी अपने हाथों से पीकर सभी दलितों को पानी का अधिकार दिया।

इतिहास को बदलने के लिए बाबासाहब अम्बेडकर ने मानवता का मूलमंत्र दलितों के सम्मुख रखकर एक नया इतिहास रचा है। इतने से ही दलित कवि, लोकगीतकारों को तसल्ली नहीं मिलती वे इतिहास को खोद–खोद कर देखना चाहते हैं कि मनुवादीयों की एक–एक गलती पर

काठोरघात करें और पूर्व इतिहास की याद दिलाकर सवर्णियों की गलतियों को उजागर करते हुए मराठी के दलित कवि ज.वी. पवार ने 'वृंदगान' नामक कविता में इस प्रकार अपने विचार व्यक्त किए हैं– ''हमें नगर द्वार के बाहर रखने वाला और यथा समय ध्वस्त कर देने वाला अपना देश। अछूत रखने की निशानियां तक मिटा देने की दक्ष परम्परा की समुचित हिफाजत करने वाला। गौरवान्वित और इत्थभूत अपना इतिहास और फिर अपनी संस्कृति।''[102] भारत देश का इतिहास और यहाँ की संस्कृति कुछ प्रसंगों में कितनी हीन अवस्था से गुजरी है, इसका परिचय वृंदगान कविता में मिलता है।

मराठी के लोकगीत कार मनुवादी दृष्टिकोन से लिखा गया भारतीय इतिहास को बदलने की प्रेरणा देते हैं, परंतु मराठी के दलित कवि ज.वी. पवार ने इतिहास की जड़ों का परिचय देकर उन्हें किस प्रकार उखाड़ फेंके आदि विषय के विरोध विद्रोह की कटार चलाकर नाश करना चाहते हैं। इस देश की सवर्ण जनता को जातिवाद के दोषी ठहराते हैं। इनकी संस्कृति बनावटी बताते हैं। साथ–साथ नये संस्कारों को दलितों में भरने की क्षमता बाबा के विचारों में है। इन विचारों को अपनाने से दलित जीवन में परिवर्तन आयेगा कहकर सहज संकेत देते हैं।

भारतीय मनुवादी विचारधारा के इतिहासकारों ने दलितों के ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचारों, को हमेशा दरकिनार किया है। किंतु लोकशाहीरों और लोकगीतों के माध्यम से यह इतिहास गीत रूप में समाज के सामने आया। इन्होंने अमानवीय इतिहास की पोल खोलकर रख दी है।

[102] डॉ. जयप्रकाश कर्दम– गुंगा नहीं था मैं,पृ. 13

इन गीतों के द्वारा दलितों के ऐतिहासिक गौरवशाली प्रसंग भी सामने आये है। मराठी दलित लोककवियों ने ऐतिहासिक घटना पर आधारित अपने विचारों को पाठकों के सम्मुख रखा है। दलितों पर हुए अन्याय, अत्याचार को दर्द भरे स्वर में गीतों के माध्यम से अंकित किया है।

दलित साहित्य के इतिहास को देखने से पता चलता है कि दलितों पर भयानक कष्ट लादे हैं। इनके नंगे बदन पर अनगिनत कोड़े बरसाये हैं। उन हाथों को काट फेंकने की भावनायें व्यक्त की हैं। इसका मतलब ऐसा भी हो सकता है कि जिन बदमाशों ने दलितों की मां, बहनों के साथ खिलवाड़ करके यह इतिहास रचा है। उन रचयिता के हाथ काट फेंकने के लिए कवि दलितों को विद्रोह की राह बता रहे हैं। मराठी के दलित कवि पवार कहते है, गिड़–गिडाहट से समाज में परिवर्तन नहीं आयेगा। उन्हें इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज बुलंद करनी होगी। तभी दलित इस देश में शान, आत्मसन्मान, और स्वाभिमान से रह सकता है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने कहा था कि 'संघर्ष करते–करते मर मिटों, परंतु अन्याय के सामने कभी न झुको'। ऐसे ही विचारों का प्रबोधन गीतों में देखने मिलता हैं।

अंतः मराठी के दलित गीतकारों ने अनेक ऐतिहासिक घटनाओं को अपने साहित्य का विषय बनाकर, दलितों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार का बड़े ही निर्भिकता से खंड़न किया है साथ ही इतिहास को बदलकर लिखने की हिदायत भी देते हैं। परंपरागत कार्यों का परिचय इतिहास को बदलकर लिखने की हिदायत भी देते हैं। परंपरागत कार्यों का परिचय

इतिहास से ही जाना जाता है। ब्राम्हणवादियों ने मन चाहे नियम बनाये थे। इन नियमों का नाश करके नये नियमों का आविष्कार करने की क्षमता दलितों में है, यह सिद्ध करते हुए भारतीय दलित लोक गीत कार अपना सक्रिय योगदान इस विधा को दिया है। इस तरह भारतीय दलित लोकगीतकारों ने दलितों की वेदनाओं को गीतों में ढालकर शोषकों के हीन कृत्यों को जगजाहीर किया है।

## 3.3 वर्चस्ववादी राजनीति का विरोध

साहित्य का संबंध तत्कालीन राजनीति से जुड़ा रहता है। जिस वर्ग की सत्ता बनी रहती है उनकी सांस्कृतिक और बौद्धिक योग्यता को विरासत में पाता है। तत्कालीन साहित्यकार के मन पर पड़ने वाले संस्कार और संवेदनाओं को ही अपने लेखन में व्यक्त करता है। जिस प्रकार राजनीति वर्ग का वर्चस्व रहेगा उसी प्रकार साहित्य में देखने को मिलता है। उस युगीन साहित्य में राजनीति से लेकर जीवन के सभी अंगों का समावेश होता है। जिस प्रकार दलित समाज की जो सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति है, उसे ही दलित साहित्य में प्रकट किया गया है।

भारतीय समाज में जो सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से, उदासीन दिखाई देती है, उसे तोड़ने का कार्य दलित साहित्य का विद्रोही आंदोलन ही कर सकता है। परंतु बड़े दुःख से कहना पड़ रहा है, कि ये आंदोलनकारी भी सत्ता पाते ही सामाजिक दुर्गति को भूल रहे हैं। स्वार्थी बनकर साथियों का भविष्य उजाड़ने में लगे हैं। गीतकार इस गीत में कहते है कि–

''अरे संघर्ष देखो
उसे नष्ट करो
और रहो एकता से
जलता है मराठवाडा
जलता है जलता है मराठवाडा
कैसा जलता है मराठवाडा
देखो जलता है मराठवाडा।'

समाज सुधारक, महात्मा फूले तथा डॉ. बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर इन महान तपस्वियों के तत्वों को भी भूल रहे हैं। यहाँ तक कि सत्ता हथियाने, अपना ईमान बेचने के लिए भी कुछ नेता तैयार हैं। सत्ता के पीछे लगे नेता सत्तारूढ़ होने में मग्न हैं। सामान्य जनता से इनका कोई नाता नहीं होता। इस लोकतंत्र के पतन के कारण देश की उन्नति में रूकावट होगी। ऐसी अनेक दर्दनाक घटनाओं को देख सुनकर मराठी के दलित कवि बळवंत कांबले दुःख से कहते हैं– 'आम्हाला मान्य नाही दूसऱ्या स्वातंत्रयाचा जयघोष आम्हाला मान्य नाही येथली शासन, समाज व्यवस्था। आम्ही तसे सगळे नंगे फकीर। स्वातंत्रयात ही गुलाम। मुक्त नसलेले। काळोखाचे बंदिस्त कैदी।' हमे स्वीकार नहीं दूसरी स्वातंत्रता का जयघोष। हमे स्वीकार नहीं यहां का शासन, समाज व्यवस्था। हम जैसे नंगे फकीर, आजादी में भी गुलाम। जो मुक्त नहीं अंधेरे में बंद कैदी।

अर्थात देश स्वतंत्र हुआ परंतु दलित सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं हुआ। इन विचारों को व्यक्त करते हुए कवि का हदय कांप उठता है। हमारा जीवन एक फकीर की तरह है। स्वतंत्र होते हुए भी मुक्त रहित

अंधेरे कैदी के समान। सामाजिक अंधेरे में फसे हुए दलितों का जीवन गुलामी में ही बीत रहा है। इस सामाजिक व्यवस्था, तथा राजनीतिक तांडव के विरोध गीतकार असंतोष प्रकट किया है। हमारा, तुम्हारा रक्त रंग एक, अंग–अंग समान, हर क्षेत्र में तुमसे आगे, रखा गया हमें ही समाज में सबसे पीछे। साध्य नहीं अब ऐसा रहना। सदियाँ गुजर गई अब नहीं है दलितों को सोना। कहकर गीतकार सामाजिक कैद से मुक्त कराना चाहते हैं। ,

मराठी के दलित कवि दया पवार कहते हैं–''तिकड़े एअरकंडिशनच्या काचेरी कुपीत। सत्तेने तीन माकडांची पोज धेतलीय। कुणी विचारले तर साहेब गावाला गेलेत। असे निरोप पीएकड़े ठेबून दिलेत।''[103]

(उधर एअरकंडिशन कांच की केबिन में सत्ता ने तीन बंदरों की पोज ले रखी है। किसी ने अगर पूछा तो कहते हैं कि साहब दौरे पर गये हैं पीछे हटो। साले कमीने शासन वोट के लिए सड़कों पर शो कर रहे हैं। गिड़–गिड़ाते हुए हमारे पैर पकड़कर कहते हैं। हम आपके गांव, समाज, गरीबों के लिए सारी सुविधाएं देंगे, कहकर अनके वादे करके जनता को भ्रमित करते हैं। वादे के बौछारों से मोहित होकर नागरिक वोट देकर उन्हें निर्वाचित करते हैं। जब उनके वादों को याद दिलाने जनता नेता के पास पहूंचती हैं तो पियक्क्ड़ कहते हैं कि साहब नहीं है पीछे हटो, कहकर संसद भवन से भगाया जाता है।) वोट के सौदागरों से जनता तंग होकर समस्याओं के शिकार बने रहे हैं। यही नेता लोग मंत्री बनने से पहले,

[103] विमल थोरात– मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक राजनीतिक चेतना, पृ. 114

चुनावी भाषणों से जनता का जीना हराम कर देते हैं। जाति धर्म की निंदा करके, एक–दूसरे को उँच–नीच कहकर, वैरत्व बढ़ाते हैं। इनकी बात न सुनी जाए तो लाठी और बंदूक से काम निकालते हैं। गरीब मजदूर को शराब और पैसों का लालच बताकर, हीन चरित्र नेताओं ने जनता की नींद हराम कर दी है। जो जनता की ओर से चुनकर जाता है, इन लोगों को पहचानने से इंकार करने वाला नेता, किस हद तक गिर गया है सोचने योग्य है।

इसलिए मराठी के दलित कवि नामदेव ढसाळ 'मुर्ख म्हातायाने रे डोंगर हलविला' नामक कविता में कहते हैं – ''एक लोक प्रतिनिध होता पार्लियामेंट मध्ये काही महिने। काढल्या नंतर तो आमचा राहिला नाहीं''[104]( एक था प्रतिनिध। चुनकर आया तब उसे हमारा और दरिद्रता का आधार था । पार्लियामेंट में कुछ महीने रहने के बाद वह हमारा नहीं रहा) नामदेव ढसाळ की कविता तो बहुत ही महत्वपूर्ण है, जो वर्तमान युग के नेताओं की सच्चाई को खोलकर रखती है। इनकी कविता में आशावाद झलकता है। अपनत्व उभर आता है, नेता के प्रति कुछ हितकारी विचार प्रकट हुए हैं। जब प्रतिनिध कुछ दिन पार्लियामेंट में रहने के पश्चात, पिछला सब कुछ भूल जाता है यहाँ तक कि अपनों को भी नहीं पहचानता। फिर इन्हें क्या कहें?

नेताओं के प्रति मराठी दलित गीतकारों एवं कवियों के विचारों की तुलना की जाए तो, दोनों इन झूठे नेताओं के व्यवहार से तंग आ गये हैं। मराठी के दलित कवि नामदेव ढसाळ अपने ही प्रतिनिधि बनने के बाद रंग

---

[104] नामदेव ढसाळ–गोलपिठा,पृ.सं. 60

बदलने पर चिंतित हैं। इसलिये कह रहे हैं कि चाहे नेता अपना हो या सवर्ण, दोनों एक ही थैले के चट्टे–बट्टे हैं। स्वतंत्रता दलितों के लिए कोई अर्थ नहीं रखती। क्योंकि न तो वे पहले स्वतंत्र थे और ना आज हैं। इस स्वतंत्रता का मतलब इनके लिए सिर्फ अन्याय, अत्याचार, गुलामी, दरिद्रता और वेदना का तोहफा नजर आता है। इस कारण दलित गीतकार देश की स्वतंत्रता पर खुशियाँ मनाने के बजाए, शंका की दृष्टि से देखते हैं। अतः यहाँ की राजनीतिक व्यवस्था भी असंतोषजनक है इसलिए गीतकारों ने राजनीति का खंडन किया है।

## 3.4 परंपराओं का खंडन

हिंदू संस्कृति और धर्म ने दलितों को कभी अपना नहीं समझा। फिर इस धर्म को अपना धर्म कैसे कहें इसलिए आज के अम्बेडकरी लोककवि इस निर्दई संस्कृति का खंडन करने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं समझता है। अगर प्रश्न किया जाए कि हिंदू किसे कहें? इस धर्म के संस्थापक कौन है? आदि प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं होगा। वह कैसा धर्म जो एकता में भी अनेकता का निर्माण करके एक–दूसरों के प्रति द्वेष करता है।

एक ओर हम सब एक हैं कहकर, दूसरी ओर मंदिर प्रवेश पानी को लेकर भेदभाव मानव–मानवों में ऊँच–नीच, छूआछुत की भावनाएँ रचना, यह सब क्या है? किसी मुसलमान का परिचय पूछने पर वह शान से मुसलमान कहकर उत्तर देता है। इसाई भी अपने धर्म से संबंधित परिचय देता है, ना की धर्म का। फिर इन धर्माभिमानियों को कैसे पहचाना जाए?

सोचिए समाज के एक वर्ग को कष्ट पहुँचाकर मजा उठाने वाले इन महाचोरों का विरोध ना करें तो क्या इनकी पूजा की जाए?

लोकगीतकार कहते है कि डॉ. अम्बेडकर के आने से पहले समाज अंधकार की दिशा में जा रहा था। किंतु बाबासाहब के आने पर दलित समाज को सही राह मिली। उन्होंने देश के लिए संविधान लिखकर दलित समाज को मुक्ति की राह बताई। अंत में दलित उद्धार के लिए हिंदू धर्म का त्याग कर बौद्ध धम्म स्वीकार किया और पूरे विश्व को सत्य, अहिंसा का मंत्र दिया। इस गीत में जनकवि कहता है कि –

'भरी धुप में उठाये कष्ट
नही पहनने को कपड़ा
अरे भीम के कारण आज सभी बने रंगीन
जन्म लिया भीमराव बहादूर, मिटाया जाती का कलंक
बनाया भीम ने संविधान
चकीत हुए विष्णु, महेश, ब्रम्हा
भीम के कारण मिला हिंदू देवताओं से छुटकारा
जन्म लिया भीमराव बहादूर, मिटाया जाती का कलंक
हिंदू धर्म को त्याग कर
बौद्ध धर्म दिया हम।'

इसलिए डॉ. बाबासाहब ने मनुस्मृति को जलाकर सिद्ध कर दिखाया है कि इस धर्म में न्याय नहीं, शांति नहीं, अहिंसा तो कोसों दूर है। जिस धर्म में अहिंसा को महत्व दिया गया है। उस धर्म को डॉ.अम्बेडकर ने

अपने अनुयायियों के साथ 1956 में अपनाया है, वही महान धर्म बौद्ध धर्म है।

आज के दलित साहित्यकार हिंदू धर्म के हीन संस्कार पर जबरदस्त प्रहार कर रहे हैं। मराठी के दलित कवि ज.वि.पवार कहते हैं– 'गांठ–दर–गांठ के भीतर का खून। उतर रहा है मेरी आंखों में। भड़क उठा है बडवानल, हो गया है घनघोर जलाना है संस्कृति का खंड़न कर रहे हैं। कहते हैं सदियों से हमारे पीढ़ियों को दुःख देने वाली यह संस्कृति मुर्दा बनकर अर्थी पर पड़ा है, इसे ध्वस्त करना है। जिसे डरकर दलितों ते आज तक सब कुछ खोया है'।

अम्बेडकरी गायकों ने वर्ण व्यवस्था का जो विरोध किया है, यह दलितों के लिए सहज ही है। क्योंकि सभी लोकगीतकारों, शहीरों, कवियों ने इन परिस्थितियों को झेला है। इस अवस्था का सामना किया है इसलिए तो उन आडंबरवादी धर्मशास्त्रों को जलाने के लिए सभी आगे बढ़े हैं। आगे बढ़कर ज.वी पवार कहते हैं, युगों–युगों से अर्थी पर पड़े शव को जलाने के लिए मेरे साथ कौन–कौन आयेंगे कहकर प्रश्न करते हैं और कहते हैं कि किसी ने अगर साथ न दिया तो भी मैं पीछे नहीं हटूंगा। गंदगी फैलाने वाली इस संस्कृति के शव को जलाकर ही रहूंगा, कहकर दलितों में अस्मिता जगाते हैं।

शोषण के कारण दलित इतने दब गए हैं कि जीवन में कोई अस्तित्व ही दिखाई नहीं देता इसलिए मराठी के दलित कवि त्रयंबक सपकाले जी 'तो मैं क्या करू' नामक कविता में कहते हैं–'' चिप्पड जैसी, हो गई है मेरी देह, इस हिंदू संस्कृति के गुराड में। मेरे रस से पनपने वाली लताएं।

मुझे ही बरज रही है, छांह में आने से इस चिप्पड देह के भड़कते ही सूखे के साथ गीला भी जल जाए तो मैं क्या करू''[105]

गीतकार ने स्वतः दलित होने के कारण सामाजिक यातनाएं झेली हैं। साथ–साथ समस्त दलितों के शोषण का भी परिचय दे रहे हैं कि दलित हिंदू संस्कृति के गुराड में दबकर चिप्पड हो गया है। सिर्फ कंकाल ही नजर आता है। इनका रक्त चूसकर सवर्ण मोटे ताजे बने हैं। आराम का जीवन जीने वाले सवर्णों के नजदीक जब कभी दलित ने जाने का प्रयत्न किया है तो उसे धिक्कारा गया है। कवि कहते हैं जब इस सूखे देह में आग लगेगी तो साथ में गीले को भी ले जलेगा कहकर सवर्णियों की गलतियों का भंडाफोड़ कर रहे हैं।

आज तक तुम लोगों ने हमें भाग्य का भय बताकर खूब छला हैं, अब हम इन बातों में नहीं आने वाले, हम में भी अस्मिता जागी है, गीतकार एकता और स्वाभिमान, से जीने को कहते हुए गीतकार कहते है कि –

''क्या कहूँ माई तुझे
क्या कहूँ माई तुझे
भीम जब बोले
सूट बूट कोट पहनकर लोगों में
दर्द तब होता बामण के पेट में
क्या कहूँ माई तुझे
बामण ही शिक्षित होना
और बड़ा होना

---

[105] चद्रकांत पाटील–अनुदित, अगली शताब्दी की ओर,पृ.सं. 40

दलित जीवनभर अनपढ़ ही रहे
महार का लकडा उच्च शिक्षा ली
शिक्षा लेकर गऐ बड़े पद पर
अरे दर्द तब होता बामण के पेट में
दर्द तब होता बामण के पेट में।''

जनकवि कहते है, कि जब कभी दलित सम्मान, अस्मिता की बात करता है, तब सवर्णियों को कांटो सा चुभने लगता है। आंखों में खटकने लगता है। अमानवीयता की हद पार करने के कारण इनकी नजरों के सामने अपमानित दलितों का जीवन कभी दृष्टिगोचर नहीं होता। सवर्णियों के निर्मित समस्याओं का सामना करते हुए गायक कभी हार नहीं मानते। शेर के बच्चे ने समाज में सन्मान पाकर रहने की शपथ ली है, और वह कर दिखाने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

इन गायकों ने अपने गीतों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था का विरोध किया है। साथ ही उन्हें सवर्णियों की गलतियों का अहसास कराना चाहते हैं। कहते हैं कि हिंदू संस्कृति के दबाव के कारण ही दलित दब गया है, सूख गया है, इसके सूखेपन का कारण सवर्ण ही है। गीतकार कहते हैं एक दिन ऐसा आयेगा कि सुखे के साथ गीला भी जल जाएगा। दलित समाज के लोग सदा जिंदगी में डूबते आये हैं, लेकिन अब तुम्हें साथ ले डूबेंगे कहकर दलित गीतकार विद्रोह की भावनाओं को व्यक्त कर रहा है। इन गीतकारों का सवर्णियों से बदला लेना इतना महत्व पूर्ण नही जितना की उस घटिया संस्कृति का सर्वनाश करना उनका प्रथम कर्तव्य

बन गया है। जिन्होंने दलितों का जीना हराम किया है, उन नीच पाखंड़ियों को सबक सिखाने की बात यहाँ धैर्य के साथ कही गई है।

हिंदू संस्कृति काफी पुरानी हो चुकी है। इसकी कुछ न्युनता को आज तक छिपाया गया है परंतु अब समस्त मानव को अपने ही अस्मिता का अभ्यास हुआ है। अच्छे बुरे का ज्ञान होने लगा है। गंदगी में रहने के लिए कौन चाहेगा? हर एक प्राणी शुद्ध वातावरण में रहना चाहता है। मानव तो बुद्धिजीवी प्राणी है फिर इस असमानता का निर्माण करने वाले समाज में भला कौन रहने को पसंद करेगा? इन पुराण पंथियों को क्यों पता नहीं चल रहा है कि यह जातिवाद के नियम अति घिनौने हैं इन्हें छोड़ देना चाहिए। इन बदबुदार विचारों को अपनाने के लिए दलित तैयार नहीं हैं। इन्होंने अपने स्वाभिमान को पहचान लिया है और जीवन के शुद्ध सुधार के पथ पर चलकर प्रज्ञावान बना है, सदा शील का पालन कर रहा है करूणा मैत्री तो दलित का मूल मंत्र है। मराठी के दलित जनकवि वामन निंबालकर भारतीय संस्कृति के उत्तराधिकारियों से पूछते हैं–''तुमच्या कुजट, कुबर संस्कृतिचे, ढबढबालेले ढोल कोठवर बाजबाल? कोठवर फेडाल नेसू माझ्या मायाबहिणींचे, आता पर तुमच्या आब्रुचे जिटबडे तुम्हीं पाहणार तुमच्चाय डोळ्यानी कारण तुमच्या संस्कृतिच्या चिंध्या सडल्या गळून पडायला लागलय रहणुन तुमच्या इज्जतीचे उघडे, नागडे प्रदर्शन उध्या होणार आहे।''[106] अर्थात तुम्हारी सड़ी–गली संस्कृति का भदभदा ढोल कब तक पीटेंगे। तुम्हारी इज्जत का खुलेआम नंगा प्रदर्शन होने वाला है। तुम्हारी संस्कृति की चिंदियां सड़ने से गलकर गिरने लगी

[106] वामन निंबालकर–गांव कुसा बाहेरिल कविता,पृ.सं. 23

है। कल तुम्हारी इज्ज्त का खुलेआम नंगा प्रदर्शन होने वाला है। कुछ महानुभवियों के मन में प्रश्न निर्माण को सकता है, कि जनकवि इसी समाज में रहकर इनको ही नंगा क्यों करना चाहता है? क्योंकि यह समाज धोखेबाज है, इसकी नीति कहना एक करना एक है। मूँह में राम, बगल में छूरी जैसी दूहरी नीति के दो जवानी लोग हैं। कहा जाता है कि हमस ब भाई–भाई फिर घर और मंदिर, प्रवेश में क्यों हरजाई। इसलिए ही दलित इन पाखंड़ियों का साथ छोड़कर सम्मान की जिंदगी जीना चाहता है और इनके झूठे अस्तित्व का परदा फाश करने पर तुला है सदियों से हमारी माँ बहनों को नंगा करते आये हैं।

आज हम तुम्हारी सड़ी हुई संस्कृति को नंगा करेंगे कहकर जागृति का ढिंढोरा पीटते हुए जनकवि कह रहे हैं कि दलितों को एकता से रहना है। एकता की भाषा बोलने वाली हिंदी की महान दलित कवयित्री 'रजनी तिलक' 'वो वोट देना चाहते है' इस कविता में कहती है–"उनकी बात में न आना। मकसद है उनका हमें लड़ाना। असमानता ही है जिसका आधार। ब्राम्हणवाद का वट वृक्ष। ना फले–फूले चारों ओर। लड़ना है हमें असमानता से। गढ़नी है भाषा बढ़ाना है। विज्ञान तभी बनेगा जाति विहीन समाज।"[107] कवयित्री कहती है, उन पाखंड़ियों की बातों में आकर कभी भ्रमित न होना ऐसा करने से दलितों की एकता में दरार आएगी। उनका काम ही है लड़ाना और समाज में असमानता बनाये रखना। इसलिए दलितों सचेत रहो, इस ब्राह्मणवाद इस वाद के वृक्ष को फूलने फलने से रोकना है। दलितों का अस्तित्व बनाकर विज्ञान युग को बढ़ावा देना

[107] रजनी तिलक– पदचाप, पृ.सं. 15

चाहिए। ऐसा करने से जातियता कम हो सकती है, और दलितों की उन्नति हो सकती है।

लोकगीतकारों की भाषा साधारण नहीं बल्कि विद्रोह की चिंगारी सी चमकने वाली उल्का है। वे हीन संस्कृति की खाल उतारकर नंगा करना चाहते हैं। अन्याय के विरोध की आग फैलाने का मुख्य कार्य इनके गीतों में देखने को मिलता है। दलितों को नीति पाठ पर व्याख्यान देते हुए कहती हैं कि इन पाखंड़ियों की दोहरी नीति में नहीं फंसना है विज्ञान और आधुनिकता को अपनाकर अपने जीवन में सुधार लाने को कहते हैं,

उपर्युक्त दलित लोकगायकों ने अपने गीतों के माध्यम से वर्णाश्रम तथा हिंदू संस्कृति का खंड़न करते हुए बहुत से गीत लिखे हैं। दलित गीतकारों का लक्ष्य एक ही मंजिल की ओर आता है। जातिवाद को मिटाओ दलितों को बचाओ का नारा समस्त भारतीय दलित साहित्यकारों का हैं। दलित जागृति में ही देश का हित है कहकर दलित गायक अपने–अपने मत यथासंभव गीतों मे माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

### 3.5 वर्णव्यवस्था का विरोध

वर्ण व्यवस्था को धिक्कारना ही दलित साहित्य का मूल उद्‌देश्य है। हिदूं धर्मग्रंथों में लिखित परंपरावाद, अस्पृश्यता जातियता, वर्णव्यवस्था आदि अमानवीय पद्धति का विरोध करके सामाजिक सुधार करने का कार्य ही दलित गीतकार कर रहा है। इसकी शुरुआत डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने मनुस्मृति जलाकर की थी। मनुस्मृति जलाने के विचार प्रथमतः हिंदी के प्रथम दलित कवि स्वामी अछूतानंद के थे। बाबासाहब ने स्वामी से मिलकर

इस विषय पर चर्चा भी की थी। वह सारा विषय दलित साहित्य में देखने को मिलता है। दलित चाहे किसी प्रांत का क्यों न हो, सभी की समस्याएँ एक सी होने के कारण, इनके संघर्ष का लक्ष्य भी एक सा है। इनकी मंजिल भी एक है। समस्त भारतीय दलितों ने 1956 के बाद धर्मांतर के पश्चात शपथ ली है, कि जातिवाद को मिटाकर ही रहेंगे। ऊँच–नीच का भेदभाव इस धरती पर कभी न टिके। इसलिए मनुवादियों को सचेत करते हुए मराठी के दलित कवि वामन निंबालकर कहते हैं–

''मनुच्या वारसदारानो। अनंत वर्षा पासून रचलेत तुम्ही।

माती दगडाचे ढीग आमच्या मेंदूवर। विश्वास ठेवा कदाचित।

ह्याच मेंदूतून बाहेर पड़तील असंख्य ठिणग्य।''[108]

अर्थात मनु के वंशंजो तुमने हजारों वर्षों से रचे हैं मिट्टी, पत्थरों के ढेर हमारे दिमागों पर लेकिन विश्वास करो शायद इसी दिमाग से फूट पड़ेगी असंख्य चिंगारियां हम अज्ञानी नहीं थे, बनाया गया। आज दलित समाज बाबासाहब के आंदोलन से जाग गये हैं। दलितों के मस्तिष्क में परिवर्तन आया है।

मनुवाद के भेड़िया को ज्ञान रूपी आग से जलाने की शक्ति दलितों में आई है। मनुस्मृति का खंड़न करते हुए हिंदी के दलित कवि अछूतानंद कहते हैं–''निशदिन मनुस्मृति हमको जला रही है। ऊपर न उठने देती

[108] यशवंत मनोहर–उत्थानगुंफा, पृ.सं.15

नीचे गिरा रही है।''[109] स्वामी ने 1925 में 'मनुस्मृति' से जलन' कविता लिखी है और जातिवाद का विरोध करके दलित भाइयों को सचेत करते हुए कहते हैं'' जुल्म अब मत सहो नेक मरदो। जाति पर जान कुर्बान कर दो।'' मराठी के दलित कवि वामन निंबालकर और हिंदी के दलित कवि स्वामी अछूतानंद के विचार एक समान मनुवाद को त्यागने के लिए कहते हैं। मराठी के लोकगीतों में भी मनुवादी संस्कृती का जोरदार विरोध हुआ। गायक 'मैं हिंदू धर्म में मरूँगा नही' इस गीत में कहते हैं कि

'करते थे हम तुम्हारी सलामी

पीढ़ियों से अब तक भोगते थे ये गुलामी

हे अन्नदाता! हे माई बाप !

क्या आप इस बच्चे को रोटी का टुकड़ा देंगें?

हे गोरे बच्चे की माँ

मेरा बच्चा आपके दरवाजे पर खड़ा है।'

ये हालत थी हमारी इसलिए हम सबने बुद्ध के धर्म को अपनाया मानवता का धर्म अपनाया।

'हम उनके पुरखों से हारेंगे नहीं

पीछे हटनेवालों में से अम्बेडकर नहीं

मैं हिंदू धर्म में नहीं मरूंगा।'

मनुवाद ही जातियता की जड है, इसे उखाड़ने की हिदायत लोकगीतों के विचारों में प्रतीत होती हैं। दलित समाज में विद्रोह की

---

[109] डॉ. जयप्रकाश कर्दमः संपादित दलित साहित्य,1999 पृ.77

मशाल जलाने के पश्चात ही भयानक आग उमड़ पड़ेगी और जातिरूपी विशाल वृक्ष को भी जलाकर नाश कर देगी। शायद यही कारण होगा कि महाराष्ट्र के दलितों में अस्मिता पहले जाग उठी है और धीरे–धीरे उत्तर भारत की और शासन में परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं।

आज भी भारत के अनेक हिस्सों में जातिवाद के नाम पर छला जा रहा है। हम सभी इंसान ही है, सभी का जन्म माँ से ही होता है तो फिर क्यों यह भेदभाव? आधुनिक युग रहने वाले और खुद को उच्च शिक्षित समझने वाले कुछ शिक्षित भी जाति भेद को मानते हैं। तुम्हें शिक्षित कैसे कहें, धिक्कार है तुम्हारी इन डिग्रीयों पर। दलित अनपढ़ ही हजार गुना बेहतर हैं। इन जातिवादी पंडितों से क्योंकि वह मानवतावाद को मानता है, जातिवाद को नहीं। किंतु बाबासाहब के शिक्षा के अधिकार के कारण आज दलित समाज के कुछ लोग शिक्षा के क्षेत्र में जाकर समाज के सभी वर्ग के लोगों को शिक्षित करने का काम कर रहे है। गीतकार हमारे शिक्षक पढ़ाते इस गीत में कहता है कि–

''नहीं लिया पाठशाला में महार जाति वालों को

आज हमारे शिक्षक पढ़ाते ब्राह्मण के बेटे को ।। धृ।।

कितना लाचारी का जीवन दलित का
भीम के कार्य से हो गया सोना मिट्टी का
अब रूबाब आ गया ढोर चामार जाती को ।
नहीं थी झोपड़ी बच्चा तपता धुप में
हाल देखते हमारे भीम क्रांतिकारी बने

अब बंगला शोभा देता है महारवाडे के पड़ोस में ।

इसलिए मराठी के दलित कवि यशवंत मनोहर परंपरावादी और भाग्य के भगत पर निषेध का हल चलाकर समूल नाश करना चाहते हैं–'' त्या हरामखोर परंपरावर भी विध्वंसाचा नांगर धरतो। ते सर्व दैववादी माझे वैरी आहेत। ज्यानी अस्पृश्याता अभंग केली तिची मधुर ओवी केली। ते शब्द प्रमाण्यवादी सगुण वैरी आहेत, माझे ज्यांनी मला आजवर मुक्त होउ दिले नाही।''[110] इन हरामखोर परंपराओं पर मैं विध्वंस का हल चलाता हूं। वे सारे देव–दैववादी मेरे वैरी हैं। जिन्होंने अस्पृश्यता को अपरिवर्तनशील बनाया, उस पर मधुर गीत रचे। वे शब्द प्रमाणवादी सगुण निर्गुण वैरी हैं मेरे जिन्होंने आज तक मुझे मुक्त नहीं होने दिया।

मराठी के दलित कवि यशवंत मनोहर जातिवाद से मुक्ति चाहते हैं। इससे मुक्ति पाने के लिए विद्रोह की आग भड़काना जरूरी समझते हैं। हिंदू धर्मियों ने पाप–पुण्य का डर बताकर मासूम दलितों को सदियों से सामाजिक सुविधाओं से वंचित रखा है। देवी–देवता के प्रकोप के कारण ही तुम्हारा जनम शूद्र वर्ण में हुआ है। आदि अनेक झूठी बातें बताकर दलितों के मन में डर निर्माण करके उनका शोषण किया गया। आज का दलित इस ढोंगी ईश्वरवाद को नकारता है।

जातिवाद की नीच पद्धति को अपनाने वाले शायद बड़े ही मूर्ख हैं। मूर्खता के कारण ही सवर्णियों से दलितों की छोटी–छोटी गलतियों पर भी बड़ी सजाएँ दी जाती हैं। यहाँ तक कि दलित नारियों को बाजार में नग्न

[110] यशवंत मनोहर–उत्थानगुंफा, पृ.सं.15

घुमाया जाता है। वहीं दलित नारी की जगह अगर तुम्हारी माँ, बहनों की नंगी अर्थी निकाली जाय, तो कैसा लगेगा? कहकर सागर – तब तुम्हें कैसा लगेगा– नामक कविता में प्रश्न कहते हैं ''यदि तुम्हारी बहनों–बेटियों को सर्वथ निर्वस्त्र कर, घुमाया जाए, गली–गली नचाया जाए कसे जाएं गन्दे फिकरें, किया जाए बलात्कार सड़कों चौराहों पर, तुम्हारे सामने ही। तब तुम्हें कैसा लगेगा।''[111] गायक सवर्ण लोगों से प्रश्न कर रहे हैं कि आज तक जिस प्रकार दलितों की बहु–बेटियों को नंगा करके घुमाया है, गलियों में नचाया है, वही हीन कार्य तुम्हारे बहनों के साथ होगा तो तब तुम्हें कैसा लगेगा? कहकर सवर्णियों को आत्मावलोकन करा रहे हैं। दलित, बदले की आग में जीवित रहेगा परंतु सवर्ण को चुल्लु भर पानी में डूब मरना पड़ेगा अगर उनकी बहनों पर बलात्कार होता है।

चातुर्वर्ण्य व्यवस्था को हिंदू ग्रंथों में बढ़ा चढ़ाकर लिखा गया है। उन्हीं ग्रंथों को वे पवित्र मानते हैं। इन ग्रंथों को तथा उन जातिवादियों को गालियाँ देते हुए मराठी के क्रांतिकारी दलित कवि नामदेव ढसाल कहते हैं– ''मी तुला शीव्या देतो। तुझ्या ग्रंथाला शीव्या देतो। तुझ्या पाखंडी पणाला शीव्या देतो। भी हे सारे काहीं बोलनार नव्हतो, पण माझे हाथ जागे झालेत।''[112] मैं तुझे गालियां देता हूँ तुम्हारें ग्रंथों को गालियां देता हूँ। तुम्हारी संस्कृति को गालियाँ देता हूँ। तुम्हारें पाखंडिपन को गालियाँ देता

---

[111] एन.आर.सागर–आजाद हैं हम, पृ.सं.37

[112] यशवंत मनोहर–उत्थानगुंफा, पृ.सं.16

हूँ। मैं ये सब बोलना नहीं चाहता था, मगर मेरे हाथ जाग्रत हो गए हैं। कवि का मन क्रोध से उतावला बना है,

इन सामाजिक कुकृत्यों को देखकर सदियों से सहने वाले कष्टों को अब दलित नहीं सहता क्योंकि इन घिनौनी पद्धति के राज का पता चला है। दलित भी समझने योग्य बने हैं इनके भी हाथ मजबूत बने हैं, सदियों का बदला लेने के लिए और जातिवाद से भरे पड़े ग्रंथों को गालियों देने के लिए बाचा भी फूटी है। संभालों अपने आप को सवर्णियों नही ंतो पछताना पड़ेगा।

लोकगीतकार गीत के माध्यम से हिंदू देवी–देवता की पूजा मत करो कहते है क्योंकि इन्हीं के कारण हमें आज तक इनका डर दिखाकर शोषण होता आया है। ये कोनसा ईश्वर है जो कर्मानुसार फल देता है, और मोक्ष भी, वर्णों के अनुसार देता है। गीतकार मैं हिंदू धर्म में मरूँगा नही इस गीत में कहते हैं कि–

''हमें कभी मंदिरों में जाने नहीं दिया
कुओं से पानी लेने नहीं दिया
हम सदा तुम्हारे नाम जपते रहे
हे परमेश्वर, हे विष्णु, हे शंकरा, हे कृष्णा, हे दत्ता
कितने नामों से पुकारूँ।। 1।।

हमने सदा तुम्हारे नामों का जाप किया
पुकार पुकार कर थक गए
अब मैं तुम्हारी पूजा नहीं करूँगा।

तुम्हारी पत्थर की मूर्ति की प्रार्थना नहीं करूँगा
मैं हिंदू धर्म मैं मरूंगा नहीं।। 2।।

मराठी के दलित कवि नामदेव ढसाल चाहे गालियां तो नहीं देना चाहते थे लेकिन दलितों की एकता के कारण उनके हाथ मजबूत हुए हैं और जागृत होने के कारण ही जीव्हा में भी गालियां देने की शक्ति आ गई जबकि मराठी के दलित कवि नामदेव ढसाल के विचार सवर्णियों को चेतावनी देकर रहते हैं। दोनों कवियों ने खुलकर धर्म ग्रंथों की निंदा की है। दोनों का विरोध भारतीय धर्मग्रंथों से है जो जातिवाद को बढ़ावा देते है।

वर्णव्यवस्था ही मूलतः जातिवाद की जड़ है जातिवाद को जीवित करने वाले उन ग्रंथों का नाश करने से ही समाज में सुधार होगा और समाज के हर वर्ग के लोग भाई–चारे से रहेंगे। फिर से देश की उन्नति होगी जिस प्रकार बौद्ध काल में थी। वतन, अमन, चैन से रहेगा सर्वत्र खुशहाली ही खुशहाली दिखाई देगी अगर जातिवाद न होगा तो। यह कहकर दलित लोकगीतकार अपने गीतों में वर्ण व्यवस्था का जमकर खंडन करके देश को सुमार्ग पर लाने की हिदायत भी देते हैं।

## 3.6 राज्य समाजवाद का समर्थन

डॉ. अम्बेडकर के राज्य समाजवाद का सिद्धांत समस्त अतिशयवादी नीतियों के विरूद्ध है। उनका सिद्धांत इतना समयानुकूल एवं उपयुक्त है कि देश के संविधान में इसे स्थान दिया जाये, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऐसा करने से सार्वाजनिक लाभ की संभावानाएं अधिक बढ़ जायेंगी। यहां पर हम केवल दो बातों का अध्ययन करेंगे– 1. क्या उनके सिद्धांत को भारतीय संविधान में स्थान मिलना चाहिए? 2. क्या ऐसा करने से संसदात्मक प्रणाली अथवा प्रजातंत्र को क्षति पहुंचेगी? इसके उत्तर में हमें यही उपाय मिलेंगे कि निजी अर्थ व्यवस्था से उत्पन्न विषमताओं को किस प्रकार दूर कर सकेंगे, ताकि अनेक व्यक्ति अपने मौलिक अधिकारों से वंचित न रह जायें और अपने जीवन को मानवोचित सम्मान के साथ व्यतीत कर सकें। वे पूंजीपतियों के शिकार न बनें।

इस समस्या का समाधान करने के लिए अनेक सुजाव सम्मुख आते हैं। इसमें से एक सुजाव प्रजातंत्रीय देशों का है। इसके अनुसार ''सरकार की शक्ति सीमित होनी चाहिए। राज्य को केवल ऐसे साधारण कानून बनाने चाहिए, जिनके द्वारा समाज के शक्तिशाली वर्गों की ऐच्छिक क्रियाओं पर रोक लग जाये, उन आर्थिक ऐच्छिक क्रियाओं पर, जिनके द्वारा वे गरीब वर्गों का शोषण करते हैं। सरकार ही नहीं, वरन् पूंजीपति भी स्वेच्छाचारी विधियों का मनमाना प्रयोग न कर सकें।''[113]

डॉ. अम्बेडकर इस सुजाव को उपयुक्त नहीं मानते थे। ''अमीर वर्ग सामान्य कानूनों को सार्वजनिक हित में मानेंगे, यह एक संदेहात्मक वाक्य

---

[113] बी. आर. अम्बेडकर– स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947 पृ.सं. 33

है। बहुत सी प्रजातंत्रीय प्रणालीयों में राज्य सरकारे एवं विधानसभाएं कुछ शक्तिशाली व्यक्तियों के नियत्रंण में रहती हैं। केवल यह आशा करना कि वह अपने पूंजीपति समर्थकों के साथ श्रमिकों की स्वतंत्रता का ध्यान रखेंगे, एक काल्पनिक सुझाव है।''[114] डॉ. अम्बेडकर एक अन्य विधि अपनाने का सुझाव देते थे। वह राज्य एवं समाज के शक्तिशाली वर्गों को स्वेच्छाचारी अधिकार प्रयोग करने का कोई अवसर नहीं मिलना चाहिए। इसका अर्थ है कि शक्तिशाली वर्ग आर्थिक क्षेत्र में गरीब वर्गों पर अत्याचार न करें। उनका शोषण न करें और अतिरिक्त लाभ का अपहरण न करें। ऐसा तभी संभव होगा, जबकि धनी वर्गों का आर्थिक क्षेत्र पर काम नियत्रंण हो अर्थात् वे अपनी मनमानी न कर सकें।

यह सुझाव व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करने का उत्तम उपाय है। जो मनुष्य परिश्रम करते हैं, उन्हें उनके श्रम का उचित वेतन और भत्ता दिया जाना चाहिए। उनके मौलिक अधिकारों का हनन नहीं होना चाहिए। आर्थिक क्षेत्र में साधनहीन व्यक्तियों को शिकार बनने से रोका जाना चाहिए। व्यक्ति के द्वारा व्यक्ति को शोषण एक अनैतिक कार्य है।

डॉ. अम्बेडकर अपने राज्य–समाजवादी सिद्धांत को संसदीय प्रजातंत्र के त्यागे बिना और सामान्य कानूनों का सहारा लिये बिना भारतीय संविधान का एक अंग बनाना चाहते थे। यहाँ एक स्वाभविक प्रश्न उठता है, सामान्य कानून के द्वारा डॉ. अम्बेडकर समाजवाद की स्थापना क्यों नहीं

---

[114] वही पृ.सं. 33

करना चाहते थे? यद्यपि इस प्रश्न में महत्वपूर्ण तत्व नहीं है, फिर भी इसका उत्तर देना हम वांछनीय मानते हैं।

उनके अनुसार, ''एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि सुनियोजित अर्थ–व्यवस्था की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि ढीला न छोड़ा जाये। इस व्यवस्था को स्थायी बनाया जाये। यह स्पष्ट है कि संसदायत्मक प्रजातंत्र में सरकार उस स्थायित्व को उत्पन्न नहीं कर सकती, जो कि सुनियोजित अर्थ व्यवस्था के लिए अत्यावश्यक है। कारण यह है कि प्रजातंत्र में सरकार बलवती रहती है। एक सरकार समाजवादी कृषि सुधारों के पक्ष में होती है, तो दूसरी सरकार उसके विरूद्ध। प्रत्येक सरकार अपनी–अपनी इच्छानुसार कानून बनाती है। एक समाजवाद के पक्ष में, तो दूसरी उसके विपक्ष में। ऐसी अवस्था में सुनियोजित अर्थ व्यवस्था से कोई लाभ नहीं हो पाता है।''[115]

इसलिए डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि वे लोग, ''जो समाज का ढांचा समाजवादी अर्थव्यवस्था के आधार पर चाहते हैं, इसकी सफलता के लिए सामान्य कानून का सहारा नहीं लेना चाहिए, क्योंकि सामान्य कानून सरकारों के परिवर्तन के कारण आये दिन बदलते रहते है। इन शीघ्र बदलने वाली सरकारों के उद्देश्य राजनीतिक अधिक होते हैं। उनके यथार्थ अभिप्राय मालूम नहीं हो पाते हैं। एक राजनीतिक दल अपनी पूर्व सरकार के अच्छे–से–अच्छे कानून भी बदल देता हैं।''[116] अतः यह स्पष्ट है कि संसदात्मक राजनीतिक व्यवस्था प्रजातंत्रीय आर्थिक ढांचे की सुदृढ़ता

[115] बी. आर. अम्बेडकर– स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947 पृ.सं. 34
[116] बी. आर. अम्बेडकर– स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947 पृ.सं. 34

लाने में क्यों असमर्थ रहती है। आर्थिक सुदृढ़ता के लिए स्थायी कानूनव्यवस्था का होना आवश्यक है।

सुनियोजित अर्थ व्यवस्था को स्थायी बनाने के लिए, संसदीय प्रजातंत्र उपयुक्त नहीं है। केवल तानाशाही राज्य ही इस व्यवस्था से सार्वजनिक हित हो सकता है। सर्वहारा वर्ग की तानाशाही ने सभी साम्यवादी देशों में आर्थिक खुशहाली है। वहाँ सार्वजानिक कल्याण का ध्यान प्रमुख होता है, हांलाकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता की वहाँ कमी है। आर्थिक दृष्टि से वहाँ की तानाशाही सरकारों ने उन सभी वर्गों की प्रगति की, जो पिछड़े एवं शोषित हैं।

लेकिन डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ''जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रेमी हैं, वे तानाशाही अर्थ व्यवस्था का खुलकर विरोध करना चाहेंगे। वह स्वतंत्र समाज की स्थापना के लिए संसदीय सरकार को आवश्यक मारते थे। वास्तव में व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रजातंत्र ही में अधिक संभव हो सकती है, न कि तानाशाही में। स्पष्टतः जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता चाहते हैं, वे संसदात्मक प्रजातंत्र का परित्याग करने के लिए तैयार नहीं हैं। हांलाकि तानाशाही से उन्हें समाजवाद के उद्देश्यों में सफलता मिले, फिर भी वे प्रजातंत्र का बलिदान करना नहीं चाहेंगे। वे आर्थिक समृद्धि एवं स्वतंत्रता दोनों ही चाहेंगें।''[117]

वास्तव में, समस्या यह है कि राज्य समाजवाद को तानाशाही के बिना संसदीय प्रजातंत्र के साथ किस प्रकार लाया जाये? यदि ऐसा ही करने के लिए डॉ. अम्बेडकर सुजाव दें, तो शायद बहुत से विद्वान उनसे

---

[117] बी. आर. अम्बेडकर– स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947, पृ.सं. 34

सहमत होंगे। उन्होंने कहा कि ''मार्ग इस प्रकार स्पष्ट होता है कि संसदात्मक प्रजातंत्र एवं रात्य समाजवाद को संविधान की व्यवस्था के द्वारा लाया जाये, ताकि संसदात्मक बहुमत उसे न बदल सके और न समाप्त कर सके। केवल ऐसा करने से ही हम तीनों उद्देश्य, समाजवाद की स्थापना, संसदीय प्रजातंत्र की सुरक्षा एवं तानाशाही के लोप की पूर्ति कर सकेंगे।''[118]

डॉ. अम्बेडकर का यह सुझाव परम्परावादी संविधानों से भिन्न है क्योंकि उन संविधानों में केवल राजनीतिक व्यवस्था की बात ही कही जाती है, जबकि आर्थिक ढांचे को उन शक्तिशाली वर्गों के हाथ में छोड़ दिया जाता है, जिधर चाहें उधर मोड़ सकते हैं। आर्थिक ढांचे को इन लोगों के हाथ में छोड़ने से साधनहीन वर्गों के हित में सिद्ध होता है। धनी वर्ग अपने धन के सहारे राजनीति शक्ति को भी अपने हाथों में बनाये रखते हैं। किसी देश का राजनीतिक क्षेत्र उन्ही तत्वों से अधिक प्रभावित होता है, जो आर्थिक आधार लिये होते हैं अर्थात् धनी वर्ग राजनीतिक व्यवस्था पर अपना आधिपत्य कर लेते हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि डॉ. अम्बेडकर राजनीतिक एवं आर्थिक ढाँचे को संविधान के कानून द्वारा क्यों लाना चाहते थे। वे संविधान, जिनमें केवल राजनीतिक ढांचे की व्यवस्था है, सैद्धांतिक रूप से ही स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं, न कि व्यावहारिक पक्ष में भी। शोषण के विरूद्ध भी इस प्रकार के संविधानों में केवल सैद्धांतिक संरक्षण है। व्यवहार में स्थिति कुछ और है। साधन–संपन्न वर्ग साधनहीन वर्गों का बहुत शोषण करते हैं।

---

[118] वही पृ.सं. 34

इसलिए इस प्रकार के संविधानों द्वारा स्पष्ट रूप से आर्थिक ढांचे को भी ठीक–ठीक निश्चित करना चाहिए, ताकि सार्वजनिक सुरक्षा का सुप्रबंध किया जा सके। उन लोगों को संरक्षण मिले, जो गरीब, दुर्बल एवं वृद्ध हैं।

डॉ. अम्बेडकर यह मानते थे कि ''प्रजातंत्र की आत्मा 'एक व्यक्ति एक मूल्य' के सिद्धांत में है। इस सिद्धांत का स्पष्ट अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं संतुष्ट हों। कोई व्यक्ति भूख से पीड़ित न हो और एक व्यक्ति का मूल्य दूसरे व्यक्ति से अधिक न हो। प्रजातंत्र में इस सिद्धांत का पूर्णतः बल नहीं मिला। केवल राजनीतिक क्षेत्र में 'एक व्यक्ति एक मत' की पूर्ति हुई, लेकिन इसका अर्थ 'एक व्यक्ति एक मूल्य' से कदापि नहीं है। भारतीय समाज में आर्थिक ढांचे उन शक्तिशाली लोगों के हाथों में छोड़ दिये हैं, जो इस सिद्धांत का बिल्कुल ही पालन नहीं करते हैं। वे अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को नहीं निभाते हैं, जिसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है।''[119]

कुछ विद्वान व्यावहारिकता की ओर ध्यान नहीं देते हैं। उनका कथन है कि संविधान का कार्य केवल प्रजातंत्र के राजनीतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करना हैं। उनको कार्यन्वित करना सरकार का काम है। शोषण और अत्याचार की रोकथाम करना सरकार का कर्तव्य बताते हैं। ये विद्वान वोट देने को और मौलिक अधिकारों को ही प्रजातंत्र की आत्मा मानते हैं। लेकिन डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि ये सब बातें आर्थिक संपन्नता के बिना निरर्थक हैं। इनसे उन लागों को कोई लाभ नहीं, जो साधनहीन हैं। इसलिए यदि 'एक व्यक्ति एक मूल्य' के सिद्धांत को मानना है, यदि

---

[119] बी. आर. अम्बेडकर– स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटिज्, 1947, पृ.सं. 35

पूंजीवाद से उत्पन्न विषमताओं को दूर करना है, यदि मौलिक अधिकारों की रक्षा करनी है, यदि समाज को सबके लिए न्यायोचित बनाना है, तो राजनीति और आर्थिक ढांचे को संविधान के द्वारा प्रतिपादित करना चाहिए।

अंत में डॉ. अम्बेडकर ऐसे व्यक्तियों का आदर्श समाज चाहते थे, जो आर्थिक मूल्यों को सबके हित के लिए प्रसारित करे किंतु आर्थिक मूल्य उनके लिए साधन–मात्र होने चाहिए। वे उनके लिए साध्य नहीं हों। एक उच्च जीवन के लिए उन्हें केवल साधन मानना ही ठीक है। डॉ. अम्बेडकर का समाज आर्थिक कार्यक्रम में आधुनिक मशीनगत सभ्यता को उचित स्थान देता है। उनका कार्यक्रम संविधान द्वारा प्रजातांत्रिक समाजवाद की स्थापना को आवश्यक मानता है। संक्षेप में, विद्वान डॉक्टर ने व्यक्तिवाद एवं समाजवाद के विरोधी तत्वों को छांटकर आर्थिक क्षेत्र में एक शुद्ध समन्वयवादी सिद्धांत प्रस्तुत किया।

## 3.7 दलित समाज का यथार्थ

सदा सत्य की जीत होती है। यह गुण दलित साहित्य में देखने को मिलता है। इसलिए ही दलित लोकसाहित्य आज जीत की राह पर झूमते हुए चल रहा है। क्योंकि इस साहित्य में सत्य घटना को ही आशय बनाया जाता है। कल्पना, दलित साहित्य से कोसों दूर है। अम्बेडकरी गीतों ने अस्पृश्यता, चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विसंगतियों का यथातथ्य चित्रण किया है। ऐसा उदाहरण शायद भारतीय भाषा के किसी अन्य साहित्य में नहीं मिलता होगा। जिस समाज ने सदियों से दलितों के जीवन को दीनता असहायता, गुलामी, दरिद्रता, अपमान, अत्याचार, छुआछूत अनेक वेदना से भर दिया है। इन दर्द भरे समस्याओं को सवर्ण साहित्यकारों ने कभी मनःपूर्वक साहित्य में नहीं उतारा। इन्हीं समस्याओं को लेकर अम्बेडकरी गीतकारों ने अपनी शब्द प्रतिभा द्वारा साहित्य रेखांकित करके समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। इस गीत में गीतकार समाज की पीड़ा को गीत के द्वारा समजाते है–

‘करते थे हम तुम्हारी सलामी
पीढ़ियों से अब तक भोगते थे ये गुलामी
हे अन्नदाता! हे माई बाप !
क्या आप इस बच्चे को रोटी का टुकड़ा देंगें?
हे गोरे बच्चे की माँ
मेरा बच्चा आपके दरवाजे पर खड़ा है।’

इस दुःख दर्द को कवि स्वतः सहने के कारण इनका स्वर वेदना, आक्रोश तथा बदले के भाव से उत्पन्न होता है और क्रांति की भाषा में बदल जाता है। कभी–कभी गालियों पर भी उतर आते हैं। यह सहज है। क्योंकि न्याय न मिलने से अन्यायी को जागृत करने के लिए उसके विरोध में क्रांति ही करनी चाहिए यही कार्य दलित साहित्यकार कर रहे हैं। इसलिए भारत की समस्त भाषा में आज दलित साहित्य ने एक अलग सी पहचान बना ली हैं।

अम्बेडकरी लोकगीतकार एकाएक भावावेश हो जाता है, क्योंकि उसने जीवन के बुरे दिनों की वह घिनौनी तस्वीर देखी है। इन घटनाओं का पुनराभास होने के कारण भावावेश हो उठता है। दलितों का इतिहास उनके हृदय के रोम–रोम से प्रस्फुटित होता है। यह उनके मन की वेदनाओं का साक्षात्कार है, एक दुःख भरा इतिहास है। इन्हें आजादी का आनंद क्या होता है पता नहीं क्योंकि आजादी के बाद भी दलितों पर होने वाला अत्याचार नहीं रूका है। इसलिए मराठी के दलित कवि दया पवार कहते हैं–''अमानुषता शिगेला पोहोचली आहे। नाग भूमित तुमची अस्मिता डिचवली आहे। कोंव फुटलेल्या हिरव्यागार झाडासह। कोवळा लुसलुशीत अन्त्यज पोर। वळीदेत आहेत।''[120] अमानुषता हद तक पहुँच चुकी है। नागभूमि में अस्मिता जाग उठी है। अंकुर फूटे हरे भरे वृक्षों के साथ ही कोमल, सुकुमार अंत्यज बालकों की बलि चढ़ा रहे हैं। इस निर्दयी समाज की ओर से अन्त्यज बालकों की बलि कोमल शिशु अवस्था में ही चढ़ाई जाती है। दलितों के माँ बहनों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता है।

[120] दया पवार–कोंडवाडा,पृ.सं.47

इनकी इज्जत लूटी जाती है। बिना हिचकिचाए बाजार में सरे आम नंगा करके घुमाया जाता है। ऐसे निर्दयाी लोगों को क्या कहें, कैसी सजा दें?

लोकगीतकार अपने यथार्थमय जीवन को लिपिबद्ध करने में सफल रहे हैं। लोकगीतकार गीतों के माध्यम से माँ—बहनों पर होने वाले अत्याचार का खुलकर वर्णन करके सवर्णियों की नीचता को खोल बाहर किया है। समाज को सचेत करते हुए कहते हैं। जिस प्रकार आप लोगों ने दलितों की बहू—बेटियों पर अत्याचार किया है। उनकी वेदनाओं से हम कितने तड़पे हैं, अगर यही घटनांए तुम्हारी माँ—बहनों के साथ बीतेगी तो नानी याद आने लगेगी।

इन लोक कवियों ने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, आदि घटनाओं को ज्यों—का—त्यों गीतों में उतारने का शत प्रतिशत प्रयत्न किया है। यह कार्य किसी अन्य साहित्य में शायद दिखाई नहीं देता। इसलिए दलित साहित्य को यथार्थ साहित्य का दर्जा देने में कोई शंका नहीं होनी चाहिए।

## 3.8 मानवतावादी चेतना के स्वर

मराठी दलित लोकगीतों का मूल उद्देश्य है 'जीओ और जीने दो' सम्मान से, एकता से, मानवीयता से, अपनत्व से, समानता से, समाज में वास करें। अम्बेडकरी गीतों ने मानव को ही केंद्र बिंदु माना है। अम्बेडकरी गीत सामान्य मानव से संबंधित है। अम्बेडकरी गीत कार असमानता को तोड़कर एक ऐसे समाज की रचना करना चाहता है, जो सामान्य जनता की परेशानियों को दूर करे। मानवीय संवेदनाओं की बात करते गीतकार गीत में गौतम बुद्ध के संवेदनशील मन के भाव ' यह हंस किसका' इस गीत के माध्यम से प्रकट करते है। जब हंस को सिद्धार्थ के चचेरे भाई तिर से घायल करते है तब उस खायल हंस को उठाकर सिद्धार्थ उसका तिर निकालकर उसका बचाने की कोशिश करते हैं। तब उनके चचेरे भाई वहाँ आकर यह हंस मेरा है कहते। इस पर सिद्धार्थ का उत्तर मानवता की गरिमा को गौरान्वित करता है –

'' अरे रे रे देव दत्ता तुमने ये क्या किया।
उस जीव को मार के तुमने क्या पाया
देखो मैंने मृत्यु के दरबार से उसे बचाया
तुमने मारा किंतु मैंने उसकी रक्षा की।'

जब यह बात राजा सिद्धोधन के पास गयी तो उन्होंने इस बात का समाधान इस प्रकार दिया–

'मारने वाले से श्रेष्ठ है प्राण बचाने वाला
यह हंस सिद्धार्थ का है यह सिद्ध कर दिया।

सिद्धार्थ ने उस हंस को जीवदान दिया।
डरे हुऐ हंस को आकाश में छोड दिया।'

मराठी के दलित कवि नामदेव ढसाळ कहते हैं–
''नंतर उरल्या सुरल्यानी कुणालाही गुलाम म्हणुन लुटू नये।
काळा, गोरा, म्हणू नये, तू ब्राम्हण, तू क्षत्रिय, तू वैश्य, तू शुद्र
असे हिणवू नये। कुठलाही पक्ष काढू नये, घरदार बांधू नये
नाती न मानण्याचा। आयभैन न ओळखान्याचा गुन्हा करू नये।
अभाळाला आजोबा अन् जमिनिला आजी मानून त्यांच्या
कुशीत, गुण्यागोविंदाने आनंदाने राहावे। चन्द्र सूर्य फिके पडतिल
असे सचेत कार्य करावे। एक तील सर्वांनी करंडून खाना।
माणसावरच मूक्त रचावे माणसाचंय गाणे गावे माणसाने।''[121]

बाद में बचे हुए को न गुलाम बनाये, ना लूटे, काला गोरा ना कहे। तू ब्राम्हण, तू क्षत्रिय, तू वैश्य, तू शूद्र कहकर नीचा न दिखाये कोई पक्ष न बनाए। घरबार न बनाए, रिश्ते नातों को ना पहचानने का गुनाह न करें। आकाश को दादा और धरती को दादी समझकर उसकी गोद में आनंदपूर्वक रहें। चांद सूरज फीके पड़े ऐसा कार्य करें। एक तिल का दाना सब मिलकर खायें। आदमी के गीत रचे। मानव ही मानव के गीत गाये।

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि मानवता के महानतम गुणों का गीत गाता है। मानव की भावना का बोध मानव हो, यह इनके रचनाशीलता का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। मानव–मानव से प्रेम करे। मानव कर्तव्यपरायण होने

[121] विमल थोरात– मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक राजनीतिक चेतना, पृ. 110

से, भारत में शांति और एकता को देख सकते हैं। लोकगीतकार गीतों के माध्यम से मानव के बीच में प्रेम फैलाकर, समानता का संकेत देना चाहते हैं। देश में शांति बनाये रखाने की अपील करते हैं। देश के भविष्य के प्रति चिंता व्यक्त करते हैं, जातिवाद के कारण कहीं फिर से भारत में खलराज न हो।

अंतः मराठी लोकगीतों में समता, बंधुता, अहिंसा, मानवता आदि बिंदूओं को ही महत्वपूर्ण माना गया है। वे मानवीयता के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए समस्त देशवासियों को एक आकाश के नीचे लाकर एकता तथा समानता से रहने की आशा व्यक्त कर रहे हैं। समानता में ही मानवीयता का परिचय कराने का निश्चय गीतकार करते हैं।

## निष्कर्ष

सामाजिक न्याय के संघर्ष में मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों का योगदान रेखांकित करने पर हम यह कह सकते हैं कि आज मराठी अम्बेडकरी साहित्य अपने मुकाम तक जा पहुंचा है और अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे जाने वाले दलित साहित्य के लिए वह प्रेरणापुंज बना है। वह दशकों लंबी संरचना यात्रा तय कर चुका है। दलित चेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति ने मराठी ही नहीं, भारतीय भाषाओं के साहित्य पर भी प्रश्नचिन्ह लगाया है। दलित जीवन की तमाम वेदना, वंचना, उत्पीड़न, अपमान, पीड़ा की अभिव्यक्ति से हिंदू धर्माभिमानियों को झकझोर रहा है। सवर्ण समाज व्यवस्था, संस्कृति, इतिहास से यह अभिव्यक्तियां सवाल करती हैं, क्यों इस व्यवस्था ने एक मनुष्य से हीन बनाया? क्यों उसे अस्पृश्य बनाकर गांवों, कस्बों के कूड़े–करकट के ढेर पर रहने को विवश किया? उसके मूलभूत अधिकारों को छीनकर उसे भूखा–प्यासा और दया की भीख पर निर्भर बनाकर छोड़ दिया? लेकिन बाबासाहब अम्बेडकर ने इस अपमान पीड़ित दलित वर्ग को मुक्ति का मार्ग बताकर उनमें अपने अस्तित्व के प्रति अहसास जगाया। डॉ. अम्बेडकर के विचारों और कार्यों ने दलितों को अन्यायपूर्ण संस्कृति, समाज–व्यवस्था को नकारकर दलित साहित्य मानवतावादी, समतावादी, विज्ञाननिष्ठ दृष्टि से नए समाज के निर्माण का सपना देखा है।

# चौथा अध्याय

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों की भाषा एवं शिल्प

4.1 अम्बेडकरी लोकगीत : वैकल्पिक भाषा की तलाश

4.1.1 गद्यात्मकता सपाटबयानी

4.2 प्रतीक

4.3 बिम्ब

4.4 वैचारिक सौंदर्य

4.5 अन्य भाषाओं के शब्द

**निष्कर्ष**

## 4.1 अम्बेडकरी लोकगीत : वैकल्पिक भाषा की तलाश

संस्कृति का मुख्य आधार भाषा है। भाषा का मानव समाज एवं संस्कृति से गहरा संबंध है, क्योंकि भाषा मानवीय परंपराओं का वाहन है, अर्थात भाषा न केवल संस्कृति का हिस्सा माना जाता है बल्कि भाषा में ही संस्कृति अभिव्यक्त होती है। दूसरे शब्दों में, किसी समाज अथवा संस्कृति को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना अत्यंत जरूरी है। प्रसिद्ध मानवशास्त्री मैलिनोवस्की लिखते हैं कि 'भाषा से एक संस्कृति के कई रहस्यों के बारे में पता चल सकता है।'

कविता के रूप में हमारे समक्ष जो कुछ भी प्रस्तुत होता है वह भाषा के माध्यम से जीवनानुभव और अनुभूति की अभिव्यक्ति न होकर, जीवनानुभव और अनुभूति का भाषा में रूपांतरण है। यहाँ भाषिक संवेदशीलता में सामाजिक संवेदनशीलता छिपी रहती है। इसी बात की ओर संकेत करते हुए प्रसिद्ध पश्चिमी विचारक अडोर्नो ने लिखा है "उदात्त प्रगीत वे होते हैं जिनमें कवि अपनी भाषा में खुद को इस तरह विलीन कर देता है कि उसकी उपस्थिति का आभास नहीं होता और भाषा का अपना स्वर कविता में गूंजने लगता है। इसी प्रक्रिया में जब भाषा के स्तर पर कविता समाज से जुड़ती है तब कविता की भाषा केवल कवि की मानसिकता को ही व्यक्त नहीं करती, वह अपने समय और समाज की मानसिकता को भी व्यक्त करती है। ऐसी स्थिति में कवि की भाषा चेतना

उसके जीवनबोध का पर्याय बन जाती है।"[122] इस कसौटी पर दलित कविता और उसकी भाषा खरी उतरती है।

मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों की भाषा सहज, सरल तथा आम बोलचाल की भाषा है। मराठी दलित साहित्य ने परंपरागत भाषा, काव्यशिल्प, शैली तथा रूप को नकारा है। जिस परंपरागत मराठी साहित्य में दलित जीवन की अवहेलना, अपमान और वेदना की अभिव्यक्ति न हुई हो उसकी परंपरा और भाषा को दलित लेखक अपनी काव्य परंपरा और सृजनात्मक भावों की भाषा के रूप में कैसे स्वीकार कर सकता था? अम्बेडकरी लोकगीतकार अपनी वेदना को व्यक्त करने के लिए संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत भाषा का सहारा नहीं ले सकता था। इसका और एक कारण हम कह सकते है कि हमारा दलित समाज अशिक्षित, पिछड़ा, और नासमज है। तथा बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों को अनपढ़, अशिक्षित दलित समाज तक लेकर जाना है, और उन विचारों को वे आत्मसात कर सके। ऐसी सरल भाषा में उन्हें समजाने के लिए दलित लोकगीतकारों ने अपनी रोज मर्रा की बोली में ही दलित लोकगीतों की रचना की। ताकि दलित समाज बाबासाहब के विचारों को जान सके और इन प्रगतिवादी विचारों को अगली पीढ़ी तक पोहचा सके।

हिंदी साहित्य के लेखक कमलेश्वर कहना है कि ''दलित साहित्य के सभी लेखक गहरे जीवन संदर्भों से जुड़े हुए लेखक हैं, जिन्होंने व्यक्तिगत और किताबी भाषा से अपने को अलग करके समय के विस्तार में जी रहे आम आदमी की 'बोली' को रचनात्मक भाषा का दर्जा दिया है। इन्होंने

---

[122] मुद्राराक्षस, 'साहित्य की संस्कृति में दलित'– राष्ट्रीय सहारा, 29 नवंबर 1998, पृ. 14।

अपने प्रदेशों, अंचलों, गली–कूचों, नगरों, महानगरों में बिखरी और वातावरण में समाई भाषा को नये अर्थ दिये हैं।''[123]

अम्बेडकरी लोकगीत की भाषा विद्रोह की भाषा है। दलितों की वेदना को शब्दबद्ध करते वक्त वह अत्यंत क्षोभ और विद्रोह से भर उठती है। इन शब्दों की शक्ति के बारे में वामन निंबालकर को विश्वास है कि–

''शब्दांनीच पेटतात घरे, दारे, देश
आणि माणसेसुद्ध,
शब्द विझवतात आगही
शब्दांनी पेटलेल्या माणसांची.
शब्द नसते तर पडल्या नसत्या
डोळ्यातून आगीच्या ठिणग्या
वहिले नसते आसवांचे महापूर
आले नसते जवळ कुणी
गेले नसते दूर–

---

[123] दलित साहित्य संसद–कमलेश्वर, 'स्मर्णिका तीसरा दलित साहित्य सम्मेलन–28 जनवरी, 1979।
2. गांव कुसाबाहेरील कविता– वामन निंबाळकर, पृ.सं.1
**हिंदी अनुवाद**

शब्दों से प्रज्वलित होत हैं घरबार देश और मनुष्य भी।

शब्द बुझाते हैं आग भी

शब्दों से प्रज्वलित मनुष्य भी।

शब्द न होते तो आंखों से चिंगारी नहीं बरसती

न बहता आंसुओं का महापुर

आता न पास कोई

ना जाता दूर

शब्द ना होते तो–

शब्द नसते तर.'' [124]

भाषा की शक्ति को लोकगीतकारों ने बखूबी पहचाना है। इसलिए अपनी सरल सीधी साधी बोली में ही गीत रचना की। इसी कारण आगे चलकर इन गीतों को बहुत लोकप्रियता मिली। जगह–जगह, चौराहे, बस्ती में, घर–घर में गीत बजाऐ और गुनगूनाऐं जाते है। ऐसी ही सरल बोली का गीत उदाहरण के लिए प्रस्तुत है–

'गाँव कोसाच्या बाहेरच रूप बदलून गेलं गं
कालच्या महार वाडयाच भीमनगर झालं गं ।। धृ।।

गवताची झोपड़ी आधी आता आलोय बगल्या मधी
नव्हती मिळत गोदढ़ी साधी
आता झोपायाला मऊ मऊ गाधी
फ्रिज, टी वी आणि कूलर संमध घराज आलंय गं
कालच्या महार वाड्याच भीमनगर झालं गं ।। 1।।'

अम्बेडकरी लोकगीतों में व्यक्तिगत अनुभवों से संपृक्त होने के साथ ही समूह मन के अनुभवों की अनुभूति भी है। इस बारे में दलित साहित्य समीक्षक डॉ.मांडे दलित साहित्य की भाषा के प्रति पूर्ण रूप से आश्वस्त हैं– ''दलित साहित्य व्यक्ति विशेष के माध्यम से होने वाली समूहमन की अभिव्यक्ति है। इसलिए दलित साहित्य की अभिव्यक्ति दलित समाज की उस बोली भाषा में होना अपरिहार्य है। यही कारण है कि दलित साहित्य की भाषा बोली भाषा के करीब आती है।''[125]

---

[125] दलित साहित्याचे वेगळेपण–डा.मांडे मराठी पुस्तक पृ.सं.29

मराठी अम्बेडकरी लोकगीत कार 'वामन दादा कर्डक', 'विलास घोगरे', 'अण्णा भाऊ साठे', 'भीमराव कर्डक', 'विठ्ठल उमप', 'प्रल्हाद शिंदे', 'आनंद शिंदे' आदि सभी के गीतों की भाषा रोज–मर्रा की बोली भाषा है। इसी कारण इनके गीत वर्तमान समय में भी प्रसिद्ध है। अंतः अम्बेडकरी लोकगीतों का साहित्य जन साहित्य के निकट और मन की अंतरिक पीड़ा की अभिव्यक्ति है।

### 4.1.1 गद्यात्मकता सपाटबयानी

अम्बेडकरी लोकगीतों की भाषा में गद्यात्मकता और सपाटबयानी मिलती है। इसके पीछे दलित समाज की पृष्ठभूमि एवं परिवेश है। इसने काव्य की परंपरागत शैली और शिल्प को नकारा है, क्योंकि जो बात इन्हें कहनी है वह काव्य के पद्यात्मक रूप में और छंदबद्ध या तुकों के मिलने से नष्ट हो जायेगी। जिस दलित समाज की जिंदगी के दस्तावेज़ ये लोकगीत प्रस्तुत करते है। उस जीवन को इसी भाषा में, अभिव्यक्ति मिली है, साथ ही उनके जीवन संदर्भ से जुड़े विशिष्ट शब्दों का प्रयोग बड़ी ही कुशलता से किया गया है। अम्बेडकरी लोकगीतों का संबंध दलित जीवन के निकट पाया जाता है।

दलित साहित्य दलितों की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए लिखा गया साहित्य है। दलित वर्ग प्राचीनकाल से ही अज्ञान एवं अशिक्षा के भयावह अंधकार में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। आज भी वह कुछ हद तक अशिक्षित, या अल्पसाक्षर है। इस समाज का एक बहुत बड़ा पाठक वर्ग अशिक्षित, अल्पशिक्षित है, जो क्लिष्ट शब्दों के मायाजाल को समझने में असमर्थ है। इस लिए दलित लेखक आम बोल चाल का

उपयोग करते है। दलित लेखकों ने समाज में जो भोगा वही लिखा और अपने समाज में चेतना जागृत करने के लिए लिखा। लोकगीत कार '**मेरे भीम की मेहरबानी, सोने की अंगूठी ऊँगली में** इस गीत में कह रहे है कि बाबासाहब के आने से हमारा जीवन सुखमय हुआ है।

'नही मिलता था पेट को
अब कम नहीं पैसों को
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की ऊँगली में
गुजरी हुई पीढियों ने गुलामी सही
अनेक वर्षों से जीवन जलता रहा
परेशान हुए एक घूंट पाणी के लिए
मेरे भीम की मेहरबानी
अंगूठी सोने की ऊँगली में'

दलित साहित्य ने कभी भी 'साधना' को महत्व नहीं दिया 'साध्य' को ही निशाने पर रखा है। दलित साहित्यकारों के लिए अपने उदेद्श्य ही सर्वोपरि रहे हैं भाषा नहीं। दलित वर्ग जो कम–पढ़ा लिखा है उसे जागृत करने के लिए उनकी आम बोलचाल की भाषा को अपनाना अनिवार्य ही था।

दलित साहित्य में यथार्थ बोध को सर्वोपरि माना जाता है, तो दलितों की तो यह पारिवेशिक भाषा है। उनके परिवेश में साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं होता है, अतः उनकी पारिवेशिक घटनाओं का बयान भी उसी भाषा में किया गया, जो यथार्थ परक है। ''दलित जीवन की विसंगतियाँ,

उत्पीड़न, शोषण और दमन की अभिव्यक्ति के लिए ऐसी ही सरल, सहज और सटीक भाषा अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसके श्रोता, पाठक कम पढ़े–लिखे दलित वर्ग के लोग हैं। इसलिए अम्बेडकरी लोकगीतों की भाषा भी अधिकतर गद्यात्मक है।''[126] दलित लोकगीतों की आम बोलचाल युक्त भाषिक अभिव्यंजना सामाजिक संदर्भों से आसानी से जुड़ जाती है, और वह अपनी अभिव्यक्ति में एक क्रांति आंदोलन का आव्हान करती है। जैसे इस गीत में गीतकार जातिवादी लोगों को चेतावनी देते है कि

'भीम नाम के लिए हम खून बहाऐ हैं
किसी में दम है तो नाम मिटाए ।। धृ।।

जलाया जिसने ज्ञान का दिया है।
नाम नहीं उन्हीं का आया है।
नाम भीम के कारण आ गया इसे मोल
मिटा के दिखाओ इसे है कोई मायका लाल' ।। 1।।

मराठी लेखक 'भालचंद्र फड़के' कहते हैं, ''आज के साहित्य में दलित लेखक अपने वर्तमान जीवन का आविष्कार धीमी गति से कर रहे हैं, उसके साहित्य का उसके जीने की प्रक्रिया से संबंध है। अपने दहकते और अस्वस्थ करने वाले अनुभवों को जब वह अभिव्यक्त करने लगेगा तब उसकी अलग पहचान बनेगी।''[127] इस तरह भोगे हुए यथार्थ को लोकगीत कार अभिव्यक्ति देने के लिए अपनी उसी आम बोलचाल भाषा का उपयोग करता है।

[126] दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–डॉ.हरिनारायण ठाकुर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ल, 201, पृ.सं.118
[127] दलित साहित्य : वेदना आणि विद्रोह– भालचंद्र फड़के, मराठी –पृ.सं. 176।

## 4.2 प्रतीक

'प्रतीक' वह शब्द है जो कविता के संदर्भ में कवि के शब्द लाघव की प्रेरणा से उद्भूत होता है। प्रतीक किसी वस्तु विशेष की ओर ही संकेत करता है। डॉ. केदारनाथ सिंह के अनुसार ' प्रतीक कोई 'वस्तु' नहीं, वह एक विराट रचनात्मक प्रक्रिया में पड़ने वाला ऐसा बिन्दु है जो किसी पदार्थ को एक निश्चित वस्तु के रूप में परिचित कराता है।''[128]

डॉ. कैलाश वाजपेयी के अनुसार ''प्रतीक विस्तार को संक्षेप में कहने का माध्यम है।''[129] इन परिभाषाओं के अनुसार 'प्रतीक' एक ऐसी शब्द रचना है जिसके संकेत से किसी भावना, विचार या पदार्थ का बोध होता है। मानव जीवन में प्रतीकात्मक सृष्टि का असाधारण महत्व है। जो बात बिम्बों के माध्यम से व्यक्त नहीं कर सकते हैं उसे प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। केदारनाथ सिंह ने इसे मानव जीवन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि माना है। वे कहते हैं– ''मानव सभ्यता के विकास में प्रतीकों का उतना ही योग है जितना हमारे जैवी विकास में सूर्य अथवा जल का।''[130]

युगीन चेतना, आर्थिक एवं राजनीतिक घटनाएं, सामाजिक परिस्थिति ऐतिहासिक घटनाक्रम, प्राकृतिक वातावरण आदि की प्रेरणा से प्रतीकों की सृष्टि होती है। समय के अनुरूप नये प्रतीकों को गढ़ा जाता है, पुराने प्रतीकों को नया अर्थ प्राप्त होता है। मराठी दलित कवियों, लोकगीतकारों ने प्रतीकों का प्रयोग जीवन की वास्तविकता को उसके सच्चे रूप में

[128] कल्पना और छायावाद–डॉ.केदार नाथ सिंह, पृ.सं. 97
[129] हिंदी कविता में शिल्प–डॉ. कैलाश वाजपेयी, पृ.सं.75
[130] कल्पना और छायावाद–डॉ.केदार नाथ सिंह, पृ.सं. 96

अभिव्यक्त करने के लिए किया। लोकगीतकारों ने पहाड, पानी, सूरज, सर्प, आदि परंपरागत प्रतीकों का उपयोग युगीन संदर्भ को व्यक्त करने के लिए किया। अम्बेडकरी लोकगीतों में दलित समाज के उस यथार्थ को जो कवि का निजी भोगा हुआ यथार्थ है जिसमें अत्याचार, लाचारी, बेकारी, दरिद्रता, गंदगी का नरक, भूख से बिलबिलाते लोग हैं, अपने जीवन एवं परिवेश से उभरे प्रतीकों को दर्शाता है।

जब कवि अभिधा के माध्यम से अर्थ सम्प्रेषित करने में असमर्थता महसूस करता है, वह प्रतीकों के सहारे अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है। प्रतीकों से परिपूर्ण है। दलित कविता में प्रतीकों का बहुत प्रयोग किया गया है। अपने अर्थ के प्रभावी सम्प्रेषण के लिए इन कवियों ने नए प्रतीकों का प्रयोग किया है। अम्बेडकरी लोकगीतकार और कवि अपनी कविता में प्रतीकों का प्रयोग करते समय कवि ने उन्मुक्त कल्पना का प्रयोग किया है। अम्बेडकरी लोकगीतों में प्रयुक्त प्रतीकों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता

1. पौराणिक, धार्मिक और ऐतिहासिक प्रतीक
2. राजनीतिक व सामाजिक प्रतीक
3. दैनिक घटनाओं से सम्बन्धित प्रतीक
4. शोषण के उपकरणों के प्रतीक
5. शोषित के प्रतीक

अम्बेकरी लोकगीतों में पौराणिक, धार्मिक ऐतिहासिक प्रतीकों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। शम्बूक, एकलव्य, गांधारी, कर्ण, द्रोण आदि प्रतीकों के द्वारा दलितों के दलन को व्यंजित किया गया है।

अम्बेडकरी लोकगीतकार अपने गीतों में एक जगह शोषण के तंत्र को तोड़ने को कहता है – **'जंजीरों को तोड़ यही तुम्हें पूकार है।**

**निकाल फेंक इन रूढ़ीवादी वस्त्रों को**

**रथ खिचने के लिए अग्र पंथी का**

**नयी क्रांति की दिशा में एक ललकार है।'**

इस तरह लोकगीतकारों ने मनुवादीयों के षड़यंत्र को पहचाना है। इस झूठी व्यवस्था को तोड़ने के लिए लोककवि ने जंजीर, रूढ़ीवादी वस्त्र, आदि को शोषण का प्रतिक माना है। इस व्यवस्था को तोड़ने के लिए गीतकार गीत के माध्यम से इस जर्जर हुई परंपरों को नष्ट कर समाज को सही नेतृत्व करने को कहता है।

बाबासाहब ने मनुष्य के जीवन में शिक्षा को महत्वपूर्ण माना। अपने जीवन के अंत तक वे समाज को शिक्षित करने के लिए प्रयत्न शील रहे। इसी ज्ञान को दर्शाने के लिए लोकगीतकारों ने 'ज्ञान का दीया' इस तरह से प्रतिक रूप में अपनी बात को समाज के सामने स्पष्ट किया है।

वर्तमान समय में दलित समाज के कुछ लोग बाबासाहब के रास्ते से भटक गये है, इन भटके हुए अनुयाईयों को सही राह पर लौटने को कह रहे है यहाँ अम्बेडकरी लोकगीतकार कहते हैं–

'बहुत परिश्रम से सुख का करके त्याग

तुझे भीमने बनाया शेर, क्यों फिरता है भेड़ियों के पीछे?

सिर्फ दिखने के लिए दिखता है तू भीम अनुयायी

तुम्हारी दहाड़ कान को क्या नही सुनाई देती।'

शेर यह प्रतीक साहसी है। दलित समाज नवयुवकों को आगे आकर समाज की प्रगति के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा रहा हैं। वर्तमान में दलित समाज के नवयुवक भेडियों जैसे आचरण कर रहे हैं। ये लोकगीतकार बाबासाहब की याद दिलाकर उन्हें कह रहे हैं। कि तुम्हें बाबासाहब ने शेर बनाया है।

समाज में काजू, बदाम, पिस्ता लोग खाते हैं, उन्हें समाज में आर्थिक दृष्टि से संपन्न कहा जाता है। अम्बेडकरी लोकगीतकार कहता है कि–

मंहगाई का खाता है आज

बदाम, काजू, पिस्ता

भूखा मर गया होता अगर

मेरा भीम न होता

इस गीत में बदाम, काजू, पिस्ता, आर्थिक संपन्नता का प्रतीक दिखाया गया है। गीतकार उन लोगों को समजाना चाहता है कि यह सब बाबासाहब की देन है, जो आज तुम अच्छी स्थिति में पहुँच गये किंतु बाबासाहब को याद भी नहीं करते।

पूरे विश्व ने बाबासाहब को 'ज्ञान का प्रतीक' माना है। अम्बेडकरी लोकगीतकार वंदन गीत में बाबासाहब को 'ज्ञान' प्रतीक मानते है। इस कारण वे कहते है –

'विद्वान बने विश्व में भीमराव

शरण उन्हें जाऐंगे महापुरूष के कार्य को
काव्य फूल अर्पण करेंगे,
ज्ञान की खाण थे भीमराव,
ज्ञान के बल पर गूंजता नाम,
भीम ज्ञान की घर–घर में ज्योति ऐसी लगाऐंगे।

इस गीत में भींमराव को ज्ञान की खाण कहाँ गया हैं। बाबासाहब के ज्ञान के लिए खाण इस प्रतीक का प्रयोग किया है। खाण जिस तरह समाप्त नहीं होती, उसी प्रकार बाबासाहब का ज्ञान भी कभी समाप्त नहीं होगा।

### 4.2.1 बिम्ब

बिम्बों की प्रतीकों से भिन्न सत्ता है। डॉ. राम अवध द्विवेदी लिखते हैं– ''बिम्ब का स्वरूप और प्रभाव प्रधानतः ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्राह्य हैं यद्यपि स्पर्श तथा श्रवण से भी मन में चित्र बनते हैं तथापित अधिकांश बिम्ब दृष्टि से संबंधित होते हैं। चित्रों का स्पष्ट अंकन और मूर्त रूप में उत्पन्न होना अत्यंत आवश्यक है प्रतीक में इस प्रकार का चित्रांकन अपेक्षित नहीं है। इसका कार्य मन को एक अन्य प्रकार से प्रभावित करना है। प्रतीक किसी पदार्थ का चित्र नहीं खींचता केवल संकेत द्वारा उसकी विशिष्टता अथवा उसके प्रभाव को इंगित करता है। उसका अपना पृथक अस्तित्व है, जो किसी अन्य वस्तु अथवा तथ्य पर अवलम्बित नहीं रहता।''[131]

[131] डॉ. रामअवध द्विवेदी–आलोचना, 23–07–1957,पृ.सं.25,26

कवि इस वस्तु–जगत से अपने मानस में चित्रों को ग्रहण करता है और अपनी कल्पना द्वारा जब वह अभिव्यक्ति देता है तो बिम्ब योजना की दृष्टि से अम्बेडकरी लोकगीत सम्पन्न है।

अम्बेडकरी लोकगीत में बिम्ब दलित जीवन की त्रासदी और उसके यथार्थ को व्यक्त करते हैं। अम्बेडकरी लोकगीतों में अंधेरा, आसपास के परिवेश में गरीबी, झोपड़ीयाँ, मेहनत करने वाले मजदूर, आदि का अम्बेडकरी लोकगीतों के माध्यम से यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया जाता है। उन वस्तुओं को दृश्य बिम्ब के स्थान पर रखकर गीतकार इन्हीं वस्तुओं में अपने जीवन के प्रतिबिम्ब ढूँढता है।

इसी तरह का एक गीत यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। इस गीत में महाराष्ट्र की दलित बस्तीयाँ जिसे 'महारवाडा' कहाँ जाता था, इनका वर्णन किया गया है। बाबासाहब के प्रयासों से आज इस महारवाडा का 'भीम नगर' बन गया है। इस गीत को पढ़ने के बाद आँखों के सामने उसी गरीबी में जीवन यापन कर रही दलित बस्तीयों का चित्र सामने आता है। इस गीत के माध्यम से पुराने महारवाडा और वर्तमान समय के भीमनगर का चित्र बिम्ब के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

गाँव के बाहर का रूप अब बदल गया है।<br>
कल का महारवाड़ा अब भीम नगर बन गया है। ।। धृ ।।<br>
कल तक थी जो झोपड़ी घास की<br>
अब आ गये बंगले में<br>
आज नरम नरम गद्दी मिल गयी<br>
फ्रिज, टी. वी और कूलर सब घर में आया

कल का महारवाडा अब भीम नगर बन गया है। ।। 1।।

इसी तरह और एक लोकगीतकार वराडी गीत में झाडूवाली दलित स्त्री का बिम्ब प्रस्तुत करता है–

बगल में बच्चा हाथ में झाडू
सिर पर गोबर की टोकरी
ना कपड़ा ना लता
जूठन भत्ता
बेइज्जती थी बड़ी
मेरे भीमने, मेरे बापने रे
ओ मेरे भीमने
गोद मेरी सोने से भर दी।
टूटी झोपड़ी को था टूटा दरवाजा
फटी साड़ी में बंदी थी सतरा पैबंद हजार गांठ।

इस गीत में गोबर की टोकरी, झाडू, जूठन, टूटी झोपड़ी, फटी साड़ी आदि दलित जीवन का यथार्थ है, जो दलित संदर्भों से जुड़े हैं।

## 4.4 वैचारिक सौंदर्य

''आपण कुणाचे गुलाम नाही, आपले कुणी स्वामी नाहीत, आपण स्पृश्य, अस्पृश्य कोणी नाही, आपण माणसे आहोत.''[132] अर्थात हम किसी के गुलाम नहीं, हमारे स्वामी नहीं है हम स्पृश्य, अस्पृश्य नहीं हैं हम मनुष्य हैं। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने सबसे बड़ा धर्म मनुष्यता को माना है। यही विचार लोकगीतों में अभिव्यक्त हुआ है। डॉ.अम्बेडकर ने अनपढ़, अल्प शिक्षित, और डरे हुए समाज को स्वाभिमान से जीने का आत्मविश्वास उनके अंदर जगाया। इस गीत में इसी विचार को देखा जा सकता है–

'शिक्षा के दम पर गया बड़े जगह पर
कहीं पर हो अन्याय तो प्रतिकार करता है भीमवीर
ऐसा दूध शेरनी का दिया मेरे भीमने
कल तक जो था महारवाडा
अब भीम नगर बन गया है।'

'यह हंस किसका है' इस लोकगीत में सिद्धार्थ के संवेदनशील मन और मानवीयता का परिचय देखने को मिलता है–

'अरे रे रे देव दत्त तूने ये क्या किया
उस जीव को मार के तूने क्या पाया
देखो मैंने मृत्यु के दरबार से उसे बचाया
तूने मारा लेकिन मैंने उसकी जान बचाई।'

दलित लोकगीतकार बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों का दीपस्तंभ लेकर गाँव–गाँव जाकर गीत गायन के माध्यम से प्रबोधन कर रहे हैं। इन

[132] दलित साहित्यः उद्गम आणि विकास भाग 1–मेश्राम, डॉ. योगेंद्र,

लोकगीतकारों में 'किसन फागू', 'वलंगकर', 'वामन कर्डक', 'विठ्ठल उमप', 'आनंद शिंदे', 'प्रल्हाद शिंदे', 'मिंलिद शिंदे', 'आर्दश शिंदे' आदि हैं। डॉ. अम्बेडकर के आंदोलन और उससे उभरी चेतना को लोगों तक पहूँचाने का महत्वपूर्ण कार्य लोकगीतकारों ने किया हैं। ''दहा भाषणे एकीकडे आणि करडकांचा एक जलसा एकीकडे.''[133] इसी शब्द में डॉ.अम्बेडकर ने लोकगीतकार कर्डक को कहाँ है। अम्बेडकर कहते है कि समाज की रचना समता के आधार पर होना चाहिए।

बाबासाहब ने जिन सामाजिक आंदोलनों को शुरु किया उनका प्रभाव गाँव–गाँव फैलने लगा, अशिक्षित जनता यह समझने लगी कि हमारे हकों की लड़ाई लड़ने वाला, सुधारक, विचारक नेता हमारा अपना है। पुरानी रूढ़ि परंपराओं को त्यागकर नये विचार 22 प्रतिज्ञाओं, बुद्ध विचारों को वह ग्रहण करने लगा। देव, धर्म एवं मनगढ़त कल्पनाओं का त्याग वह करने लगा। जिस भजन मंडल के नाम देव–धर्म के नाम पर आश्रित थे उसका स्वरूप बदलने लगा। उनके नामांतर होने लगे। भीम मंडल, दलित हितवर्धक, अम्बेडकरवादी, समाज समता मंडल, जयभीम मराठी भजन मंडल इस प्रकार के नये नाम वे ग्रहण करने लगे। इनके गीतों के विषय भी बदलने लगे। 'डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर', 'भगवान गौतम बुद्ध', 'महात्मा फुले', 'संत कबीर', 'संत चोखामेळा' आदि के गुण गौरव व्यक्तिपरक गीत आदि के साथ–साथ 'पूना पैक्ट', 'गोलमेज परिषद', 'धर्मांतरण, 'हिंदू कोड बिल', 'महाड़ आंदोलन', 'नासिक मंदिर प्रवेश', 'संविधान महात्म्य' आदि

[133] आंबेडकरी शाहिरी एक शोध–किरवले,डॉ. कृष्णा, पृ सं.70।

विभिन्न विषयों पर वैचारिक सुंदरता बड़ा ने के गीत लिखे गऐ। ऐसा ही एक गीत प्रस्तुत है–

'हिंदू, मुसलीम, सिख, ईसाई,
हम सब भाई–भाई
मिलकर ऐसे गीत गाऊ
नहीं चाहिए हुकुमशाही
लोकतंत्र को स्थापित करे
उनकी कीर्ति है भूमि पर'।

इस तरह लोकगीतकार डॉ. अम्बेडकर के विचारों को जनसामान्य तक पहुँचाने का काम गीतों के माध्यम से कर रहे हैं।

'डॉ. अम्बेडकर जैसे सपूत्र
लोकतंत्र का करते है आदर
उनकी कीर्ति है भूमि पर
शूर वीर शिवाजी, टिलक, आगरकर
होगा नहीं ऐसा कोई वीर पुरूष
बने सावित्रीबाई फुले
उनकी कीर्ति है भूमि पर
मानवता का काल्याण होगा दिया ऐसा मंत्र
सत्य, शांती देकर गये महावीर गौतम बुद्ध।'

भगवान बुद्ध, कबीर एवं महात्मा फुले के बाद डॉ अम्बेडकर एकमात्र ऐसे विद्धान हैं जिन्होंने वर्ण–व्यवस्था की कटू आलोचना की और धर्मांतरण

कर नयी राह दिखाई। उसी कार्य को उनके अनुकर्ता और नये समाज निर्माणकर्ता, साहित्यकार, लोकगीतकार कर रहे हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने इन आंदोलनों को खड़े करते समय एक क्रांतिकारी नारा उन्होंने दिया, 'शिक्षित बनो', 'संगठित रहो', 'संघर्ष करो'। इसी परिवर्तवादी विचारों को लोकगीतों में हम देख सकते हैं।

समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय इन जीवन मूल्यों को अम्बेडकरी लोकगीतों में देखा जा सकता है। स्वंतत्रता, समानता और न्याय आदि ऐसे मूल्य हैं जिनकी ओर मनुष्य अनायास आकृष्ट होता है और यह अकारण नहीं है कि मानवता के इतिहास में लाखों कराड़ों लोगों ने इसके लिए कुर्बानियाँ दी हैं अर्थात् मनुष्य को कलामूल्य के समान ही बल्कि उससे भी अधिक सामाजिक मूल्य प्राणप्रिय नजर आता है। अर्थात् मनुष्य के लिए ये सामाजिक मूल्य किसी भी कलागत साहित्यिक मूल्यों से ज्यादा मूल्यवान हैं। दरअसल समता, स्वतंत्रता, न्याय और प्रेम आदि व्यक्ति और समाज की मूलभूत भावनाएँ हैं। यही दलित साहित्य की शक्ति है और उसका सौन्दर्य भी। 'शरण कुमार लिम्बाले' लिखते हैं ''दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र 1. कलाकारों की सामाजिक प्रतिबद्धता, 2. कलाकृति में जीवन मूल्य, 3. पाठकों के मन में जागृत होनेवाली समता, स्वतंत्रता, न्याय और भ्रातृत्वभाव की चेतना जैसे मूल तत्वों पर टिका रहनेवाला है।''[134]

[134] शरणकुमार लिम्बाले –दलित साहित्य का सौदंर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, 2000,पृ.115

### 4.5 अन्य भाषाओं के शब्द

आज मनुष्य अपनी मातृभाषा के साथ—साथ दो या तीन भाषा बोलता है। जैसे हिंदी, अंग्रेजी, मातृभाषा आदि। दलित समाज आज आधुनिकता की ओर बढ़ते जा रहे हैं। शिक्षा के द्वारा वह उच्च जीवन पद्धति को अपना रहे हैं। बाबासाहब के प्रयासों से दलित समाज उनके दिखाएं हुए कदमों पर चलता जा रहा हैं। वैज्ञानिक सोच के चलते इन्हें समाज में प्रगति के अनेक स्थान प्राप्त हो रहे हैं। इस कारण दलित समाज की आर्थिक हालत सुधार रही है। जब आर्थिक समृद्धि आती है तो मनुष्य दैनंदिन जीवन में आधुनिक वस्तुओं पर निर्भर रहता है। पहले जो काम हाथों से करता था आज वही काम मशीनों से करता है। दलित समाज की प्रगति के कारण उनके घरों में आधुनिक मशीनों का उपयोग हो रहा हैं। इस वस्तुओं का उपयोग अपने सुविधाओं के लिए कर समय की बचत कर रहा हैं।

इसी वस्तुओं के उपयोग को देखकर अम्बेडकरी लोकगीतकार अपने गीतों में इनका उल्लेख करता है। इन वस्तुओं को अंग्रेजी भाषा में ही संबोधित किया जा सकता है और अंग्रेजी भाषा में ही यह शब्द प्रचलित होते हैं। इस तरह अम्बेडकरी लोकगीतकार अपने गीतों में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। जैसे— कंप्यूटर, वॉशिंग मशीन, टी.वी , फ्रिज, ऑफिस, ड्रायवर, टाय, कोट, पेन, कूलर, बाईक आदि।

## निष्कर्ष

इस साहित्य को दलित लिखता है चूंकि वह भुक्तभोगी होता है यानी वह वंचनाओं, निषेधों, प्रतिबंधों और अवरोधों के बीच जिंदा रहने का आदि होता है। इसीलिए वह वही लिखता है जो यथार्थ की जमीन पर खड़ा है, कल्पना के आकाश में नहीं, इसलिए उसकी भाषा कुलीन भाषा नहीं। इधर कुलीन भाषा इस काबिल ही नहीं है कि दलित की जिंदगी के हर एक खुरदरेपन को समेट सके। वह अपनी खुरदरी, नुकीली, तीखी, और सीधी–सादी भाषा में लिखता है। यद्यपि कुलीन भाषा और उसका साहित्य, मनोरंजन और ऐश्र्वय के माध्यम रहे हैं और अधिकतर यह साहित्य या तो स्वान्तः सुखाय लिखा जाता रहा है। या फिर चाटुकारिता में अपने लाभ के लिए । जबकि दलित साहित्य एक लक्ष्य रखता है और वह डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की सोच के प्रति प्रतिबद्ध है। यह साहित्य मनोरंजनकारी नहीं है बल्कि वह चोट करता है, कचोटता है या फिर शर्मसार करता है उन्हें, जिनके पूर्वजों ने उन पर जुल्म किए थे। इस प्रकार वह मन और सोच बदलने का साधन भी बनता है।

# पाँचवाँ अध्याय

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों के हिंदी अनुवाद की समस्याएँ

5.1 लेखन विधि की समस्याएँ

5.2 शब्दार्थ एवं अर्थ भिन्नता से संबंधित समस्याएँ

5.3 व्याकरणगत समस्याएँ

5.3.1 लिंगगत समस्याएँ

5.3.2 वचन और कारक से संबंधित समस्याएँ

5.3.3 शब्द शक्ति

5.6 प्रादेशिक शब्दों के अनुवाद की समस्याएँ

5.7 रिश्तों के नाम संबंधी समस्या

5.8 जनजीवन से संबंधित शब्द

5.9 ग्रामीण शब्दों के अनुवाद की समस्या

**निष्कर्ष**

हिंदी और मराठी भाषाओं के प्रदेश सुदूर उत्तर और दक्षिण में स्थित होने पर भी, इन दोनों आर्यभाषाओं में पर्याप्त समानताएँ हैं। वैसे दोनों भाषा भगिनी होने के नाते उनमें पर्याप्त आंतरिक समानताएँ होने के बावजूद कई प्रकार की भिन्नताएँ भी हैं। मराठी भाषा का चेहरा, उसकी प्रकृति और स्वभाव, संरचनात्मक स्वरूप आदि भाषाई रूप के साथ ही मराठी की अपनी सामाजिक दृष्टि का एवं जीवन व्यवहारगत क्षेत्रीय विशिष्टता के कारण, सुदूर उत्तर में पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए विशालकाय प्रदेश की भाषा हिंदी से अंतर है। ऊपरी तौर पर देखने से यह बात बिल्कुल ध्यान में नहीं आती पर अधिक गहराई में जाने पर अवश्य प्रतीत होता है कि साम्य बिंदुओं निकटता और आंतरिक एकसूत्रता के होते हुए भी कतिपय भिन्नताएँ इन दोनों को अलगाती हैं तभी तो मराठी से हिंदी में और हिंदी से मराठी में अनुवाद की समस्याएँ उठती हैं और उनसे जूझते हुए रास्ता निकालना पड़ता है। चूँकि दोनों भाषाएँ भारतीय हैं, दोनों का मूल उद्गम संस्कृत है, समस्त भारतीय भाषाओं के संदर्भ में दोनों का अपना–अपना महत्व है, तथा दोनों प्रादेशिकता के सहित राष्ट्रीयता की परिधि पर कार्यशील हैं, दोनों के साहित्य का एक–दूसरे में अनूदित होना आवश्यक एवं उपयुक्त है। मराठी को अपनी प्रादेशिक भाषाई विशिष्टताओं और सांस्कृतिक–सामाजिक, व्यावहारिक चेतना–बिंदुओं सहित हिंदी जैसी उत्तर भारतीय भाषा के साथ संपर्क बनाएँ रखना आवश्यक है और हिंदी को प्रादेशिक भाषाओं तक पहुँचकर अपने बृहत्तर संदर्भ में सार्थकता प्रमाणित करना जरूरी है।

वैसे मराठी हिंदी के परस्पर सम्मिलन की परंपरा प्राचीन है। अनुवाद ही क्यों, मौलिक रचनाओं के माध्यम से भी भक्तिकाल में भक्तों एवं संतों ने अपनी प्रादेशिक भाषा के साथ ही भारतीय स्तर पर उपयुक्त एवं संप्रेष्य हिंदी भाषा का माध्यम स्वेच्छया स्वीकार किया था और मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी रचनाएँ की थी, तो आज भी प्राप्य हैं। अखिल भारतीय संदर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है। वस्तुः इन कवियों ने मराठी में सोचकर उसका हिंदी में अनुवाद ही किया था। ये एक तरफ भक्ति आंदोलन में हिंदी प्रादेशिकता को राष्ट्रीय संदर्भ देने में समर्थ एवं स्वाभाविक भूमिका निभा रहे थे और दूसरी तरफ महाराष्ट्र के लोकधर्मी नाट्यधर्मी सार्वत्रिक प्रदर्शनी के लिए भारूड हिंदी कवन, संवाद आदि का प्रयोग कर बृहत समाज से संपर्क स्थापित करने का निरंतर प्रयास करते रहे थे। यह परंपरा आज तक अक्षुण्ण है। उत्तर मध्य काल तक शाहीरों ने हिंदी में वग, गौळण, लावणी आदि प्रस्तुत कर लोगों को मंत्रमुग्ध किया।

यह प्रक्रिया आगे चलकर किसी न किसी तरह आजादी के आंदोलन के युग में भी विभिन्न रूपों में जारी रही और आज तक भी है। मराठी भाषी लेखकों का मौलिक लेखन और अनूदित रचनाओं में पर्याप्त योगदान है। वैसे दोनों भाषाओं पर अरबी फ़ारसी का प्रभाव भी इनका योग बिंदु कहा जा सकता है। मौलिक लेखन अनुवाद के माध्यम से प्राचीन काल से आज तक महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश मराठी और हिंदी के बीच एक सेतुबंध बना रहा है।

मराठी से हिंदी में अनुदित साहित्य को एकत्रित रूप में प्रस्तुत करना हो तो पर्याप्त लंबी सूची देनी होगी। पर इतना कहना पर्याप्त होगा कि

परंपरा से चलता आया मराठी हिंदी अनुवाद की क्रम आधुनिक काल में टूटा नहीं, बल्कि उसे और शक्ति एवं बल मिला। केवल धर्मग्रंथ, शास्त्रीय ग्रंथ, साहित्यादि ही नहीं, बल्कि मराठी काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, निंबध आत्मकथा, वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य आदि को मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य की सूची प्राप्त करनी हो तो पुणे विद्यापीठ में डॉ. प.वि. जोशी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध 'मराठी से हिंदी में अनुवादित साहित्य' उपयुक्त है। इन अनुवादों में शब्दानुवाद से लेकर भावानुवाद, रूपांतर आदि अनुवाद के विभिन्न रूप अपनाये गये हैं। मराठी नाटकों के हिंदी अनुवादों की इधर भरमार हो गई है। विजय तेंडुलकर, जयवंत दळवी, वसंत कानेटकर आदि के लगभग सभी नाटक हिंदी में अनूदित हो चुके हैं। विभिन्न अवसरों पर विभिन्न परिपत्रकों, नोटिस को भी मराठी से हिंदी में रूपांतरित करने की आवश्यकता होती है।

मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य सामग्री में मुख्यतः रचनात्मक साहित्य है। बैंक, रेल, बस, डाकघर आदि के कार्यालयों में जहाँ मूलतः मराठी का व्यवहार हो रहा है वहाँ हिंदी को लाने के लिए मराठी से हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली बनाई जा रही है, तथा विभिन्न प्रकार के आवेदनों या प्रतिवेदनों को हिंदी में अनूदित किया जा रहा है। यह कार्य महाराष्ट्र में विशेष हिंदी अधिकारियों द्वारा स्थान–स्थान पर संपन्न हो रहा है। उनके समक्ष अन्य कठिनाइयों की अपेक्षा मुख्यतः पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्या आती है पर प्रायः हिंदी की अधिकांश शब्दावली को स्वीकार कर एकरूपता की रक्षा का प्रयास किया जा रहा है। अकादमी,

अंतरिम, आयोग, संस्थान जैसे शब्द मराठी में ठीक हिंदी के ही अर्थ में प्रयुक्त हो रहे हैं।

मराठी की रचनात्मक कृतियों, अर्थात् काव्य, कथा–साहित्य, नाटक आदि को हिंदी में अनूदित करते हुए कतिपय समस्याओं से जूझना पड़ता है। किसी भी सर्जनात्मक रचना की भाषा एक तरफ व्यावहारिक भाषा से रिश्ता जोड़े रहती है। तो दूसरी तरफ़ वह ग्रांथिक भी होती है। वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा के समान निश्चित एक सांचे में बंद, पारिभाषिक नहीं होती, बल्कि भाषा के सर्जनात्मक बिंदूओं को पकड़ती हुई अपना नित्य नया रूप लेती रहती है। उस रचनांतर्गत स्थितियों और संदर्भों की आवश्यकता के अनुकूल उसका रूप होता है। साथ ही सर्जक के व्यक्तित्व एवं शैली, क्षमता और संस्कारों के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता। हर रचना के एक भाषाई, कलाकृति होने के कारण, उस पर प्रादेशिक संस्कृति, रहन–सहन, मान्यताएं, प्रादेशिक ढंग का रंग अवश्य चढ़ा हुआ होता है। इस प्रकार मराठी रचना का भाषाई रूप एवं वैशिष्ट्य रचनात्मक संदर्भों का महत्व इन सबका हिंदी में पुनःस्थापन तथा उसके अंतर्गत होने वाली सर्जनात्मकता की रक्षा करते हुए सर्जनात्मकता के बिंदुओं को पकड़ने का प्रयास होता है। यही कारण है कि कतिपय समानताएं होते हुए भी मराठी से हिंदी में अनुवाद करना उतना सरल एवं सहज साध्य नहीं जितना कि लगता है।

अनुवाद करते समय सबसे पहले भाषाई समस्या से जूझना पड़ता है। चूंकि ये दोनों भाषाएं आर्यकुल की हैं, संस्कृत से जनित हैं और दोनों में कतिपय अरबी–फारसी के शब्दों का अंतर्भाव है, मराठी और हिंदी की शब्दावली में बहुत समानता दिखती है। कतिपय समान और समानार्थी

शब्द मिल जाते हैं। पर समस्या उन शब्दों के प्रयोग में आती है जो मराठी और हिंदी में समान होते हैं। पर समस्या उन शब्दों के प्रयोग में आती है जो मराठी और हिंदी में समान होते हैं पर उनके अर्थ नितांत भिन्न होते हैं। कई बार ये अर्थ नितांत भिन्न और विपरीत होते है। जैसे 'चेष्टा शब्द का अर्थ मराठी में दिल्लगी–ठिठोली है तो हिंदी में प्रयाय। कतिपय अन्य शब्द यहां दिए जा रहे हैं। जैसे–

| **शब्द** | **मराठी** | **हिंदी** |
| --- | --- | --- |
| आपत्ति | संकट | आक्षेप |
| सहवास | सान्निध्य | स्त्री पुरूष प्रसंग |
| बुवा | साधु फकीर | पिता की बहन |
| खाली | रिक्त | नीचे |
| ऊन | बुनने के लिये गर्म कपड़ा | सुर्य का तेज |
| चेष्टा | प्रयत्न | मसखरी |
| संसार | दुनिया | गृहस्थी |
| शिक्षा | शिक्षण | दण्ड |
| अभ्यास | पढ़ाई | प्रैक्टिस |
| हरकत | आपत्ति | चाल |
| शोध | ढुॅढ़ना | अनुसंधान |
| राग | क्रोध | प्रेम, संगीत की बंदिश |
| संशोधन | अनुसंधान | सुधार |
| ताई | बड़ी बहन | चाची |

| | | |
|---|---|---|
| धोका | खतरा | वंचना |
| ऊब | गरमी | ऊब जाना |
| सहसा | सामान्यतः | अचानक |
| कौतुक | प्यार–भरी प्रशंसा | आश्यर्च |

## 5.1 लेखन विधि की समस्याएँ

भारोपीय परिवार की संस्कृतोद्भव भाषाओं में मराठी भाषा भारत में दक्षिण की और अंतिम कड़ी है। पढ़ाई में एक–सी होने के कारण देवनागरी से उद्भूत दोनों मराठी हिंदी भाषियों को सुभीता है। कुछ वर्णों को छोड़कर जैसे 'ळ' मराठी में है तो झ, ण, ल हिंदी में कुछ हेर फेर के साथ लिखे जाते हैं। लेखन विधि एक हैं। यह सुविधा होते हुए भी वर्तनी और कारण एवं विभिन्न रूपों के हिंदी में मूल शब्द और कारक विभक्ति प्रत्यय शब्दों से सटकर मराठी जैसे न होने के कारण इन दो भाषाओं में लेखन प्रविधि बिल्कुल अलग होती है। मराठी की 'रामाची टोपी' हिंदी में 'राम की टोपी' होती है। 'गांव में' मराठी में 'गावांत' होता है। 'ळ' हिंदी में नहीं है जिसका काम 'ल' से लिया जाता है। कुल संख्याओं को भी थोड़े अलग ढ़ंग से लिखने की परिपाटी है। लिखावट में भी 'इ और ई' के चिन्ह मराठी में आड़ी और खड़ी लकीर को हिंदी की तरह बिल्कुल एक रेखांकन में नहीं लिखते। चन्द्रबिंदु, नुक्ता यह हिंदी की विशेषता है। यह होते हुए भी लिपि साम्य बहुत है।

## 5.2 शब्दार्थ एवं अर्थ भिन्नता से संबंधित समस्याएँ

मराठी की रचनात्मक कृतियों, अर्थात, काव्य, कथा साहित्य, नाटक आदि को हिंदी में अनूदित करते हुए कतिपय समस्याओं से जूझना पड़ता है। किसी भी सर्जनात्मक रचना की भाषा एक तरफ व्यावहारिक भाषा से रिश्ता जोड़े रहती है तो दूसरी तरफ़ वह ग्रंथिक भी होती है। वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा के समान निश्चित एक साँचे में बंद, पारिभाषिक नहीं होती, बल्कि भाषा के सर्जनात्मक बिंदुओं को पकड़ती हुई अपना नित्य नया रूप लेती रहती है। उस रचनांतर्गत स्थितियों और संदर्भों की आवश्यकता के अनुकूल उसका रूप होता है। साथ ही सर्जक के व्यक्तित्व एवं शैली, क्षमता और संस्कारों के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता। हर रचना के एक भाषाई कलाकृति होने के कारण, उस पर प्रादेशिक संस्कृति, रहन–सहन, मान्यताएँ, प्रादेशिक ढंग का रंग अवश्य चढ़ा हुआ होता है। इस प्रकार मराठी रचना का भाषाई रूप एवं वैशिष्ट्य रचनात्मक संदर्भों का महत्व और सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठिका इन सब के सहित उस रचना को हिंदी में ले जाने का अभिप्राय इन सबका हिंदी में पुनः स्थापन तथा उसके अंतर्गत होने वाली सर्जनात्मकता की रक्षा करते हुए सर्जनात्मकता के बिंदुओं को पकड़ने का प्रयास होता है। यही कारण है कि कतिपय समानताएँ होते हुए भी मराठी से हिंदी में अनुवाद करना उतना सरल एवं सहज साध्य नहीं जितना कि लगता है।

अनुवाद करते समय सबसे पहले भाषाई समस्या से जूझना पड़ता है। चूँकि ये दोनों भाषाएँ आर्यकुल की हैं, संस्कृत से जनित हैं और दोनों में कतिपय अरबी फ़ारसी के शब्दों का अंतर्भाव है, मराठी और हिंदी की शब्दावली में बहुत समानता दिखती है। कतिपय समान और समानार्थी

शब्द मिल जाते हैं। पर समस्या उन शब्दों के प्रयोग में आती है जो मराठी और हिंदी में समान होते हैं पर उनके अर्थ नितांत भिन्न होते हैं। कई बार ये अर्थ नितांत भिन्न और विपरीत होते हैं जैसे 'चेष्टा' शब्द का अर्थ मराठी में दिल्लगी–ठिठोली है तो हिंदी में प्रयास। कतिपय अन्य शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं। जैसे– बुवा, इसका शब्द का अर्थ मराठी में साधु, फकीर, ऐसा होता है। किंतु हिंदी में परिवार के संदर्भ में पिता की बहन लिया जाता है। अगला शब्द है शिक्षा जिसे मराठी में ऊब, जिसका अर्थ है। गरमी किंतु हिंदी में इसे ऊब जाना इस संदर्भ में लेते है।

ऐसे और भी कई शब्द हैं जो अर्थों की अलग–अलग छटाएँ दिखाते हैं। साथ–साथ अर्थसाम्य होते हुए भी वर्तनी में भिन्न होने वाले शब्द भी काफी हैं,

जैसे – जनावर– जानवर, पाणी–पानी, वाघ–बाघ, मदत–मदद, शुरूवात–शुरूआत, आळसी–आलसी, खुशामत–खुशामद, तट्टू–टट्टू, कागद–कागज, बाळू–बालू, आदि शब्दों के साथ–साथ कुछ मुहावरों और कहावतों में भी कुछ भावसाम्य होते हुए भी अर्थ भिन्नता है।

## 5.3 व्याकरणगत समस्याएँ

'लिंग विचार' और 'वचन' का मराठी हिंदी भाष में काफी अलग–अलग ढंग का है। लिपि साम्य बहुत होते हुए भी लिंग, वचन, वाक्य रचना, कारक, वर्तनी के भिन्न नियमों के कारण इन दो भाषाओं में काफी अंतर है।

### 5.3.1 लिंगगत समस्याएँ

मराठी में संस्कृत की तरह तीन लिंग हैं, तो हिंदी में केवल दो लिंग। मराठी के कई नपुंसक लिंग शब्द ही नहीं, पुल्लिग शब्द भी हिंदी में स्त्रीलिंग हैं, जैसे– पुलिस, अग्नि, सरकार, आत्मा, देह, आवाज, पुस्तक आदि। इसके विपरीत मराठी के कुछ स्त्रीलिंग शब्द हिंदी में पुलिंग हैं, जैसे– इन्कलाब, मजा, एकांकी, छत्री। साथ–साथ कई मराठी नपुंसक लिंग शब्द हिंदी में पुल्लिंग होते हैं, जो हिंदी पंडितों के भी पहुंच के बाहर होते हैं और बोलचाल में गड़बड़ी पैदा करते हैं, यथा– फुल, झाड़, साहित्य, रूप, ध्यान, कपडा, हिंदी में पुल्लिग रूपों में ही प्रयुक्त होते हैं।

शब्दों के लिंग विशेष पर अधिकार होना यह उभय भाषी पाठकों के लिए हिंदी मराठी में चुनौती है। 'लाठी' और गोली चलाने वाली जालिम सरकार भी हिंदी में निकम्मी है। वर्तनी के संदर्भ में एक और बात भी लेखन में समस्या उत्पन्न करती है। मराठी में सारे तत्सम शब्द दीर्घ–ईकारान्त लिखे जाते हैं। जैसे कीर्ती, बुद्धी, मती, कवी आदि, किंतु हिंदी में से ह्रस्व इकारांत हैं।

मराठी और उसके समानार्थी हिंदी शब्दों में व्याकरणिक तकनीकी एवं वर्तनी विषयक समस्या को सुलझाना उतना कठिन नहीं है, जितना कठिन मराठी के कुछ खास देशज तथा आंचलिक शब्दों का हिंदी में अनुवाद करना। मराठीपन से रंगे हुए ऐसे प्रादेशिक वैशिष्ट्पूर्ण शब्दों अथवा भावदर्शी शब्दों पर अनुवादक को रूप जाना पड़ता है, और परिश्रम के बावजुद उनके पर्याय शब्द नहीं मिलते। कतिपय ऐसे स्थान, वस्तु,

पदार्थवाचक शब्द हैं जिनका हिंदी प्रदेश में अस्तित्व न होने के कारण उनके पर्याय शब्द मिलना कठिन और कई बार असंभव हो जाता है। जैसे मराठी में एक भोज्य पदार्थ है 'भाकरी' इसका पर्याय भला कहाँ से मिल सकता है जबकि यह पदार्थ हिंदी भाषी जनता के खाने में नहीं होता। 'पुरणपोळी' की भी वही स्थिति है।

कई बार मानसिक स्थितिदर्शक कुछ शब्दों, भावदर्शी क्रियाओं या व्यावहारिक स्थितियों के निर्देशक शब्दों तथा विशिष्ट एवं भाववाचनक शब्दों के पर्याय ऐसे शब्द मिलना भी बहुत कठिन हो जाता है, जो नितांत वही भाव और अर्थच्छाया व्यक्त करने की क्षमता रखते हों। कई बार तो मिलते ही नहीं। ऐसी स्थिति में उनके लिए आस–पास की अर्थच्छाया देने वाले शब्दों से काम चलाना पड़ता है। अथवा वह भाव व्यक्त करने के लिए हिंदी के सक्षम शब्दों का निर्माण करना पड़ता है। जैसे हूरहूर, चुकामुक, पंचाइत, गुंतागुंत, चुटपुट, घोटाळा, कंटाळा, नाद, पात्र, कौतुक, मेषपात्र आचरट, पांचट, गुंतवळ, चिथावणे, आदि। नाटकों के संवादों में आरंभिक कोष्ठकीय शाब्दिक संकेतों के अनुवाद के समय पर्याय शब्द ढूंढना एक समस्या होती है। जैसे 'तेवढ्यात' लिए उसी समय, सहसा, तब, अचानक कि आदि में से एक रखना पड़ता है और यह शब्द भी बार–बार आता है। ऐसे ही भावसूचक शब्दों का अनुवाद भी बहुत कठिन समस्या, उत्पन्न कर देता है, जैसे 'गोंधळून, 'बावचळून', 'तडकन', शातपणे', 'बुचकळ्यात पडून' 'ओशाळून', कौतुकाने 'लाडात येऊन', गहिवरून' आदि।

मराठी और हिंदी में सर्वमान्य सामान्यतः समान हैं फिर भी उनके प्रयोग और संकेतों की विशिष्टता के कारण अनुवाद करते समय बहुत

सतर्कता निभानी पड़ती है और कई बार समस्या उत्पन्न हो जाती है। विशेष रूप से मराठी में संबोधनात्मक सर्वनाम तू, तुम्हीं (तुम, आप) और आपण (आप) हैं जिनमें से 'तू' और 'तुम्ही' का प्रयोग प्रचुर होता है। इनके प्रयोग की विशिष्टता और हिंदी में भिन्नता में व्याकरणिक नियम का उतना संबंध नहीं जितना सांस्कृतिक संकेतों और प्रचलनों का है। 'तु' और 'तुम्ही' के पर्यायवाची अर्थ में सर्वत्र 'तू' और 'तुम्ही' को रखा नहीं जा सकता । मराठी के 'तुम्ही' के स्थान पर प्रायः हिंदी में 'आप' का प्रयोग आवश्यक है जैसे किसी भी अपरिचित व्यक्ति के लिए आयु या सम्मान में बड़े आदरसूचक यहां तक कि मित्र के लिए भी 'आप' का प्रयोग करना होगा। मराठी 'तू' का अपेक्षाकृत अधिक प्रचलन है। मां, भाई–बहन, मित्र, सुपरिचित व्यक्ति आदि के लिए।

यह निकटतासूचक है जबकि हिंदी में केवल लघुतासूचक, अतिनिकटता या निम्न श्रेणी का सूचक है। पिता को, पति को, बॉस को, किसी बड़े व्यक्ति को 'तुम्ही' कह सकते हैं जबकि उसका पर्यायवाची 'तुम' हिंदी में अत्यंत विचित्र और गलत लगेगा। समस्या तब पैदा होती है जब दो दोस्तों में, पुरुष–पुरुष, या पुरुष– स्त्री, स्त्री–स्त्री परस्पर व्यवहार विनिमय में मराठी में बात बहुत जल्दी 'तु' तक पहुंचे। वर्तमान शिक्षित सुधारवादी समाज में पति–पत्नी परस्पर को 'तु' से संबोधित करते हैं या नाम से। इन शब्दों या संबोधनों का शब्दशः अनुवाद करने में समस्या पैदा होती है। वह और वे से संबोधित समस्या भी वैसा ही है, मराठी के 'तो' (पु), 'ती' (स्त्री),'ते' (नपु) वाची सर्वनामों के लिए हिंदी में केवल 'वह' और 'हा' 'ही' 'हे' के लिए 'यह' का प्रयोग होने के कारण कठिनाई तब उत्पन्न होती है जब वाक्य में 'वह' के सामान्य रूप का ही प्रयोग सर्वत्र करना

पड़ता है जो खटकता है। 'त्याने तिला त्या मुली विषयों सांगित ने' का अनुवाद करते समय 'उसने उसको उस लड़की के संबंध में बताया'– यह वाक्य स्वतंत्र रूप से हिंदी के लिहाज से स्पष्ट और सुंदर नहीं है। स्त्रीलिंगवाची, पुल्लिंगवाची दर्शक सर्वनाम के एकत्रित प्रयोग में एक ही सर्वनाम की पुनरुक्ति से वाक्य कुछ अजीब–सा लगता है।

आदरसूचक 'आप' के प्रयोग की भी विशिष्टता है। अपने आप, मैं आप, आप अपने, तथा अन्य पुरुषवाचक 'आप' का प्रयोग मराठी के समान न होकर भिन्न है। अतः उस संदर्भ में भी सतर्कता अपेक्षित है। सार्वनामिक विशेषण के एक विशिष्ट प्रयोग की समस्या का यहां संकेत दे देना आवश्यक प्रतीत होता है। जैसे 'मी माझ्या विद्यार्थ्याला शिकविले' – मैंने अपने (मेरे नहीं) विद्यार्थी को पढ़ाया। 'तुम्ही तुमच्या घरी जा'– आप (तुम नहीं) अपने (आपके नहीं) घर जाइए।

भाववाचक संज्ञाओं और विशेषणों के ठीक–ठीक पर्यायवाची प्राप्त होने की समस्या का उल्लेख पहले किया गया है। पांचट, आचरट, बावळट, ठिसूळ, पोकळ, भोंगळ, लाघवी, लटका, पाठमोरा, जैसे विशेषणों के नितांत सही–सही एक शब्द में पर्याय भी हिंदी में नहीं मिलते।

अनुवाद की प्रक्रिया में मराठी वाक्य को इकाई के रूप में ग्रहण कर उसके अर्थ एवं संरचना को हिंदी में अनूदित करते समय कतिपय समस्याएं उत्पन्न होती हैं। उनमें एक समस्या क्रियाओं के सामान्य रूप और कालसूचक पद योजना की होती है। अन्य पदों के साथ उसके लिंग–वचनादि और संरचनात्मक संकेत के अनुसार संबंध की व्यवस्था हिंदी में कुछ भिन्न है जैसे कुछ क्रियाओं के प्रयोग में पूर्ववर्ती शब्द में विशिष्ट विभक्तियों का ही प्रयोग आवश्यक है, जैसे से प्रेम करना, प्रार्थना

करना, करना, घृणा करना, ऊब जाना, पूछना, कहना, बोलना, आदि मराठी की पद्धति से ही अनुवाद किया जाए तो ग़लत होगा, जैसे–' कमल त्याच्यावर खूप प्रेम करीत होती' का 'कमल उससे बहुत प्रेम करती थी, या 'कमल का उससे बहुत प्रेम था।'

इसी प्रकार सौंपना, चाहना, प्यार करना, स्वीकार करना आदि क्रियाओं के साथ 'को' विभक्ति के प्रयोग की विशिष्टता जानने पर कठिनाई उपस्थित होती है। 'त्याने मुलांवर काम सोपविले' उसने (लड़कों पर) लड़कों को काम सौंपा। 'आपण आपल्या देशावर प्रेम केले पाहिजे' का अनुवाद 'हमें चाहिए कि अपने देश को प्यार करें।' या हमें अपने देश से प्रेम करना चाहिए।'

इसी प्रकार 'का' आदर करना, अनुमोदन, पीछा करना और 'की' मदद करना, सहायता करना के विशिष्ट प्रयोगों को ध्यान में रखना पड़ता है। अन्यथा व्याकरण और भाषा की प्रकृति की दृष्टि से भी कई समस्याएं उत्पन्न होने की संभावनाएं होती हैं।

हिंदी में 'लाना' क्रिया की भूतकालवाचक वाक्यरचना में कर्ता कोई विभक्ति नहीं लगती जबकि मराठी में अवश्यमेव लगती है। ऐसी स्थिति में 'त्याने बाजारातून भाजी आणली' का अनुवाद कई शिक्षित लोग भी जाने अनजाने 'उसने बाजार से तरकारी लाई' करते हैं, जो सरासर ग़लत है। होना चाहिए 'वह बाज़ार से तरकारी लाया।'

जाना, आना क्रियाओं के स्थानसूचक शब्दों में विभक्ति लगाने की गलती प्रायः मराठी भाषा अनुवादक कर जाते हैं –घरी गेली– घरी(को) चार भाई हैं, गाय के( को) दो सींग है। ऐसे ही 'तो परीक्षेला बसला' का

अनुवाद 'वह परीक्षा में ( को) बैठा।' 'नदीला पूर आला' का अनुवाद 'नदी में (को) बाढ़ आयी (आया)।'

### 5.3.2 वचन और कारक से संबंधित समस्याएँ

शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु के एक अथवा अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं। हिंदी में इसके दो भेद हैं। 1. एकवचन 2. बहुवचन।

**एकवचन–** शब्द के जिस रूप में केवल एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे लड़का, पुस्तक,कलम

**बहुवचन–** शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे– लड़के, पुस्तके, कलमें

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया या किसी अन्य शब्द के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

दोनों भाषाओं के एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम बहुत अलग हैं।

**जैसे :**

| **हिंदी (एकवचन / बहुवचन )** | **मराठी (एकवचन / बहुवचन)** |
|---|---|
| बात–बातें | बाता |

('बाता' इस शब्द को मराठी और उर्दू में भी प्रयुक्त किया जाता है। दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है।)

| | |
|---|---|
| कथा–कथाएँ | कथा |

| | |
|---|---|
| वक्ता–वक्ते | अनेक वक्ता |
| माला–मालाएँ | अनेक माला |
| बालिका–बालिकाएँ | अनेक बालिका, वीर बाला |

कारक को लेकर दोनों भाषाओं में काफी भिन्नता है। साथ–साथ अवयव, रिश्ते, संतान आदि मराठी में कर्म कारक 'ळ' का प्रयोग मिलता है।

जैसे– **दशरथ के चार बेटे थे हिंदी**

**दशरथाला तीन राण्या होत्या मराठी।**

हिंदी में संस्कृत के कुछ तत्सम शब्द बहुवचन में वैसे ही बने रहते हैं। यथा– नेता, वक्ता, श्रोता, कार्यकर्ता, योद्धा। इसी प्रकार अन्य व्याकरणिक रूपों में असमानता है।

### 5.2.3 शब्द शक्ति

शब्द और अर्थ का शाश्वत संबंध है। गोस्वामी तुलसीदास ने शब्द और अर्थ को जल बीच के समान अभिन्न बताया है। शब्द उच्चारण के साथ ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर भी प्रकाश डालता है। शब्द अपने विस्तृत अर्थ में प्रथक शब्दों का ही द्वैतक नही होता वर्‌न उसके अंतर्गत समस्त वाणी का व्यापार आ जाता है। अर्थवान शब्द ही शब्द कहलाते है। जिस शक्ति या व्यापार द्वारा अर्थ का बोध होता है उसे शक्ति कहते है। 'शब्दार्थ संबंधः शक्ति।' जितने प्रकार के अर्थ होगें उतनी ही प्रकार की शक्ति होगी।

शब्द और अर्थ के संबंध को व्यक्त करने की एक शक्ति होती है, यही शक्ति शब्द शक्ति के नाम से अभिहित होतह है। संस्कृत आचार्यों ने शब्द शक्ति का विवेचन पूर्ण रूपेण किया है। शब्द शक्ति साहित्य में विचारणीय विषय रहा है। 'भर्तृहरि ने शब्द शक्ति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है ''जिस प्रकार ब्रम्हरूपी अधिष्ठान पर जगत रूपी अध्यास की विधात्री उसी की शक्ति है, उसी प्रकार अर्थ रूपी अध्यास की विधात्री शब्द शक्तियां होती हैं।''[135]

**आचार्य भामह** – ''मुख्य अर्थ का ज्ञान कराने वाली शक्ति अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।''[136]

**पं. राम दहिन मिश्र** का शब्द शक्ति विषयक मत शब्द शक्ति को और सष्ट करता है। ''प्रत्येक शब्द से जो अर्थ निकलता है वह अर्थ बोध कराने वाली शब्द की शक्ति है।''[137]

साहित्य शास्त्र में शब्द व्यापार के प्रायः तीन प्रकार के भेद माने जाते है। अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

**परिभाषा 1. अभिधा**– जिस शब्द में श्रवण मात्र से उसका परम्परागत प्रसद्धि अर्थ सरलता से समझ में आ जाए, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। इस अर्थ को वाच्यार्थ, मुख्यार्थ और अभिधेयार्थ भी कहते है।

अम्बेडकरी लोकगीतों में शब्द के अर्थ सीधे और सरल है। जिसे हम अभिधा भी कह सकते है। गीतकार अपनी अनुभूति को सरल शब्दों के

---

[135] भर्तृहरि – वाक्यपदीय
[136] तात्पर्यार्थोपि केषुचितृ।–काव्य प्रकाश, 2.6,
[137] रामदहिन मिश्र –काव्य दर्पण, पृ. 18

द्वारा अभिधा में अभिव्यक्ति करते है। उसके शब्दों को सुनते ही सीधा अर्थ निकलता है।

उदा. 1. बगल में बच्चा हाथ में झाड

2. पांच सौ महार लड़े देखा

3. कानून भीम का पर फोटो गांधी का

**3. लक्षणा–** बहुत बार ऐसा होता है कि किसी विशेष प्रसंग में किसाी शब्द का मुख्य अर्थ अर्थात् अभिधेयार्थ ठीक नहीं बैठता तथा वहां पर मुख्य अर्थ से सम्बन्धित किसी अन्य अर्थ की प्रतीति कर ली जाती है। यहीं अन्य अर्थ लक्ष्यार्थ कहलाता है तथा इस अन्य अर्थ की प्रतीति लक्षणा शक्ति द्वारा ही संभव होती है। शब्द में यह आरोपित है तथा अर्थ में इसका स्वाभाविक निवास है।

**मम्मट के अनुसार –** ''मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के आधार पर अभिधेयार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ को व्यक्त करने वाली शक्ति लक्षणा शक्ति कहलाती है।''[138]

**विश्वनाथ के मतानुसार –** मुख्य अर्थ में व्यवधान होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन को लेकर जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ लक्षित हो उसे लक्षणा शक्ति कहते है।''[139]

जब किसी शब्द का अभिधा के द्वारा मुख्यार्थ का बोध न हो, तब उस शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को लक्षणा शब्द शक्ति कहते है।

---

[138] आचार्य मम्मट–काव्य प्रकाश, द्वि. उ., पृ. 54.

[139] विश्वनाथ–साहित्य दर्पण, द्वि. परिभाषा, पृ.29

उदा. 1. दर्द तब होता बामण के पेट में

2. तुझे भीमने बनाया शेर, क्यों फिरता है भेड़ियों के पीछे?

3. ऐसे पिंजरे का कैदी मत बनो तुम

यहाँ पहले उदाहरण में दलित समाज का बच्चे शिक्षा ग्रहण करते है तो 'दर्द तब होता बामण के पेट में' यानी यहाँ लक्षणा शब्द शक्ति से अर्थ बोध हो रहा है। बामण का पेट दर्द यानी उसे ईष्या, जलन और दुःख हो रहा है। दूसरे उदाहरण में तुझे भीमने बनाया शेर यानी भीम ने तुझे सभी अधिकार और अवसर दिऐ है। तो तुम अपने आत्मविश्वास पर भरोसा करो ना की उन भेड़ियों पर यानी उन नेताओं पर। तीसरे उदाहरण में पिंजरे का कैदी मत बनो यानी किसी के गुलाम मत बनो। इस तरह अम्बेडकरी लोकगीतों में अभिधा और लक्षणा शब्द शक्ति को देखा जा सकता है।

## 5.7 प्रादेशिक शब्दों के अनुवाद की समस्याएँ

बोलचाल की भाषा के अनुवाद की यह एक प्रमुख समस्या है। उसमें भी देशज शब्द, ग्रामीण बोली से आये हुए शब्द, भ्रष्ट रूप में प्रचलित शब्द, आंचलिक शब्द और दलित साहित्य में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द तथा क्षेत्रीय गोलियों आदि के अनुवाद और भी कठिन है। जिन क्षेत्रीय स्थितियों, परिवेश एवं सदर्भों में इन शब्दों का जन्म हुआ है, और प्रचलन भी, उन्हें नितांत दूसरे परिवेश स्थिति और संदर्भों में उत्पन्न और पली हुई भाषा में ले जाने की समस्या से अनुवाद को जूझना पड़ता ही है। इसका एक उदाहरण यहां उल्लेख्य है। विजय तेंडूलकर के 'पाहिजे जातीचे' नाटक के हिंदी में दो अनुवाद किये गये हैं, जिनमें से एक ने उसमें प्रयुक्त ग्रामीण

बोली को पूर्णतः निकालकर आज की शिष्ट खड़ी बोली हिंदी में अुनवाद किया है। जैसे उस भाषा का विषय और कथ्य के साथ अटूट प्राणवत् संबंध सूत्र ही तोड़ दिया गया है। दूसरे अनुवाद में अनुवाद ने किसी तरह ग्रामीण भाषा के टूटे फुटे प्रयाग से काम चलाया है। संभवतः ऐसे प्रयोग अनुवादक की अपनी परिचित बोली के हैं। स्पष्ट ही इस जटिल समस्या को सुलझाना बहुत ही कठिन है।

हिंदी का कुछ आक्रोश काव्य और कुछ आंचलिक साहित्य इसकी ओर संकेत करता है। सांस्कृतिक परिवेश फिर भी आचार और संस्कृति में भिन्नता होने के कारण देवदासी (रामजनौ)पोतरा (बेताळ और लक्ष्मी भक्त), गोंधवी(गाने वाली जाति), तथा उसके गीत और उनमें व्यक्त भावनाएँ भावसाम्य द्वारा कुछ अलग शब्दों से ही व्यक्त होंगी। जैसे –पोतराज की एक पुकार है 'आऽऽय! इन शब्दों को जैसे हैं वैसे ही रखना अनुवादकर्ता के लिए उचित होगा। लक्ष्मी आली धरातिचा बहुमान करा कऽक, कोल्हापुरची, लखापुरची लक्ष्मी, गणाराय' इसके 'कऽक' विशेषण को छोड़कर भावसाम्यात्मक अनुवाद किया जा सकता ह। 'आम्राण' नामक किताब भी इसके जीवन पर मराठी में उपलब्ध है। 'पीवर' यह खानदेश में, नंदूरबार में एक विशेष चाय (केवल दूध से बनी जिसमें पानी का अंशमात्र नहीं) है। इन शब्दों को जैसे है वैसे ही रखना अनुवादकर्ता के लिए उचित होगा। उसी तरह से कुछ मराठी प्रदेशों में स्पेशल चाय के लिए 'गुलाबी' कहते हैं।

दलित साहित्य की कुछ रचनाएं भले ही बोली भाषा में लिखी गईं हों तो (आठवणीचे पक्षी–प्र.ई. सोनकांबळे, अनुवाद–यादों के पंछीः राधाकृष्ण प्रकारश, अनुवादकः डॉ. रणसुभे) भी यहां अंचल का इतना अधिक महत्व

नहीं होता। यहां महत्व होता है विषम समाज रचना का, उस कारण होने वाले अन्यायों का, दलित होने के कारण आयी हुई भयानक यातनाओं का। इनकी ओर लेखक अपने पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता है। मनुष्य की मनुष्य के रूप में होने वाली उपेक्षा अथवा मनुष्य की ओर मनुष्य के रूप में देखने की उदारमतवादी मानवीय दृष्टि यही यहां की महत्वपूर्ण संवेदना होती है। अंचल को उसकी सारी विशेषताओं के साथ प्रस्तुत करना यह लेखक का उद्देश्य नहीं होता। इस मनुज–विरोधी व्यवस्थ में केवल जाति या वर्ण के कारण मनुष्य कैसे नकारा जाता है। इसे वह स्पष्ट करना चाहता है। दलित साहित्यके अनुवाद के लिए यहां की व्यवस्था के सारे आयामों की जानकारी जरूरी है। दलित साहित्य में जिन वस्तुओं का, उन वस्तुओं के अंग–उपांगों का जो वर्णन आता है, उसकी जानकारी सवर्णों को और उनके द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली मानक भाषा को नहीं होती। शब्दकोश में भी इसके अर्थ प्राप्त नहीं होते। क्योंकि शब्दकोशों को भी इन्हीं तथाकथित सवर्णों ने ही बनाए हैं। इन पारंपारिक शब्दकोशों में सभी वर्णों, और विभिन्न जातियों द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं के नाम होंगे ही इसकी गारंटी नहीं है। इन शब्दकोशों में मध्यवर्ग द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों की ही भरमार होती है। ऐसी स्थिति में अनुवादक क्या करेगा? जैसे प्र.ई.सोनकांबले जी की आत्मकथा –आठवणीचे पक्षी (जिसका मैंने हिंदी में यादों के पंछी शीर्षक से अनुवाद किया है, जिसे राधाकृष्ण प्रकाशन ने 1983 में प्रकाशित किया) में ऊंट से संबधित अनेक मराठी शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये मराठी शब्द मध्यवर्गीय मराठी भाषिकों के लिए भी अपरिचित हैं। ऐसे समय इनके अनुवाद कहां से प्राप्त करें? हो सकता है राजस्थानी बोलियों में इनके प्रतिशब्द हो। हिंदी की बोलियों में प्रयुक्त

शब्दों के कोश भी नहीं हैं। कहना है कि दलित या आंचलिक साहित्य में अनुवाद के समय शब्दकोशों की सीमाओं का तीव्रता से अहसास हो जाता है।

ऐसी स्थिति में अनुवाद को चाहिए कि वह सीधे उस व्यवसाय से संबंधित लोगों तक पहुंचे। दोनों भाषाओं के लोक समूह में जाकर जीवन भाषा की खोज उसे करनी चाहिए। वहीं पर उसे प्रतिशब्द मिलने की संभावना है। दलित साहित्य के अनुवाद के समय में जीवंत भाषा की ओर (अर्थात् उस व्यवसाय से संबंधित लोगों के पास) गया। मुझे आवश्यक शब्द प्राप्त हुए और इसी कारण मैं लेखक की मूल संवेदना को न्याय दे पाया। दलित साहित्य के अनुवाद का अर्थ है भयावह ऐसी यातना से गुजरना।

## 5.7 रिश्तों के नाम संबंधी समस्या

महाराष्ट्र के जिस विभाग का मैं निवासी हूँ, उसे मराठवाड़ा कहते हैं। एक अनुवादक के रूप में जिन दिक्कतों से मैं गुजरा हूँ उसका उल्लेख करना चाहूँगा। नाते–रिश्तों के शब्दों में भी इनती विविधता होती है कि उससे कई भम्र पैदा होने की संभावना होती है। हमें एसे लगता है कि नाते–रिश्तों के शब्द सभी भारतीय भाषाओं में हैं। भारत में पारिवारिक व्यवस्था सुदृढ़ होने से इससे सम्बन्धित शब्दों की भरमार भी सभी भारतीय भाषाओं में होगी। परंतु वास्तविकता ऐसी नहीं है। हिंदी प्रदेशों में माँ के पिताजी के लिए नाना और पिता के पिता के लिए दादा स्वतंत्र शब्द हैं। किंतु मराठी में दोनों के लिए एक ही शब्द है। हिंदी प्रदेश में पिता के

पिता को 'बाबा' कहते है। मराठी में 'बाबा' पिताजी के लिए रूढ़ है। संबंधवाचक रिश्ते दिखाने वाले शब्दों के लिए मराठी की अपेक्षा हिंदी में काफी अधिक शब्द मिलते हैं। जैसे–आजा–आजी के लिए हिंदी में दादा–दादी और नाना–नानी ये शब्द पिता और माता के पिता–माता को लेकर हमें प्राप्त हैं। वैसे ही देवर–देवरानी, जेठ–जेठानी, ताऊ–चाचा, ताई–चाची ये शब्द मराठी में दीर–भाउजइ, चुलता–चुलती तक ही सीमित है। फुफा–फूफी (भुआ–फूफू), बुआ, फूआ के लिए मराठी में केवल 'अतोबा' और 'आत्या' शब्द मिलते हैं।

20–25 वर्षों पूर्व हिंदी में 'बाई' शब्द का अर्थ होता था वेश्या। मराठी में इसके ठीक उलटे बाई का अर्थ होता है, आदरणीय स्त्री। इस कारण कोई मराठी व्यक्ति आज से 30–35 वर्षों पूर्व पूरी निष्णाता के साथ किसी स्त्री को 'बाई' मराठी के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। परंतु इलाहाबाद–लखनऊ अर्थात् मानक हिंदी प्रदेश में इसे 'कोठे वाली' 'वेश्या' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। अब हिंदी से मराठी में अनुवाद करते समय 'बाई' शब्द के लिए बाई शब्द का ही प्रयोग क्या औचित्यपूर्ण होगा? अथवा मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय क्या इसी प्रकार का प्रयोग उचित रहेगा? संदर्भों के कारण बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है, यह सही है परंतु पहली ही भेंट में अगर इस शब्द का प्रयोग हो तो क्या करेंगे?

दो भिन्न भाषिक समाज रचना की संस्कृति में जितना अधिक अंतर होगा, अनुवाद उतना ही कठिन हो जाएगा। इसके ठीक उलटे इन दोनों की संस्कृति में जितनी अधिक समानता मिलेगी, अनुवाद आसान हो जाएगा। दो भाषाओं की संस्कृति में भले ही समानता दिखलाई दे रही हों तो भी कई स्थानों पर सांस्कृतिक दूरियां भी होती हैं। जैसेः एक ही भाषा

बोलने वाले सवर्णों और दलितों के सांस्कृतिक जीवन में काफी अंतर होता है।

आत्मीयता और प्रेम को व्यक्त करने के लिए प्रत्येक भाषिक समूह में अलग–अलग शब्द होते हैं। ऐसी स्थिति में केवल उन शब्दों के विकल्प अथवा पर्यायवाचक शब्द देकर काम नहीं चल सकता और इसी कारण जो रचनाएं अपनी स्थानिक भाषा संस्कृति से गहरे में जुड़ी रहती है, उनका शब्दशः अनुवाद करने के चक्कर में प्रतिभा सम्पन्न लोग नहीं जाते। ऐसी उत्कृष्ट रचनाओं का वे अनुवाद नहीं करते, रूपांतरण करते हैं। अर्थात् अपनी संस्कृति के अनुकूल उसका पुनरसृजन करते हैं। प्रत्येक को यह संभव नहीं होता। साधारणतया ऐसी स्थिति में शब्दों के पर्यायवाची शब्द ढूंढ़ते बैठते के बजाए पहले उसका आशय जान लें और आशय के अनुरूप शब्दों का प्रयोग किया जाए।

बहुत सूक्ष्मता से देखें तो प्रत्येक परिवार की अपनी भाषा होती है। जैसे पिता को संबोधन करने हेतु जिस शब्द का प्रयोग घर में होता है, उसमें इतनी विविधता होती है कि पाठक चकरा जाए। पिछले को एक दशकों से 'मम्मी' 'पापा' ये शब्द मध्यवर्ग में और देहातों में रूढ़ होते जा रहे है। परंतु इसके पूर्व पिताजी के लिए चाचा, बाबा, सर, साहब, ताऊ आदि अलग–अलग शब्दों का प्रचलन हुआ करता था।

हिंदी में संयुक्त परिवार का प्रचलन होने से नाते रिश्तों के इतने शब्द प्रचलित हैं कि उन्हें अन्य भाष में जहां संयुक्त परिवार की परम्परा नहीं है अनुवाद करना कठिन है। महाराष्ट्र में संयुक्त परिवार का विघटन होकर लंबा अर्सा हुआ। अपवार रूप में आज भी यहां संयुक्त परिवार हैं। वहां भी

इतने नाते–रिश्तों के शब्दों का प्रचलन नहीं है। चाचा के लिए एक ही शब्द है काका चाहे वह पिताजी से बड़े हों या छोटे।

## 5.8 जन जीवन से संबंधित शब्द

एक सफल अनुवादक की यह जिम्मेदारी होती है कि जिस लक्ष्य भाषा में वह अपनी स्त्रोत भाषा की रचना का अनुवाद करना चाहता है उस लक्ष्य भाषा के जनजीवन के सभी आयामों को वह पहले जान लें। वहाँ स्थित श्रेणी को भी वह ठीक से समझ लें। विशेषतः भारतीय समाज व्यवस्था इतने विभिन्न तबकों में, श्रेणियों में, जाति–उपजातियों में बँटी है कि उसकी जानकारी के अभाव में उसकी मूलसंवेदना को नही समज पाएंगे। जैसे महारवाडा, ब्राम्हणवाडा, चाभंरवाडा, मांगवाडा, भंगीवाडा आदि इन शब्दों की जानकारी के साथ उस समाज की भी जानकारी होना जरूरी है। तभी हम लक्ष्य भाषा में ठीक तरह से अनुवाद कर पाएंगे।

मराठी प्रदेश मूलतः मातृोपासक प्रदेश होने के कारण देवी की उपासना से संबंधित दर्जनों शब्द इस भाषा में हैं। तो इसके ठीक उलटे हिंदी प्रदेश पुरूषसत्तात्मक व्यवस्था में से आने कारण वहां इस प्रकार के शब्दों का अभाव है और इस कारण ऐसे शब्दों के (मातृोपासना से संबंधित) अनुवाद के समय काफी दिक्कतें आती हैं। जैसेः मराठी दलित आत्मकथाओं में कहानियों में 'परडी' शब्द आता है। परड़ी भरणे परड़ी घेउन हिंडणे आदि। परड़ी की यह संस्कृति हिंदी में नहीं है। ऐसे समय फुटनोट देने पड़ते हैं। इन शब्दों के मूल में जो कर्मकांड है, उसे समझाना पड़ता है।

साथ–साथ अपनी अलग रीति रस्में तथा पहनावा होने के कारण उनका अनुवाद हो सकता है, सुक्ष्म तथा शत–प्रतिशत भाव और अर्थ

संपन्न कदापि नहीं मराठी की 'नऊ सहां पांच वारी साडी' और 'साडी चोळी' केवल साड़ी और चुनरी नहीं हो सकती वह कुछ निश्चय ही अधिक अर्थवत्ता रखती हैं। इसी तरह से महाराष्ट में बनने वाली पैठणी साड़ी, शालू शेला, अंतरपाट वस्त्र, उपरणें आदि अनेक अनेक वस्त्र अपनी–अपनी विशेषता के साथ रहेंगे। फेटा, सफा, पगड़ी भी मराठी और हिंदी भू–भाग में बांधने की विविधता के कारण अलग हैं। हर रियासत की पगड़ी अलग–अलग नोंक लेकर बांधी जाती थी। मराठी शिरोभूषण है। शिवाजी के समय 'डोइस मुंडासे' अलग था जो आज की पगड़ी से काफी भिन्न था। हिंदी में ननसाल, ननिहाल, पीहर, मायका, मैका के लिए मराठी में केवल आजोळ–माहिर शब्द है पर मराठी में 'पंजोळ' है जो हिंदी में नहीं। मां का ननिहाल स्थल 'पंजोळ' है। 'मौसा'के लिए मराठी में शब्द नहीं है। जो हो उर्दू के कारण हिंदी भाषा की वाक्य रचना में एक 'शाही' वातावरण कुछ समय आया था। दरबार, कचहरी के शब्द अरबी–फारसी से हिंदी में आए और वे ही मराठी में भ्रष्ट रूप में आए। मराठी  की कचेरी जैसे शब्द इसके प्रमाण हैं। ''रूखी–सूखी रोटी खाते वक्त भी मैं खाना 'शाही' खा रहा हूं।'' खा रहा हूं। यह हिंदी में मिलता है।

ठीक इसी प्रकार के कुछ त्यौहार हिंदी प्रदेश के हैं। हिंदीतर प्रदेश के लोग इन त्यौहारों से संबंधित शब्दों को समझ नहीं पाते। कोश में इनके अर्थ नहीं होते। लेखक के सामने क्योंकि हिंदी प्रदेश का पाठक है, इसलिए वह फुटनोट नहीं देता। हिंदी प्रकाशक और लेखक को इसका अहसास नहीं होता कि हिंदी की कृतियां हिंदीतर भाषी प्रदेश में भी पढ़ी जाती हैं। इसलिए फुटनोट दिए जाएं। इस प्रकार के फुटनोट न होने से

हिंदीतर प्रदेश के पाठकों तथा अनुवादकों को उस आशय को ग्रहण में कठिनाई हो जाती है।

## 5.8 ग्रामीण शब्दों के अनुवाद की समस्या

हर भाषा में अपनी आंचलिक विशेषताएँ होती है। मराठी के कई शब्दों का इस दृष्टि से अनूदित होना कठिन है। उनको जैसा है वैसा ही रखना और उनको यथास्थान कुछ विस्तार से लिखना उचित होगा। मराठी की अहिराणी, वन्हाडी, कोंकणी अब पृथक भाषा के रूप में मान्य है। मालवाणी नागपुरी ये बोलियां अपने खयं (**खरसत्य**), डांव (खांब) मानसा (माणसा–माणूस), पावायला (पहुंचाने के लिए) कुछ विस्तार भेद से पहचाने जा सकते हैं। मूल मराठी शब्द से अवश्य कुछ ध्वनि साम्य रखते हैं। बलुत, उपरा, तराळ (अतंराळ) ये आधुनिक मराठी की आत्मकथाएँ एक विशेष शब्द संभार और मुहावरे जो अपशब्दों से आपूरित हैं, स्लैंग (अशिष्ट–अपभाषा) भाषा के नहीं एक निचले स्तर का घिनौना जीवन भी यर्थाथ में उपस्थित करता है।

ग्रामीण तथा व्यावहारिक सामग्री को मराठी से हिंदी में अनूदित करते समय कई शब्दों के पर्याय ढूंढने, निश्चित अर्थ के शब्दों का चयन करने और उसके निश्चयन में समस्या उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए खेती–बाड़ी, व्यवसाय, घर–बार, कल–कारखाने, बाजार–हाट, दुकान, चीज–वस्तुएं, पेड़–पौधे, फल–फूल, साग–सब्जी, आदि से संबद्ध मराठी की व्यावहारिक शब्दावली के हिंदी पर्याय शब्दों की खोज में कठिनाई होती है। यही नहीं, मध्यभारत,पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश की हिंदी

में भिन्न–भिन्न शब्द मिलते हैं। उनमें से मानक शब्द का निर्धारण भी एक समस्या है। यह कार्य मात्र कोश के सहारे असंभव ही है।

मराठी के अम्बेडकर साहित्य पर ग्रामीण भाषा का प्रभाव कुछ जगह पर दिखाई देता है। दलित साहित्य की भाषा पूरी तरीके से मानक भाषा है ऐसा कदापि नहीं कहाँ जा सकता। जिस परिवेश से दलित समाज के लोग आते है उनके हर रोज के बोलचाल की भाषा में अनेक ऐसे ग्रामीण शब्दों का प्रयोग उनायास ही होता है। यही इस साहित्य की विशेषता है। इन्हीं शब्दों से उनकी सत्यता, मेहनत और प्रामाणिकता को देखा जा सकता है। ऐसे बहुत से अम्बेडकरी गीत है जिस पर आंचलिक भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। अम्बेडकरी गीतों में भी इन शब्दों को देखा जा सकता है। जैसे– अन्, **गड्या**, मया, गाडग, जवा, मुठमाती, **साऱ्यात**, पोरं हाय, नादच करायचा नाय, लेकरू माय, शेणाची पाटी आदि।

## निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि भाषा और संस्कृति का अत्यंत निकट का संबंध होता है और इसी कारण अनुवादक को दोनों ओर की संस्कृति की गहरी जानकारी चाहिए। यह स्थिति मात्र सृजनात्मक साहित्य के संदर्भ में नहीं अपितु वैचारिक साहित्य के संदर्भ में भी सही है।

मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद करते समय मराठी भाषा पर अच्छी पकड़ होना बहुत जरूरी है साथ में हिंदी भाषा पर भी। मैंने क्षेत्रीय कार्य में जिन लोकगीतों को शब्दबद्ध किया वे लगभग सभी लोकगीत ग्रामीण भागों से हैं। साथ ही उनके गीतकार भी ग्रामीण भागों से

ही आते है। इस कारण उनके गीतों में ग्रामीण शब्दों का उपयोग सहज ही होता है। जब अनुवादक लोकगीतों का अनुवाद करने की कोशिश करता है तो उसे इन ग्रामीण शब्दों पर विशेष ध्यान देना होता है। कोई शब्द नही मिलता तो उसे पाद टिप्पणी के द्वारा समझाया जाता है। कुछ शब्द हिंदी में मिलते है, कुछ आस–पास के शब्द मिलते है। साथ ही विशेष ध्यान देना होता है कि अर्थ, भाव या संदेश में कोई भिन्नता या कमतरता नहीं आए। अनुवादक वही कह रहा है जो स्त्रोत भाषा में है। इस तरह की समस्या पद्य के साथ होना स्वाभाविक है फिर भी अनुवादक को हार नहीं माननी चाहिए।

# उपसंहार

## मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों की उपलब्धियाँ एवं सभावनाएँ

इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि दलित चेतना परिवर्तन के दौर से गुजरती हुई निरंतर शिखर की और बढ़ने वाली उर्ध्वगामी चेतना है। इसका अंतिम लक्ष्य मनुष्य के जीने हेतु समानता, भाईचारा और स्वतंत्रता की जरूरी शर्तों की प्राप्ति है। समानता के अर्थ में ही निहित है कि मानवीय संबंधों के स्तर पर कोई श्रेष्ठ या अश्रेष्ठ नहीं है, न ही जन्म के कारण और न ही धन–बल या कर्म अथवा भाग्य–भगवान के कारण। यानी एक शोषण रहित जातिय भेदभाव रहित, मानवीय समाज की सत्ता ही इसका अभीष्ट रहा है। इस अवधारणा में दूसरे की कमजोरी या कमी को दूर करना सक्षम का कर्तव्य माना जाता है, उस पर अहसान नहीं। इसमें दूसरा निहित तथ्य है वर्चस्वता का नकार। यही वर्चस्वता का नकार भाईचारे की भावना को पुष्ट करता है। एक–दूसरे के स्वामी या दास भाव को नकारता है। इस चेतना के तहत व्यक्ति प्रमुख न होकर समाज प्रमुख होता है। स्वहित और परहित मिल–जुलकर साथ–साथ चलते हैं। यह भी एक सत्य है कि समानता बिना स्वतंत्रता के आ नहीं सकती और जहां वर्चस्व और दासता की व्यवस्था होगी, वहां स्वतंत्रता हो ही नहीं सकती।

मौटे तौर पर यही दलित का सैद्वांतिक पक्ष है जिसे पेरियार, महात्मा फुले और बाबासाहब अम्बेडकर ने रूप दिया। ज्योतिबा फुले द्वारा सन 1873 में लिखी 'गुलामगिरी' वास्तव में शूद्रों की मुक्ति का घोषणा–पत्र है। बाबा साहब ने ही इस चेतना को राष्ट्र के पैमाने पर पहुंचाया बल्कि कहा जाए कि अंतर्राष्ट्रीय हदों को छुआ। डॉ. अम्बेडकर ने इसे साकार करने के

लिए तीन हथियारों को अपनाने की राय दी– शिक्षा, संघर्ष, संगठन। इसलिए दलित आकांक्षाओं को मापने–तौलने हेतु डॉ. अम्बेडकर की अवधारणा तथा उसे साकार करने के लिए इन तीन मापकों या बटखरों की दरकार पड़ती है। राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र में जो भी हस्तक्षेप दलितों का हुआ है और या आगे होगा वह इसी पर आधारित होगा कि वे शिक्षा में कितने आगे आए, कितने दूर तक अपने संघर्षों को पहुंचाए और संगठन जो कि परिवर्तन का मूल आधार होता है, में कितनी हद तक सफल हुए। बाबासाहब द्वारा चलाए गए दलित मुक्ति आंदोलन से पहले भी कतिपय आंदोलन चले, जिसमें एक दयानंद सरस्वती का अछूतोद्धार आंदोलन था और फिर गांधी जी का हरिजनोत्थान अभियान आया। दयानंद सरस्वती का अछूतोद्धार आंदोलन की वर्ण व्यवस्था को बरकरार रखते हुए वर्णों की अदला–बदली का समर्थक था। लेकिन ये आंदोलन वैदिक धर्म के यशोगान के साथ–साथ मुस्लिम विरोधी अभियान का भी कट्टर प्रचारक था। इसने शुद्धिकरण की भी एक मुहिम चलाई थी, यह लेकिन शुद्धि के बाद शुद्धिकृत जातियों को हिंदू समाज में प्रतिष्ठा नहीं दिला पाया।

यहां पर हम गांधी जी द्वारा चलाए गए 'हरिजनवाद' का जिक्र भी जरूरी समझते हैं चूंकि इस आंदोलन की कमियों को लक्ष्य एवं चिहिन्त करते हुए डॉ.अम्बेडकर ने दलित मुक्ति की अपनी परिभाषा और व्याख्या करते हुए एक मुहिम चलाई।

वर्तमान समय में दलित आंदोलन पूरे उफान पर है। इसे रोकना सम्भव नहीं। भले ही उस उफान को थमने से समय लगे लेकिन यह उसी

समय थमेगी तब भारत में समतामूलक समाज की स्थापना होगी। वंचितों को पूरा अधिकार मिला जाएगा और जो राजनीतिक शतरंज का खेल खेल रहे हैं वे खेले छोड़कर हट जाएंगे तथा दशक बन जाएंगे।

भक्ति आंदोलन की एक और खास विशेषता यह भी थी कि इसके अधिकतर संत साधू निचले वर्ग से आते थे। लेकिन जब हिंदू धर्म के देवी–देवता को उन्होंने आधार बनायातो वे सबके निए ग्राह्य तो हो गए लेकिन क्या से समाज में अंतर्जातीय विवाह की परम्परा आरंभ कर पाए जिसमें समाज एक हो सके। इसका उत्तर है नहीं। ऐसा नहीं हो सका। कारण वही पुरानी सड़ी–गली ब्राम्हणवादी व्यवस्था। आज के भारत में जिस प्रकार दलितवर्ग में राजनीतिक चेतना का उभार आया है वह पहले कभी नहीं आया। सत्ता में जो हिस्सेदारी आई है वह पहले कभी नहीं आई। सत्ता में हिस्सेदारी लेने के बाद ही समतामूलक समाज की स्थापना होगी। यही आज की दलित राजनीति है जो वास्तव में सही है। यद्यपि कुछ लोगों का मानना है कि सत्ता के गलियारे में आने पर वे अपनी जमीन भूल जाएं लेकिन इस तरह के प्रयास से अनगिनत दलितों में अपन हक लेने की चेतना अवश्य ही जाग जाती है और वर्तमान समय में ऐसा ही हो रहा है।

आखिर इस दलित साहित्य का उदय क्यों हुआ? यह एक गंभीर प्रश्न लग सकता है, लेकिन जब हम इसकी छान बीन करेंगे तो पाएंगे कि वास्तव में अब तक का रचा साहित्य ही इसका मूल कारण है। अब तक के रचे गए संपूर्ण भारतीय साहित्य में जिन मुद्दों को एकदम नकारा गया वही मुद्दे अब दलित साहित्य के निर्माण के प्रेरणा स्त्रोत बने। उदाहरण के लिए अब तक का रचा गया साहित्य धर्म तथा ब्राम्हणवाद द्वारा निर्मित

आचार–विचार पर आधारित था। इस प्रकार केवल भगवान, राजा श्रेष्ठ पुरूष, उच्चवर्ग आदि के गुणगान तथा उनके विकास से संबधित मुद्योंको ही साहित्य रचना का आधार बनाया गया। इस नियम के तहत समाज का बहुत बड़ा तबका तथा उसकी समस्याएं साहित्य के घेरे से बाहर ही रहे या यूं कहिए अछूते ही रहे। चाहें संस्कृत साहित्य हो या अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य सब के लिए रामायण, महाभारत आदि ग्रंथ उपजीव्य काव्य के रूप में रहे हैं अर्थात् इन्हीं दो ग्रंथों को आधार बनाकर साहित्य रचा गया। बाद में जब अन्य विषयों पर रचनाएं हुई वह भी समाज के उच्च वर्ग तक ही सीमित नहीं इस प्रकार भारतीय समाज का दबा कुचला वर्ग हमेशा साहित्य से दूर रहा । छिटपुट रूप में कुछ रचनाकारों ने इस वर्ग के दुःख दर्द को स्थान दिया।

अम्बेडकरी लोकगीतों और दलित समाज के अध्ययन से यह तथ्य स्वाभाविक रूप से सामने आता है कि अम्बेडकरी लोकगीतकार के सामने हजारों साल का सामाजिक उत्पीड़न जो समाज व्यवस्था के द्वारा जनित है और उसे सुदृढ़ करने में धार्मिक ग्रथों का बहुत बड़ा योगदान है। साथ ही साहित्य में भी ऐसे तत्व अंतर्निहित हैं जिन्होंने इस व्यवस्था को पुख्ता करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं जिसे अम्बेडकरी लोकगीतकार भूला नहीं पा रहा है। इसीलिए वह इन ग्रंथों के विरोध में अपने गीतों में अभिव्यक्ति को स्वर देता है। अम्बेडकरी लोकगीत सिर्फ इसलिए अम्बेडकरी लोकगीत नहीं है कि उसमें दलित जीवन का जो आंतरिक प्रवाह है, जो उसे ऊर्जा देता है और जो स्थापित पारम्परिक साहित्यिक मापदंडों के विरूद्ध खड़ा होकर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है, उसी चेतना से अम्बेडकरी लोकगीत बनते है।

अम्बेडकरी लोकगीतों की अंतःधारा में जो यातना, बेचौनी, विद्रोह, नकार, संघर्ष, आक्रोश दिखाई देता है, वह हजारों साल के इतिहास में घुटते, सिसकते दलितों की व्यथा–कथा का एक रूप है, जिसे अभिव्यक्त करने में दलितों को हजारों साल लगे। वर्ण व्यवस्थाजनित जो दंश एक दलित ने अपनी त्वचा पर सहे हैं, उन्हें अम्बेडकरी गीतों में गहन पीड़ा के साथ अभिव्यक्त किया गया है। अम्बेडकरी लोकगीत अपने वर्तमान समाज में फैली विषमताओं, सामाजिक भेदभावों, गंधाते परिवेश के लोकगीत है। जिस सामाजिक उत्पीड़न से दलितों का हर रोज सामना होता है, वह यातनाओं, संघर्षों से गुजरता है, उसी तल्खी को अम्बेडकरी लोकगीतों में अभिव्यक्ति मिली है।

अम्बेडकरी लोकगीत केवल नकार के गीत नहीं है। नकार एक आंतरिक और भावपूर्ण उद्वेग की प्रतिक्रिया है, जबकि वैचारिक और दार्शनिक विरोध अम्बेडकरी गीतों की अंतःधारा का केंद्रीय भाव है। इसीलिए अम्बेडकरी लोकगीत केवल दलितों द्वारा लिखा न रहकर एक नए समाज की संरचना के स्वप्न को सामने रखकर लिखे गऐ लोकगीत है। इसीलिए अम्बेडकरी लोकगीत एक क्रांतिधर्मी लोकगीत है।

यहां बुद्ध का यह सुत्र वाक्य इन लोकगीत की अंतःचेतन और उसके स्वरूप को समझने में प्रासांगिक लगता है– 'य मय सामं दिठ्ठं तमहं बदामि' यानि मैंने देखा अनुभव किया, वही बोल रहा हूँ। अम्बेडकरी लोकगीतकारों की भाषा जीवन के सरोकारों और उसके यथार्थ से जुड़ी हुई है। अम्बेडकरी लोकगीतों में डॉ. अम्बेडकर की वाणी का ओज है, वेदना है, संघर्ष है और जीवन दृष्टि है तभी वह अम्बेडकरी लोकगीत है। यह विचार लोकगीतकारों की गीतों में देखा जा सकता है।

इसे और ज्यादा विस्तार देते हुए कहा जा सकता है कि अम्बेडकरी लोकगीतकार जब यह कहता है कि 'मैंने जो जीवन जिया, भोगा और देखा, वही मैंने साहित्य में व्यक्त किया' का सीधा अर्थ होता है सामाजिक उत्पीड़न, भेदभाव से उपजी वेदना की अभिव्यक्ति यानी समूचे दलित समाज की मुक्ति की आकांक्षा जो 'मैं' से 'हम' में परिवर्तित होती है। इसी वेदना ने अम्बेडकरी लोकगीतकारों को प्रेरित किया। यही है दलित चेतना जो एक अम्बेकरी गीतकारों को दूसरों से अलग कर देती है।

अम्बेडकरी लोकगीतों ने गूंगे लोगों को वाणी प्रदान की है। उनकी पीड़ा को पूरे समाज के सामने काव्य रूप में प्रस्तुत किया है। दलित साहित्य समाज में समानता, एकता तथा मानवता के लिए अग्रसर होने की प्रेरणा देता है तो वे दिन दूर नहीं जब यही साहित्य संपूर्ण भारतीय साहित्य का मुख्य साहित्य बन जाएगा और इस प्रकार सच्चे मायने में भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता की तस्वीर साफ होगी।

## शोध प्रबंध की संभावनाएँ

वर्तमान समय में दलित साहित्य ने अनेक विधाओं में अपनी उपस्थिती दर्ज कर महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया है। मराठी से शुरू होकर आज दलित साहित्य लगभग देश की सभी भाषाओं में मुकाम हासिल कर रहा है। आत्मकथा, उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता लोकगीत आदि विधा से दलित साहित्य कार अपने समाज की पीड़ा को अभिव्यक्ति कर रहे है। लिखित साहित्य के पाठक सीमित होते है। किंतु लोकगीतों के श्रोता अनगिनत होते है बल्कि वह तेज बढ़ते ही जाते है। अम्बेडकरी लोकगीतों सुनने वालों की संख्या पढ़ने वाले से ज्यादा है।

दलित समाज का हर एक व्यक्ति इन गीतों को सुनता है और चेतना से भर जाता है। इन्हें सुनते ही जीवन में संघर्ष की भावना जागृत होती है। पूरे देश में अम्बेडकरी लोकगीतों की रचनाएं हो रही है। स्थानिय कलाकार अपनी भाषा में बाबासाहब के विचारों को गीत के माध्यम से समाज तक पोहचाने का प्रयास कर रहे है।

मराठी भाषा में इन गीतों को गाने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। क्योंकि महाराष्ट्र बाबासाहब की कर्मभूमि रही है। बाबासाहब के समय से लेकर उनके जाने के बाद भी गीतों की रचनाएं होती रही है। इस कारण अम्बेडकरी लोकगीतों पर शोध करने की संभावनाएं बहुत ज्यादा है। क्योंकि अनेक गीतकारों ने बाबासाहब पर गीत, पोवाडा आदि लिखे हैं। सभी गीतकारों के गीतों पर काम करना किसी एक शोधार्थी को संभव नहीं है। सभी गीतकारों पर अनेक अनुसंधान कार्य किये जा सकते हैं। जैसे वामनदादा कर्डक के लोकगीतों का एकत्रित कर उनपर शोधकार्य किया जा सकता है। लोकशाहीर आण्णा भाउ साठे के गीतों पर भी शोध कार्य की संभावनाएं बनती है। वर्तमान समय में आनंद शिदे के लोकगीतों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है। बाबासाहब के लिखित और अलिखित लोकगीतों पर शोधकार्य किया जा सकता है। अभी कुछ अंग्रेजी भाषा में भी गीत लिखे जा रहे है। उनका भी अनुवाद कर शोध कार्य किया जा सकता है।

## शोध प्रबंध की उपलब्धियाँ

1. महाराष्ट्र में बीड़ जिला के अंतर्गत आने वाले गांवों में क्षेत्रीय कार्य कर अम्बेडकरी लोकगीतों को रेकॉर्ड किया।
2. रेकॉर्ड किए गऐ मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों को लिपीबद्ध किया है।
3. लिपीबद्ध किऐ गये मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों का हिंदी भाषा में अनुवाद किया।
4. अम्बेडकरी लोकगीतकार दलित समाज की अस्मिता और आत्मसम्मान का निर्माण करने का काम बाबासाहब के समय से निरंतर करता आ रहा है। भले ही इस काम से उसका गुजारा चले या ना चले। वे बाबासाहब के सपनों को जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं।
5. क्षेत्रीय कार्य के दौरान इन लोकगीतकारों की आर्थिक स्थिति का परिचय हुआ। इसलिए शोध प्रबंध के माध्यम से मैं स्थानिय प्रशासन को सलाह देना चाहता हूँ कि इन लोकगीत कारों ने मराठी संस्कृति को जीवित रखा है, वर्तमान स्थिति में इन्हें आर्थिक मदद के आशा है। यह उनके साक्षात्कार से भी पता चलता है।
6. अम्बेडकरी लोकगीतों की ऐतिहासिकता का अध्ययन करते हुए भक्तिकालीन मराठी दलित संतों के अंभगों का उदाहरणसहित अध्ययन प्रस्तुत किया है।
7. अम्बेडकरी लोकगीतकारों ने इन गीतों के माध्यय से दलित समाज को सांस्कृतिक और सामाजिक तौर पर एकत्रित, संगठित रखने का काम किया है।

8. वर्तमान समय में दलित समाज शिक्षा, व्यापार, नौकरी, आदि में अपनी प्रगति कर रहा है। इन बातों से मनुवादी मानसिकता वाले लोग बर्दास्त नहीं कर पा रहे हैं वे कहते हैं कि, कल तक यह हमारे नीचे काम करते थे, आज इनके बच्चें हमारे सामने स्वाभिमान से खड़े हैं। इनको सबक सीखाने के लिए यह आज भी नये–नये हतकड़े अपनाते हैं। गांवों में इन्हें परेशान किया जाता हैं। कभी इनको मारा–पीटा जाता हैं, कभी घर जलाएें जाते हैं तो कभी आर्थिक नुकसान कर दिया जाता है। यहाँ तक दलितों के बच्चों या परिवार वालों को भी शती पहुँचाई जाती है।

इसी अत्याचारों के खिलाफ अम्बेडकरी लोकगीतकार अपनी आवाज बुलंद कर दलितों को संवैधानिक रास्तों से नियम करे सिखाता है। यह लोकगीतों कार उन अत्याचारों को अपने गीतों में जवाब देने का काम करते हैं।

9. तथागत गौतम बुद्ध के धम्म के विचारों को अपने लोकगीत के माध्यम से जनसमुदायों तक पहुँचाने का काम आज भी चल रहा है। पूरे विश्व को यह गीतकार शांति का संदेश गीतों के माध्यम से करते है।

10. लोकगीत कार दलित समाज को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते है और पूराने गंदे काम छोड़ने का आव्हान करते है। बाबासाहब के विचारों को आत्मसात करने का नया विचार देते है।

11. आज यह गीत कार नहीं होते तो समाज में मनुवादी लोक खुलेआम इन पर अत्याचार करते। इन अम्बेडकरी गीतकारों के कारण दलित समाज में सतत चेतना का प्रवाह हो रहा है।

12. अम्बेडकरी लोकगीतों ने संविधान को बचाने और अनुसूचित जाति, जनजाति के लोगों को अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए कठिन परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया है।
13. अम्बेडकरी गीतों में अभिव्यक्त मानवीय संवदेना का सुक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया गया है।
14. मराठी दलित संतों के काव्य में दलित चेतना इस विषय पर 'विद्यावार्ता पत्रिका' में आलेख प्रकाशित हुआ है।
15. शोध प्रबंध के विषय से संबंधित आलेख 'वामनदादा कर्डक के काव्य में दलित चेतना के स्वर आलेख 'पिटिंग एरिया' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

# परिशिष्ट 1

# मराठी के अम्बेडकरी लोकगीत

## 1. वंदन गीत (मराठी)

बुद्ध, कबीर, फुले, शाहु आणि भीमरावांना
वंदन करितो पहिले या महामानवांना ।।धृ।।
जातो शरण मी पहिले, त्या बुध्द गौतमाला
प्रेमाने जिंकले, ज्याने या विश्वाला समाजाला
हाल जीवाचे ते दुःख शोधतांना ।।1।। वंदन

संताची परंपरा या भूमीला लाभलेली
सर्व श्रेष्ठ ठरली ती, कबीरांची शैली
गुरू ठाई मानिले त्या भीमाने कबीरांना ।।2।। वंदन

जातीवादी कर्मठांचे, तोंड बंद केले
असा दिन दलितांचा महात्मा तो ज्योतिबा फुले
ज्यानं शिकविले स्त्रियांना महागुरू म्हणावे त्यांना ।।3।। वंदन

शाहु राज्याचे होते लक्ष, या जन कल्याणावर
दलित शोषित आणि, बहूतनांवर
लोकप्रिय झाला राजा जनहित जपतांना।। 4।। वंदन

ज्याने आणिले या, समाजाला वैभवात
नावाढ़ी होउनी भीमाने, या वाहत्या प्रवाहात

दादाराव नाही पाहिला भीम कधी झुकतांना ।। 5 ।। वंदन

2. **राजा राणीच्या जोडीला (मराठी)**

राजा राणीच्या जोडीला पाच मजली माडीला
आहे कुणाच योगदान लाल दिव्याच्या गाडीला।। धृ।।
तु कुळाचा भिकारी आता आलीय भालदारी
त्या माडीत गाडीत आंबा शंकर मल्लारी
जत्रा उरूस करतोस त्या खेड्यातल्या वाडीला ।। 1।।

पंच पकवान खाउन कधी तोंडात जयभीम
तुला शिळ तुकड चारंल त्यांना करतोय सलाम
तुला मुभाच नव्हती र त्या मंदिर चावडीला ।। 2।।

मोठा साहेब झालास बापाला विसरलास
गेला असता स्मशानी भक्ष असता गिधाडाचे
तुला भीमानं माणुस केलं तुम्हांसाठीच श्रम हे केलं
नको विसरू भीमाचं मोल बोल गर्वनी जयभीम बोल।। 3।।
भीम कार्यात जान राहवं कधी वेळ ना तावडीला
आहे कुणाच योगदान लाल दिव्याच्या गाडीला।। 4।।

### 3. मी हिंदू धर्मात मरणार नाही (मराठी)

कथा तुम्हां सांगतो मी भीमयानाची
गोष्ट आहे 1935 सालाची
खचुन भरली होती सभा येवल्याची
गरजुन म्हणारे भीम जमलेल्या जनाला
हिंदू धर्म का नको ते सांगतो तुम्हाला ।। धृ।।

मंदिरात कधी जाऊ न दिले आम्हांला
विहीवर पानी पिऊ दिले ना आम्हांला
नाव तुझे जपले आम्ही सदा सर्व काल
हे परमेश्वरा हे विष्णु, हे कृष्णा, हे दत्ता
किती नाव तुझे घेयची ।। 1।।

नाव तुझे जपले सदा सर्वकाल
तुला आता आयुष्यात भजणार नाही
तुमच्या दगड मुर्तिला पुजणार नाही
मी हिंदु धर्मात मरणार नाही।। 2।।

जोहार माय बाप होती आमची सलामी
आणि पिढ़्या पिढ़्या भोगतोय आजवर गुलामी
मायबाप, मायबाप, जोहार, रावसा
पोराला काही घास कुटका देता का माय

हे गोया तोडांची आई
तुमच्या दरवाज्यात उभा राहील।। 3।।

ही स्थिति होती आमची म्हणुन
सगले लोक गौतमाच्या मानव धर्मांकडे वळाले आहे
त्याच्या बापाला हरणार नाही
आणि मागे हटणारा हा अम्बेडकर नाही
मी हिंदू धर्मात मरणार नाही। ।। 4।।

### 4. आमचा मास्तर शिकवतो (मराठी)

नाही शाळेत घेतलं जाती वाद्याला महाराला
आज आमचा मास्तर शिकवी बामणाच्या पोराला।। धृ।।

किती लाचारीच जीनं होत दलित जनाचं
भीमरायाच्या करणीनं सोनं झालं मातीच
आता रूबाबं आलाय ढोर चाभांर जातीला
आज आमचा मास्तर शिकवी बामणाच्या पोराला ।। 1।।

नव्हतं रायाला झोपड़ पोरं तळती उनात
हाल पाहुन आमचे भीम हे पेटले मनात
आता बंगला शोभतोय महारवाडयाच्या शेजारला ।। 2।।

कालचा महार संदिप तो आज साहेब झाला
आहे बामणाचा शिपाई त्याला पाणी देयाला
असे स्वप्न भीमाचे आज आकाराला आले
आज आमचा मास्तर शिकवी बामणाच्या पोराला ।। 3।।

## 5. महार वाड्याचे भीम नगर झाले (मराठी)

गाँव कोसाच्या बाहेरच रूप बदलून गेलं गं
कालच्या महार वाडयाच भीमनगर झालं गं ।। धृ।।

गवताची झोपड़ी आधी आता आलोय बगल्या मधी
नव्हती मिळत गोदड़ी साधी
आता झोपायाला मऊ मऊ गाधी
फ्रिज, व्टी व्ही आणि कूलर संमध घराज आलंय गं
कालच्या महार वाड्याच भीमनगर झालं गं ।। 1।।

आता पकवान ताटात फिर तो गाडी मध्ये ठाटात
अंगठ्या घालून बोटात
कुण्या देवाने केलचं नाय
त्या भीमाने केलंय गं
कालच्या महार वाड्याच भीमनगर झालं गं ।। 1।।

शिक्षणाच्या जोरावर गेलो मोठया जाग्यावर
कुठ अन्याय होता जर प्रतिकार करी भीमवीर

अस दूध वाघीणीच आमच्या भीमाने दिलगं
कालच्या महार वाडयाच भीमनगर झालं गं ।। 2 ।।

काल केली ज्याची गुलामी तेच करती सलामी
हा चमत्कार घटनेचा सांगतो ठासून तुला मी
आमची प्रगति पाहून कुणी जलून मेल गं
कालच्या महार वाडयाच भीमनगर झालं गं ।। 3 ।।

### 6. नव क्रांतिच्या दिशेने एक ललकार आहे (मराठी)

नव क्रांतिच्या दिशेने एक ललकार आहे
भिमाचे ज्ञान दूधाची धार आहे ।। धृ ।।

करारी बाना हावा आज मुक्तीच्यासाठी
झिजला खपला बेटा भीम तो तुमच्यासाठी
स्फूर्ती घ्यावी आता तुझाच उद्धार आहे ।। 1 ।।

कर जागृत मला गोडी आहे ज्ञानाची
भीमाच्या सरदार तुला हो बाजी प्राणाची
खाली जाणार नाही असा तुझा वार आहे
नव क्रांतिच्या दिशेने एक ललकार आहे ।। 2 ।।

प्रथा ही मोड़ आता तुझी तु गुलामीची

सोड बेड़या भटकती तुला ही पुकार आहे

झटकन टाक आता वस्त्र जिणे रूढ़ीचे

रथ ओढ़ाया पुढ़े वीर हो आघाडीचे ।। 3।।

## 7. क्रांति गीत (मराठी)

औरंगाबाद मराठवाडा विद्यापीठाला डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकरांचे नाव दयावे म्हणुन तंबल 15 वर्षे संघर्ष करावा लागला किती प्राण गेले आर्थिक हानी झाल्या.

भीमरायाच्या नावासाठी रक्त सांडले राव

असेल कोणी मायका लाल तर पुसून

दावा नाव पाहून भीमाची क्रांति ही ।। धृ।।

सलग हीती न्यायाचे पेरिले मोती त्यांचे

नावच नव्हते वरती नामांतरच विद्यापीठाला

जगात आला भाव असेल कोणी मायका लाल तर पुसून दावा नाव ।। 1।।

गौतमाने प्राण गमवला पोचीराम न लढ़ा लढ़वला

सुवासीनीने आणि प्रतिभाने महिमा गाईली गाँव ना गाँव

असेल कोणी मायका लाल तर पुसून ।। 2।।

भीमनाव कमानी वरती पाहून भटोला

झुरती, झुरता झुरता आर्धे मरती

दवाखान्यात होती भरती नाव पूसाया

येतील त्यांच्या वरती बसतील घाव

असेल कोणी मायका लाल तर पुसून ।। 3।।

## 8. हे पाणी आणले मी (मराठी)

पाऊल पुढचे पुढे हे टाकणार आहे मी
पाणी चवदार तळ्याचे चाखणार आहे मी ।। धृ।।

पाण्यासाठी हे जीव तळमळती
जीव जीवाला का हे छळती
स्पर्श करूनी पाणी हे पिणार आहे मी
समान हक्क मानवाला देणार आहे मी ।। 1।।

पाणी निसर्गाची देणगी ही
माणूस माणसाला पाण्यात पाहती
नाते एक जीवाचे जोडणार आहे मी
सत्यासाठी लढणार आहे मी ।। 2।।

सत्याग्रह हा चवदार तळ्याचा
मानवी हक्काचा हा सत्याचा
दृष्ट रूढ़ीवर टूटुन पडणार आहे
परिवर्तन हे माणसात घडवणार आहे मी
पाऊल पुढचे पुढे हे टाकणार आहे मी
पाणी चवदार तळ्याचे चाखणार आहे मी ।। 3।।

**9. कुंकु (मराठी)**

माझ्या भीमाच्या नावाचं कुंकु लाविल रमानं
कुंकु लाविल रमानं कुंकु लाविल रमानं ।। धृ।।

रमा उपाशी तपाशी राहिली
दिन दलिताची माऊली
ती वागली प्रेमानं
अन् कुंकु लावील रमानं ।। 1 ।।

अशी मधूर मंजूळ वाणी
ऐका रमाईची कहानी
तिनं पिऊन श्रमानं
अन् कुंकु लावील रमानं ।। 2।।

ना गेली आज्ञा बाहेर
कधी आठवल ना माहेर
ती वागली जोमानं हो हो हो ।। 3।।

**10. तुला भिमानं बनवले वाघ (मराठी)**

लय श्रमानं परिश्रमानं सुखाच करूण त्याग
तुला भिमानं बनवलं वाघ! का? फिरतोस लांडग्या मांग ।। धृ।।

नुसता दिसाया दिसतो तु भीम अनुयायी

तुझी डरकाळी कानी कशी पडत नाही
अंग झटकुन उठ गरजुन घेतोस बकरीचं स्वाग
तुला भीमानं बनवलं वाघ! का? फिरतोस लांडग्या मांग ।। 1।।

तुझ्या अंगात आहे त्यावाघाची ढाल
दे डरकाळी ऐसी आता
जबड़ा खोल लांब सड़क घेतु झड़प
कर शत्रुची भागमभाग
तुला भिमानं बनवलं वाघ! का? फिरतोस लांडग्या मांग ।। 2।।

असा पिंज–याचा कैदी तु होऊ नको रं
त्या सर्कसवाणी गोल फिरू नकोरं
उठ वीर तु भिम नरातु तु दाखव क्रांतिची आगं
तुला भिमानं बनवलं वाघ! का? फिरतोस लांडग्या मांग ।। 3।।

## 11. हंस हा कुणाचा

लागला अचानक एका हंसाला बाण
धरणी वरती कोसळला घायाल तो हैरान ।। धृ।।

थरथरतो, धडपडतो, वाचवाया प्राण
तळमळतो विव्हतो जीव तो लहान
हंस हा कुणाचा हंस हा कुणाचा ।। 1।।

युवराज सिद्धार्थ ने हंसाला पाहिले
त्याक्षणी त्या ठिकाणी ते धाऊन गेले
उचलीले लगबगीने त्यास पाणी पाजले
हळूच बाण काढून औषध लाविले
तितक्यात देवदत्त चुलत भाऊ तो आला
सिद्धार्थ कडे पाहून त्या राजहंसाला
शिकार आहे माझी दे हंस तो मला
धनी आहे मी त्याचा मीच बाण मारिला ।। 2।।

अरे रे रे देव दत्ता तु काय हे केले,
मुक्या जीवाला मारून, काय साधीले
बघ मृत्युच्या जबड्यातुन सोडविले
तु मारले परंतु मी त्यालाच रक्षीले
उपदेश हा मला तु नको शिकवु गौतमा
मला हे तत्वज्ञान नको सांगू गौतमा
शिकार करने क्षत्रियाचा धर्म गौतमा
त्या शिकारीवरती माझा हक्क गौतमा ।। 3।।
वादाने वाद दोघांत आधीक पेटला
प्रश्न तो अशक्य सुटेना सा वाटला
मग राज्यापुढे जाऊन तो प्रश्न माडीला
मनती या दरबारात द्या न्याय हो मला
शुध्दोधन राज्याने विचार करूनी
हा निर्णय न्यायाचा टाकीला देऊनी
मारण्यापेक्षा श्रेष्ठ तारणारा धनी

हा हंस सिद्धार्थचा सांगितला पटवुनी ।। 4 ।।

सिद्धार्थने त्या हंसाला जीवदान दिले
भयभीत विहंगाला मुक्त सोडले
भरारी घेत ते गगनास उडाले
किती हो समाधान गौतमास लाभले
समता बंधु भाव करूणा सागर
गौतम बुद्ध धन्य जगी झाले अजरामर
ते धर्म ज्ञान भूषण क्रांतिचे सागर
कुंदन करी वदंन दोन्ही जोडीला या कर
हंस हा कुणाचा हंस हा कु**ण**ाचा ।। 5 ।।

## 12. 500 महार लढ़ले बघा (मराठी गीत)

संपवली ती पेशवाई
इतिहास हा तो देतो गवाई
मागे ना सरले ते ना घाबरले
500 महार लढ़ले बघा 500 महार लढ़ले ।।1 ।।
शूर वीर शूर वीर होते बघा 500 महार
500 महार लढ़ले बघा 500 महार लढ़ले
किती किती 500 500
शूर वीर शूर वीर होते बघा 500 महार
अण थर–थर कापले पेशवे 2800 हजार
कधी ना घडले असे ते घडले

रक्ताचे सडे पड पड पडले
500 महार लढ़ले बघा 500 महार लढ़ले

## 13. वराडी गीत

काकेत लेकरू हातात झाडणं
डोईवर शणाची पाटी
कपडा ना लता
खरखटा भत्ता
फजीति होती बाई मोठी
मया भिमानं बापानं मया
वे भिमानं माय सोन्यांन भरली ओटी

मोडक्या झोपडीले होती बाई मोडकी टाटी
फाटक्या लुगडयाला सतरा हजार गाटी
अगं पोरं झाले साहेब सुना झाल्या साहिबीनी
सांगतात ज्ञानाच्या गोष्टी
माझ्झा भिमानं मया भिमानं
भिमानं माय सोन्यानं भरली ओटी

## 15. कायदा भीमाचा

कायदा भीमाचा अन फोटो गांधीचा
कायदा भीमाचा अन फोटो गांधीचा

शोभून दिसतो का नोटावर
शोभून दिसतो का नोटावर
किती शोभला असता भीम नोटावर
टाय आणि कोटावर
कायदा भीमाचा पन फोटो गांधीचा
शोभून दिसतो का नोटावर
किती शोभला असता भीम नोटावर
खरा देशप्रेमी ठरला भीम घटनाकार
भीम घटनाकार भीम घटनाकार
विद्येला ही पुरून उरला असा विद्याधर
असा विद्याधर असा विद्याधर
विदेशाला ही पुरून उरला असा विद्याधर
देशास सावरल त्या गांधीला तारलं
पेनाच्या त्या टोकावर
किती शोभला असता भीम नोटावर
टाय आणि कोटावर
किती शोभला असता भीम नोटावर टाय आणि कोटावर

## 16. हिंदू–मुस्लिम शिख ईसाई

हिंदू मुस्लिम शिख ईसाई
सारे भाऊ भाऊ
जाती पाती नाते गोती
एक करूनी गाऊ

नको हुकुम शाही आम्हा

लोकशाहीचा बसवीला दर

त्यांची कीर्ती आहे भूवर

भारत माते हे तुझे कर

त्यांची कीर्ती आहे भूवर

लोकशाहीचा घटनाकार भीमराव आंबेडकर

लाल बहादुर, पंडित नेहरू, गांधी, सावरकर

रत्न जन्माला आले थोर

डॉक्टर बाबा सारखे पोर

लोकशाहीचा करतील आदर

त्यांची कीर्ती आहे भूवर शुरामध्ये वीर शिवाजी, लोकमान्य टिळक आगरकर

असे होणार नाही तुम्ही कोणी रानडे वाणी

सावित्रीबाई फुले सारखी हो

त्यांची किर्ती आहे भू वर

मानवतेच हित होईल दिला असा तो मंत्र

सत्य शांती देउन गेले महावीर गौतम बुद्ध

शाहीर खुपे चे हे बोल

नाही ठरणार कधीही कोर

लोकशाहीचा करतील आदर

त्यांची कीर्ती आहे भू वर

भारत माते तुझे हे कर

त्यांची किर्ती आहे भू वर

## 17. भीमाचा बंगला

गुलाम देशातील महू गावातील

गुलाम देशातील महू गावातील

एका छोटयाश्या घरात रांगला

पण इंग्लंड सारख्या देशात

माझा भीमरायाचा बंगला

त्या इंग्लंड सारख्या देशात

माझा भीमरायाचा बंगला

घरची होती गरीबी बेजारी

ज्ञानाची दौलत कमवली त्यांनी तरी

भीमरायाच्या विद्‌वत्तेचा तो सुंगध जगी पांगला

तो जगी सुंगध पांगला तो जगी सुंगध पांगला

पण इंग्लड सारख्या देशात

माझा भीमरायाचा बंगला

त्यांच कौतुक कराव किती

भीमराव माझा घटनाकार

त्यांच कौतुक कराव किती

झाला भीमराव माझा घटनाकार

भीमराव माझा घटनाकार

संविधानाच्या रंगात अजला

हा भारत सारा रंगला

हा भारत सारा रंगला

इंग्लंड सारख्या देशात

आहे इंग्लंड सारख्या देशात
माझा भीमरायाचा बंगला
गुलाम देशाच्या महू गावातील
आरे एका छोटयाश्या घरात रांगला
पण इंग्लंड सारख्या देशात
माझा भीमरायाचा बंगला

**18. आमचा मास्तर शिकवतो**

आमचा मास्तर शिकवतो
आज बामणाच्या पोराला
किती लाचारी सायीली
होत दलित जातीचा
बाबासाहेबाच्या कृपेनं
सोनं झालंय मातीच आज रूबाब आलाया
माग चाबार ठोराला
आमचा मास्तर शिकवितो
आज बामणाच्या पोराला
कालचा महार संदीप मोठा साहेब झालाया
तिथे बामण शिपाई त्याला पाणी देयाला
ते स्वप्न भिमाच आज आलय लेकराला
आमचा मास्तर शिकवितो
आज बामणाच्या पोराला

नाही शाळेत घेतल मनुवाद्यानी महाराला
आमचा मास्तर शिकवितो
आज बामणाच्या पोराला
आमचा मास्तर शिकवितो
आज बामणाच्या पोराल

## 19. मोल महागाच खातोस अजला

मोल महागाच खातोस अजला
मोल महागाच खातोस अजला
बदाम काजु पिस्ता
उपाशी मेला असता जर का
भीमराव माझा नसता
उपाशी मेला असता जर का
भीमराव माझा नसता
आहो परदेशी शिकायाला भीम जेव्हा गेला
अन् अर्धपाव खाऊन त्याने अभ्यास केला
अन् अठरा तासाची भुक अभ्यासाची होती भिमाला
तुमच्या आमच्यासाठी भीमान
साहिल्यात लय खस्ता
उपाशी मेला असता रे वेडया
भीमराव माझा नसता
आहो केले तुमच्यासाठी त्यानं जिवनाच रानं

अन् तेव्हा कुठ कळला र तुला स्वाभिमान

आर जो वर जिवंत आहे ठेव त्याची जाण

अर भिम पुण्याईन तुला नाही कसली जाण

स्वाथा पायी जयभीम कशाला

मुखामधी नुसता

उपाशी मेला असता

भीमराव माझा नसता

## 20. माझा आबा म्हणे बाप, मवा बाप म्हणे बाप

**गीतकार, गायक समदूर सारंग**

माझा आबा म्हणे बाप

मवा बाप म्हणे बाप

मवा आबा म्हणे बाप

मवा बाप म्हणे बाप

मी ही म्हणते बाप

महा पोरगा म्हणते बाप

मही आजी म्हणते बाप

मी ही म्हणते बाप

मही पोरगी म्हणते बाप

अस शोधु अस शोधु

अस शोधुन पहा जगात

अस आहे का कोणाच कोणाशी

मया भिमासारखं नातं

अस आहे का कोणाच कोणाशी

मया भिमासारखं नातं

काय सांगु कोणी मदतीला येईना

आम्ही माणंस असून कोणी माणूस म्हणेना आम्हां

तो जन्माला आला

आमचा माय बाप झाला

तो जन्माला आला

आमचा माय बाप झाला

हा मरेल समाज त्याने जागृत केला

अस झाल कधी नाही

अण होणार ही नाही

पुस्तकात नाही, ग्रंथ इतिहासात नाही

पहा जगाच्या पहा जगाच्या गिनेज बुकात

असं आहे का कोणाच कोणाशी

मया भिमा सारखं नातं

आमच्यासाठी झेले त्यांनी अपमान वार

उघडले आमच्यासाठी विकासाचे दार

लाचारीला नेले त्यानं सागराच्या पार

या दलित सैनेचा झाला तो सरदार

ते आहे त्यांच दान

म्हणुन होतो या सन्मान

गुदु गुदु हसे जस इतिहासाच पान

चित्र पाहुन चित्र पाहुन चित्र पाहुन
झुलत मनात अ....अ.....अ...
अस आहे का कोणाच कोणशी
मया भिमा सारखं नातं
त्याच्यासाठी जगु आम्ही त्याच्यासाठी मरू
असा उपदेस सांगे माझा गुरू चा भी गुरू
उत्तम धम्माची कास अता धरू
चला आता जनसेवा करू
अस आहे का कोणाच कोणशी
मया भिमा सारखं नातं

**21. माझा भीमाची पुण्याई अंगठी सोन्याची बोटाला**

नव्हतं मिळत पोटाला
आता कमी नाही नोटाला
माझा भिमाची पुण्याई
अंगूठी सोन्याची बोटाला
माझा भिमाची पुण्याई
अंगूठी सोन्याची बोटाला
ज्या आमच्या पिढ्यांनी गुलामी साहीली
ती कितीक जीवनभर जीवनाची दाहीली
लय तरासलो आम्ही त्या पाण्याच्या घोटाला
त्या पाण्याच्या घोटाला त्या पाण्याच्या घोटाला

माझ्या भीमाची पुण्याई
अंगूठी सोन्याची बोटाला
त्या आया बायांनी भोगीली लाचारी
आज आवाज उठविती त्या दिल्लीच्या दरबारी
आज पोरी लावीती ती लाली ओठाला
ती लाली ओठाला ती लाली ओठाला
माझ्या भीमाची पुण्याई
अंगूठी सोन्याची बोटाला
नाही जायाचा आमच्या तो घामाचा वास
बिन पगारी चाकरी होतो 24 तास
आता सुंगध येतोय या सूट बूट कोटाला
या सूट बूट कोटाला या सूट बूट कोटाला
माझ्या भीमाची पुण्याई
अंगूठी सोन्याची बोटाला
कोणी बाईक फिरवतो, चार चाकी फिरवीतो
या जगात मोठेपण हा दिनानात हा मिरवीतो
आज आम्हांला राहायला आहे बंगला मोठाला
आहे बंगला मोठाला आहे बंगला मोठाला
माझ्या भीमाची पुण्याई अंगूठी सोन्याची बोटाला
माझ्या भीमाची पुण्याई अंगूठी सोन्याची बोटाला

## 22. भीमराव एकच राजा

ज्यांचा रूबाब राजे शाही
सुटा बुटात रोजच राही
ज्याचा जगात गाज्या वाज्या
भीमराव एकच राजा
ज्याची वाघाची होती ही चाल
छाती कनखर नरभीर ढाल
एकटाच लढला छाती ठोकुन
वाच्या फोटीली मुक्यांना
ज्याचा जगात गाज्या वाज्या
भीमराव एकच राजा
जाती वाद्याची भागम भाग
जवा पाण्याला लावली आग
क्रांतिच उठल रनी तुफान
तुफानात बडव्यांची झुकली मान
काळ्या रामाचा कापे दरवाजा
ज्याचा जगात गाज्या वाज्या

भीमराव एकच राजा

बुद्धीवंताचा झाला आवाज
बुद्ध धम्माचा चढविला साज
आर्दश जगण्याचं झाल हे जीवन
उत्कर्ष देण जीवनाला अस

ज्याचा जगात गाज्या वाज्या

भीमराव एकच राजा

## 23. मराठी गीत

**महाज्ञानाचा महामानवाला**

महाज्ञानाचा महामानवाचा
थोर त्यागी त्या बुद्ध गौतमाला
महाज्ञानाचा महामानवाला
दुःखी जीवा ज्ञानातीत पहावा
असा हा धम्म दीना प्रकाश देई नवा
मार्ग सत्याचा दाखवितो आम्हांला
थोर त्यागीच्या बुद्ध गौतमाला
वंदितो सवे भीमाला
बड़े–बड़े गिरवीत धड़े
माझा भीमापुढ़े असती खरे–खरे
महाज्ञानाचा महामानवाचा
गौरा त्यागीच्या बुद्ध गौतमाला
महाज्ञानाचा महामानवाचा
जाती यतेवर होती जुलमी सत्ता
माझा भिमाने स्वतः तिची पेटवली चिता
रूढी थरथरली त्या पराक्रमाला
थोर त्यागी त्या पुज्य गौतमाला

जिथे तिथे गाउन धम्म गिते

## 24.भीमराव माझा

त्या बामनाचा जावई माझा भीमराव आहे गं।
रामजीचा होता बेटा
काळया रामाचा दरवाजा मोठा
त्यात भीमाचा सिंहाचा वाटा
आता सर्वांनी जागून उठा
काळया मंदीराला तुझा तो काळा राम आहे
दर्शन घडविणारा माझा भीमराव आहे गं
घटना बदली जर का कुणी
हाथ तोडून टाकु
भीमाची लेकर आम्ही
नादी लागु नका रे कोणी
आणि राज्य करता जर का
जातिवादी आहे गं
पण घटना लिहिणारा कायदा काढणारा
माझा भीमराव आहे गं।
आणि हजार पाचशेच्या नोटावर तुझा गांधी आहे गं।
त्या गांधीला जीवदान देणारा
माझा भीमराव आहे गं

### 25. चौदार तळ्यात घुसला गं भीम चौदार तळ्या घुसला

अण चवदार तळ्यात घुसला

गं भीम चौदार तळ्यात घुसला

नाही विचार केला कसला गं

गं भीम चौदार तळ्यात घुसला

नाही भेला तो धमकीला

तो गेला चालून तळ्याला

स्वतः हा पाणी पिला

पाणी पाजल जनतेला

मनात नाही खचला

गं भीम नाही विचार केला कसला गं

गं भीम चौदार तळ्यात घुसला

माझ्या भीमा वाणी कोणी असा आहे का ज्ञानी

अण वाघा वाणी शिरला गं भीम वाघा वाणी शिरला

भीम चवदाी तळ्यात घुसला नाही विचार केला कसला गं

भीम चवदार तळ्यात घुसला

### 26.बंगला नवा बांधला

मला ठाऊक हाय तुला कमी नाय काय

आता बंगला नवा बांधला......

त्यात भीमाचा फोटोच नाय

त्यात भीमाचा फोटोच नाय

तुझा बंगल्याला जाळायच काय

देव आणतो घरी

कस डोक्यामध्ये येईना

बुद्ध होवुनी या दिक्षा घेवूनीया

खुळ डोक्यातल जाईना

तुझा दारावरती गणपतीची मुर्ती

तुला लाज कशी वाटत नाय

त्यावर बुद्धाची मुर्ती का नाय

तुझा् बंगल्याला जाळ्यच काय

त्यात भीमाचा फोटोच नाय

राजनीति सोडून भ्रष्टाचार करून

पैसा खिशात आणला वरी

बाप धाब्यावरी

लेक संगीत वारी

किती सांगाव त्याला

आवरे ना मला

दिले हाकलुन तु बाप माय

कोणी कोणाच ऐकत नाय

तुझा बंगल्याला जाळायच काय

त्यात भीमाचा फोटोच नाय

## 27. भीमराव माझे गेले देशावरी गं

भीमराव माझे गेले देशावरी गं

अण भोळ्या मनाची रमा नादते घरी गं

अन् भोळ्या मनाची रमा नादते घरी गं
रात्री न दिवस लागे ना डोळा
अन् भीमराव माझे शिकले शाळा
शाळा शिकून डॉक्टर झाले
भीमराव माझे मुंबईला गेले
भीमराव माझे गेले देशावरी गं
अन् भोळ्या मनाची रमा नादते घरी गं
शाळा शिकून बॅरिस्टर झाले
भीमराव माझे दिल्ली ला गेले
अन् भीमराव माझे गेले देशावरी
ऐ भीमराव माझे गेले देशावरी
अन् भोळ्या मनाची रमा नादते घरी गं
शाळा शिकून वकील झाले
भीमराव माझे पुण्याला गेले

**28. भीम माझा गुरू भाव**

भीम भीम म्हणु भीम माझा गुरूभाव
अन् माझा गुरूभाव भीम माझा गुरूभाव
सोन्याची सळई देते तांदळाला घाव
तांदळाला घाव देते तांदळाला घाव
भीम भीम म्हणु भीम साखरेचा खडा
अन् साखराची पुडी भीम साखराची पुडी

नाव घेतल्यानी सुद झाली माझी कुडी
अन् झाली माझी कुडी सुद झाली माझी कुडी
बुद्धांच्या मंदिराला सोन्यांची कवाड
अन् सोन्यांची कवाड, याला सोन्याची कवाड
माझाही बाळाला लई बुद्धाची आवड
पांढ़–या साडीला नेसते गं घाई घाई
नेसते घाई घाई नेसते गं घाई घाई
बाबासाहेबांची दिक्षा घेते माझी आई
दीक्षा घेते माझी आई, दीक्षा घेते माझी आई

**29. दुखे तेव्हा बामणाच्या पोटा मधी**

काय सांगू बाई तुले
काय सांगू बाई तुले
भीम जवा बोले व
सुट बुट कोट घालुन लोकांमधी
दुखे तेव्हा बामणाच्या पोटामधी
काय सांगू बाई तुले
बामणाणी शिक्षण घ्याव
अन् मोठ व्हावं
महारानी जीवन भर
अडाणीच राव्हं काय
महाराच पोर शिकलय फार

शिकून गेलय उंच पदावरी
अन् दुखे तेव्हा बामणाच्या पोटा मधी
दुखे तेव्हा बामणाच्या पोटा मधी

## 30. तो धम्म अमर करतो

जो बुद्ध पूजा करतो, तो धम्म अमर करतो.
त्रिरत्न अनुसरतो, तो धम्म अमर करतो.
सद्धम्मचा निर्माता, सम्बुद्ध दीनदाता
संघ ऐके सांगे शास्ता, हे धम्मपद या गाथा
जो मार्ग हा धरतो, तो धम्म अमर करतो
होतो बुद्ध पूजे पाई, सद्धम्म चिरस्थायी
तन मन धन इथे वाही, पुण्यवान त्या समान नाही.
दुःखीतांच्या व्याधी हरतो, तो धम्म अमर करतो.
जागृत दिवसा–रात्री, धम्माचा अथक यात्री
बुद्ध संदेश दे घरघरतो, तो धम्म अमर करतो.
सुत्त परित्त पूजा पाठ म्हणा रोज करा पाठ
बुद्ध संस्कृती परिपाठ, जीवन जगण्याची वाट
सूर्यकांत धम्मधर तो, तो धम्म अमर करतो.

## 31. युगपुरूष घडविणारी रमाई

युगपुरूष घडविणारी हिम्मत ती मोठी आहे.
शेणी अमुच्यासाठी वेचल्या किम्मत ती मोठी आहे.
झड संकटाची आली। रमाई कधी न भ्याली
स्वप्नास उगविणारी, मेहनत ती मोठी आहे.

नव्हती मनी दुविधा। ज्ञान यज्ञातली समिधा
उध्वस्त काळजीची, मरम्मत ती मोठी आहे.
जो रात्रं–दिन खपला। दीप वादळात जपला
चिन्तेने काजळलेली, क्रांतीज्योत ती मोठी आहे.
सूर्यकांत राहून उपाशी। साहेबांच्या ग्रंथराशी
रमाईच्या राजगृहातील, दौलत ती मोठी आहे.

## 32. वाट

वाट फुलेंची सोडून
आंबेडकरांना तोडून
चालताच ईयाच न्हाय
तुला चालताच ईयाचं न्हाय
फुटाया लागलं तांबडं
फुलेंचं पहाट कोंबडं
डालताच ईयाचं न्हाय
मनुचं आंगडं टोपडं
माझ्झा आंबेडकराला
घालताच ईयाचं न्हाय
सोडून तथागताला
वामन तुझा रथाला
हालताच ईयाचं न्हाय
आता हालताच ईयाचं न्हायं

## 33. भीमाचं गाणं डी जे ला वाजत

**गीतकार – साजन बेंद्रे, विशाल**

जय भीमचं नाव जगी गाजत
जय भीमचं नाव जगी गाजत
नचायला पोर पोरी नाही लाजत
गाणं भीमाचं गाणं भीमाच
भीमाचं गाणं डी जे ला वाजत
ओ भीमाचं गाणं डी जे ला वाजत

निळं–निळं दिसत सार डी जे च्या मोर
आंनदाने जय भीमची पोर
निळं–निळं दिसत सार डी जे च्या मोर
आंनदाने जय भीमची पोर
आमच्या बापाची जंयती गाणं लावा लावा म्हणती
नाचू दया आम्हांला आनंदाने भिजत
गाणे भीमाचं गाणं भीमाचं
भीमाचं गाणं डी जे ला वाजत
ओ भीमाचं गाणं डी जे ला वाजत
ये मिरवणुक बघा चालल्या चौकात
भीमाचे फ्लेक्स चौका चौंकात
मिरवणुक बधा आमच्या चालल्या झोकात
भीमाचे फ्लेक्स बघा चौका चौकात
आमचं सार पदरच लाखान खर्च

आमचं सार पदरच

जंयतीचा खर्च आम्ही नाही मोजत

गाणं भीमाचं गाणं भीमाचं

गाणे भीमाचं गाणं भीमाचं

भीमाचं गाणं डी जे ला वाजतं

ओ भीमाचं गाणं डी जे ला वाजतं

लिहून घटना ज्यांनी केली कमाल

वन म्यैन आर्मी ठरला भीमराव विशाल

लिहून घटना ज्यांनी केली कमाल

वन म्यैन आर्मी ठरला भीमराव विशाल

आता करतोय राजं दिला भीमाने आवाजं

गोड गळ्या मध्ये साजणाच्या गाणं गाजतं

गाणे भीमाचं गाणं भीमाचं

भीमाचं गाणं डी जे ला वाजतं

ओ भीमाचं गाणं डी जे ला वाजतं

**34. चांदण्याची छाया कापराची काया** **गीतकार– वामनदादा कर्डक**

**गायक प्रल्हाद शिंदे**

चांदण्याची छाया कापराची काया

माऊलीची माया होता माझा भीमराया

माऊलीची माया होता माझा भीमराया

चोचीतला चारा देत होता सारा

आईचा उबारा देत होता सारा
भीमाई परी चिल्या पिल्या वरी
पंख पांघराया होता माझा भीमराया
माउलीची माया होता माझा भीमराया
बोलतात सारे विकासाची भाषा
लोपली निराशा आता लोपली निराशा
सात कोटी मधी विकासाच्या आधी
सात कोटी मधी विकासाच्या आधी
विकासाचा पाया होता माझा भीमराया
माऊलीची माया होता माझा भीमराया
झाले नवे नेते मलाईचे धनी
वामनच्या मनी येती जुन्या आठवणी
झुंज दिली खरी रामकुंडा वरी
दगड गोटे खाया होता माझा भीमराया
माऊलीची माया होता माझा भीमराया
चांदण्याची छाया कापराची काया
माऊलीची माया होता माझा भीमराया

## 35. संघर्ष

अरे प्रसंग ताडा
तो हानुन पाडा
अन् जुपा ऐकीचा गाडा रे
जळतोय मराठवाडा

जळतोय मराठवाडा

कसा जळतोय मराठवाडा रे

जळतोय मराठवाडा

बघ जळतोय मराठवाडा रे

कोणी कांबळे, कोणी राम

पोटे भरे गाळूणी घाम

गावाचा वैरी ठरला

मुकी होती म्हणुन जय भीम

अडराणी त्यास गाठून

दोरीन जाम बांधुन

आधी हात पाय तोडले

अग्नित दिला फेकून

तो पेटे धडधडा

भीमरायाचा बछडा

ते पेटे धडधडा

भीमरायाचा बछडा

त्या जातीयतेच्या मारा रे जळतोय मराठवाडा

कोणी बनसोडयाची सुन

दुस–याच्या शेती राभून

अंधार पडता पाहुन

बस चूली पुढ येउन

बस चूली पुढ येउन

तीच वर गावाच रिण

ती होती फक्त महारीण

रूप सौंर्दयाची खान

जस गरीबा घराच सोनं

गरीबा घरात सोनं

तीचा फोडला चुडा

हेव जुलूम केवढा

कोण करेल हा निवाडा रे

जळतोय मराठवाडा

जळतोय मराठवाडा

कसा जळतोय मराठवाडा रे.......रे

आम्ही पुण्या मुंबईची लोक

आम्ही पुण्या मुंबईची लोक

बस पोकळ आमचा जोक

जयभीम जयभीम म्हणतो

गाडूच जिवन जगतो

यारे सारे एक होउन

यारे सारे आता एक व्हारे

आता जुपा ऐकीचा गाडा रे

जळतोय मराठवाडा

कसा जळतोय मराठवाडा

प्रंसग ताडा

तो हाणुन पाडा

अन् झुपत ऐकीचा गाडा रे

जळतोय मराठवाडा

कसा जळतोय मराठवाडा

**36. क्रांतीवीर महापुरूष जन्मा आले धरतीवर**

क्रांतीवीर महापुरूष जन्मा आले धरतीवर

हे खंरच आहे खंर

हे खंरच आहे खंर

भीमराव रामजी आंबेड़कर

बाबासाहेब आंबेड़कर

नाव हे गाजतय जगभर

नाव हे गाजतय हो जगभर

क्रांतीवीर महापुरूष जन्मा आले धरतीवर

भीमराव आंबेड़कर धन्य ते

भीमराव आंबेड़कर

**37.भोळी रमाई**

शोभली पत्नी ती भीमास भोळी रमा......

अग ऐ वेचून काडी–काडी घर तीने केले जमा

आ...... आ...... आ.......

वलकराची एक होती मोठ्या मनाची

कधी नाही आस केली खोटया धनाची

पती तीचा बेरिस्टर सून सुबेदाराची

आवडीने लेई रमा चोळी चार लुगडयाची

स्वतः झिजून सात दिली खरी रमा खरी रमा
वेचून काडी काडी घर तीने केले जमा
रमा परी सांगा आता कोणी होतील का
आहो पति सेवा साठी जीव कोणी वाहील का?
खाऊन चटनी भाकर दिवस कोणी काढिल का?

**गायक के शब्द :– बाबासाहेब तीन वर्षोसाठी बाहेर गावी परदेशात गेले बेरिस्टर होण्यासाठी भीमाई ने चटनी भाकर खाउन दिवस काढले अन् आताच्या रमा आताच्या बाया नव–याच्या पहले खाउन भी म्हणे माझी तबियत खराब आहे.**

घरी काही नसताना कोणी पती परदेशी जाईल का अक्षय वाघमारे गातो, गाढली,

खरी सीमा खरी सीमा खरी सीमा
वेचली काडी, काडी, घर तीने केले जमा.

## 38 वंदन गीत

विद्वान ठरला जगी भीमराव
शरण तया जाऊया
महापुरूषाच्या कर्तृत्वाला
काव्य फुले वाहुया
ज्ञानाची खाण होता भिमराव
बुद्धी खाण होता भिमराव

बुद्धी बळाने गाजविले नाव

भिम ज्ञानाची घरा–घरात ज्योत

अशी लावुया

विद्येचा डॉक्टर भिमराव बनला

विद्यवतेची एक जगा मध्ये गणला

भिमरावाच्या विद्यवतेची महती आता दावुया

चला जाऊ सारे भिम पथाने

मध्यम मार्ग घेऊ स्वतःहाने

एका सुरात गाऊया सारे

वंदन गीत गाऊया सारे

**39 चैत्राच्या चांदण्यात**

चैत्राच्या चांदण्यात विजयाच्या पाळण्यात

झुलवी झुला भिमाई अंगाई गीत गात

जो बाळा जो जो ऐ जो

सुभेदारा रामजीच रत्न है चौदावे

डोळे भरभरून किती ग पहावे

दूर निळ गावलाही जणू मोती शिपल्यात

दुमदुमले रान सारे चौघडे वाजले

भिम बाळा परी महू गाँव ते गाजले

मधु गंध दरवळे हा आनंद पाकळ्यात

फलटनचे सारे शिपाई बंधू जमली

या नरविराला मानाचा मुजरा देती

मिरवते मिरा आत्या त्या सुरम्य सोहळयात

अठराशे एक्यानवची आठवन ताजी

सांगायाची बघा सुंदरा सखु आजी

वाजती रणघुमाळी विजयाच्या अंगणात

चैत्राच्या चांदण्यात विजयाच्या पाळण्यात

झुलवी झुला भिमाई अंगाई गीत गात

जो बाळा जो जो ऐ जो

**40 भिमाच खावून फुगलय पोट**

भिमाच खावून फुगलय पोट

जयभिम कराया झिजतात ओट

त्याला समाजामधुन हाटवा

भर चौकात त्याला गाठवा दादा

घासलेट ओतुन पेटवा।।

ऐश आरामामध्ये जो फिरतो

ए सी गाडी मध्ये राहतो माडी मधी

जयभीम घातला की डुलवून छान

घालतोय खाली खुशाल हा मान
हार चपलाचा गळयातु गुतवा ।।
सा—या सवलती भिमाच्या
घेवून बसला पदावरी
सुख सोयी त्या आल्या आता या गदडयाच्या घरी
जिभेला लागली चटक भारी
खायाला मागतो पकवानभारी
त्याला शेण जरा गोठयातला पाटवा।।

### 41. घडविन नवीन पिढी मी

घडविन नवीन पिढी मी
रमा तुझी छोटी कुडी मी।
उरले ना मी अबला आता
बळ देती भज, साऊ, सुजाता
गुलामीची तोडीन कडी मी रमा
लळा त्या बाळा करून गोळा
घेऊन जाईन वरच्या ताळा
विकासाची होईन शिडी मी।।
खडतर वाट हजार काटे

वस्त्र निवारा भले ना भेटे
फाटकी नेसीन साडी मी
कसा मी घडलो लढता लढताना
पाठ भिमाचे पढताना
गाठीन उंच शिखर मी
नारायणाची रसाळ गाणी
पाजीण राहीन महाड पाणी
त्या पाण्यातली पाणबुडी मी रमा

**42. भिम झटला (मराठी)**

भिम झटला, तु नटला
भिम झिजला, तु सजला
झाला बदल तुमच्या राहण्यास
जे नव्हत तुमच्या पाहण्यास
गडया आज आल तुमच्या खाण्यात
पाराच वरच खरकट उष्ट
खाऊन भरल ना पोट
भिमामुळे रे आज खायाला
आल सोन्याच ताट
घरदारी तुमच्या भारी

तु लोळ सोन्या नाव्यात
विसरू नको रे ख–या बापाला
ठेवा जराशी जाण
ज्याच्या मुळे रे आज
तुझला मिळतो सारा मान
समाजास धरून रहा रे नाही अर्थ दूर राहण्यास
धम्म बुद्धाचा दिला भिमान
जरी तुला ते कळेना
वर्षोनुवर्षे नागपुराला
पाय तुझे ते वळेना
अनमोल केल नाही
खर्च येण्या जाण्यात

## 43.वाटे रमाला त्या

वाटे रमाला त्या पुस्तक मी व्हावे
नेहमी साहेबांच्या हाती पडावे
साहेबांना पुस्तकांचा छंद
फुलाऊनी आहे त्यात सुगंध
सुगंधापरी त्यांना ही गर्व आहे
नेहमी साहेबांच्या हाती पडावे

पुस्तकाला नाही म्हणते साहेबांची सेवा
आला जरी थोर सेवक आहे पुस्तकाला सेवा
सांगा पुस्तकाला माझी दया कळावी
नेहमी साहेबांच्या हाती पडावे
पत्नी मुलाहूनी सर्व पुस्तकात ध्यान
मायाहुनी पुस्तक आहे किती भाग्यवान
सांगा पुस्तकाला माझी दया ही कळावी
नेहमी साहेबांच्या हाती पडावे

**44. भिमराव पट्टा**

अरे वाटत होता जातीत आमच्या हिंदू देवाचा कट्टा
आला जन्मा भिमराव पट्टा त्याने जातीचा मिटवला बट्टा
काठी कमरेला होती होत गळ्यात गाडग
मिळे पोटाला जवा झाडीते वाडग
अशीच केली जाती वाद्यात, आमच्या जातीची थट्टा
आला जन्मा भिमराव पट्टा त्याने जातीचा मिटवला बट्टा

तपत्या उन्हात लावी चालाया
अंगी नसायचा कपडा घालायला

अहो भिमामुळे आज सारेच लागले कराया नट्टा–पट्टा
आला जन्मा भिमराव पट्टा त्याने जातीचा मिटवला बट्टा
हिंदू धर्माला देवून  मुठमाती
बौद्ध बनविला आणं मिटविला जातीचा कलंक
हातात आमच्या दिला बुद्धाचा धम्म
आला जन्मा भिमराव पट्टा त्याने जातीचा मिटवला बट्टा

**45. भिमराव** साऱ्यात **एक नंबर**

भिमराव **साऱ्यात** एक नंबर
गांधी सावरकर ते टिळक आगरकर
आले गेले किती शंभर
सुट बुटात सुब बुटात शोभुन दिसतोय
भिमराव साहेब सा–यात एक नंबर

ज्याच्या बुद्धिन होतोय देशाचा सन्मान हा
देश बांधिल भिमाने घटनेच्या कलमान
हा तो शिल्पकार आहे घटनाकार
झुकले त्याच्या पुढे अंबर
सुट बुटात सुब बुटात शोभुन दिसतोय
बुद्ध, कबीर, फुलेच्या समानतेचा वसा

लढा क्रांतीचा उभरि पेटेचा वनवा

लावली पेनाला धार

आणि केला निराधार

करण्या भल कसाली कंबर

सुट बुटात सुब बुटात शोभुन दिसतोय

**46. भिमाईचा तो बाल भिमराया**

भिमाईचा तो बाल भिमराया

बहुजनांची आई

लिहुन देशाची घटना

अहो केली जगी नवलाई

होती शिक्षणाची ऊणी

होती गरीबी घरी

मन लाऊन शिकलात तरी

नाही चुकला शाळेत काय

भारताचा घटनाकार झाला माझा भिमराया

सुभेदार रामजीचा पोरं

भलतच बुद्धिन हुशार

जरी होता वर्गाच्या बाहेर

धडा धड द्यायचा उत्तर

त्या कपटी मास्तरानं जाती भेदाला मारून

पोरं महारांच म्हणुन

बंदी घातली आत यायला.....

माझा अंगाला घडवील

जीवन सोन्यानं मडवील

गुलामी मधुन सोडविल

कायम डोंगर जिरविल

जवा दिव्या खाली बसुन

केला अभ्यास बसुन

अशी जात न फसुनं

हिंदुस्थानाला ताराया

**47. आमचा नादच करायचा नाय**

कायदा लिहला बापानं आमच्या

आम्हांला शिकवता काय

आम्ही भिमाची पोरं हाय

आमचा नादच करायचा नाय

भोळ्या भावड्या गरीबाला

भ्रष्टाचारी हे नेते लुटतात

बाबासाहेबांच्या कायद्यापुढे

पंतप्रधान ही येथे झुकतात

जनाची तर मनाची ठेवा

लाज का तुम्हांला नाय

आम्ही भिमाची पोरं हाय

आमचा नादच करायचा नाय

इतिहासाच्या पानाची साक्ष भिमा कोरेगावाचाी

पेशव्यांना पुरून उरली ती

जात आमची ही अरे वाघांची

संविधान हे हलु नका रे

हा तुम्हांला इशारा काय

आम्ही भिमाची पोरं हाय

आमचा नादच करायचा नाय

**48. निळ्या निळ्या गाडीत**

आले सुट बुट कोट घालुन आले भिम वाडीत

आले भिमाच लेकरू माय निळया निळया गाडीत

हाती नव्हती व पुस्तक पाटी

होती डोक्यावर शेणाची पाटी
ही गोष्ट नाही माय खोटी
चिल्यापिल्याला घेऊन राहती उँच या माडीत
आले सुट बुट कोट घालुन आले भिम वाडीत

सारं मोडून जुणं जुणं
माझ्या जिवनाचं झाल सोनं
आता नाही कशाची ऊन
हिऱ्या मोत्याची खानी माझ्या
टाकल्या या झोळीत
आले सुट बुट कोट घालुन आले भिम वाडीत

काल होत व तोडं बंद
नव्हता शिक्षणाचा हा गंध
आता झाली व छाती रूंद
आज रोजचं बसती भिमाचं
पुस्तक चालीत
आले सुट बुट कोट घालुन आले भिम वाडीत

**49. बाबा साहेबांची रिंगटोन**

गान भिमाच दबणर नाय
अत्याचाराच्या जोरान

तरी पोरही वाजवतील
बाबासाहेबांची रिंगटोन।।1।।

जीव गेला जरी आमचा
जाती येतेच्या हाल्यात
तरी भिमाचा फोटो हा
लावू काळजाच्या किल्यात
बाप भिमाला मानलय हो
इथल्या लहान थोरान
तरी पोरही वाजवतील
बाबासाहेबांची रिंगटोन।।2।।

भिमरायाच्या नावावर जरी
झालोत कुरबान
नसा–नसा मधुन
वाजल बाबासाहेबांच गाणं
केल सोनं हे जीवनाच
इथल्या क्रांति कारान
तरी पोरही वाजवतील
बाबासाहेबांची रिंगटोन।।3।।

## 50. महाराची तलवार

शुर विराची तलवार त्या महाराची तलवार
कसी फिरली गरगरा
शेंडी संगट कापला पेशवाईचा तुरा
जगामधी घडली ही लढ़ाई न्यारी
पंचवीस हजाराला पाचशे पडले भारी
भिमा कोरेगांवी पडला रक्ताचा सडा
शेंडी संगट कापला पेशवाईचा तुरा

आर मर्दानी औलाद मर्दाची जात
नाव मी कोरल आहे इतिहासात
भटाच ते सौनिक छाटुनी चरचरा
शेंडी संगट कापला पेशवाईचा तुरा
हादरला शनिवार वाडा पगडी हादरली
मनुची सेना ती सारी भेदरली
रन स्तंभ साक्ष सुनिल वंदन विरा
शेंडी संगट कापला पेशवाईचा तुरा

## 51. माणसात आणलय कुणी

हो हो कोण होतास तु काय झालास तु

भिमरायाचे उपकार विसरलास तु
घालुन सुटबुट फिरतोस मानान
तुला माणसात आणलय कुणी माझ्या भिमानी भिमानी
शिकला सवरला तुला मिळाली रे खुर्ची
भिमामुळे मिळाली रे तुला पदवी वरची
आर तुझ्यासाठी केल आयुष्य त्याने खर्ची
जाण जरा राहुदे भिमाच्या उपकराची
हो हो झाला धनवान तु झाला बलवान तु
चार लोकांत घेतोस सन्मान तु
जीवणच सोन भिम श्रमानं
तुला माणसात आणलय कुणी माझ्या भिमानी भिमानी
ज्यांच्या पुण्याईने आज साहेब तु झाला
त्यांचच खाउन तुला माज का रे आला
बापाच्या बापाला तु बैमान झाला
स्वार्थी पायी समाजाचा घात तु रे केला
हो हो जसा मिळल तसा तु रे भरला खीसा
समाज हिताचा कधीना ही घेतला वसा
रात भिमाची आपली तु ई मान
तुला तुला माणसात आणलय कुणी माझ्या भिमानी भिमानी

## 52. **सुट बुट कोटावर**

ऐका हो गांधी लागु नका नादी

गरजून सांगे भिम कोटावर

मीच आणणर समाज माझा सुट बुट टाय

आण कोटावर

नको आता आम्हाला गोड गोड वेलण

तुम्ही आहात कप्टी मनान, हरिजन म्हणले

नाही हे पटले नूसताच पुळका तुम्हाच्या ओटावर

नेता असता अस्पृश्यांच तुम्हा म्हणतील कोण

सांगा तुम्हाला कोण देतील माण

कावा कळाला तुमचा आम्हांला

अरे पोटावर तुमच्या मीच आणणर

समाज माझा सुट बुट टाय

आण कोटावर

आणल तर माणसाला मीच आणीन

नाहीतर स्वताला गोळी घालीण

बोले रोख टोख भिमराव लेख,

जिंकले पेनाच्या टोकावर

मीच आणणार समाज माझा सुट बुट टाय

आण कोटावर

## 53. भरावा चुडा

आठवावे भिमाने हा आहो  दिलेला धडा

न्याय हक्कासाठी करा रक्ताचा सडा

भिमवीरानो आता उठा रे उठा लढविण्या लढा,

नाही तर भरावा चुडा दोन्ही हाता मध्ये

शिका संघटीत व्हा करण्या आर्दश

आरे संघटीत होता पुन्हा करावा आर्दश पुढ पुढ ओढा वाल्या

भिमाचा गाडा भिमविरानो उठा

वेळ ही नाही घरी दडण्याची आरे लाचार होउन

पाया पडण्याची जाती वाद्यांचा फोडा पापाचा घडा?

भिमवीरानो आता उठा रे उठा लढविण्या लढा,

मर्दाची इच्छा ठेवा मर्दानी वाणी भिम शक्तीच

मर्दानी कैलास व्हावे तुंरणात भिडा न्याया

हक्का साठी करा रक्ताचा सडा

## 54. जन्मा आला

बहूजनाला वाचवण्याला

भिमराव जन्मा आला

भिमाईचा भिमराव जन्मा आला

पदो पदी होती आम्हांला बंदी

शिक्षण घेण्याची नव्हती संधी
शिकुण आम्हांला साहेब करायला

देवा धर्माची दावून भिती
हजारो पिढयांना छळलं किती
जातीयतेला मातीत पुरायला
मातभूमिशी राखुन इमान
दिनरात जागून परिश्रमानं
घटना लिहायला देशाला द्यायला

जिर्ण रूढीला गाडून
गंगाधरा बौद्ध धम्मा कडं
मुक्तीपथाला घेऊन जायला
जन्मा आला बहूजनाला वाचवण्याला
भिमराव जन्मा आला

**55. शिवा अन् भीवा**

एक निळ अन् एक भगवा
दाही दिशामध्ये लावीला दिवा
एक वाघाचा एक सिंहाचा छावा
जी जाईचा तो शिवा, अन भिमाईचा तो भिवा

कुलपती छत्रपती भोसल्यांची खानं
दिन दुबळ्या ज्यानं राखली शान
दाऊन जगाला प्रकाश नवा
देऊन जिव इथ गेला तो जिवा
एक वाद्याचा एक सिहांचा छावा
जिजाईचा तो शिवा अन् भिमाईचा तो भिवा

घटनाकार भारताचे आंबेडकर
ज्यांनी आज आपले नटविले घर
दाऊन जगाला प्रताप नवा
जगात ज्यांचा आहे गवगवा
एक वाघाचा एक सिहांचा छावा
जिजाईचा तो शिवा अन् भिमाईचा तो भिवा
हिंदी गीत

**56. गुलामी का टूंट गया जाल**
ये है मेरे भीम का कमाल
भिकारी बने हे मालामाल ये है
मेरे भीम का कमाल
लाखो करोडो दिल के उजाले थे
सर झुकाकर खुब चले थे
पर चलते है शेर की ओ चाल
अब ना गुलामी अब ना सलामी

अब की अब होगी निलामी
बने है गुलाम राजपाल
प्रतापसिंग करे सलाम
नागपूर का देखो ये मेला
बीस लाख आते है हर साल
गुलामी का टूंट गया जाल
ये है मेरे भीम का कमाल

## 57. हात जोडतो पाया पडतो

वाकून थोडी कंबर
सा—या जगात एक नंबर माझा बाप हाय आंबेडकर
इज्जत मोठी हाय का वायदा मोठा हाय
गांधी मोठा हाय का कायदा मोठा हाय
काठ डोक्यामधील घान ठेव उपकाराची जान
सवलत जर घेशील तर तु बनशील कलेक्टर
मन असुदे तुझ शुद्ध तेंव्हाच होशील बुद्ध
वर्तन नको अशुद्ध, बुद्धाने त्यागले युद्ध
भिम वाडीत जोड नातं
**तुझ्या** नगरात होत का घर
किती मातीत मिळवा सोन ते आनखी पीवळ होईल
भिम शंभर नबरी खरा भिम रूपात पाहील
घर सजवा, हिला लाजवा
सोनं शंभर नबरी खरं

सळ्या जगात एक नंबर

माझा बाप हाय आंबेडकर

**58. छप्पनची विजया दशमी विश्वात गाजली**

सवलीत पिंपळाच्या भिम मूर्ती साजली

झुगारूनी जूनी नीती आणि जून्या परंपरा

जन जगात महान मार्ग दाविला खरा

त्रिशरण पंचशिला जगी निंनादली

असूनी मानूस दूरच ठेविले मानवाने मानवा

मायेचा ओलावा भिमाने दिला या तहानलेल्या जिवा

बुद्धाची वाणी लाखो जनास पाजली

धन्य धन्य तो सागर झाला धरणी ही शाहारली

बुद्धांची जेव्हा ह्रदयी मूर्ती विराजली

बाबाचे तेज रूप जेव्हा पाहीले

त्रिवार वदनी संदिपाने असे धम्म गीत गाईले

ज्योती जिवाची घेऊन आली स्वराजली

**59. ज्या हातानं काढलय शेन**

ज्या हातानं काढलय शेन

त्या हातात आली पेन

**तुझ्या पिढ्यान पिढ्याच** र **बेट्या**

माझ्या भिमानं केलय सोनं
इतरभर  नेसुन लंगोटी
पोटाच्या खळगी साठी
हाती खुळ खुळ्यची  काढी
म्हणे रोटी वाडा रोटी
कुत्र्याहून हीन होतं तुझ र हालकट जिन

वाघाची आली ताकत
आली बोलायला ही हिंमत
मान कवडीचा तुला र नव्हता
आली मानवाज आज किंमत
बा भिमाच्या संविधानान
तुला आलं नव आवसान

तुझाा रूबाब पाहून थाट
मनुवाद्याच दुःखतय पोट
तु ऐकुन घेर निट
नको वागू भिमाशी खोटं
ज्या हातात काठलय शेर
त्या हातात आली पेन

## 60. वार जय भिमाचा

घासलेली लावलेली ती धार पाहीजे
वर जयभिमाचा आर पार पाहीजे
जतीवादी बहीणी वरती, ठेवती कुणी डोळा
भीम शक्तीचा तूझा रे फोड बाम गोळा
विटाळ मानी कुणी बंदा ठेवी शाळा
शोध कुठे आहे तो वैरी कपटी काळा
मनूच्या वृत्तीचा तो कपटी

भिमाच्या पूत**ळ्या**चा अपमान होता
फाड आधी त्याला मारा मार आधी त्याला
समाज हा भिमासाठी इथे जिव देतो
आसा नेता तू गाठ झोपी जातो
बलशक्ती भिमाचा सरदार पाहीजे

भिमा वाणी क्रांती करा, ठेवा मनी जिद्य
दंड ठोक बंड कर तु अन्याया विरूद्ध
हक्कासाठी जिथे तिथे पेटवावे युद्ध
खरा भिम चेला इथे करावे तू सिद्ध
घासलेली लावलेली ती धार पाहीजे
वर जयभिमाचा आर पार पाहीजे

**61. अंगबाई माझा पोरगा साहेब झाला**

सुट बुट कोट घाले आइटित चाले
याच्या खिश्याला दोन दोन पेन
बाई माझा पोरगा साहब झाला
आहे बाबा साहेबाच लेन
नव्हंत खानं पिनं नव्हतं शुद्ध लेन
लोकांच्या लेनाला झर माझं मन
थाट माट करी आज मनान लेक सुन
फिकी वाटे सिनेमा हिरोईन

आमच्या बाप **जाद्या** कधी पुस्तक नाही पाहिलं
समज नव्हंत मले कुठे काही लेन
आमच्या राज्यात होती अंग**ठ्या** शाई
कुठे काही लेन मले समजत नाही
त्यानं शिकविल **साऱ्याला** लेन
अंगबाई माझा पोरगा साहेब झाला

आमच्या राज्यात होता सावली चा बाट
आज आहे बाबा आमचा राजशाही थाट
ब्राम्हनाने पोरि दिल्या आमच्याचं घरी
ऐक्या ताटत करतेत जेवन
अंगबाई माझा पोरगा साहेब झाला

## 62. गौतमा तुच माझ्या गुरूचा गुरू

या मंगल प्रसंगी तुजला स्मरू

गौतमा तुच **माझ्या** गुरूचा गुरू

कार्य महान हे आहे तुझे

जगाने गुरू मानले पाहिले

जो मानी तो समजा आहे माथे फिरू

तुझे मोठेपण अंतरी जानीले

म्हणुन **माझ्या** गुरूचा गुरू

त्यांच्या आधी मी तुझी रे पुजा करू गौतमा

तत्व प्रणाली तुमची या हृदयाशी

धम्म अनुन्याची झालो

स्वतःच्या खुशी

तव चरणी आता मी तरू वा मरू

गौतमा तुच **माझ्या** गुरूचा गुरू

## 63. भिम कन्या अशी मी लाखातली

भिम कन्या अशी मी लाखातली

सुर मर्दानी झाल्या भिमाच्या मुली
**ह्या** भिमाने दिला शास्त्र साठा नवा
टाज **वैऱ्याची** सारी उतरली हवा
नष्ट केली भिमाने दुःख सावली
सूर मर्दानी झाल्या भिमाच्या मुली

सारून बाजुल बायकी बांगडी
ठेचल्या पुर्ण ऐसा रांगडा गडी
जशी वाघीन बघा चवताळली
शुरमर्दानी झाल्या भिमाच्या मुली

वाट त्यागुनी भिमाची चालु नका
गर्जून सांगते मी घाबरू नका
आज सर्वांपुढे ती सरसावली
शुरमर्दानी झाल्या भिमाच्या मुली

धन्य झालेले कांचन भिमाच्यामुळे
गीत पंचशिलही म्हणे वेगळी
हो तो शितल म्हणूनी ती भिमसावली
शुरमर्दानी झाल्या भिमाच्या मुली

## 64. चांदण्याची चांदणी येऊन खाली

पहाट झाली, प्रभा म्हणाली, भीमजंयती आली

चांदण्याची चांदणी येऊन खाली

सफेद साडी वर सफेद खणचोळी

लेऊन आली गं गगनाची भोळी

ओवाळाया भीम सख्याला उतावली झाली

चांदण्याची चांदणी येऊन खाली

करी घरी कुणी पुरणाची पोळी

गीत  म्हणे कुणी भिमाचे

फोटो पाशी बसून कोणी

चांदण्याची चांदणी येऊन खाली

बुद्धाचे तत्व ज्ञान देऊन

मानवचे रक्षण करून आम्हां माणुस बनवुन

गातो गीत भिमाचे मानाने

**निळ्या** आभाळा खाली

पहाट झाली, प्रभा म्हणाली, भीमजंयती आली

चांदण्याची चांदणी येऊन खाली

**65. भिमाची कीमया सारी**

शिंदे बाई म्हटली, जोशी काकूला

तिच्या बसून जोडीला

तुझ पोरगा डायव्हर हाय, **माझ्या** साहेबाच्या गाडीला

होती तुमची मक्तेदारी, शिक्षण होत तुमच्याघरी

केली भिमानं किमया भारी, झाले साहेब पोर पोरी
कशात कमी, आता नाही आम्ही
नेहमी राहतो आघाडीला
हक्क समान दिले म्हणुन झाली सायबीन माझी सुन
मुलगा सुन दोघ मिळून जाती आफीसात गाडीमधुन
ज्ञानाची ओढ आहे, देतो तोंड,
टाता तुमच्याच तोंडीला
भिमरायाची सारी कमाई कमी कशाच मुळीच नाही
कॉप्युटर वॉशिग मशीन टि.व्ही घर कमाल ठेवतील बाई
घरगडी घरी, इस्तरी करी
**माझ्या** सुनाच्या साडीला
संदिप साहेब झालाय आज जयभिम म्हणायची नाही लाज
भिमरायान दिला आवाज, गातो गाणं सकाळ साज
अजून तरी विसरला नाही
भिम वडीलाला

## 66. विद्ववान भिम

अशी विद्ववता काहीच नाही
कुण्या ब्राम्हण भटाची
395 कलम होते भिमाच्या बोटात
असा भिमानं लिहीला कायदा
त्या कायदयात केलाय वायदा
हिंदू मुस्लीम, सिख, इसाई

सगळया लोकांचा झालाय फायदा
हे सगळ पाहुन जातिवादयाच दुःखत पोट
जेव्हा भिमराव दिल्लीत बोले
सार दिललीत शासन हाले
**माझ्या** भिमाच्या घटनेमुळे
या देशाचा कारभार चाले
शपथ घेतली ती घेऊन बसती
आमदार, खासदार थाटात
भिमानंतर पुढारी शिकले
शिकले पण तेही हुकले
विद्ववान भिम पाहुन
भिमाच्या चरणी झुकले
चंद्रकाताने भिम नाव कोरल
काळजाच्च्या देठात

## 67. बुद्ध ज्याने दाविला

बुद्ध ज्याने दाविला पिंपळाच्या पानांत
पाडली अशी खाली माजलेली विषमता
लक्ष्य होते समतेचे भिम पाहिलवानात
बुद्ध ज्याने दाविला पिंपळाच्या पानांत
जात पोळली माझी रूढीच्या निखाऱ्यावर
फुल आले क्रांतीचे या वाळलेल्या रानात
गावळीचा जोहार संपला आता

माझा दिल्ली आम्ही पाहिली त्या
भिम संविधानात
बुद्ध ज्याने दाखविला पिंपळाच्या पानांत
बाटली बैल गाडी काल आमच्या स्पर्शाने
मी टाय कोट घालुनी आता चाललो विमानात
बुद्धीच्या जोरावर सारे विश्व जिंकले
हो... हो.... बुद्धीच्या जोरावर
स्वप्न होते समतेचे मनात भिमाच्या
संकल्प या मनाचा क्रांति करून गेला
इतिहास घडविला **माझ्या** युद्धकराने

## 68. अशी लाजून बावरी झाली

अशी लाजून बावरी झाली गं
रमा भिमाची नवरी झाली गं
अलंकाराची लाडाची लेक
दिसाया देखनी लाखात एक
सरल स्वभावी अशी ती नेक
भिमा शोभे पत्नीला सुरेख एक
जणू चांदणी फुगडी आली गं
रमा भिमाची नवरी झाली गं
अशी लाजून बावरी झाली गं
भिमा पाहून लाजायली चांदनी

चांदनी साजायची कधीच नाही

रूसायची सदैव सुखनि हासायची

भिमरायाच्या छायेत  न्याली गं

रमा भिमाची नवरी झाली गं।

## 69. भिम जयंती सण हा आला बाई

भिम जयंती सण हा आला गं बाई

भिम जयंती  सण हा आला गं बाई

सासरी ना राहायच बाई मला माहेरी जायचं

जाईन मी बाई पाहीन मी बाई जयंती

माहेर मायचं गं बाई माहेर मायचं

सासरी मधाची गोडी तरी

माहेरी मन हे ओढी कस

वळवाव कळेना मजला मन पतिरायाचं

बाई मला माहेरी जायंच

जेव्हा माहेर स्वप्नि आलं

मन माझं व्याकुळ झालं

14 एप्रिल दिन मायेचा गं

बाई मला माहेरी जायचं

साऱ्या  जमतील लेकवाळि

बुद्ध विहारी संध्याकाळी

विष्णु बंधुनी लिहलेली भिम गीत गाथा

बाई मला माहेरी जायचं

### 70. भीमाच कालिज वाघाच

अरे ध्येय त्यांच एक
बहुजनाच सुख हितासाठी सर्व त्यागाच
माझ्या भीमाच कालिज वाघाच
बहुजनाच्या हितासाठी भीमराया झटला
कार्यान त्यांच्या देश सारा नटला
काडून पावल भीक्षा मार्गाच
माझ्या भीमाच कालिज वाघाच
भीमराया मूळे बुद्ध आम्हां मिळला
त्यांच्या मुळे बुद्ध महिमा कळला
धंनराज, सौरभ वंदन करे दोघ
माझ्या भीमाच कालिज वाघाच
अरे ध्येय त्यांच एक
बहुजनाच सुख हितासाठी सर्व त्यागाच
माझ्या भीमाच कालिज वाघाच

# परिशिष्ट 2

## 1.1 सामग्री संकलन

शोधार्थी को शोध प्रारंभ करने से पहले विषय चयन की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। शोध का विषय चयन होने के बाद उस विषय से संबंधित पुस्तकों और आलोचनाओं को पढ़ना जरूरी है। तभी शोध की रूपरेखा तैयार हो सकती है। रूपरेखा तैयार होने के बाद शोध की सामग्री को संकलित करना बहुत बड़ी चुनौती होती है। इसे करते समय उत्साहित और रूचि से काम करना जरूरी है। तभी शोध सामग्री सकंलन सफल होगा। मैंने इस शोध सामग्री को दो भागों में विभाजित किया है।

1. **मौखिक संकलन**
2. **लिखित संकलन**

### 1. मौखिक संकलन

मौखिक सामग्री संकलन के लिए मैंने महाराष्ट्र के 'बीड' जिला के अंतर्गत आनेवाले गाँव 'वडवणी', 'माजगाँव, 'चौरबा', 'गेवराई', 'कोटरबन', 'दहीफल', 'धारूल', 'शिरूर,' आदि गाँवों में मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों का संकलन किया है।

### 1. लिखित संकलन

इस में मैंने महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय के ग्रंथालयों और पुस्तक शॉप, प्रकाशन आदि की मदद से लिखित साम्रगी को संकलित किया है। इनमें डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर मराडवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद, सावित्री बाई

विद्यापीठ, पुणे, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, डॉ.अम्बेडकर प्रतिष्ठान आदि से लिखित सामग्री को संकलित किया है।

### 1.2 सामग्री संकलन के उपकरण

मौखिक शोध सामग्री संकलन के लिए मैंने इलेकटॉनिक माध्यमों की मदद से सामग्री संकलन किया है। जिसमें विडियो रिकॉर्डिंग, ऑडिया, रिकॉर्डिंग, कॉमेरा, कैमेरा स्टेंड, लैपटॉप, कैमेरा चार्जर, मॉबाईल, माइक्रो फोन, आदि का उपयोग करते हुए मौखिक सामग्री का संकलन किया हैं।

### 1.3 सामग्री संकलन का प्राथमिक स्त्रोत

क्षेत्रीय कार्य करने के लिए मैंने सर्वेक्षण पद्धति को अपनाया है। इसके लिए मैंने कौमेरा, ऑडिया रिकॉर्डर, माइक्रो फोन के द्वारा मराठी के अम्बेडकरी लोकगीतों को रिकॉर्ड किया है। साथ ही उन लोकगीतकारों के कुछ साक्षात्कार भी लिऐ है।

### 1.4 सामग्री संकलन का द्वितीय स्त्रोत

सामग्री संकलन के द्वितीय स्त्रोत में लिखित साम्रगी का संकलन किया है। यह लिखित सामग्री में शोध से संबंधित पुस्तक और आलोचनात्मक साहित्य है। इसके लिए मैंने डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर मराडवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद, सावित्री बाई विद्यापीठ, पुणे, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, डॉ.अम्बेडकर प्रतिष्ठान, आनंद प्रकाशन औरंगाबाद, चिंन्मय प्रकाशन औरंगाबाद, युगसाक्षी प्रकाशन, आकांशा प्रकाशन नागपूर आदि से लिखित सामग्री का संकलन किया है।

## 1.5 मौखिक सामग्री संकलन की समस्याएँ

क्षेत्रीय कार्य में मौखिक सामग्री को संकलित करने के लिए मैं गाँवों में घूमा। वहाँ के अम्बेडकरी लोकगीतकारों की जानकारी ली और उनका मोबाईल नबंर लेकर उन से संपर्क कर समय निश्चित कर उनके गीतों को रिकॉर्ड किया गया। इन लोकगीतों को संकलित करते समय कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

1. **गाँवों में जाने के लिए समय पर गाडीयाँ नहीं मिलती।**
2. **भारतीय गांवों में रहने वाले दलित बस्तीयाँ मुख्य गाँव से हटकर है इस कारण वहाँ तक पैदल जाना पड़ता था।**
3. **उनका मोबाईल नंबर बहुत कठिनाई से मिलता है।**
4. **गाँवों में मोबाईल सेवा काम नहीं करती।**
5. **कभी–कभी रिकॉर्डिंग का समय तय होने के बाद कुछ कारणों से गीतकार दूसरे कामों में व्यस्त होने के कारण तय किया गया समय पर गीतकार उपलब्ध नहीं होते थे।**
6. **गाँवों में बिजली कम ही होती है। इसकारण रिकॉर्ड करने में मुश्किलें आती है।**
7. **गाँवों में रहने की सुविधा नहीं होती।**
8. **कुछ लोकगीतकारों के लिए कैमेरा अनजान होने के कारण डरा हुआ प्रदर्शन देते थे।**

## 1.6 मौखिक सामग्री को लिपिबद्ध करने की प्रक्रिया

मराठी अम्बेडकरी लोकगीतों को लिपिबद्ध करने से पहले उनको अच्छे से सुना जाता है। फिर गीतों को लिपिबद्ध करना होता है। गीत सुनते समय गायक की आवाज कम आती है तो उनके शब्द सुनाई नहीं देते। इसका कारण है संगीत वाद्यों की आवाज गायक की आवाज से ज्यादा होती है। इसकारण बहुत बारीकी से उन शब्दों को सुना जाता है। गाना शब्दबद्ध होने के बाद एक बार फिर से सुन कर जांच करनी होती है। साक्षात्कार में इस तरह की समस्या नहीं आती है। साक्षात्कार में प्रश्नों के द्वारा गीतकारों की समस्या और लोकगीतों के बारे में विस्तार से जानने की कोशिश होती है। बाद में उन साक्षात्कारों को लिपिबद्ध करना होता है।

## 1.7 सामग्री का वर्गीकरण

मौखिक सामग्री में मौखिक लोकगीत और साक्षात्कार को संकलित कर उनको लिपिबद्ध किया गया है। मौखिक लोकगीतों का वर्गीकरण मैंने गीतों की विषयवस्तु के आधार पर किया है। जैसे– सामाजिक गीत, आर्थिक गीत, राजनीतिक गीत, ऐतिहासिक गीत, शैक्षणिक गीत, स्तुतीपरक गीत, क्रांतिकारी गीत, वैचारिक गीत, वदंन गीत, प्रतिरोध के गीत आदि। इस तरह वर्गीकरणकर उनको लिपिबद्ध किया गया है।

## 1.8 शोध की पद्धति

लोकतात्विक शोध की प्रक्रिया सामान्य शोध जैसी ही होती है। यह शोध अंतर्विद्यावर्ती, सांस्कृतिक अथवा अन्य किसी भी दृष्टि से किया जा सकता है। यह शोध किसी भी दृष्टि से क्यों न किया जाए, तात्विक

उपलब्धि के लिए इसमें 'शब्द' या 'भाषा के स्वरूप' को अनिवार्यतः समझना होता है।

मैंने अपने शोध प्रबंध में लोकतात्विक शोध पद्धति और अंतर्विद्यावर्ती शोध पद्धति का प्रयोग किया है। अंतर्विद्यावर्ती शोध आधुनिक युग की आवश्यकता है। अंतर्विद्यावर्ती शोध के अंतर्गत शोधार्थी जिस विद्या शाखा के आधार पर शोध करना चाहता है, उसके लिए पहले अध्ययन भूमि या सिद्धांत पक्ष की तैयारी के रूप में उस विद्या शाखा का अध्ययन करता है। अंतर्विद्यावर्ती का सामान्य अर्थ है– ''एकाधिक विद्या शाखाओं का पारस्परिक प्रभाव और संबद्ध विद्या शाखा के नियमों एवं सिद्धांतों के आधार पर इस प्रभाव की पहचान। इसको समझने के लिए साहित्य ही सर्वोत्ततम उदाहरण हो सकता है। साहित्य समग्र ज्ञान, अनुभूति और दर्शन का पूंजीगत समवाय होता है। अतः स्वाभाविक है कि साहित्य का अध्ययन, साहित्यशास्त्र इत्यादि में से किसी भी विद्या के आधार पर हो सकता है। ऐसे अध्ययन को अंतर्विद्यावर्ती अध्ययन कहा जाता है क्योंकि यह अध्ययन साहित्येतर विद्या के आधार पर किया जा रह है। जब इसी प्रकार साहित्येतर विद्या के आधार पर किया जा रहा है, तब उसे अंतर्विद्यावर्ती शोध की संज्ञा दी जाती है।''[140]

[140] शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि –बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, सं.2015, पृ.सं.34.

## परिशिष्ट 3

### 1. साक्षात्कार

### धनराज भालेराव से बातचीत

**प्रश्न. आपका परिचय दीजिए?**

**गीतकार–** मेरा नाम 'धनराज साहेबराव भालेराव' मेरे पिता साहेबराव वेताल भालेराव है।मेरा जन्म धारूल मंडल के चौरबा गांव में 1987 में हुआ है। मैं बचपन से लेकर अभी तक इसी गाँव में रहता आया हूँ। मेरी पढ़ाई भी इसी गाँव के स्कूल में हुई। घर के आर्थिक हालत खराब होने के कारण मैं स्कूल छोड़ कर काम करने लगा ताकि घर में मदद मिले। आज मैं बाबासाहब के गीत गाकर घर परिवार को देख रहा हूँ।

**प्रश्न. आप अम्बेडकरी लोकगीतों की परंपरा के साथ कैसे जुडे?**

**गीतकार–** उम्र के 12 साल से जुडा हूँ। जब मेरे पिता अम्बेडकर के लोकगीत गाते थे। मैं भी उनके साथ जाकर बैठने लगा। फिर गाँव में कभी वामनदादा कर्दक के गीतों का कार्यक्रम आया तो पिताजी भी जाते थे। और तभी से मैं भी गाना गाने लगा। धीरे–धीरे मैं भी उनके साथ जाने लगा और मुझे भी अम्बेडकर के लोगगीतों को गाने की रूचि आने लगी।

**प्रश्न. डॉ. बाबासाहब के गीत आप गाते है तो इन गीतों के द्वारा आप किस तरह से समाज की जागृति करते है ?**

**गीतकार–** मैं गाँवों में कार्यक्रम करता हूँ। इन गीतों में बाबासाहब के विचार कहे गये है जैसे शिक्षा, संगठन, संघर्ष इन बातों के मैं दलित

समाज तक पोहचाता हूँ गीतों के माध्यम से। हमारा समाज पिछे ना रहे वह आगे ही बढते रहे।

**प्रश्न. आप बाबासाहब के गीत किन–किन जगह पर गाते है?**

**गीतकार–** अभी मैं धारूल, केज, माजगांव मंडल तक मैं गीत गायनों के कार्यक्रम करता हूँ।

**प्रश्न. आपका पारिवारिक जीवन कैसे चलता है?**

**गीतकार–** मैं अपने परिवार की जीविका इसी के ऊपर चला रहा हूँ। इन्ही गीतों के माध्यम से कार्यक्रम से कुछ आर्थिक मदद मिलती है। इसी पर जीवन चलता है।

## 2. साक्षात्कार

## साहेबराव भालेराव से बातचीत

**प्रश्न. आपका परिचय दीजिए ?**

**गीतकार–** मैं साहबराव भालेराव है। मेरा जन्म 1950 में गाँव चौरबा, मंडळ धारूल, जिला बीड में हुआ है। मेरे पिता भी इसी गाँव में रहते थे। इसी गाँव में हम मजदूरी करके जीवन जीते थे। आगे चलकर मैं बाबासाहब के लोकगीतों के साथ जुड़ गया और मैं खुद गीत गाने लगा।

**प्रश्न. आप कौन–कौन से गीत गाते है?**

**गीतकार** – हम बाबासाहब के गीत गाते है। मेरा बेटा गाता है मैं पीछे गाता हूँ। मैं यह गीत गायन का काम बचपन से कर रहा हूँ। अब मेरा बेटा यह परंपरा आगे लेकर चल रहा है। आज मैं बेटे के साथ गीत गाने का काम करता हूँ।

**प्रश्न. आप बाबासाहब के गीत परंपरा के साथ कैसे जुडे?**

**गीतकार** – मैं बचपन से ही बाबासाहब अम्बेडकर के गीत गा रहा हूँ। इन गीतों में बचपन से ही मुझे रूचि आने लगी। हम आज 40 साल से गीत गा रहे है।

**प्रश्न. आप यह गीत कहाँ– कहाँ गा रहे हो?**

**गीतकार** – मैंने बीड जिला के तालुके में गीत गाऐ है, जैसे धारूल, वडवणी, माजगांव, आदि तालुका में गीत गायनों के कार्यक्रम किए है।

**प्रश्न. आपको बाबासाहब के लोकगीत गाने के लिए सरकार से कुछ आर्थिक सहायता मिली?**

**गीतकार** – हमें सरकार ने कोई सहायता नहीं दी अब तक। हमारा इसी गानों पर गुजारा चल रहा है।

## 3. साक्षात्कार

## गिरीजाबाई कानडे से बातचीत

**प्रश्न. आपका परिचय दीजिए ?**

**गीतकार–** मेरा नाम गिरीजाबाई कानडे है। मैं बीड जिला में रहती हूँ। मेरा जन्म 1965 में शिरूर इस गाँव में हुआ था। मेरे माँ, पिता शिरूर गाँव में ही रहते है। किंतु मेरी शादी होने के बाद में बीड जिला में आयी और संत्सग सुनते हुए मुझे आध्यात्मिक गीत गाने लगी। आज में सभी संतों, महापुरूषों की महिमा गाते हुऐ, उनके गीतों को प्रस्तुत करते है।

**प्रश्न. आप किस तरह के लोकगीत गाते है?**

**गीतकार–** हम अध्यात्मिक गीत गाते हैं। अभंग, गीत, गळणी, आदि। इनमें तुकाराम महाराज, नरहरी सोनार, ज्ञानेश्वर, गोरा कुंभार सावता माळी आदि दलित संतों के अभंग गाते है।

**प्रश्न. आपको इन गीतों की रूचि कैसे आयी?**

**गीतकार–** मैं दस साल की थी तब माँ काम करते गीत गाती थी। मेरे माँ का नाम इंदिराबाई दगडू है। तब हम उनके गीत सुनते थे। उसी से मुझे रूचि आने लगी। भजन, भावगीत, सभी संतों के गीत हम गाते है। घर में ही गाना था इसकारण हमें इसमें रूचि आने लगी।

**प्रश्न. आप इन अभंगों के माध्यम से समाज में किस तरह का प्रबोधन करते है?**

**गीतकार—** इन गीतों, अभंगों के माध्यम से कहते है कि ईश्वर ने ही हमें जन्म दिया। यही सत्य है और जीवन में सदा सच्चाई के साथ रहना है। दलित संतों के अभंगों में जाति, धर्म उंच—नीच, छोटा, बड़ा ऐसा कुछ नहीं होता। सभी इंसान सम्मान है। माँ, बाप की सेवा करे, विश्व की सेवा करे। जीवन में सदा कार्यरत रहे। मन में दया का भाव रखे। इसी से आंनद, खुशी प्राप्त होगी। इस तरह का प्रबोधन करते है।

**प्रश्न. आपका घर परिवार किस तरह चलता है।**

**गीतकार—** मैं आध्यात्मिक जीवन जीने का प्रयास करते है। मेरे पति नहीं है घर में दो बेटियाँ हैं। इन्हीं आध्यात्मिक कार्यक्रम के ऊपर हमारा जीवन चल रहा है।

**प्रश्न. आपको राज्य सरकार, या केंद्र सरकार की ओर से कोई सहायता मिली है?**

**गीतकार—** अभी हम यह आध्यात्मिक अभंगों के गीत गाते आ रहे है। लेकिन आज कोई भी प्रशासनिक मदद नहीं मिली है। 15 साल से हम गा रहे है किंतु कोई आर्थिक सहायता नहीं मिली है।

## 4. साक्षात्कार

## छाया ताई भगवान कोकाटे से बातचीत

**प्रश्न. आपका परिचय दीजिए?**

**गीतकार–** मेरा नाम 'छाया ताई' भगवान कोकाटे है। पिता का नाम दादाराव जाधव। वे शालीनपूर लोणी रहते थे। मैं बीड जिला में रहती हुं। मेरे पिता तमाशा, लावणी में काम करते थे। किंतु बाद में उन्हें बाबासाहब के लोकगीतों को गाने की प्रेरणा मिली और वे बाबासाहब के गीत गाने लगे। पिता को देखकर ही मैंने गाना सिखा। किंतु शादी होने के कारण में गीतों से दूर हो गई। परिवार को संभालने में ही जीवन का समय जाने लगा। किंतु एक दिन पिता के देहांत होने के बाद मैं बहुत दुःखी थी। मेरे पति ने एक दिन मुझे कहां कि तुम अपनी पिता के गाने की परंपरा को आगे बढ़ाओं, तुम्हें गाना गाने की कला पिता से मिली है। तुम इसे आगे लेकर चलो। मेरे पति की प्रेरणा से मैंने अम्बेडकरी गीतों के साथ नाता जोड़ा। आज मैंने भीम ज्योति परिवर्तन संस्कृतिक मंडल की स्थापना की।

**1. आपको बाबासाहब के लोकगीतों की प्रेरणा कहां से मिली?**

उत्तर– मुझे बाबासाहब के लोकगीतों की प्रेरणा मेरे पिता, और मेरी बडी बहन से मिली। घर में ही गाना था इसलिए मुझे गाने में रूचि आने लगी। शादी के बाद मेरे पति ने मुझे गाने के साथ जुडने और कार्यक्रम करने की प्रेरणा दी। इस तरह मुझे बाबासाहब के लोकगीतों से प्रेरणा मिली।

**प्रश्न. आप किन–किन महापुरूषों के गीत गाते है?**

**गीतकार–** हम डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर, रमाबाई, गौतम बुद्ध, सावित्रीबाई फुले, महात्मा ज्योतिबा फुले, अण्णा भाऊ साठे, वामनदादा कर्डक, आदि महापुरूषों के गीत गाते है।

**प्रश्न. आप इन लोकगीतों के माध्यम से समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं?**

**गीतकार–** हम हर गाँवों में जाकर दलित समाज में अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए उन्हें जागृत करते है। बाबासाहब के विचार शिक्षा, संघठन, संघर्ष इन को हम दलित समाज तक पहूंचाने का काम करते है। उन्हें शिक्षा का महत्व समजाते है। इसतरह हम बाबासाहब के विचारों को लोगों तक पोहचाने का काम गीतों के माध्यम से कर रहे है।

**प्रश्न. आपका घर–परिवार किस पर चलता है?**

**गीतकार–** मेरा घर–परिवार इस गीतों के कार्यक्रम पर ही चलता है। जहां कही भी हम गीत गाने को बुलाते है। हम वहां जाकर बाबासाहब के विचारों का प्रबोधन गीतों के माध्यम से करते हैं। इसी से कुछ पैसे मिलते है। इन्हीं कार्यक्रमों से हमारा घर–परिवार बहुत कष्टों से चलता है।

**प्रश्न. आपको राज्य सरकार या केंद्र सरकार से कुछ सहायता मिली?**

**गीतकार–** हमें कोई भी सरकार से मदद नहीं मिली है। हमारा इसी कायक्रर्मों के माध्यम से जो कुछ मिलता है उसी पर जीवन गुजारा कर रहे।

## 5.साक्षात्कार

## डोळस युवराज से बातचीत

**प्रश्न. आपका परिचय बताएँ ?**

**गीतकार–** मेरा नाम डोळस युवराज नाना है। मैं बीड जिला के वांगी गांव का निवासी हूँ। मेरी पढ़ाई एम.ए तक हुई है। संगीत विषय में मैंने एम.ए किया है। मेरे घर के हालात खराब होने के कारण में आगे पढ़ाई नहीं कर पाया। किंतु संगीत के माध्यम से बाबासाहब के गीतों को कार्यक्रमों में प्रस्तुत करता हूँ। मुझे हारमोनियम, ढोलक भी बजाना आता है।

**प्रश्न. आपका इन कार्यक्रमों में कौन सी भूमिका है?**

**गीतकार–** मेरे पिता ही मेरे गुरू है। उनका बैंड बाजा बजाने का व्यवसाय था। इसकारण उन्होंने मुझे संगीत सिखाया और मैं हारमोनियम सिखा। धीरे–धीरे में मेरी इसमें रूचि बढ़ने लगी। मैं एम.एम तक पढ़ा हूँ।

**प्रश्न. आप किस–किस महापुरूषों के लोकगीत गाते हैं?**

**गीतकार–** डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर, आण्णा भाउ साठे, महात्मा फुले, रमाबाई, गौतम बुद्ध, आदि महापुरूषों के गीत गाते है।

**प्रश्न. आपको कार्यक्रमों में वाद्य बजाते और गाते हुए कितना समय हूआ ?**

**गीतकार–** घर में सब कलाकार होने के कारण मुझे बचपन से यानी 10 साल से ही मैंने बजाना सिखा है।

**प्रश्न. आपका परिवारिक जीवन इन कार्यक्रमों पर किस प्रकार से चलता है?**

**गीतकार–** हमारा पूरा परिवार संगीत क्षेत्र पर ही निर्भर है। हमारा बैंड बाजा बजाने और भीम गीत गाने के कार्यक्रमों में मैं संगीत बजाता हूँ। इसी पर हमारा परिवार चलता है।

**प्रश्न. आपको राज्य शासन या केंद्र शासन से कुछ सहायता मिली है क्या?**

**गीतकार–** हमें कोई भी सहायता नही मिली है। हम बेरोजगार है। हमारे परिवार का पेट इसी कला पर चलता है। हम युवा है हमें आर्थिक सहायता की जरूरत है। शासन ने हमें सहायता करनी चाहिए?

## 6.साक्षात्कार

## शुभम भगवानराव कोकाटे से बातचीत

**प्रश्न. आपका परिचय बताएँ?**

**गीतकार–** मेरा नाम शुभम भगवानराव कोकाटे है। मैं बीड जिला में रहता हूँ। मेरी पढ़ाई बी.ए तक हुई है। आगे मैंने पढ़ाई नहीं की। मेरे परिवार में बाबासाहब के गीत गाये जाते है। इस कारण मैं भी बाबासाहब के गीतों के साथ जुड़ गया। गाते हुऐ में ढोलकी, तबला आदि भी बजाता हूँ।

**प्रश्न. आपकी इस कार्यक्रम में भूमिका क्या हैं?**

**गीतकार–** मैं इस कार्यक्रम में ढोलक, तबला बजाता हूँ और साथ में गाता भी हूँ।

**प्रश्न. आपको इन लोकगीतों का प्रेरणा कैसी मिली।**

**गीतकार–** मेरे परिवार में ही संगीत था, मेरी मां गीत गाती है। बचपन से ही मुझे संगीत सुनने के कारण मुझे ढोलकी बजाने की रूचि आने लगी। पिता ने भी मुझे प्रेरणा दी। साथ में मैं कभी तबला भी बजाता हूँ।

**प्रश्न. आप इन लोक गीतों के माध्यम से किस तरह का प्रबोधन करते है?**

**गीतकार–** हम गांव–गांव जाकर भीमगीतों के कार्यक्रम करते है। इन गीतों के माध्यम से हम समाज को बताते है कि दलित समाज शिक्षा से बहुत दूर है, इसलिए उनको शिक्षा की प्रेरणा देते हुए उन्हें शिक्षा को महत्व समझाते है। बाबासाहब का संदेश शिक्षा, संघठन, संघर्ष इन तीन बातों को लागों तक पोहचाने का काम कर रहे है।

**प्रश्न. आपका दैंनदिन जीवन किस तरह से चलता है?**

**गीतकार**– हमारा जीवन इन्हीं कार्यक्रमों पर चलता है। कोई दूसरी सहायता नहीं हैं कोई मिलती।

**प्रश्न. आपकों सरकार की तरफ से कोई आर्थिक सहायता मिलती है?**

**गीतकार–** कोई भी सरकार से सहायता नहीं मिली है। जो भी करते है सब इसी कार्यक्रमों पर चलता है। मैं शिक्षित हुए मेरी सरकार से निवेदन है कि हमें सरकार आर्थिक सहायता करे।

# आधार ग्रंथ सूची

1. महाराष्ट्र के बीड जिले में आने वाले गाँव वडवणी, माजगाँव, चौरबा, गेवराई, कोटरबन, दहीफल, धारूल, शिरूर, आदि में क्षेत्रीय कार्य कर मराठी के मौखिक अम्बेडकरी लोकगीतों का संकलन कर लिपिबद्ध किया है।

# संदर्भ ग्रंथ सूची


1. अम्बेड़करवादी आन्दोलन : दशा और दिशा–जयप्रकाश कर्दम, अकादमिक प्रकाशन, प्रथम सं. 2010
2. अगली शताब्दी की ओर– चद्रकांत पाटील–अनुदित, अक्षर शिल्पी, तृतीय सं. 2014 दिल्ली।
3. अम्बेडकर और मार्क्स–श्री रावसाहेब कसबे, सुगावा प्रकाशन पुणे, सं. 2017
4. आंबेडकरी शाहिरी एक शोध–किरवले, डॉ. कृष्णा ,पॉप्युलर प्रकाशन, 2012, मुंबई
5. आलोचना– डॉ. रामअवध द्विवेदी, 23–07–1957,
6. आजाद हैं हम–एन.आर.सागर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री, सं. 2010 दिल्ली।
7. ऑल इण्डिया शैड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन'' के बम्बई अधिवेशन में दिया गया भाषण– 6 मई, 1945.
8. उत्थानगुंफा–यशवंत मनोहर, सुमित पब्लिकेशन्स, सं 1977, मुंबई।

9. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट,–बी.आर.अम्बेडकर, खंड1–डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, दिल्ली।
10. एन इन्टॉडक्शन टू पॉलिटिकल फिलॉसफी–ए.आर. एम. मुर्रे, 1959.
11. ए हिस्ट्री ऑफ इकोनॉमिक थॉट,–बी.आर.अम्बेडकर
12. एल.वॉन.मिसेल : सोशलिज्म– बी.आर.अम्बेडकर 1953,
13. कन्हैयालाल चंचरीक– भारत में दलित आंदोलन– एं मूल्यांकन, सृष्टि बुक डिस्टीब्यूटर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, 2006,
14. कोंडवाडा– दया पवार, मेहता प्रकाशन,पुणे, 2017
15. 'कोली राजपूत', मासिक अंक, मोहनकुमार नाथूसिंह–तंवर की डॉ. अम्बेडकर से मुलाकात, नव–दिस. 1950, अजमेर
16. कल्पना और छायावाद–डॉ.केदार नाथ सिंह, वाणी प्रकाशन, 2012, दिल्ली
17. गुलामगिरी–ज्योतिबा फुले, सं.रमेश रघुवंशी, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली,
18. गांव कुसाबाहेरील कविता–वामन निंबाळकर, पॉप्युलर प्रकाशन, 2016 मुंबई।
19. गोलपिठा– नामदेव ढसाल, लोकवंगमय गृह प्रकाशन, 2014, महाराष्ट्र
20. गुंगा नहीं था– डॉ. जयप्रकाश कर्दम, अमन प्रकाशन, 2019, कानपुर।
21. जाग उठो, लेखक डॉ. अशोक जोंधळ, सुगावा प्रकाशन पुणे, प्रथम संस्करण 2013.
22. ज्योतिबा फुले, गुलामगिरी, महाराष्ट्र सरकार का प्रकाशन बंबई।
23. ज्योतिबा फुले– कन्हैया लाल चंचरीक, भारत सरकार प्रकाशन

विभाग।
24. डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड1—डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, दिल्ली।
25. डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड 6— डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, दिल्ली।
26. डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर संपूर्ण वाड्.मय, खंड—8, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, दिल्ली।
27. डब्ल्यू. एबिन्स्टॉइन : टूडेज—इज्मस्, 1956।
28. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर— भालचंद्र फडके, दिलीपराज प्रकाशन पुणे प्रथम संस्करण 2016
29. डॉ.अम्बेडकर के 15 व्याख्यान, अनु. चंद्रिका प्रसाद जिज्ञास।
30. डॉ. अम्बेडकर और दलित आंदोलन— डॉ. धर्मवीर,
31. डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर —धनंजय कीर, आंनद प्रकाशन औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 2013.
32. डॉ. अम्बेडकर आणि त्यांचा धम्म— प्रभाकर वैद्य, आकांक्षा प्रकाशन प्रथम संस्करण 2008.
33 डॉ.भीमराव अम्बेडकर—अस्पृश्यता, अनुवादक एन.एल.खण्डेलवाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,प्रथम संस्करण, 1992
34. डॉ. अम्बेडकर— लाइफ एण्ड मिशन,
35. डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर—डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1992
36. Dr. Ambedlar- Rajput you all india depressed class conference in Nagpur, Held an july 18, 1942. P-51.
37. डॉ.भीमराव अम्बेडकर—अस्पृश्यता, अनुवादक एन.एल.खण्डेलवाल,

मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,प्रथम संस्करण, 1992.

38 दलित साहित्यः वेदना व विद्रोह– भालचन्द्र फड़के, सुमित पब्लिकेशन्स, सं 1977, मुंबई।

39. दलित साहित्यः उद्‌गम आणि विकास – डॉ. योगेंद्र मेश्राम,चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद 2014

40. दलित साहित्य संसद–कमलेश्वर, 'स्मर्णिका तीसरा दलित साहित्य सम्मेलन–28 जनवरी, 1979

41. दलित साहित्याचे वेगळेपण–डा.मांडे मराठी पुस्तक, निर्मल प्रकाशन नांदेड, प्रथम संस्करण 2009.

42. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–डॉ.हरिनारायण ठाकुर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 201,

43. दलित साहित्य का सौदंर्यशास्त्र– शरणकुमार लिम्बाले–, वाणी प्रकाशन, 2000,

44. दलित साहित्य : वेदना आणि विद्रोह– भालचंद्र फड़के, मराठी, सुगावा प्रकाशन पुणे, तृतीय संस्करण 2013.

45. दलित साहित्यः उद्‌गम आणि विकास भाग 1–मेश्राम, डॉ. योगेंद्र, दिलीपराज प्रकाशन पुणे, तृतीय संस्करण 2014.

46. दलित साहित्य संपादित – डॉ. जयप्रकाश कर्दम,1999.

47. दी बिल ऑफ पावर– नीत्से, वॉ. 1, बुक 2,

48. निकाय मासिक पत्रिका– सुखराम हिरवाळे, मार्च–अप्रैल,1997

49. पदचाप– रजनी तिलक, सेंटर फॉर अल्टर नेटिव दलित मीडिया, 2000, दिल्ली.

50. प्रभाकर– बालशास्त्री जांभेकर–द्वारा संपादित पत्रिका सन् 16 मार्च

1862.
51. बुद्ध एण्ड द् फ्यूचर ऑफ हिज रिलिजन,– बी. आर. अम्बेडकर, लेख, 1950, पैरा 11.
52. बी.आर. अम्बेडकर– द् बुद्ध एण्ड हिज धम्म, 1957,
53. बहिष्कृत भारत 22 मार्च 1927।
54. भारत में दलित आंदोलन– कन्हैयालाल चंचरीक, एं मूल्यांकन, सृष्टि, बुक डिस्टीब्यूटर्स, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, 2006
55. भारतीय दलित आंदोलनः एक संक्षिप्त इतिहास, मोहनदास नैमिशराय,
56. भारतीय दलित साहित्य– डॉ. भीमसेन निर्मल, डॉ.वी. कृष्ण,
57. महामानव डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर– प्रभाकर दिघे, आकांक्षा प्रकाशन प्रथम संस्करण 2005.
58. मराठी संत काव्य–प्रा. वेद कुमार वेदालंकार, पृ.सं. 10, विकास प्रकाशन, कानपुर सं.प्र. 2000 ई. ।
59. माझ्या जीवनाचं गाणं –वामनदादा कर्डक, युग साक्षी प्रकाशन नागपूर, प्रथम संस्करण 2005.
60. मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक राजनीतिक चेतना–विमल थोरात, हिंदी बुक सेंटर, 1996, नई दिल्ली.
61. लाइफ एंड मिशन,
62. व्हॉट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव डन टू द् अण्टचेबिल्स 1946,–बी.आर. अम्बेडकर,
63. शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि –बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, सं.2015,
64. स्टेट् एण्ड माइनॉरिटिज्–1947– बी.आर.अम्बेडकर,

65. संकेत रेखा–दत्तोपंत ठेंगड़ी,, 1989, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री, सं. 2010, दिल्ली,

66. सत्यशोधकी आणि आंबेडकर जलसे– हिवराळे सुखराम, लेख ''मी पाहिलेले सत्यशोधक जलसे''– माधवराव पाटील, पृष्ठ 4, संपादक

67. सुरंग– त्रयंबक सपकाळे, आंनद प्रकाशन औरंगाबाद, द्वितीय सं. 2013

68. हिन्दू सोशल ऑर्गनाइजेशन, 1954,– पी.एन.प्रभू,

69. व्हाई आई लाइक बुदिज्म?–. बी.आर. अम्बेडकर–वार्ता, बी.बी.सी, लन्दन द्वारा प्रसारित, मई 1956.

70. हिंदी कविता में शिल्प–डॉ. कैलाश वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, 1963 नई दिल्ली 1963.

# सहायक ग्रंथ सूची


1. अस्पृश्यता निवारण आंदोलन में महात्मा गांधी का योगदान– डॉ. मीनाक्षी वर्मा, पुष्पांजलि प्रकाशन, सं.2014, दिल्ली।
2. अनुसूचित जातियों के हितों के लिए डॉ.अम्बेडकर की भूमिका– परमार डॉ. तारा।
3. अम्बेडकर संचयन –संकलन रामजी यादव, भारतीय पुस्तक परिषद् प्रकाशक, सं.2012 नई दिल्ली
4. अम्बेडकर महाविद्यालय दीक्षाभूमी, नागपूर 2000.
5. आधुनिक भारत में जाति– एम.एन.श्रीनिवास, प्रकाशक राजकमल, सं. 2001 नई दिल्ली.
6. आधुनिक के आईने में दलित –संपादक– अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली , 2005
7. डॉ. आंबेडकरांचे सामाजिक क्रांतीतील योगदान–चर्चासत्र स्मरणिका,
8. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.76,77।
9. दलित साहित्य वार्षिकी–संपादक डॉ. जयप्रकाश कर्दम 2009–10
10. दलित हस्तक्षेप– रमणिका गुप्ता, संपादन आमेप्रकाश वाल्मीकि, प्रकाशक अक्षर शिल्पी, सं.2012 दिल्ली।
11. दलित चिंतन के विविध आयाम–अ.ला.उके, शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, सं. 2012, दिल्ली
12. दलित और प्रजातान्त्रिक क्रांति– गेल ओमवेट, sage publicatins new delhi, 2015-

13. दलित आंदोलन और सामाजिक न्याय–डॉ. दीप्ति गुप्ता, राधा पब्लिकेशन्स, सं 2010, नई दिल्ली।

14.दलित साहित्य का समाजशास्त्र– निरंजन कुमार, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री, सं. 2010, नई दिल्ली

15. दलित साहित्य के आधार तत्व–हरपाल सिंह 'अरूष', भारतीय पुस्तक परिषद्, सं. 2011,नई दिल्ली,

16. दलित विमर्श और हिंदी दलित काव्य– कालीचरण 'स्नेही',न्यू रॉयल बुक कंपनी, सं2008 लखनउ।

17. दलित दर्शन–संपादक रमणिका गुप्ता, ज्ञान सिंह बल, नेहा प्रकाशन, सं.2009, दिल्ली

18.दलित अभिव्यक्ति संवाद और प्रतिवाद– संपादक रूपचन्द गौतम, श्री नटराज प्रकाशन, सं. 2007, दिल्ली.

19. दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर– विमल थोरात, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री, सं. 2008, नई दिल्ली।

20.दलित साहित्य का समाजविज्ञान– टी.वी. कट्टीमनी, सं. 2013, शिल्पायन, दिल्ली।

21. दलित साहित्य परंपरा और विन्यास–डॉ.एन.सिंह, साहित्य संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद, 2011, पृष्ठ–111.

22. दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम–डॉ.एन. सिंह,आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्टिब्युटर्स, गाजियाबाद, 2009, पृ.115

23. दलित पत्रकारिता– नैमिशराय मोहनदास, सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, पृ.100।

24. निर्गुण रामभक्ति और दलित जातियां–डॉ.राजदेव सिंह,वाणी प्रकाशन, सं.1998, दिल्ली,

25. नवें दशक की हिंदी दलित कविता– डॉ.रजतरानी 'मीनू', पृ. 55।

26. बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्.मयःखण्ड–16, पृ.302।

27. भाषा साहित्य और संस्कृति– संपादन, विमलेश कान्ति वर्मा, मालती, प्रकाशक ओरियंट ब्लैकस्वॉन, 2007 दिल्ली।

28. भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या–जगजीवन राम, पृ. 12।

29. मराठवाड्यातील ओवीगीत– डॉ.पद्मा जाधव–वाखुरे, प्रकाशक चिन्मय, औरंगाबाद।

30. मुख्यधारा और दलित साहित्य– ओमप्रकाश वाल्मीकि, सामयिक प्रकाशन, सं.2010, दिल्ली।

31. राष्ट्रीय आंदोलन में डॉ.अम्बेडकर की भूमिका, जाटव.डी.आर, पृ.51।

32. लोक :परम्परा, पहचान एवं प्रवाह– श्यामसुंदर दुबे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

33. समाज आणि संस्कृति–डॉ. प्रकाश खरात, प्रकाशक आकांशा, नागपूर 2005.

34. हिंदी साहित्य में दलित चेतना– डॉ. आनन्द वास्कर, प्रकाशक विद्या विहार, 1989, कानपुर।

35. हाशिये की वैचारिकी– संपादक उमा शंकर चौधरी, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री नई दिल्ली सं. 2008

## पत्रिका सूची


1. आलोचना– जुलाई–सितम्बर 2013।
2. आलोचना–अप्रैल–जून, 2005।
3. आलोचना– अक्तुबर–दिसम्बर, 2014।
4. दर्पण मासिक– अगस्त1994, कर्मशील भारती।
5. बहिष्कृत भारत, 20 मार्च, 1927, सम्पादकीय।
6. बयान, सम्पादक, मोहनदास नैमिशराय, अप्रैल, 2009,
7. मूकनायक, अंक 18,9 नवम्बर, 1920, सम्पादकीय।
8. राष्ट्रीय सहारा, 18 नवम्बर, 1995 नोएडा।

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# विद्यावार्ता

Jan. To March 2019
Issue-29, Vol-04

**Date of Publication
30 Jan. 2019**

**Editor**
**Dr. Bapu g. Gholap**
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

30

# मराठी दलित संत काव्य में सामाजिक चेतना के स्वर

डाके किरण दशरथ
हिंदी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
एम.ए, एम.फिल, पी.एच.डी, नेट,
Gachibowli, Hyderabad, Telangana.

**********

दलित साहित्य का उद्भव कुछ लोग बुद्ध काल में खोजते हैं, कुछ संतवाड्मय में यानी मध यकालीन भक्ति साहित्य में तो कुछ साहित्यकारक्रांति वीर 'महात्मा ज्योतिबा फुले' के विचार और साहित्य में खोजते है। इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि इन सभी ने विषम समाज व्यवस्था का विरोध किया है, दलितों पर होने वाले अन्याय, अत्याचारों को अपनी लेखनी से वाणी दी है, 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का संदेश भगवान बुद्ध और महात्मा फुले के विचारों में हम पाते हैं। परंतु दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत डॉ. बाबासाहब अंबेड़कर के विचार और उनकी जीवन दृष्टि में है और 'दलित मुक्ति' के उद्देष्य से शुरू किया गये 'दलित मुक्ति आंदोलन' में है। उनकी इस विचारध ारा और जीवन दृष्टि के पीछे 'भगवान गौतम बुद्ध' और'महात्मा ज्योतिबा फुले' के विचार हैं जिसे उन्होंने विरासत के रूप में पाया है। दलित साहित्य का उद्गम जानने के लिए मराठी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को देखना आवश्यक है।

महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन की शुरूवात १३वी सदी में होती है। इस काल में दो भिन्न संप्रदायों का प्रारंभ होता है, जिसमें एक है 'महानुभाव संप्रदाय और दूसरा 'वारकरी संप्रदय'। इन दोनों में काफी अंतर्विरोध है। एक सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की कमजोरियों को लेकर व्यंग्य करते रहते थे। महानुभाव सम्प्रदाय द्वारा निर्मित साहित्य परंपरा अल्पायु रही। इस सम्प्रदाय ने हिंदू धर्माश्रित चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था का विरोध किया हिंदू धर्म की रूढ़ियों, रीतियों, ढोंग, अंधविश्वास, विधि निषेध आदि पर प्रहार किया। समता का पुरस्कार और विषमता का विरोध महानुभाव पंथ के आद्याचार्य 'चक्रधर स्वामी' और उनके 'गुरू गोविंद प्रभु' दोनों ने ही किया। 'चक्रधर स्वामी' 'लीला चरित्र' में अस्पृश्यता का विरोध करते हुए कहते हैं, हे कोई ब्राह्मण की वैश्य हे नेणिते की' और आगे कहते है।

''उत्तम म्हणजे ब्राह्मण। आन अधम म्हणजे
मातंग ऐसे म्हणे।
परि तोही मनुष्य देही आन निष्पतिकारकची असे।
परिवृथा कल्पना करी।''

परंतु कर्मकांड औरढोंग पर आधारित हिंदू ध र्म का विरोध करने वाला 'महानुभाव पथ महाराष्ट्रमें लोकप्रिय नहीं बन सका। इसी काल में वारकरी पंथ का उदय हुआ जिसका बल शुद्ध आचारण, निर्मल, अंत:करण और निष्ठायुक्त भक्ति इन तीन तत्वों पर था। इस पंथ के संतों में सभी जातियों के लोग हैं जिनमें पददलित समाज के संत भी अपनी भक्ति और भक्ति रचनाओं के कारण महत्वपूर्ण स्थान पा चुके हैं।

संत गोरा कुम्हार, सेनानाई, सावतामाई, जनाबाई संत चोखामेळा बंका, निर्मळा, आदि प्रमुख हैं। चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था के कारण इन संतों को भगवद्भक्ति का आनंद हमेशा मंदिर के बाहर बैठकर और मंदिर के कलश का दर्शन करके ही लेना पड़ा अस्पृश्य होने के कारण जो यातनाएं और अवहेलना इन्हें मंदिर में भी सहनी पड़ती उसके खिलाफ 'संत चोखामेळा' विदीर्ण हृदय से अपनी वेदना व्यक्त करता है–

''हीन याती माझी देवा। कैसी घडेल तुझी सेवा।
मज दूर दूर हो म्हणती। तुज भेटु कवण्या रीति।
माझा लागताच कर। सिंतोडा घेताती करार।

माझा गोंविदा गोपाला। करूणा भाकी
चोखामेळा।''

इसमें अपने अस्पृष्य होने की वेदना के साथ जन व्यवहार का निर्देश भी है और साथ ईश्वर के दर्शन की लालसा भी। इस अंत्यज संतों ने अस्पृश्यता का विरोध अपने भक्ति काव्यों द्वारा किया हैं परंतु यह विरोध एक सीमिति दायंरे के अंतर्गत ही रहा। हीन जाति में जन्म लेने कारण वे पूर्वजन्म का कर्म समझते थे। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था को दोश न देकर वे अपने आपको दोषी ठहराते थे।

''शुद्धा चोखामेळा। करी नामाचा सोहळा।
याती हीन भी महार। पुर्वी निळाचा अवतार।''
''कृष्ण निंदा घडली होती। म्हणोनी महार
जन्मप्राप्ति।
चोखा म्हणे विटाळ। आम्हा पूर्वीचे चे फळ।''

लेकिन साथ ही चोखामेळा का पुत्र कर्ममेळा भी यही प्रश्न भगवान से पूछता है

''आमुची केली हीन जाती। तुज का न कळे
श्रीपती।
जन्म गेला उष्टे खाता। लाज न ये तुझया चिता।
आमचे घरी भात दही। खावोनी कैसी म्हणसी
नाही।
म्हणे चोखियाचा कर्ममेळा। कास या जन्म दिला
मला।''

'संत कर्ममेळा' के स्वर में विद्रोह दृष्टिगत होता है, जबकि 'संत चोखामेळा' के स्वर में केवळ वेदना' प्रमुख थी। इन अंभगों में दलितों की वेदना की आदि रूप प्रकट होता है। इस पर 'मालचन्द्र फड़के' ने जो टिप्पणी की है उसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है।

दलितों के साहित्य में युग—युग की चिर वेदना व्यक्त होती हैं जिसका आदि रूप'संत चोखोबा' के अंभगों में हमें देखने को मिलता हैं 'संत चोखोबा' की यह वेदना व्यक्तिगत नहीं थी, वह उसके समाज की वेदना थी जिसे अधिक तीव्र और उत्कृष्ट रूप में उन्होंने व्यक्त किया है। उनके शब्द में प्रकट होने वाला दु:ख अंत:करण को विदीर्ण कर देता है।

भक्ति साहित्य द्वारा १३वीं सदी में दलित संतों ने अस्पृश्यता के विरोध में आवाज उठाने का प्रयास किया था। परंतु यह विद्रोही स्वर आध्यात्मिक और पारमार्थिक भक्ति काव्य के रूप में विलीन हो जाता है। 'संत तुकाराम' भी अंभगवाणी में अपने छोटी जाति में जन्म लेने के कारण वेदों शास्त्रों के अध्ययन से वंचित रहने के प्रति दुख व्यक्त करते हैं।

''शुद्रवंषी जन्मलों । म्हणुनि दंभे मुकला।
धोकाया अक्षर। मज नाही अधिकार।
सर्व भावे दी। तुका म्हणे यातिहीन।''

अर्थ शुद्रवंश में जन्म लेने के कारण में वेद शास्त्रों का अध्ययन करने से वंचित रहा। मुझे यह अधिकार प्राप्त नहीं है। इस दीनता का कारण हीन जाति ही है। इस तरह से शुद्र, अस्पृश्य होने का दु:ख और वर्णव्यवस्था के प्रति आक्रोश भी कुछ संतों की वाणी में अभिव्यक्त हुआ है।

मध्यकाल के बाद दलितों के प्रश्नों पर और अस्पृश्यता जैसी निघृण प्रथा के विरोध में साहित्य के अंतर्गत चर्चा १९वीं सदी में प्रारंभ होती है। अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजी शिक्षा के कारण नई चेतना का निर्माण हुआ। चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था पर आधारित हिंदू धर्म पर पुनर्विचार होने लगा। हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति और हिंदू समाज में स्थित बुराईयों के मूल की खोज करने का प्रयास 'बाल शास्त्री जांभेकर' से लेकर 'महात्मा ज्योतिबाफुले' के समय तक अनेक विचारकों ने किया है। १८१८ से १८६० तक के काल में इस प्रकार का प्रयास हुआ है। हिंदु धर्म, हिंदू संस्कृति और हिंदू समाज में अस्पृश्यता के इस महाभंयकर प्रथा के बीज कहां है इसकी खोज का प्रयत्न कुछ समाज सुधारकों और प्रगतिशील विचारकों द्वारा हुआ है। 'दर्पण' नाम से प्रसिद्ध होने वाली बालशास्त्री जांभेकर द्वारा संपादित पत्रिका के प्रथम अंक सन् १६ मार्च १८३२ में यह चर्चा शुरू हुई कि संपूर्ण मानवजाति एक होते हुए उनमें जाति के नाम पर भेद क्यों हैं। 'प्रभाकर' नाम की पत्रिका में एक नेटिव्ह ने यह प्रश्न उठाया था कि ''अगर अंग्रेज अस्पृश्यों को अपने घर में नौकर रख सकते

हैं और छुआछूत न मानकर वे उन्हें स्पर्श करते हैं तो सवर्ण हिंदूओं को ही अस्पृश्यों से नफरत क्यों है ? जबकि वे अंग्रेजों तक का आदर सम्मान करते हैं।'' इस तरह की चर्चाओं से यह प्रतीत होता है कि समाज प्रबोधन का कार्य तब शुरू हो गया था।

कुछ लोग अस्पृश्यता निवारण के कार्य में संलग्न थे। संत तुकाराम तात्या पडवल लिखित 'जातिभेद विवेक सार' नामक पुस्तक में 'विषमता पूर्ण समाज व्यवस्था का कारण दुष्ट जाति भेद ही बताया गया है। लोकहितवादी, महात्मा फुले आदि समाज सुधारकों ने ऊंच नीच की भावना को मिटाने का प्रयास किया। अस्पृष्यों के लिए सर्वप्रथम शिक्षा के दरवाजे खुले और उन्हें शिक्षा प्राप्ति का अवसर 'महात्मा फुले' के प्रयत्नों से प्राप्त हुआ था। शिक्षा के माध्यम से अस्पृष्यों के मन में आत्म विश्वास जगाने का कार्य किया और पारंपरिक रूढ़िवादिता की अपने लेखन द्वारा आलोचना की। 'सत्यधर्म' की स्थापना के लिए उन्होंने सत्यशोधक आंदोनलन का प्रारंभ २३.९.१८७३ में किया था। इस आंदोलन की प्रेरणा से प्रेरित होकर 'गोपाल बुवा कृष्णा बलंगकर' ने सन् १८९६ में सेना से अवकाश प्राप्त होने के बाद 'अनार्यदोश परिहार' नामक संस्था कीस्थापना की और 'विटालविध्वंसक' नाम की पत्रिका का संपादन किया। 'शिवराम जानबा कांबले' द्वारा. 'सोमवंशीय मित्र' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इन सभी पत्रिकाओं के माध्यम से अस्पृश्य समाज को जागृत करने का और उन्हें अपने खोये हुए स्वाभिमान और अस्मिता को फिर से प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई।

पत्र—पत्रिकाओं द्वारा इस तरह दलित समाज में चेतना जगाने का प्रयत्न हो रहे थे। 'सामाजिक स्तर पर भी कुछ सधारकों की तरफ से प्रयत्न जारी थे जिनमें प्रमुख रूप से प्रयत्न करने वालों में महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे थे। उन्होंने 'अखिल भारतीय डिप्रेस्ड क्लास मिशन' की स्थापना कर इस मिशन द्वारा अस्पृष्यों के प्रश्नों की और लोगों का ध्यान आकशित किया। उधर राजर्षि शाहू महाराज ने अपने कोल्हापुर संस्थान ने अपनी राजसत्ता के काल में अस्पृश्यता निवारण कार्य को धर्म कार्य जैसा महत्व देकर अनेक कानून जारी किये। 'अखिल भारतीय बहिष्कृत समाज परिषद' के नागपुर में ३० मई १९२० को हुए सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उन्होंने कहा था 'तुम अस्पृश्य नहीं हो, तुम्हें अस्पृश्य मानने वाले लोगों से तुम अधिक बुद्धिमान, पराक्र स्वाभिमानी हो और हिंदी राष्ट्रकी इकाई हो।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि सन १९२० तक समाज में इस तरह की चेतना जगाने के प्रयत्न निरंतर हो रहे थे कि दलित समाज भी मानव है, मानव होने के नाते मानव अधिकारों को प्राप्त करने का उसे अधिकार है। जाति पाति और उंच—नीच के भेदभाव को नष्ट करने पर जोर दिया जा रहा था। इन विचारों का प्रभाव तत्कालीन मराठी के कुछ लेखकों की कृतियों में यदा—कदा देखने को मिलता है।

**संदर्भ ग्रंथ**

१. भालचन्द्र फड़के— दलित साहित्य: वेदना व विद्रोह

२. मराठी संत काव्य—प्रा. वेद कुमार वेदालंकार

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 6.039(IIJIF) | Printing Area International Research journal | March 2019 Issue-51, Vol-02 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# प्रिंटिंग एरिया

**Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages**

March 2019, Issue-51, Vol-02

**Editor**
**Dr. Bapu g. Gholap**
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

**Co-Editor**
**Dr. Ravindranath Kewat**
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

सन्दर्भ–

१ डा० भगवती प्रसाद पुरोहित : अत्रि–अनसूया आश्रम, हिमालय पीस फाउन्डेशन, गोपेश्वर, २००१, पृ०– १६१, तथा गढ़वाल के संस्कृत अभिलेख, गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर, गढ़वाल, प्रकाशन सं०– ६, १९८१, पृष्ठ–५४, तथा डा०शिवप्रसाद नैथानी: ब्रह्मपुर और सातवीं सदी का उत्तराखण्ड, पवेत्री प्रकाशन, श्रीनगर, २००५,पृ०– ६२

२ डा० आर० एस० त्रिपाठी: कन्नौज का मौखरी वंश, पृ०– २०२

३ डा०शिव प्रसाद नैथानी : ब्रह्मपुर और सातवीं सदी का उत्तराखण्ड, पवेत्री प्रकाशन, श्रीनगर, २००५,पृ०–६३

४ डा० भगवती प्रसाद पुरोहित :रुद्रमहालय गोपेश्वर, पृष्ठ– १०८

५ डा० शिवप्रसाद डबराल : उत्तराखण्ड का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, भाग–३ वीरगाथा प्रकाशन दोगड्डागढ़वाल, १९८६ पृ०– ३३७

६ डा० शिवप्रसाद डबराल : पूर्वोक्त, पृ०–३३८

७ सुभिक्षराज देव का पाण्डुकेश्वर दानपत्र, तथा दिनेशचन्द्र सरकार : एपि० इंडिका, खण्ड–३१ पृ० –२९३–२९७ तथा ताराचन्द्र त्रिपाठी : उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक भूगोल, पहाड़ परिक्रमा तल्ला डॉडा, नैनीताल, १९९९, पृ०–१५९–१६३ तथा डा० मदनचन्द्र भट्ट :हिमालय का इतिहास, भाग–१ पृ०–३९

८ डा० मदनचन्द्र भट्ट : हिमालय का इतिहास, भाग–१ पृ०–४६

९ हरहा अभिलेख, श्लोक, ३–१२

१० डा० भगवती प्रसाद पुरोहित : अत्रि–अनसूया आश्रम, पूर्वोक्त पृ०– ८४

११ डा० भगवती प्रसाद पुरोहित के व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित।

१२ शिवराज सिंह रावत : उत्तराखण्ड में नन्दाजात, हिमालयन पीस फाउन्डेशन गोपेश्वर २००१, पृष्ठ–३ तथा देवीभागवत– ४/२३–२४

१३ स्थानीय निवासियों के व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित।

१४ डा० भगवती प्रसाद पुरोहित : तदैव।

**28**

# 'वामनदादा कर्डक' के गीतों में अम्बेडकरी चेतना

**डाके किरण दशरथ**
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय

**********

गीत यह एक कविता प्रकार है और वह गेय यानी गाया जाने वाला कविता प्रकार है, इसलिए गजल इस कविता प्रकार के जैसे ही गीत यह कविता प्रकार लोक मानस में अत्यंत लोकप्रिय है । भारूड, लावण्या, पोवाडे, गजल, नाट्यपद, आदि गाये जाने वाले कविता प्रकार है । विद्वानों का मानना यह है कि नृत्य से गीत का जन्म हुआ और गीत में से कविता उभर कर आयी । गीत की रचना गायन के ही प्रयोग में होती है, इस कारण गीतों में आने वाले शब्दों की रचना विशिष्ट पद्धति से होती है । गीतों का लाय एवं ताल उनकी भाववृत्ति, भाव भूमिका के आधार पर होती है । गीतों में से ही संगीतात्मकता का भाव उत्पन्न होता है । गीत श्रोताओं के श्रवण के लिए ही होता है, गीत सुनने वाले को गीतों का अर्थ समझने में कठिनाइयाँ नहीं होनी चाहिये, श्रोताओं का मनोरंजन होना चाहिए द्य गीतों में जीवन मूल्यों की स्थापना होने से उनका महत्त्व और भी बढ़ जाता है ।

वामनदादा जी का जन्म १५.०८.१९२२ को सिन्नर तहसील के दीसोंदी गाँव जिला नासिक में हुआ । उनकी माता का नाम सईबाई, पिता का नाम ताबा महार था । दरिद्र तो थे ही, ३ साल की उम्र में पिता की छत्रछाया से वंचित होकर अनाथ भी हो गए । उनकी माता ने कुछ दिनों तक मजदूरी करके अपनी जीविका चलाई ।

१९३४ में ११ वर्ष की उम्र में मुंबई आए परन्तु थोड़े ही दिनों बाद मुंबई छोड़ दिया । शिक्षा बीच

में ही छूट गई । १५ वर्ष की उम्र में फिर मुंबई की ओर प्रस्थान किया और गिरनी कामगार के तौर पर नौकरी मिली । वहां कार्यरत रहते हुए उन्होंने 'समता सैनिक दल' में प्रवेश करके लाठी प्रशिक्षण और लेजिम प्रशिक्षण किया । यही शिक्षा उन्होंने शिवडी के कामगार कल्याण केंद्र में देना शुरू किया । उस वजह से उनका मास्टर नाम से परिचय हुआ । देहलवी नाम के शिक्षक की सहायता से सिर्फ ८ दिनों में अंकलिपि ध्यान में कर ली । और दुकानों के नाम के पोस्टर पढ़कर कठिन अक्षर पढना आत्मसात किया । गाना और शब्दों को जोड़ना बचपन से ही उन्हें बहुत पसंद था । ३ मई १९४५ को पहली बार गीतों की रचना की । वामनदादा वैसे भी मंजे हुए कवि थे । वह खुद अपनी काव्यपंक्तियों से जन–जागृति करते थे । गली–नुक्कड़ में जाकर स्थानिक कलाकारों को अपने साथ लगाकर जनजागृति किया करते थे । त्याग और परिश्रम की तस्वीर से वामनदादा । वे अगर थान लेते तो बहुत पैसे कमा सकते थे लेकिन उन्होंने पैसों से श्रेष्ठ फूले–अम्बेडकरी आंदोलन को तवज्जो डी । डॉ.आंबेडकर की परंपरा में वामनदादा का सहयोग बहुत ऊंचा था ।

जो वाणी हजारों वर्षों तक के गूंगेपन से अन्याय, अत्याचार सहन कर रही थी । वाही डॉ. आंबेडकर के दिखाए मार्ग पर चलकर, नवजीवन और नए विचारों की ललकार देकर, सबको जगाने के लिए तैयार थी । वामनदादा की रचनाओं से, बाबा साहेब के आन्दोलन से अछूतों के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ, उसका परिचय मिलता है द्य एक रचना मराठी में इस प्रकार है –

१. उद्धरली कोटी कुले भीमा, तुईया जन्ममुले, एक ज्ञान ज्योति ने कोट कोट ज्योति, तलपतात तेजोने धरे वरती, दजले कालोच मावले ।

२. जाखड़बंद पायातील साखल दंड झाले गुलाम मैले ।

बाबा साहेब की दी हुई शिक्षा, स्वाभिमान, ज्योति को अस्पृश्यों के हृदय में ज्वलंत करने के लिए वामन दादा की रचनाओं ने प्रचलित रूधि, लाचारी आदि के विरोध में भूमिका ली । हजार दिनों तक भेड़–बकरी का जीवन जीने से बेहतर एक दिन शेर की जिंदगी जियो ।

किसी भी प्रतिभाशाली लेखक के पीछे एक प्रेरणा होती है, यह प्रेरणा उनकेगीतों में अम्बेडकरी जीवन, उनका संघर्ष, आन्दोलन, विचार, तत्व ज्ञान आदि से मिली है । कर्डक जी को गीतों की प्रेरणा कहा से प्राप्त हुई इस का वर्णन अपने आगे के पंक्तियों में स्पष्ट किया –

भीमवाणी पडली माझ्या कानी
तीच वाणी ठरली माझी गानी (भीमवाणी)

भीमवाणी अर्थात डॉ.आंबेडकर की क्रांतिदृष्टि है । यह क्रांतिदृष्टि ही वामनदादा के गीत निर्माण में प्रेरणा का श्रोत रही है । वामनदादा आगे कहते है –

होउन भीमाची वाणी, वामनाची सारी गाणी

इस प्रकार का उनका जीवन दृष्टिकोण हमें देखने मिलता है । आगे भिन्न शब्दों में उनकी प्रेरणा शक्ति को वे शब्दबद्ध करते हैं ।

पंचशीलाचे घुम्वित गाणे, याच पथाने मजला जाणे.

तथागत गौतम बुद्ध ने पूरे विश्व को पंचशील का मार्ग दिखाया है । इस पंचशील मार्ग को बाबासाहेब ने दलित समाज का परिचय कराया । बाबासाहेब की प्रेरणा का महत्त्व को वामनदादा कर्डक ने इस गीत में दर्शाया है ।

मन मेंउजाला करनेवाला
सूरज हमने पाया है ।
सौ सूरज की किरने सारी
एक ही आंबेडकर में है ।

इस प्रेरणा की दीक्षा वामन दादा ने स्वीकार की और यह उनकी जीवन निष्ठा बनी । उनकी यह निष्ठां आगे के गीत में व्यक्त होती है ।

वामन जीवन व्यर्थ ण जावे कार्य तुला हे करणे
लोककर्ता गाता गाता जीवंत् राहून मरणे (पंचशीले मज तारती)

इसका अर्थ यह प्रेरणा ही वामनदादा का सम्पूर्ण जीवन बन गयी अब लोगों के लिए ही गीतों से प्रबोधन करते हुए ही मरना है । इस प्रेरणा के कारण ही उन्हें इंसान की पीड़ा को शब्दबद्ध करने का मंत्र मिला प्राप्त हुआ ।

माणसा इथे मी तुझे गीत गावे

असे गीत गावे तुझे हित व्हावे
असे गोद नाते तुझ्याशी जडावे
तुझ्या संकटाशी इथे मी लढावे
तुझ्याच भूकेचे कोड़े उलगडावे
तुझे दु:ख सारे गलूनी पडावे ।
एकाने हसावे लाखाने रडावे
जून सारे सारे इथे ण उरावे
इथे सारे सारे नैव पेरताना
वामनपरी मी तुझे हात व्हावे ।। (हित व्हावे)

इस प्रेरणा को बाबासाहेब के विचारों का रूप चढ़ा है । बाबासाहेब के विचार ही प्रेरणा का प्राण एवं आशय है । इसलिए यह प्रेरणा इन गीतों से प्रकट होती है ।

सूर संगीत इथे जागल कुणासाठी
गीत वामनाचे इथे ओरडे कुणासाठी ।

संत 'तुकोबा' कहते है कि सत्य कहने के लिए मेरे शब्द है । हमारे शब्द किस काम के है ? हमारे शब्द किस लिए जन्म लेते है ? यह प्रश्न सच्चे गीतकार को परेशान करता है । वामनदादा कहते है हम यहाँ क्यों है और किस लिए है ।

वामन दादा ने अनेक गीतों की रचना की । उनमें गाडीवाला, भीम तुझीच कमाई, कबीर, गौतम तुझा गोडी, भीम तुझा महुला, महात्मा फूले, मंजुला, जा संघमित्र, भीमाई, भीम, गौतम, फूले, यशोधरा माई, आम्रपाली, वीर असा गौतम, फूले आईची आई, चला चला रे, सखा रे, मोठे भाउ, लोक तुम्ही, लेखणी, आदि ।

वामनदादा कर्डक जीवन भर बाबासाहेब के प्रेरणा से गीतों की रचना से समाज प्रबोधन करते रहे । उनके सभी गीतों से बाबासाहब के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट होता है । वे बाबासाहेब की ही दें से उन्हें समाज में सम्मान प्राप्त हो रहा है । पूरा दलित समाज डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के प्रति नतमस्तक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. अम्बेडकरवादी महागीत्कार 'वामनदादा कर्डक'(मराठी ) — डॉ.यशवंत मनोहर ।
२. नामांतर आंदोलन — डॉ. राजेन्द्र शिंदे ।

29

# राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रकृति एवं आधारभूत रूपरेखा उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि के प्ररिप्रेक्ष्य में

डॉ. अंगद सिंह दोहरे
सहा. प्राध्यापक, इतिहास,
शासकीय डिग्री कॉलेज लवकुशनगर,
जिला छतरपुर (म.प्र.)

**********

भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए राष्ट्रीय आन्दोलनों ने इस बात को जन्म दिया की सम्पूर्ण भारतवर्ष में इन आन्दोलनों की रूपरेखा में विभिन्न तत्वों को सम्मलित किया गया। उन तथ्यों में से आधारभूत ढांचा, सामाजिक भूमिका, प्राकृतिक वातावरण आदि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतवर्ष में इन आन्दोलनों को स्वतन्त्रता का सफलतम संघर्ष माना जाता है। यही कारण है कि भारतवर्ष में राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हुआ और दक्षिणी–पश्चिम एशिया में स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए महान योगदान दिया।

उद्देश्य :

इस शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

१. राष्ट्रीय आन्दोलन की आधारभूत भूमिका तथा प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन
२. भारतीय राष्ट्रीयता की उत्पत्ति के कारण
३. भारतीय राष्ट्रीयता की सामाजिक भूमिका, उसका विकास तथा उसकी उत्पत्ति

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के जनक इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि भारतीय इतिहास में सामान्य संस्कृति होने के बावजूद भारतवर्ष एक राष्ट्र नहीं था। बल्कि ब्रिटिश व्यक्तियों ने भारतवर्ष पर एक दशक तक राज्य किया। ब्रिटेन ने तथा ब्रिटेन के

# ST. ANN'S COLLEGE FOR WOMEN

(Autonomous)

Affiliated to Osmania University, Re-Accredited By NAAC With 'A' Grade
& College with Potential for Excellence By UGC
Mehdipatnam, Hyderabad

## Certificate of Participation

This is to certify that ~~Dr.~~/~~Prof.~~/Mr./~~Ms.~~ DAKE KIRAN

participated / presented a paper titled मीडिया का प्रभाव - भाषा का बदलता स्वरूप

in the International Seminar on "ICT and Langauage Learning: Trends, Issues and Challenges"

Organized by Department of Langauges on 21st & 22nd February, 2018

**MANJULA RAO**
Seminar Chairman

**DR. (SR.) P. AMRUTHA**
Principal
ST. ANN'S COLLEGE FOR WOMEN
MEHDIPATNAM, HYDERABAD-28

---

अहमदनगर जिला मराठा विद्या प्रसारक समाज का

# न्यू आर्टस्, कॉमर्स अ‍ॅण्ड सायन्स कॉलेज, पारनेर, जि. अहमदनगर

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग तथा सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

**आयोजित**

## व्दि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

### महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २६ वाँ अधिवेशन

# प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/प्रा. डॉ. डाके किरण दशरथ, शोध छात्र, हैद्राबाद विश्वविद्यालय, हैद्राबाद

इन्हें महाराष्ट्र हिंदी परिषद के २६ वें अधिवेशन के अवसर पर दि. २१ एवं २२ दिसंबर २०१८ के दिन समकालीन हिंदी ग़ज़ल : विविध विमर्श विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में ~~उद्घाटक/बीजभाषक/प्रमुख अतिथि/सत्राध्यक्ष/विषय प्रवर्तक~~ /शोधालेख प्रस्तोता /प्रतिभागी के रुप में सम्मिलित होने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र स-सम्मान प्रदान किया जाता है ।

शोधालेख का शीर्षक:- समकालीन हिंदी ग़ज़ल में स्त्री चेतना की अभिव्यक्ति

| डॉ. गजानन चव्हाण | डॉ. मधुकर खराटे | डॉ. विजयकुमार राऊत | डॉ. रंगनाथ आहेर |
|---|---|---|---|
| महासचिव (म. हिं. प.) | अध्यक्ष (म.हिं. प.) | संयोजक | प्रधानाचार्य |